मः ३ ॥ सतिगुर मिलिऐ उलटी भई नव निधि खरचिउ खाउ ॥ अठारह सिधी पिछै लगीआ फिरनि निज घरि वसै निज थाइ ॥ अनहद धुनी सद वजदे उनमनि हरि लिव लाइ ॥ नानक हरि भगति तिना कै मनि वसै जिन मसतकि लिखिआ धुरि पाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ यदि सतिगुरु मिल जाए तो मनुष्य की वृत्ति माया से हट जाती है। उसे नवनिधियों की उपलब्धि हो जाती है, जिन्हें वह खाता एवं खर्च करता है। समस्त अठारह सिद्धियाँ उसके आगे–पीछे लगी रहती हैं। वह अपने आत्म–स्वरूप निज घर में जाकर रहता है। उसके मन में हमेशा ही अनहद ध्वनि बजती रहती है। वह परमानंद अवस्था में रहता हुआ भगवान में सुरति लगाकर रखता है। हे नानक ! जिनके माथे पर प्रारम्भ से ही उनकी किस्मत में लिखा होता है, उनके मन में ही भगवान की भक्ति निवास करती है॥ २॥

पउड़ी ॥ हउ ढाढी हरि प्रभ खसम का हरि कै दरि आइआ ॥ हरि अंदरि सुणी पूकार ढाढी मुखि लाइआ ॥ हरि पुछिआ ढाढी सदि कै कितु अरथि तूं आइआ ॥ नित देवहु दानु दइआल प्रभ हरि नामु धिआइआ ॥ हरि दातै हरि नामु जपाइआ नानकु पैनाइआ ॥ २१ ॥ १ ॥ सुधु

पउड़ी॥ मैं अपने मालिक हरि–प्रभु का चारण हूँ और प्रभु के द्वार पर आया हूँ। ईश्वर ने भीतर से मेरी ऊँची पुकार सुनकर मुझ चारण को अपनी उपस्थिति में बुलवा लिया। भगवान ने मुझे बुलाकर पूछा कि तुम किस मनोरथ हेतु मेरे पास आए हो। हे मेरे दयावान परमात्मा ! मुझे हमेशा ही अपने हरि नाम–सिमरन का दान दीजिए। नानक की यह विनती सुनकर दाता–प्रभु ने उसे हरि–नाम स्मरण करवाया तथा उसे सम्मान की पोशाक पहनाई॥ २१॥ १॥ सुधु॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सिरीरागु कबीर जीउ का ॥ एकु सुआनु कै घरि गावणा॥

जननी जानत सुतु बडा होतु है इतना कु न जानै जि दिन दिन अवध घटतु है ॥ मोर मोर करि अधिक लाडु धरि पेखत ही जम राउ हसै ॥ १ ॥ ऐसा तैं जगु भरमि लाइआ ॥ कैऐ बूझै जब मोहिआ है माइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहत कबीर छोडि बिखिआ रस इतु संगति निहचउ मरणा ॥ रमईआ जपहु प्राणी अनत जीवण बाणी इन बिधि भव सागरु तरणा ॥ २ ॥ जां तिसु भावै ता लागै भाउ ॥ भरमु भुलावा विचहु जाइ ॥ उपजै सहजु गिआन मति जागै ॥ गुर प्रसादि अंतरि लिव लागै ॥ ३ ॥ इतु संगति नाही मरणा ॥ हुकमु पछाणि ता खसमै मिलणा ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥

माता सोचती है कि उसका पुत्र बड़ा होता जा रहा है परन्तु वह इतना नहीं समझती कि प्रतिदिन उसकी आयु के दिन कम होते जा रहे हैं। माता बड़े लाड–प्यार से उसको 'मेरा–मेरा' कह कर स्नेह करती है। परन्तु यमराज यह मोह देखकर मुस्कराता है॥ १॥ हे प्रभु ! आप ने ही इस तरह जगत् को भ्रम में डाला हुआ है। हे प्रभु ! माया ने जगत् को अपने मोह में फँसाया हुआ है, फिर जगत् इस भेद को कैसे समझ सकता है?॥ १॥ रहाउ॥ कबीर जी कहते हैं कि हे प्राणी ! तू पापों का विषय–रस त्याग दे, क्योंकि इनकी संगति से तुम निश्चित ही मर जाओगे। हे नश्वर प्राणी ! राम नाम का भजन करो, क्योंकि वही अनन्त जीवनदायक वाणी है। इस विधि से तुम भयानक सागर से पार हो जाओगे॥ २॥ जब भगवान को उपयुक्त लगता है तो ही जीव का उससे प्रेम होता है। उसके मन में से दुविधा में डालने वाला भ्रम दूर हो जाता है। फिर मन में सहज अवस्था उत्पन्न होने से उसकी

सोई हुई ज्ञान बुद्धि जाग जाती है। गुरु की कृपा से उसके अन्तर्मन में भगवान से सुरति लग जाती है॥ ३॥ परमात्मा की संगति में रहने से जन्म–मरण का चक्र समाप्त हो जाता है। ईश्वर की आज्ञा को पहचान कर ही जीव का उससे मिलन हो जाता है॥ १॥ रहाउ दूसरा॥

सिरीरागु त्रिलोचन का ॥ माइआ मोहु मनि आगलड़ा प्राणी जरा मरणु भउ विसरि गइआ ॥ कुटंबु देखि बिगसहि कमला जिउ पर घरि जोहहि कपट नरा ॥ १ ॥ दूड़ा आइओहि जमहि तणा ॥ तिन आगलड़े मै रहणु न जाइ ॥ कोई कोई साजणु आइ कहै ॥ मिलु मेरे बीठुला लै बाहड़ी वलाइ ॥ मिलु मेरे रमईआ मै लेहि छडाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक अनिक भोग राज बिसरे प्राणी संसार सागर पै अमरु भइआ ॥ माइआ मूठा चेतसि नाही जनमु गवाइओ आलसीआ ॥ २ ॥ बिखम घोर पंथि चालणा प्राणी रवि ससि तह न प्रवेसं ॥ माइआ मोहु तब बिसरि गइआ जां तजीअले संसारं ॥ ३ ॥ आजु मेरै मनि प्रगटु भइआ है पेखीअले धरम राओ॥ तह कर दल करनि महाबली तिन आगलड़े मै रहणु न जाइ ॥ ४ ॥ जे को मूं उपदेसु करतु है ता वणि त्रिणि रतड़ा नाराइणा॥ ऐ जी तूं आपे सभ किछु जाणदा बदति त्रिलोचनु रामईआ ॥ ५ ॥ २ ॥

हे प्राणी! तेरे मन में मोह–माया की इतनी आसक्ति है कि तुझे बुढ़ापा और मृत्यु का भय भी भूल गया है। जैसे कमल का फूल जल में खिलता है, वैसे ही तुम अपने परिवार को देखकर प्रसन्न होते हो। परन्तु हे कपटी मानव! तुम पराई–नारी को देखते रहते हो॥१॥ जब बलवान यमदूत आते हैं तो मैं उनके समक्ष टिक नहीं सकता। कोई विरला ही संत है जो इस जगत् में आकर यह बात कहता है। हे मेरे प्रभु! मुझे दर्शन दीजिए और अपनी भुजाएँ गले में डालकर मुझसे भेंट करो। हे मेरे राम! मुझे मिलो और बन्धन से मुक्त करो॥१॥ रहाउ॥ हे प्राणी! तूने विभिन्न प्रकार के भोग–विलासों एवं राजकीय शान–शौकत में पड़कर ईश्वर को विस्मृत कर दिया है तथा इस संसार सागर में पड़कर तुम ध्यान करते हो कि तुम अमर हो गए हो। तुझे माया ने छल लिया है इसलिए तू प्रभु को स्मरण ही नहीं करता। हे आलसी प्राणी! तूने अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ ही गंवा दिया है॥ २॥ हे प्राणी! मरणोपरांत तुझे यमपुरी जाते वक्त बहुत ही भयानक अंधकारमय मार्ग से चलना पड़ेगा। उस यमपुरी में सूर्य एवं चन्द्रमा का भी प्रवेश नहीं। जब प्राणी संसार को त्याग देता है, तब वह माया के मोह को भूल जाता है॥३॥ आज मेरे मन में यमराज प्रगट हो गया था और मैंने उसे नेत्रों से देख लिया है। वहाँ यमराज के शक्तिशाली दूत लोगों को अपने हाथों से दलन करते हैं और मैं उनके समक्ष टिक नहीं सकता॥४॥ हे नारायण! जब कोई मुझे उपदेश करता है तो मुझे यूं लगता है कि जैसे तुम वनों एवं घास के तृणों में भी विद्यमान हो। भक्त त्रिलोचन जी प्रार्थना करते हैं कि हे मेरे राम! तुम स्वयं ही सबकुछ जानते हो॥५॥२॥

सीरागु भगत कबीर जीउ का ॥ अचरज एकु सुनहु रे पंडीआ अब किछु कहनु न जाई ॥ सुरि नर गण गंध्रब जिनि मोहे त्रिभवण मेखुली लाई ॥ १ ॥ राजा राम अनहद किंगुरी बाजै ॥ जा की दिसटि नाद लिव लागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भाठी गगनु सिंङिआ अरु चुंङिआ कनक कलस इकु पाइआ ॥ तिसु महि धार चुऐ अति निरमल रस महि रसन चुआइआ ॥ २ ॥ एक जु बात अनूप बनी है पवन पिआला साजिआ ॥ तीनि भवन महि एको जोगी कहहु कवनु है राजा ॥ ३ ॥ ऐसे गिआन प्रगटिआ पुरखोतम कहु कबीर रंगि राता ॥ अउर दुनी सभ भरमि भुलानी मनु राम रसाइन माता ॥ ४ ॥ ३ ॥

हे पण्डित! परमात्मा की माया की एक आश्चर्यजनक बात सुनो। उस बारे अब कुछ कहा नहीं जा सकता, उसने देवते, मनुष्य, स्वर्ग के गण–गंधर्व सभी मोहित कर रखे हैं और उसने तीनों लोकों–

आकाश, पाताल एवं पृथ्वी को जकड़ा हुआ है॥१॥ हे मेरे राम ! तेरी वीणा बज रही है, जिससे अनहद नाद उत्पन्न हो रहा है। तेरी कृपा–दृष्टि से भक्तों की उस नाद में सुरति लगती है॥१॥ रहाउ॥ (दशम द्वार पर मदिरा खींचने की भट्ठी है, इड़ा–पिंगला दोनों नलकियाँ हैं और शुद्ध अन्तःकरण मदिरा भरने के लिए स्वर्ण–पात्र है।) मुझे दशम द्वार की भट्ठी सहित एक नलकी अंदर खींचने वाली और एक नलिका बाहर फैंकने वाली के अन्तःकरण का स्वर्ण–पात्र प्राप्त हुआ है। उस पात्र में निर्मल हरि रस की धारा स्रवित होती है। यह बहने वाला हरि रस अन्यों रसों से श्रेष्ठ रस है॥ २॥ एक बहुत ही सुन्दर बात बनी है कि प्रभु ने श्वास रूपी पवन को हरि रस पान करने के लिए प्याला बना दिया है। तीनों लोकों में एक प्रभु ही योगी रूप में निवास कर रहा है। बताओ, उस प्रभु के अतिरिक्त इस जगत् का राजा अन्य कौन है?॥ ३॥ भक्त कबीर जी कहते हैं कि मेरे अन्तर्मन में पुरुषोत्तम प्रभु का ऐसा ज्ञान प्रगट हो गया है कि मैं प्रभु के प्रेम में मग्न हो गया हूँ। शेष सारी दुनिया भ्रम में भूली हुई है। मैं तो समस्त रसों के स्रोत प्रभु नाम में मग्न रहता हूँ॥४॥३॥

सीराग बाणी भगत बेणी जीउ की ॥ पहरिआ कै घरि गावणा ॥ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

रे नर गरभ कुंडल जब आछत उरध धिआन लिव लागा ॥ मिरतक पिंडि पद मद ना अहिनिसि एकु अगिआनु सु नागा ॥ ते दिन संमलु कसट महा दुख अब चितु अधिक पसारिआ ॥ गरभ छोडि म्रित मंडल आइआ तउ नरहरि मनहु बिसारिआ ॥ १ ॥ फिरि पछुतावहिगा मूड़िआ तूं कवन कुमति भ्रमि लागा ॥ चेति रामु नाही जम पुरि जाहिगा जनु बिचरै अनराधा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाल बिनोद चिंद रस लागा खिनु खिनु मोहि बिआपै ॥ रसु मिसु मेधु अंम्रितु बिखु चाखी तउ पंच प्रगट संतापै ॥ जपु तपु संजमु छोडि सुक्रित मति राम नामु न अराधिआ ॥ उछलिआ कामु काल मति लागी तउ आनि सकति गलि बांधिआ ॥ २ ॥ तरुण तेजु पर त्रिअ मुखु जोहहि सरु अपसरु न पछाणिआ ॥ उनमत कामि महा बिखु भूलै पापु पुंनु न पछानिआ ॥ सुत संपति देखि इहु मनु गरबिआ रामु रिदै ते खोइआ ॥ अवर मरत माइआ मनु तोले तउ भग मुखि जनमु विगोइआ ॥ ३ ॥ पुंडर केस कुसम ते धउले सपत पाताल की बाणी ॥ लोचन स्रमहि बुधि बल नाठी ता कामु पवसि माथाणी ॥ ता ते बिखै भई मति पावसि काइआ कमलु कुमलाणा ॥ अवगति बाणि छोडि म्रित मंडलि तउ पाछै पछुताणा ॥ ४ ॥ निकुटी देह देखि धुनि उपजै मान करत नही बूझै ॥ लालचु करै जीवन पद कारन लोचन कछू न सूझै ॥ थाका तेजु उडिआ मनु पंखी घरि आंगनि न सुखाई ॥ बेणी कहै सुनहु रे भगतहु मरन मुकति किनि पाई ॥ ५ ॥

(प्रस्तुत पद को 'पहरे' वाणी के स्वर में गाने का आदेश दिया गया है।)

हे मानव ! जब तुम मातृ–गर्भ में थे तो सिर के बल खड़े होकर ईश्वर के स्मरण में लीन थे। उस समय तुझे पार्थिव देहि की गरिमा का अहंकार नहीं था और अज्ञानी एवं पूर्ण विहीन होने के कारण तुम दिन–रात एक हरि की आराधना करते थे। कष्ट एवं दुखों के वह दिन स्मरण करो। अब तुमने अपने मन के जाल को अत्याधिक फैला लिया है। जब से गर्भ को त्याग कर तू इस नश्वर संसार में आया है। तब से तूने हे मानव ! ईश्वर को अपने मन से विस्मृत कर दिया॥१॥ हे मूर्ख ! तुम्हें फिर पछताना पड़ेगा। क्यों भ्रम में पड़कर तुम कुमति कर रहे हो। राम का चिन्तन कर, अन्यथा यमपुरी जाओगे। हे मानव ! मूर्खों की भाँति क्यों भटकते फिरते हो?॥१॥ रहाउ॥ तू अपने बचपन में मनपसंद क्रीड़ाओं–विनोद के स्वाद में लीन रहा है। तुझे क्षण–क्षण उनका मोह उलझा रहा था। अब युवावस्था

में तू विष रूप माया के रसों को पवित्र समझ कर भोग रहा है। इसलिए काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार पांचों विकार तुझे दुखी कर रहे हैं। तूने जप, तप, संयम एवं शुभ कर्मों वाली बुद्धि छोड़ दी है। तू राम नाम की आराधना भी नहीं करता। तेरे अन्तर्मन में कामवासना का वेग तरंगें मार रहा है। तुझे काल रूपी बुद्धि आ लगी है। अब तूने कामपिपासा हेतु स्त्री को लाकर अपने गले लगा लिया है॥ २॥ यौवन के जोश में तू पराई–नारियों को देखता है और भले–बुरे की पहचान नहीं करता। तू कामवासना में मग्न रहकर विष रूपी प्रबल माया के मोह में फँसकर भटकता रहता है। फिर तू पाप एवं पुण्य की पहचान नहीं करता। अपने पुत्रों एवं सम्पत्ति को देखकर तेरा यह मन अहंकारी हो गया है और अपने हृदय से तूने राम को विस्मृत कर दिया है। सगे–सम्बन्धियों की मृत्यु पर तू अपने मन में सोचता है कि तुझे उसका कितना धन प्राप्त होगा। हे मानव ! सौभाग्य से मिले अपने अमूल्य जीवन को तूने व्यर्थ गंवा दिया है॥ ३॥ बुढ़ापे में तेरे बाल चमेली के फूलों से भी अधिकतर सफेद हैं और तेरी वाणी इतनी धीमी पड़ गई है, जैसे वह सातवें लोक से आती हो। तेरे नेत्रों से जल बह रहा है। तेरी बुद्धि एवं बल शरीर में से लुप्त हो गए हैं। ऐसी अवस्था में काम तेरे मन में से यूं मंथन करता है, जैसे दूध का मंथन किया जाता है। इसलिए तेरी बुद्धि में विषय–विकारों की झड़ी लगी हुई है। तेरा शरीर मुरझाए हुए फूल जैसा हो गया है। तुम अलक्ष्य प्रभु की वाणी को छोड़कर नश्वर जगत् के कार्यों में लीन हो रहे हो। तदुपरांत तुम पश्चाताप करोगे॥४॥ नन्हे–मुन्ने छोटे बच्चों को देखकर तेरे मन में बड़ा प्रेम उत्पन्न होता है और तू उन पर गर्व करता है परन्तु तू ईश्वर बारे कोई सूझ प्राप्त नहीं करता। चाहे तेरे नेत्रों से कुछ भी नहीं दिखाई देता फिर भी तू लम्बी आयु की लालच करता है। अंत को शरीर का बल काम करने से थक जाता है और मन रूपी पक्षी शरीर रूपी पिंजरे में से उड़ जाता है। घर के आंगन में पड़ा मृतक शरीर किसी को अच्छा नहीं लगता। भक्त बेणी जी कहते हैं, हे भक्तो ! सुनो, मृत्यु के पश्चात किसी ने भी मुक्ति प्राप्त नहीं की॥५॥

सिरीरागु ॥ तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा ॥ कनक कटिक जल तरंग जैसा ॥ १ ॥ जउ पै हम न पाप करंता अहे अनंता ॥ पतित पावन नामु कैसे हुंता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम्ह जु नाइक आछहु अंतरजामी ॥ प्रभ ते जनु जानीजै जन ते सुआमी ॥ २ ॥ सरीरु आराधै मो कउ बीचारु देहू ॥ रविदास सम दल समझावै कोऊ ॥ ३ ॥

सिरीरागु॥ हे प्रभु ! तू ही मैं हूँ और मैं ही तुम हूँ। तेरे और मेरे बीच कोई अन्तर नहीं है। यह अन्तर ऐसा है जैसे स्वर्ण एवं स्वर्ण से बने आभूषण का है। जैसे जल एवं इसकी लहरों में है। वैसे ही प्राणी और ईश्वर है॥१॥ हे अनंत परमेश्वर ! यदि मैं पाप न करता तो तेरा पतितपावन नाम कैसे होता ?॥१॥ रहाउ॥ हे अन्तर्यामी प्रभु ! तुझे जगत् का स्वामी कहा जाता है। प्रभु से उसके दास की एवं दास से उसके स्वामी की पहचान हो जाती है॥ २॥ हे प्रभु ! मुझे यह ज्ञान दीजिए कि जब तक मेरा यह शरीर है, तब तक मैं तेरा नाम–सिमरन करता रहूँ। भक्त रविदास जी का कथन है कि हे प्रभु ! मेरी यही कामना है कि कोई महापुरुष आकर मुझे यह ज्ञान दे जाए कि तू समस्त स्थानों में विद्यमान है॥३॥

॥ सिरीराग समाप्त ॥

रागु माझ चउपदे घरु १ महला ४

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

सबका मालिक एक है, उसका नाम सत्य है, वह सृष्टि की रचना करने वाला सर्वशक्तिमान, निर्भय, निर्वैर, अकालमूर्ति, अयोनि एवं स्वयंभू है, जिसकी लब्धि गुरु की कृपा से होती है।

हरि हरि नामु मै हरि मनि भाइआ ॥ वडभागी हरि नामु धिआइआ ॥ गुरि पूरै हरि नाम सिधि पाई को विरला गुरमति चलै जीउ ॥ १ ॥ मै हरि हरि खरचु लइआ बंनि पलै ॥ मेरा प्राण सखाई सदा नालि चलै ॥ गुरि पूरै हरि नामु दिड़ाइआ हरि निहचलु हरि धनु पलै जीउ ॥ २ ॥ हरि हरि सजणु मेरा प्रीतमु राइआ ॥ कोई आणि मिलावै मेरे प्राण जीवाइआ ॥ हउ रहि न सका बिनु देखे प्रीतमा मै नीरु वहे वहि चलै जीउ ॥ ३ ॥ सतिगुरु मितु मेरा बाल सखाई ॥ हउ रहि न सका बिनु देखे मेरी माई ॥ हरि जीउ क्रिपा करहु गुरु मेलहु जन नानक हरि धनु पलै जीउ ॥ ४ ॥ १ ॥

हरि–परमेश्वर एवं उसका 'हरि–हरि' नाम मुझे मन में अति प्रिय है। मेरे सौभाग्य ही हैं कि मैं हरि–नाम का सिमरन करता रहता हूँ। हरि–नाम सिमरन की सिद्धि मैंने पूर्ण गुरु से प्राप्त की है। कोई विरला पुरुष ही गुरु की मति पर चलता है॥१॥ मैंने परलोक में जाने हेतु यात्रा व्यय हेतु हरि–नाम का धन दामन में बांध लिया है। हरि–नाम मेरे प्राणों का साथी बन गया है और यह हमेशा ही मेरे साथ रहता है। पूर्ण गुरु ने मेरे मन में हरि का नाम बसा दिया है। यह हरि धन सदैव स्थिर रहने वाला है। गुरु ने हरिनाम रूपी धन मेरे दामन में डाल दिया है॥२॥ हरि–परमेश्वर मेरा सज्जन एवं प्रियतम बादशाह है। कोई संत–महापुरुष आकर मुझे हरि से मिला दे, क्योंकि वह मेरे प्राणों का जीवन है। हे मेरी माँ ! मैं अपने प्रियतम के दर्शनों बिना रह नहीं सकता। मेरे नेत्रों में से अश्रु बह रहे हैं॥ ३॥ सद्गुरु मेरा मित्र एवं मेरा बचपन का साथी है। हे मेरी माँ ! मैं उसके दर्शनों से वंचित हुआ जीवित नहीं रह सकता। हे हरि ! मुझ पर कृपा करो और मुझे गुरु से मिला दो। हे नानक ! गुरु हरि–नाम रूपी धन मेरे दामन में डाल देगा॥४॥१॥

माझ महला ४ ॥ मधुसूदन मेरे मन तन प्राना ॥ हउ हरि बिनु दूजा अवरु न जाना ॥ कोई सजणु संतु मिलै वडभागी मै हरि प्रभु पिआरा दसै जीउ ॥ १ ॥ हउ मनु तनु खोजी भालि भालाई ॥ किउ पिआरा प्रीतमु मिलै मेरी माई ॥ मिलि सतसंगति खोजु दसाई विचि संगति हरि प्रभु वसै जीउ ॥ २ ॥ मेरा पिआरा प्रीतमु सतिगुरु रखवाला ॥ हम बारिक दीन करहु प्रतिपाला ॥ मेरा मात पिता गुरु सतिगुरु पूरा गुर जल मिलि कमलु विगसै जीउ ॥ ३ ॥ मै बिनु गुर देखे नीद न आवै ॥ मेरे मन तनि वेदन गुर बिरहु लगावै ॥ हरि हरि दइआ करहु गुरु मेलहु जन नानक गुर मिलि रहसै जीउ ॥ ४ ॥ २ ॥

हे मधुसूदन ! तू ही मेरा मन, तन एवं प्राण हैं, क्योंकि हरि के अलावा मैं किसी अन्य को नहीं जानता। भाग्य से यदि कोई सज्जन संत मुझे मिल जाए तो वह मुझे मेरे प्रियतम हरि–प्रभु का मार्गदर्शन करेगा॥१॥ मैं अपने मन एवं तन की खोज से उस परमेश्वर को ढूँढ रहा हूँ। हे मेरी माँ ! मेरा प्रियतम प्रभु मुझे किस प्रकार मिले? संतों की संगति में रहकर मैं उस ईश्वर का पता पूछता हूँ क्योंकि संतों की संगति के बीच हरि–प्रभु का निवास है॥२॥ हे प्रभु ! मुझे मेरे प्रिय प्रियतम सतिगुरु

से मिला दो, जो मेरा रखवाला है। मैं एक विवश बालक हूँ, मेरा पालन–पोषण कीजिए। पूर्ण सतिगुरु ही मेरे माता–पिता हैं। उनके दर्शन रूपी जल के मिलन से मेरा हृदय रूपी कमल प्रफुल्लित हो जाता है॥ ३॥ गुरु के दर्शनों के बिना मुझे नींद नहीं आती क्योंकि मेरा मन एवं तन गुरु के विरह की पीड़ा सहता है। हे हरि प्रभु ! मुझ पर दया कीजिए और मेरा गुरु से मिलन करवा दो। गुरु के मिलन से दास नानक आनंदित हो जाता है॥४॥२॥

माझ महला ४ ॥ हरि गुण पड़ीऐ हरि गुण गुणीऐ ॥ हरि हरि नाम कथा नित सुणीऐ ॥ मिलि सतसंगति हरि गुण गाए जगु भउजलु दुतरु तरीऐ जीउ ॥ १ ॥ आउ सखी हरि मेलु करेहा ॥ मेरे प्रीतम का मै देइ सनेहा ॥ मेरा मितु सखा सो प्रीतमु भाई मै दसे हरि नरहरीऐ जीउ ॥ २ ॥ मेरी बेदन हरि गुरु पूरा जाणै ॥ हउ रहि न सका बिनु नाम वखाणे ॥ मै अउखधु मंतु दीजै गुर पूरे मै हरि हरि नामि उधरीऐ जीउ ॥ ३ ॥ हम चात्रिक दीन सतिगुर सरणाई ॥ हरि हरि नामु बूंद मुखि पाई ॥ हरि जलनिधि हम जल के मीने जन नानक जल बिनु मरीऐ जीउ ॥ ४ ॥ ३ ॥

हमें हरि–परमेश्वर की महिमा को ही पढ़ना चाहिए और हरि की महिमा का ही चिन्तन करना चाहिए। सदैव ही हरि नाम की कथा को सुनना चाहिए तथा संतों की सभा में मिलकर हरि की महिमा–स्तुति का गायन करना चाहिए। इस प्रकार भवसागर से पार हुआ जा सकता है॥१॥ हे मेरी सखियो ! आओ हम हरि मिलन का प्रयास करें। कोई मुझे मेरे प्रियतम का संदेश दे जाए। केवल वही मेरा मित्र एवं सखा है, वही प्रियतम एवं बन्धु है, जो मुझे नरसिंह–हरि का मार्गदर्शन करता है॥२॥ मेरी वेदना को पूर्ण हरि–रूप गुरु जी समझते हैं। मैं प्रभु का नाम सिमरन किए बिना रह नहीं सकता। हे मेरे पूर्ण गुरदेव जी ! मुझे नाम मंत्र रूपी औषधि दीजिए एवं हरि के नाम द्वारा मेरा उद्धार कर दीजिए॥ ३॥ मैं दीन चातक हूँ और सतिगुरु की शरण में आया हूँ। गुरु जी ने हरि प्रभु के नाम की बूँद मुख में डाली है। हरि जल का समुद्र है और मैं उस जल की मछली हूँ। हे नानक ! इस जल के बिना मैं मर जाती हूँ॥४॥३॥

माझ महला ४ ॥ हरि जन संत मिलहु मेरे भाई ॥ मेरा हरि प्रभु दसहु मै भुख लगाई ॥ मेरी सरधा पूरि जगजीवन दाते मिलि हरि दरसनि मनु भीजै जीउ ॥ १ ॥ मिलि सतसंगि बोली हरि बाणी ॥ हरि हरि कथा मेरै मनि भाणी ॥ हरि हरि अंम्रितु हरि मनि भावै मिलि सतिगुर अंम्रितु पीजै जीउ ॥ २ ॥ वडभागी हरि संगति पावहि ॥ भागहीन भ्रमि चोटा खावहि ॥ बिनु भागा सतसंगु न लभै बिनु संगति मैलु भरीजै जीउ ॥ ३ ॥ मै आइ मिलहु जगजीवन पिआरे ॥ हरि हरि नामु दइआ मनि धारे ॥ गुरमति नामु मीठा मनि भाइआ जन नानक नामि मनु भीजै जीउ ॥ ४ ॥ ४ ॥

हे मेरे हरि के संतजनों ! हे भाइओ ! मुझे मिलो। मुझे मेरे हरि प्रभु बारे बताओ, क्योंकि मुझे हरि के दर्शनों की भूख लगी हुई है। हे जगत् के जीवन दाता ! मेरी मनोकामना पूरी करो। हरि से मिलकर उसके दर्शन करके मेरा मन प्रसन्न हो जाएगा॥१॥ सत्संग में मिलकर मैं हरि की वाणी बोलता हूँ। हरि की कथा मेरे मन को बहुत अच्छी लगती है। हरि का हरि नाम रूपी अमृत मेरे मन को मधुर लगता है। गुरु से भेंट करके मैं नाम अमृत का पान करता हूँ॥२॥ भाग्यशाली व्यक्ति हरि की संगति प्राप्त करता है। किन्तु भाग्यहीन मनुष्य भ्रम में भटकते और चोटें सहते हैं। भाग्य के बिना सत्संगति नहीं मिलती। सत्संग के बिना मनुष्य पापों की मलिनता के साथ लथपथ हो जाता है॥३॥ हे मेरे प्रियतम ! हे जगजीवन ! आकर मुझे दर्शन दीजिए। अपने मन में दया धारण करके मुझे हरि नाम प्रदान कीजिए। गुरु के उपदेश से मेरे मन को हरि–नाम मधुर एवं अच्छा लगने लग गया है। हे नानक ! मेरा मन हरि नाम से भीग गया है॥४॥४॥

माझ महला ४ ॥ हरि गुर गिआनु हरि रसु हरि पाइआ ॥ मनु हरि रंगि राता हरि रसु पीआइआ ॥ हरि हरि नामु मुखि हरि हरि बोली मनु हरि रसि टुलि टुलि पउदा जीउ ॥ १ ॥ आवहु संत मै गलि मेलाईऐ ॥ मेरे प्रीतम की मै कथा सुणाईऐ ॥ हरि के संत मिलहु मनु देवा जो गुरबाणी मुखि चउदा जीउ ॥ २ ॥ वडभागी हरि संतु मिलाइआ ॥ गुरि पूरै हरि रसु मुखि पाइआ ॥ भागहीन सतिगुरु नही पाइआ मनमुखु गरभ जूनी निति पउदा जीउ ॥ ३ ॥ आपि दइआलि दइआ प्रभि धारी ॥ मलु हउमै बिखिआ सभ निवारी ॥ नानक हट पटण विचि कांइआ हरि लैंदे गुरमुखि सउदा जीउ ॥ ४ ॥ ५ ॥

मैंने हरि बारे गुरु के दिए ज्ञान द्वारा हरि–रस प्राप्त किया है। जब गुरु ने मुझे हरि–रस का पान करवाया तो मेरा मन हरि के प्रेम में मग्न हो गया। मैं हरि का हरिनाम अपने मुख से बोलता रहता हूँ। मेरा मन हरि रस पान करने को उत्सुक होता है॥१॥ हे संतजनो ! आओ और मुझे अपने गले से लगाओ। मेरे प्रियतम प्रभु की कथा सुनाओ। हे हरि के संतजनो ! मुझे मिलो। जो मेरे मुँह में गुरुवाणी डालता है, मैं उसे अपना मन अर्पण कर दूँगा॥२॥ पूर्ण सौभाग्य से ईश्वर ने मुझे अपने संत से मिला दिया है। पूर्णगुरु ने मेरे मुख में हरि–रस डाल दिया है। भाग्यहीन मनुष्य को सतिगुरु प्राप्त नहीं होता। मनमुख व्यक्ति सदा गर्भ–योनि में प्रवेश करता है॥३॥ दयालु ईश्वर ने स्वयं मुझ पर दया की है और उसने अहंकार की समस्त विषैली मलिनता हटा दी है। हे नानक ! गुरमुख मनुष्य देह रूपी नगर में इन्द्रिय रूपी दुकानों पर ईश्वर के नाम का सौदा खरीदते हैं॥४॥५॥

माझ महला ४ ॥ हउ गुण गोविंद हरि नामु धिआई ॥ मिलि संगति मनि नामु वसाई ॥ हरि प्रभ अगम अगोचर सुआमी मिलि सतिगुर हरि रसु कीचै जीउ ॥ १ ॥ धनु धनु हरि जन जिनि हरि प्रभु जाता ॥ जाइ पुछा जन हरि की बाता ॥ पाव मलोवा मलि मलि धोवा मिलि हरि जन हरि रसु पीचै जीउ ॥ २ ॥ सतिगुर दातै नामु दिड़ाइआ ॥ वडभागी गुर दरसनु पाइआ ॥ अंम्रित रसु सचु अंम्रितु बोली गुरि पूरै अंम्रितु लीचै जीउ ॥ ३ ॥ हरि सतसंगति सत पुरखु मिलाईऐ ॥ मिलि सतसंगति हरि नामु धिआईऐ ॥ नानक हरि कथा सुणी मुखि बोली गुरमति हरि नामि परीचै जीउ ॥ ४ ॥ ६ ॥

मैं गोविन्द का गुणानुवाद करता हूँ और हरि नाम का ध्यान करने में ही मग्न रहता हूँ। मैं सत्संग में मिलकर नाम को अपने मन में बसाता हूँ। मेरा स्वामी हरि–प्रभु अगम्य एवं अगोचर है तथा सतिगुरु से मिलकर मैं हरि–रस का आनंद प्राप्त करता हूँ॥१॥ वह हरि के सेवक धन्य हैं, जिन्होंने हरि–प्रभु को समझ लिया है। मैं जाकर ऐसे सेवकों से हरि की बातें पूछता हूँ। मैं उनके चरण दबाता हूँ और उन्हें स्वच्छ करता एवं धोता हूँ। हरि के सेवकों से भेंट करके मैं हरि–रस का पान करता हूँ॥२॥ दाता सतिगुरु ने मेरे हृदय में ईश्वर का नाम बसा दिया है। परम सौभाग्य से मुझे गुरु के दर्शन प्राप्त हुए हैं। सतिगुरु सत्य अमृत रस का पान करते हैं और सत्य अमृत वाणी ही बोलते हैं। अतः पूर्ण गुरु से अमृत नाम प्राप्त करो॥३॥ हे प्रभु ! मुझे सद्पुरुषों की संगति में मिलाओ। पवित्र पुरुषों की सभा में मिलकर मैं हरि के नाम की आराधना करता रहूँ। हे नानक ! मैं हरि कथा ही सुनता हूँ और अपने मुँह से वाणी ही बोलता हूँ। गुरु के उपदेश द्वारा हरि के नाम से मैं तृप्त हो जाता हूँ॥४॥६॥

माझ महला ४ ॥ आवहु भैणे तुसी मिलहु पिआरीआ ॥ जो मेरा प्रीतमु दसे तिस कै हउ वारीआ ॥ मिलि सतसंगति लधा हरि सजणु हउ सतिगुर विटहु घुमाईआ जीउ ॥ १ ॥ जह जह देखा तह तह सुआमी ॥ तू घटि घटि रविआ अंतरजामी ॥ गुरि पूरै हरि नालि दिखालिआ हउ सतिगुर विटहु सद वारिआ जीउ ॥ २ ॥ एको पवणु माटी सभ एका सभ एका जोति सबाईआ ॥ सभ इका जोति

वरतै भिनि भिनि न रलई किसै दी रलाईआ ॥ गुर परसादी इकु नदरी आइआ हउ सतिगुर विटहु वताइआ जीउ ॥ ३ ॥ जनु नानकु बोलै अंम्रित बाणी ॥ गुरसिखां कै मनि पिआरी भाणी ॥ उपदेसु करे गुरु सतिगुरु पूरा गुरु सतिगुरु परउपकारीआ जीउ ॥ ४ ॥ ७ ॥ सत चउपदे महले चउथे के ॥

हे मेरी प्यारी सत्संगी बहनो ! तुम मुझे आकर मिलो। जो मुझे मेरे प्रियतम प्रभु का पता बताएगी, मैं उस पर कुर्बान हो जाऊँगी। सत्संग में मिलकर मैंने अपने साजन हरि को ढूँढ लिया है। अपने सतिगुरु पर मैं बलिहारी जाती हूँ॥१॥ जहाँ कहीं भी मैं देखती हूँ, उधर ही मैं अपने स्वामी को देखती हूँ। हे अन्तर्यामी प्रभु ! तू सर्वत्र व्यापक है। पूर्ण गुरु ने मेरे परमेश्वर को मेरे साथ हृदय में बसता दिखा दिया है। मैं सतिगुरु पर हमेशा कुर्बान जाती हूँ॥२॥ समस्त शरीरों में एक ही पवन है, एक ही मिट्टी है और सबमें एक ही ज्योति विद्यमान है। भिन्न-भिन्न शरीरों में एक ही ज्योति कार्य कर रही है। परन्तु एक शरीर की ज्योति दूसरे शरीर की ज्योति में नहीं मिलाई जा सकती। गुरु की कृपा से मुझे एक परमात्मा ही सबमें मौजूद दिखाई देता है। मैं अपने सतिगुरु पर न्यौछावर हूँ॥३॥ सेवक नानक अमृत वाणी उच्चारण करता है। गुरु के सिक्खों के हृदय को यह वाणी बड़ी प्यारी एवं अच्छी लगती है। पूर्ण सतिगुरु वाणी द्वारा उपदेश देते हैं और वह सतिगुरु बड़े परोपकारी हैं॥४॥७॥ सात चउपदे सतिगुरु रामदास जी के हैं।

माझ महला ५ चउपदे घरु १ ॥

मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई ॥ विलप करे चात्रिक की निआई ॥ त्रिखा न उतरै सांति न आवै बिनु दरसन संत पिआरे जीउ ॥ १ ॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाई गुर दरसन संत पिआरे जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा मुखु सुहावा जीउ सहज धुनि बाणी ॥ चिरु होआ देखे सारिंगपाणी ॥ धंनु सु देसु जहा तूं वसिआ मेरे सजण मीत मुरारे जीउ ॥ २ ॥ हउ घोली हउ घोलि घुमाई गुर सजण मीत मुरारे जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इक घड़ी न मिलते ता कलिजुगु होता ॥ हुणि कदि मिलीऐ प्रिअ तुधु भगवंता ॥ मोहि रैणि न विहावै नीद न आवै बिनु देखे गुर दरबारे जीउ ॥ ३ ॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाई तिसु सचे गुर दरबारे जीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भागु होआ गुरि संतु मिलाइआ ॥ प्रभु अबिनासी घर महि पाइआ ॥ सेव करी पलु चसा न विछुड़ा जन नानक दास तुमारे जीउ ॥ ४ ॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाई जन नानक दास तुमारे जीउ ॥ रहाउ ॥ १ ॥ ८ ॥

(इतिहास साक्षी है कि गुरु रामदास जी ने लाहौर में अपने एक संबंधी भाई सिहारी मल के लड़के के विवाह पर गुरु अर्जुन देव जी को भेजा था। गुरु रामदास जी ने कहा था कि जब तक हम न बुलाएँ आप मत आना। इस तरह गुरु अर्जुन देव जी को लाहौर में दो वर्ष बीत गए थे। प्रस्तुत पद के विभिन्न अंश अलग-अलग लिखे गए थे। गुरु अर्जुन देव जी पिता गुरु रामदास जी को मिलने की आज्ञा पाने हेतु एक-एक अंश भेजते रहे)

मेरे मन को गुरु के दर्शनों की तीव्र अभिलाषा हो रही है। यह चातक की भाँति विलाप करता है। हे सन्तजनों के प्रिय ! आपके दर्शनों के बिना मेरी प्यास नहीं बुझती और न ही मुझे शांति प्राप्त होती है॥१॥ हे संत जनों के प्रिय ! गुरु के दर्शनों पर मैं तन, मन से न्यौछावर हूँ और सदैव ही कुर्बान जाता हूँ॥१॥ रहाउ॥ हे मेरे गुरु ! तेरा मुख अति सुन्दर है और तेरी वाणी की ध्वनि मन को आनंद प्रदान करती है। हे सारंगपाणि ! तेरे दर्शन किए मुझे चिरकाल हो चुका है। हे मेरे सज्जन एवं मित्र

प्रभु ! वह धरती धन्य है जहाँ तुम वास करते हो॥२॥ हे मेरे सज्जन एवं मित्र प्रभु रूप गुरु जी ! मैं आप पर तन–मन से न्यौछावर हूँ और आप पर कुर्बान जाता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ यदि मैं तुझे एक क्षण भर नहीं मिलता तो मेरे लिए कलियुग उदय हो जाता है। हे मेरे प्रिय भगवान ! मैं तुझे अब कब मिलूंगा? आपका दरबार देखे बिना न ही मुझे नींद आती है, न ही मेरी रात्रि बीतती है। मैं पूज्य गुरु के सच्चे दरबार पर तन–मन से कुर्बान जाता हूँ॥१॥ रहाउ॥ मेरे भाग्य उदय हो गए हैं और संत–गुरु से मिल पाया हूँ। मैंने अनश्वर प्रभु को अपने हृदय–घर में ही प्राप्त कर लिया है। हे नानक ! मैं प्रभु के सेवकों की सेवा करता रहता हूँ और मैं उनसे एक पल अथवा क्षण मात्र भी जुदा नहीं होता। हे नानक ! मैं प्रभु के सेवकों पर तन एवं मन से कुर्बान जाता हूँ॥ रहाउ॥१॥८॥

रागु माझ महला ५ ॥ सा रुति सुहावी जितु तुधु समाली ॥ सो कंमु सुहेला जो तेरी घाली ॥ सो रिदा सुहेला जितु रिदै तूं वुठा सभना के दातारा जीउ ॥ १ ॥ तूं साझा साहिबु बापु हमारा ॥ नउ निधि तेरै अखुट भंडारा ॥ जिसु तूं देहि सु त्रिपति अघावै सोई भगतु तुमारा जीउ ॥ २ ॥ सभु को आसै तेरी बैठा ॥ घट घट अंतरि तूंहै वुठा ॥ सभे साझीवाल सदाइनि तूं किसै न दिसहि बाहरा जीउ ॥ ३ ॥ तूं आपे गुरमुखि मुकति कराइहि ॥ तूं आपे मनमुखि जनमि भवाइहि ॥ नानक दास तेरै बलिहारै सभु तेरा खेलु दसाहरा जीउ ॥ ४ ॥ २ ॥ ६ ॥

हे प्रभु ! वही ऋतु अति सुन्दर है जब मैं तेरा सिमरन करता हूँ। वही कार्य मुझे सुखदायक लगता है। जो कार्य मैं तेरे नाम–सिमरन के लिए करता हूँ। हे समस्त जीवों के दाता ! वही हृदय सुखी है, जिस हृदय में तुम्हारा निवास होता है॥१॥ हे मालिक ! तुम हम सब के संयुक्त पिता हो। तेरे पास नवनिधियाँ हैं, तेरा भण्डार अक्षय है। तू जिसे यह भण्डार देता है, वह मन और तन से तृप्त हो जाता है और वही तेरा भक्त बन जाता है॥२॥ हे मेरे मालिक ! सभी प्राणी तेरी आशा में ही बैठे हैं। तू घट–घट में वास कर रहा है। समस्त प्राणी तेरे भागीदार कहलाते हैं और किसी भी प्राणी को ऐसा नहीं लगता कि तुम उससे बाहर किसी अन्य स्थान पर निवास करते हो॥३॥ गुरमुखों को तुम स्वयं ही बंधनों से मुक्त कराते हो और मनमुख प्राणियों को तुम स्वयं जीवन–मृत्यु के बंधन में धकेल देते हो। दास नानक तुझ पर कुर्बान जाता है। हे प्रभु ! यह सबकुछ तेरा ही खेल तमाशा है॥ ४॥ २॥ ६॥

माझ महला ५ ॥ अनहदु वाजै सहजि सुहेला ॥ सबदि अनंद करे सद केला ॥ सहज गुफा महि ताड़ी लाई आसणु ऊच सवारिआ जीउ ॥ १ ॥ फिरि घिरि अपुने ग्रिह महि आइआ ॥ जो लोड़ीदा सोई पाइआ ॥ त्रिपति अघाइ रहिआ है संतहु गुरि अनभउ पुरखु दिखारिआ जीउ ॥ २ ॥ आपे राजनु आपे लोगा ॥ आपि निरबाणी आपे भोगा ॥ आपे तखति बहै सचु निआई सभ चूकी कूक पुकारिआ जीउ ॥ ३ ॥ जेहा डिठा मै तेहो कहिआ ॥ तिसु रसु आइआ जिनि भेदु लहिआ ॥ जोती जोति मिली सुखु पाइआ जन नानक इकु पसारिआ जीउ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १० ॥

मेरे मन में सुखदायक अनहद शब्द मधुर ध्वनि में बजता रहता है। उस अनहद शब्द को सुनकर मेरा मन सदैव आनंदित एवं प्रसन्न रहता है। मन ने सहज गुफा में समाधि लगाई है और उच्चमण्डलों में अपना आसन बना लिया है॥ १॥ मन बाहर भटकने के पश्चात अपने आत्म स्वरूप रूपी घर में आया है। जिस प्रभु को पाने की कामना थी, उसे मैंने पा लिया है। हे सन्तजनो ! अब मेरा मन तृप्त तथा शांत हो गया है क्योंकि गुरदेव ने मुझे निडर स्वामी के दर्शन करवा दिए हैं॥२॥ प्रभु स्वयं ही राजन है और स्वयं ही प्रजा है। वह स्वयं ही विरक्त है और स्वयं ही पदार्थों को भोगता है। सत्य प्रभु

सिंघासन पर विराजमान होकर स्वयं ही सत्य का न्याय करता है, मेरे अन्तर्मन की चीख–पुकार दूर हो गई है॥३॥ जैसा प्रभु मैंने देखा है, वैसा ही मैंने कह दिया है। जब मेरी ज्योति परम–ज्योति प्रभु में विलीन हो गई तो मुझे सुख उपलब्ध हो गया। हे नानक! एक प्रभु का ही सारे जगत् में प्रसार हो रहा है॥ ४॥ ३॥ १०॥

माझ महला ५ ॥ जितु घरि पिरि सोहागु बणाइआ ॥ तितु घरि सखीए मंगलु गाइआ ॥ अनद बिनोद तितै घरि सोहहि जो धन कंति सिगारी जीउ ॥ १ ॥ सा गुणवंती सा वडभागणि ॥ पुत्रवंती सीलवंति सोहागणि ॥ रूपवंति सा सुघड़ि बिचखणि जो धन कंत पिआरी जीउ ॥ २ ॥ अचारवंति साई परधाने ॥ सभ सिंगार बणे तिसु गिआने ॥ सा कुलवंती सा सभराई जो पिरि कै रंगि सवारी जीउ ॥ ३ ॥ महिमा तिस की कहणु न जाए ॥ जो पिरि मेलि लई अंगि लाए ॥ थिरु सुहागु वरु अगमु अगोचरु जन नानक प्रेम साधारी जीउ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ११ ॥

हे सखी! जिस जीव–स्त्री के हृदय–घर में पति–प्रभु ने सुहाग बना लिया है अर्थात् अपना निवास कर लिया है, उसके हृदय–घर में मंगल गायन किया जाता है। जिस जीव–स्त्री को पति–प्रभु ने शुभ गुणों से अलंकृत कर दिया है, उसके हृदय–घर में आनंद एवं उल्लास बना रहता है॥१॥ जो जीव–स्त्री अपने पति–प्रभु को प्यारी लगती है, वही जीव–स्त्री गुणवान, सौभाग्यशालिनी, पुत्रवती, शीलवान एवं सुहागिन है और वह जीव–स्त्री रूपवान, चतुर एवं पटरानी है॥ २॥ जो जीव–स्त्री पति–प्रभु के प्रेम में मग्न होकर सुन्दर बन जाती है, वही शुभ आचरण वाली एवं सर्वश्रेष्ठ है। उस ज्ञानवान को सभी शृंगार सुन्दर लगते हैं। जो पति–प्रभु के प्रेम में संवारी गई है, वही कुलीना एवं पटरानी है॥ ३॥ जिसे पति–प्रभु ने अपने गले से लगाकर अपने साथ मिला लिया है, उसकी महिमा कथन नहीं की जा सकती। हे नानक! जो पति–प्रभु अगम्य एवं अगोचर है, वह उस जीव–स्त्री का सदैव स्थिर रहने वाला सुहाग बन जाता है। पति–प्रभु का प्रेम उस जीव–स्त्री का आधार बन जाता है॥ ४॥ ४॥ ११॥

माझ महला ५ ॥ खोजत खोजत दरसन चाहे ॥ भाति भाति बन बन अवगाहे ॥ निरगुणु सरगुणु हरि हरि मेरा कोई है जीउ आणि मिलावै जीउ ॥ १ ॥ खटु सासत बिचरत मुखि गिआना ॥ पूजा तिलकु तीरथ इसनाना ॥ निवली करम आसन चउरासीह इन महि सांति न आवै जीउ ॥ २ ॥ अनिक बरख कीए जप तापा ॥ गवनु कीआ धरती भरमाता ॥ इकु खिनु हिरदै सांति न आवै जोगी बहुड़ि बहुड़ि उठि धावै जीउ ॥ ३ ॥ करि किरपा मोहि साधु मिलाइआ ॥ मनु तनु सीतलु धीरजु पाइआ ॥ प्रभु अबिनासी बसिआ घट भीतरि हरि मंगलु नानकु गावै जीउ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १२ ॥

हे मेरे प्रभु! तुझे ढूँढता–ढूँढता मैं तेरे दर्शनों का अभिलाषी बन गया हूँ। मैंने विभिन्न प्रकार के वनों में भ्रमण किया है। मेरा हरि–प्रभु निर्गुण भी है और सगुण भी है। क्या कोई ऐसा महापुरुष है जो आकर मुझे उससे मिला दे?॥१॥ कई लोग छः शास्त्रों का ज्ञान अपने मुँह से बोलकर दूसरों को सुनाते हैं। कई लोग तीर्थों के स्नान करते हैं। कई लोग देवतों की पूजा करते हैं और माथे पर तिलक लगाते हैं। कई लोग निम्नस्तरीय कर्म करते हैं और कई लोग चौरासी प्रकार के आसन लगाते हैं परन्तु इन विधियों द्वारा मन को शांति नहीं मिलती॥२॥ कुछ लोगों ने अनेक वर्ष जप एवं तप किए हैं। योगी धरती पर भ्रमण कर रहा है और अनेकों स्थानों पर भी गया है परन्तु उसके हृदय में एक क्षण भर के लिए भी शांति प्राप्त नहीं होती। योगी का मन पुनःपुन विषयों की तरफ दौड़ता रहता है॥३॥ प्रभु ने कृपा करके मुझे संतों से मिला दिया है। मेरा मन और तन अत्यंत शीतल हो गए हैं और मुझे धैर्य

मिल गया है। अमर परमात्मा ने मेरे हृदय में निवास कर लिया है और नानक ईश्वर का मंगल रूप गुणानुवाद ही करता है॥४॥५॥१२॥

माझ महला ५ ॥ पारब्रहम अपरंपर देवा ॥ अगम अगोचर अलख अभेवा ॥ दीन दइआल गोपाल गोबिंदा हरि धिआवहु गुरमुखि गाती जीउ ॥ १ ॥ गुरमुखि मधुसूदनु निसतारे ॥ गुरमुखि संगी क्रिसन मुरारे ॥ दइआल दमोदरु गुरमुखि पाईऐ होरतु कितै न भाती जीउ ॥ २ ॥ निरहारी केसव निरवैरा ॥ कोटि जना जा के पूजहि पैरा ॥ गुरमुखि हिरदै जा कै हरि हरि सोई भगतु इकाती जीउ ॥ ३ ॥ अमोघ दरसन बेअंत अपारा ॥ वड समरथु सदा दातारा ॥ गुरमुखि नामु जपीऐ तितु तरीऐ गति नानक विरली जाती जीउ ॥ ४ ॥ ६ ॥ १३ ॥

पारब्रह्म–प्रभु अपरंपार एवं हम सबका पूज्य देव है। वह अगम्य, अगोचर एवं अलक्ष्य है और उसका भेद पाया नहीं जा सकता। परमात्मा दीनदयालु एवं जीवों का पालनहार है। गुरु के माध्यम से उस प्रभु का ध्यान करो जो मोक्षदाता है॥१॥ हे मधुसूदन! आपने गुरमुखों को पार किया है। हे कृष्ण मुरारी! आप गुरमुखों के साथी हो। गुरु की कृपा से दयालु दामोदर प्राप्त होता है और किसी अन्य विधि से वह प्राप्त नहीं होता॥२॥ हे केशव! आप हमेशा निराहारी, निर्वैर हो। करोड़ों ही मनुष्य आपके चरणों की पूजा करते हैं। जिसके मन में गुरु के द्वारा हरि–परमेश्वर का नाम बसता है वही उसका अनन्य भक्त है॥३॥ प्रभु अनंत एवं अपार है और उसके दर्शन अवश्य ही फलदायक हैं। वह बहुत महान एवं सब कुछ करने में समर्थ है। वह सदैव ही जीवों को दान देता रहता है। जो व्यक्ति गुरु के माध्यम से उसका नाम–सिमरन करता है, वह भवसागर से पार हो जाता है। हे नानक! ऐसे गुरमुख की गति को कोई विरला पुरुष ही जानता है॥४॥६॥१३॥

माझ महला ५ ॥ कहिआ करणा दिता लैणा ॥ गरीबा अनाथा तेरा माणा ॥ सभ किछु तूंहै तूंहै मेरे पिआरे तेरी कुदरति कउ बलि जाई जीउ ॥ १ ॥ भाणै उझड़ भाणै राहा ॥ भाणै हरि गुण गुरमुखि गावाहा ॥ भाणै भरमि भवै बहु जूनी सभ किछु तिसै रजाई जीउ ॥ २ ॥ ना को मूरखु ना को सिआणा ॥ वरतै सभ किछु तेरा भाणा ॥ अगम अगोचर बेअंत अथाहा तेरी कीमति कहणु न जाई जीउ ॥ ३ ॥ खाकु संतन की देहु पिआरे ॥ आइ पइआ हरि तेरै दुआरै ॥ दरसनु पेखत मनु आघावै नानक मिलणु सुभाई जीउ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १४ ॥

हे प्रभु! जो तुम कथन करते हो, वही कुछ मैं करता हूँ और जो कुछ तुम मुझे देते हो, मैं वही कुछ लेता हूँ। गरीब एवं अनाथ तुझ पर गर्व करते हैं। हे मेरे प्रिय प्रभु! जगत् में सब कुछ तू ही कर रहा है और मैं तेरी कुदरत पर कुर्बान जाता हूँ॥१॥ हे प्रभु! तेरी इच्छा से हम पथ भ्रष्ट होते हैं और तेरी इच्छा पर ही हम सद्मार्ग लगते हैं। गुरमुख प्राणी प्रभु की इच्छा पर ही प्रभु की महिमा गाते हैं। तेरी इच्छा पर ही जीव भ्रमवश योनियों के अन्दर भटकते हैं। इस तरह सब कुछ प्रभु के आदेश पर ही हो रहा है॥२॥ इस जगत् में न कोई मूर्ख है और न ही कोई बुद्धिमान है। प्रत्येक स्थान पर तेरी इच्छा ही कारगर हो रही है। हे मेरे परमात्मा! तुम अगम्य, अगोचर, अनन्त और अपार हो। तेरा मूल्यांकन नहीं किया जा सकता॥३॥ हे प्रियतम प्रभु! मुझे संतों के चरणों की धूल प्रदान करो। हे परमेश्वर! मैं तेरे द्वार पर आकर नतमस्तक हो गया हूँ। प्रभु के दर्शनों से मेरा मन तृप्त हो जाता है। हे नानक! प्रभु से मिलन उसकी इच्छा से ही होता है॥४॥७॥१४॥

माझ महला ५ ॥ दुखु तदे जा विसरि जावै ॥ भुख विआपै बहु बिधि धावै ॥ सिमरत नामु सदा सुहेला जिसु देवै दीन दइआला जीउ ॥ १ ॥ सतिगुरु मेरा वड समरथा ॥ जीइ समाली ता सभु दुखु लथा ॥ चिंता रोगु गई हउ पीड़ा आपि करे प्रतिपाला जीउ ॥ २ ॥ बारिक वांगी हउ सभ किछु मंगा ॥ देदे तोटि नाही प्रभ रंगा ॥ पैरी पै पै बहुतु मनाई दीन दइआल गोपाला जीउ ॥ ३ ॥ हउ बलिहारी सतिगुर पूरे ॥ जिनि बंधन काटे सगले मेरे ॥ हिरदै नामु दे निरमल कीए नानक रंगि रसाला जीउ ॥ ४ ॥ ८ ॥ १५ ॥

मनुष्य जब भगवान को विस्मृत कर देता है तो वह बहुत दुखी होता है। जब मनुष्य को धन-दौलत की भूख लगती है तो वह अनेक विधियों द्वारा धन प्राप्ति हेतु भरसक प्रयास करता है। दीनदयालु प्रभु जिसे अपना नाम देता है, वही उसका नाम-सिमरन करके सदैव सुखी रहता है॥१॥ मेरा सतिगुरु सर्वशक्तिमान है। यदि मैं अपने मन में उसका चिंतन करूँ, तब मेरे समस्त दुख निवृत्त हो जाते हैं। मेरी चिंता का रोग व अहंकार का दर्द दूर हो गए हैं और प्रभु स्वयं ही मेरा पालन-पोषण करता है॥ २॥ बालक की भाँति मैं भगवान से सबकुछ माँगता रहता हूँ। वह मुझे बड़े प्यार से सबकुछ देता रहता है और उसकी दी हुई वस्तुओं में मुझे कोई कमी नहीं आती। मैं अपने दीनदयालु गोपाल के चरणों में बारंबार पड़-पड़कर मनाता रहता हूँ॥३॥ मैं अपने पूर्ण सतिगुरु पर बलिहारी जाता हूँ, जिसने मेरे समस्त बन्धन काट दिए हैं। सतिगुरु ने मेरे हृदय में नाम देकर मुझे निर्मल कर दिया है। हे नानक! परमेश्वर के प्रेम से मैं अमृत का घर बन गया हूँ॥४॥८॥१५॥

माझ महला ५ ॥ लाल गोपाल दइआल रंगीले ॥ गहिर गंभीर बेअंत गोविंदे ॥ ऊच अथाह बेअंत सुआमी सिमरि सिमरि हउ जीवां जीउ ॥ १ ॥ दुख भंजन निधान अमोले ॥ निरभउ निरवैर अथाह अतोले ॥ अकाल मूरति अजूनी संभौ मन सिमरत ठंढा थीवां जीउ ॥ २ ॥ सदा संगी हरि रंग गोपाला ॥ ऊच नीच करे प्रतिपाला ॥ नामु रसाइणु मनु त्रिपताइणु गुरमुखि अंम्रितु पीवां जीउ ॥ ३ ॥ दुखि सुखि पिआरे तुधु धिआई ॥ एह सुमति गुरू ते पाई ॥ नानक की धर तूंहै ठाकुर हरि रंगि पारि परीवां जीउ ॥ ४ ॥ ९ ॥ १६ ॥

हे मेरे प्रियतम प्रभु! तुम सृष्टि के पालनहार, दयालु एवं परम सुखी हो। हे मेरे गोविन्द! तू गहरे सागर की तरह है। तू बड़ा गंभीर स्वभाव वाला एवं अनंत है। तुम सर्वोच्च, असीम एवं बेअंत हो। हे प्रभु! मैं तुझे मन-तन से स्मरण करके ही जीवित रहता हूँ॥१॥ हे दुखों के नाशक! तू अमूल्य गुणों का भण्डार है। तू निर्भय, निर्वैर, असीम एवं अतुलनीय है। हे अकालमूर्ति! तू अयोनि एवं स्वयंभू है और मन में तेरा सिमरन करने से बड़ी शांति प्राप्त होती है॥ २॥ भगवान सदैव जीवों के साथ रहता है। वह जगत् का पालनहार एवं आनंद का स्रोत है। हमेशा ऊँच-नीच की वह रक्षा करता है। अमृत के घर परमेश्वर के नाम से मेरा मन तृप्त हो जाता है। गुरु की दया से मैं नाम रूपी अमृत का पान करता हूँ॥३॥ हे प्रियतम प्रभु! मैं दुख और सुख में तुझे ही स्मरण करता हूँ। यह सुमति मैंने गुरु से प्राप्त की है। हे ठाकुर जी! तुम ही नानक का सहारा हो। मैं हरि के प्रेम में मग्न होकर भवसागर से पार हो जाऊँगा॥४॥६॥१६॥

माझ महला ५ ॥ धंनु सु वेला जितु मै सतिगुरु मिलिआ ॥ सफलु दरसनु नेत्र पेखत तरिआ ॥ धंनु मूरत चसे पल घड़ीआ धंनि सु ओइ संजोगा जीउ ॥ १ ॥ उदमु करत मनु निरमलु होआ ॥ हरि

मारगि चलत भ्रमु सगला खोइआ ॥ नामु निधानु सतिगुरू सुणाइआ मिटि गए सगले रोगा जीउ ॥ २ ॥ अंतरि बाहरि तेरी बाणी ॥ तुधु आपि कथी तै आपि वखाणी ॥ गुरि कहिआ सभु एको एको अवरु न कोई होइगा जीउ ॥ ३ ॥ अंम्रित रसु हरि गुर ते पीआ ॥ हरि पैनणु नामु भोजनु थीआ ॥ नामि रंग नामि चोज तमासे नाउ नानक कीने भोगा जीउ ॥ ४ ॥ १० ॥ १७ ॥

वह समय बड़ा शुभ है, जब मुझे मेरे सतिगुरु मिले। गुरु के दर्शन सफल हो गए हैं, क्योंकि नेत्रों से उनके दर्शन करके मैं भवसागर से पार हो गया हूँ। वह मुहूर्त, पल और घड़ी एवं संयोग भी शुभ है, जिससे मेरा सतिगुरु से मिलन हुआ है॥ १॥ पुरुषार्थ करने से मेरा मन पवित्र हो गया है। हरि–प्रभु के मार्ग पर चलने से मेरा भ्रम दूर हो गया है। सतिगुरु ने मुझे गुणों का भण्डार नाम सुनाया है और नाम सुनकर मेरे तमाम रोग नाश हो गए हैं॥२॥ हे प्रभु ! घर के अन्दर और बाहर मैं तेरी वाणी गाता रहता हूँ। यह वाणी तूने स्वयं ही उच्चारण की है और स्वयं ही इसका वर्णन किया है। गुरु ने कहा है कि समस्त स्थानों पर एक प्रभु ही है और एक प्रभु ही होगा और प्रभु जैसा जगत् में अन्य कोई नहीं होगा॥ ३॥ मैंने हरि–रस रूपी अमृत गुरु से पान किया है। अब हरि का नाम ही मेरा पहरावा एवं भोजन बन गया है। हे नानक ! नाम में मग्न रहना ही मेरे लिए आनंद, खेल एवं मनोरंजन है और नाम ही पदार्थों का भोग है॥ ४॥ १०॥ १७॥

माझ महला ५ ॥ सगल संतन पहि वसतु इक मांगउ ॥ करउ बिनंती मानु तिआगउ ॥ वारि वारि जाई लख वरीआ देहु संतन की धूरा जीउ ॥ १ ॥ तुम दाते तुम पुरख बिधाते ॥ तुम समरथ सदा सुखदाते ॥ सभ को तुम ही ते वरसावै अउसरु करहु हमारा पूरा जीउ ॥ २ ॥ दरसनि तेरै भवन पुनीता ॥ आतम गड़ु बिखमु तिना ही जीता ॥ तुम दाते तुम पुरख बिधाते तुधु जेवडु अवरु न सूरा जीउ ॥ ३ ॥ रेनु संतन की मेरै मुखि लागी ॥ दुरमति बिनसी कुबुधि अभागी ॥ सच घरि बैसि रहे गुण गाए नानक बिनसे कूरा जीउ ॥ ४ ॥ ११ ॥ १८ ॥

मैं समस्त संतजनों से एक वस्तु ही माँगता हूँ। मैं एक प्रार्थना करता हूँ कि मैं अपना अहंकार त्याग दूँ। मैं संतजनों पर लाख–लाख बार कुर्बान जाता हूँ। हे प्रभु ! मुझे संतों की चरण–धूलि प्रदान कीजिए॥१॥ हे प्रभु ! तुम ही जीवों के दाता हो और तुम ही विधाता हो। तुम सर्वशक्तिमान हो और तुम ही सदैव सुख देने वाले हो। हे प्रभु ! सभी जीव तुझसे ही मनोकामनाएँ प्राप्त करते हैं। मेरा यह अमूल्य जीवन मेरे लिए तुझ से मिलने का एक सुनहरी अवसर है, अतः मेरा जीवन समय सफल कर दीजिए॥२॥ हे प्रभु ! जिन लोगों ने तेरे दर्शन करके अपने शरीर रूपी भवन को पवित्र कर लिया है। उन्होंने मन रूपी विषम किले पर विजय प्राप्त की है। तुम ही जीवों के दाता और तुम ही विधाता हो तथा जगत् में तेरे जैसा अन्य कोई शूरवीर नहीं॥३॥ जब संतों के चरणों की धूल मेरे माथे में लगी, तब मेरी खोटी बुद्धि और कुबुद्धि लुप्त हो गई। हे नानक ! अब मैं सत्य घर में बसता हूँ और परमात्मा का यशोगान ही करता हूँ। मेरे अन्तर्मन से मेरा झूठ भी नाश हो गया है॥४॥११॥१८॥

माझ महला ५ ॥ विसरु नाही एवड दाते ॥ करि किरपा भगतन संगि राते ॥ दिनसु रैणि जिउ तुधु धिआई एहु दानु मोहि करणा जीउ ॥ १ ॥ माटी अंधी सुरति समाई ॥ सभ किछु दीआ भलीआ जाई ॥ अनद बिनोद चोज तमासे तुधु भावै सो होणा जीउ ॥ २ ॥ जिस दा दिता सभु किछु लैणा ॥ छत्तीह अंम्रित भोजनु खाणा ॥ सेज सुखाली सीतलु पवणा सहज केल रंग करणा जीउ ॥ ३ ॥ सा बुधि दीजै जितु विसरहि नाही ॥ सा मति दीजै जितु तुधु धिआई ॥ सास सास तेरे गुण गावा ओट नानक गुर चरणा जीउ ॥ ४ ॥ १२ ॥ १९ ॥

हे इतने महान दानशील प्रभु ! मैं तुझे कदापि विस्मृत न करूँ। इसलिए मुझ पर ऐसी कृपा करो कि मेरा मन तेरे भक्तों के प्रेम में मग्न रहे। हे प्रभु ! जिस तरह तुझे अच्छा लगे, मुझे यह दान दीजिए कि दिन-रात मैं तेरा ही सिमरन करता रहूँ॥१॥ जीवों के शरीर ज्ञानहीन मिट्टी के बने हुए हैं और इन शरीरों में चेतन सुरति समाई हुई है। हे प्रभु ! तू जीवों को सबकुछ देता है। तू जीवों को रहने के लिए अच्छे स्थान देता है और ये जीव विभिन्न प्रकार के विलास, विनोद, आश्चर्यमयी कौतुक एवं मनोरंजन प्राप्त करते हैं। जो कुछ तुझे भाता है, वही होता है॥२॥ (उस परमात्मा को स्मरण करो) जिस भगवान का दिया हुआ हम सब कुछ ले रहे हैं और छत्तीस प्रकार के भोजन खा रहे हैं। हमें सुखदायक सेज सोने के लिए मिल रही है, हम शीतल पवन का आनंद लेते हैं तथा विलासपूर्ण क्रीड़ाएँ करते हैं॥३॥ हे प्रियतम प्रभु ! मुझे वह बुद्धि दीजिए, जो तुझे विस्मृत न करे। मुझे ऐसी मति प्रदान करो जिससे मैं तेरा ही ध्यान करता रहूँ। हे प्रभु ! अपने प्रत्येक श्वास से मैं तेरा यशोगान करता हूँ। नानक ने गुरु के चरणों की शरण ली है॥४॥१२॥१६॥

माझ महला ५ ॥ सिफति सालाहणु तेरा हुकमु रजाई ॥ सो गिआनु धिआनु जो तुधु भाई ॥ सोई जपु जो प्रभ जीउ भावै भाणै पूर गिआना जीउ ॥ १ ॥ अंम्रितु नामु तेरा सोई गावै ॥ जो साहिब तेरै मनि भावै ॥ तूं संतन का संत तुमारे संत साहिब मनु माना जीउ ॥ २ ॥ तूं संतन जी करहि प्रतिपाला ॥ संत खेलहि तुम संगि गोपाला ॥ अपुने संत तुधु खरे पिआरे तू संतन के प्राना जीउ ॥ ३ ॥ उन संतन कै मेरा मनु कुरबाने ॥ जिन तूं जाता जो तुधु मनि भाने ॥ तिन कै संगि सदा सुखु पाइआ हरि रस नानक त्रिपति अघाना जीउ ॥ ४ ॥ १३ ॥ २० ॥

हे प्रभु ! तेरी महिमा-स्तुति करना ही तेरे हुक्म एवं इच्छा को मानना है। जो तुझे अच्छा लगता है, उसे भला समझना ही ज्ञान एवं ध्यान है। जो पूज्य प्रभु को भाता है, वही जप है, उसकी इच्छा में रहना ही पूर्ण ज्ञान है॥१॥ हे प्रभु ! तेरा नाम अमृत है परन्तु इस नाम को वहीं गाता है, जो तेरे मन को प्यारा लगता है। तुम संतों के हो और संत तुम्हारे हैं। हे स्वामी ! संतों का चित्त तुझ में माना हुआ है॥२॥ हे ईश्वर ! तुम संतों का पालन करते हो। हे गोपाल ! संत तेरे साथ प्यार की खेल खेलते हैं। तुझे अपने संत अति प्रिय हैं। तुम अपने संतों के प्राण हो॥३॥ मेरा मन उन संतों पर कुर्बान जाता है, जिन्होंने तुझे पहचान लिया है और जो तेरे मन को अच्छे लगते हैं। उनकी संगति में रहकर मैंने सदैव सुख पा लिया है। हे नानक ! हरि रस का पान करके मैं तृप्त एवं संतुष्ट हो गया हूँ॥४॥ १३॥ २०॥

माझ महला ५ ॥ तूं जलनिधि हम मीन तुमारे ॥ तेरा नामु बूंद हम चात्रिक तिखहारे ॥ तुमरी आस पिआसा तुमरी तुम ही संगि मनु लीना जीउ ॥ १ ॥ जिउ बारिकु पी खीरु अघावै ॥ जिउ निरधनु धनु देखि सुखु पावै ॥ त्रिखावंत जलु पीवत ठंढा तिउ हरि संगि इहु मनु भीना जीउ ॥ २ ॥ जिउ अंधिआरै दीपकु परगासा ॥ भरता चितवत पूरन आसा ॥ मिलि प्रीतम जिउ होत अनंदा तिउ हरि रंगि मनु रंगीना जीउ ॥ ३ ॥ संतन मोकउ हरि मारगि पाइआ ॥ साध क्रिपालि हरि संगि गिझाइआ ॥ हरि हमरा हम हरि के दासे नानक सबदु गुरू सचु दीना जीउ ॥ ४ ॥ १४ ॥ २१ ॥

हे परमेश्वर ! तुम जलनिधि हो और हम जल में रहने वाली तेरी मछलियाँ हैं। तेरा नाम वर्षा की बूँद है और हम प्यासे पपीहे हैं। तुम ही मेरी आशा हो और मुझे तेरे नाम रूपी अमृत का पान करने की प्यास लगी हुई है। मुझ पर ऐसी कृपा करो ताकि मेरा मन तुझ में ही लीन हुआ रहे॥१॥ जिस

तरह बालक दुग्धपान करके तृप्त होता है, जैसे एक निर्धन दौलत मिल जाने पर प्रसन्न होता है, जैसे प्यासा पुरुष शीतल जल पान करके शीतल हो जाता है वैसे ही मेरा यह मन भगवान के प्रेम में भीग गया है॥२॥ जिस तरह दीपक अंधेरे में प्रकाश कर देता है, जिस तरह अपने पति का ध्यान करने वाली पत्नी की आशा पूरी हो जाती है, जिस तरह प्राणी अपने प्रियतम से मिलकर प्रसन्न होता है, वैसे ही मेरा यह मन भगवान के प्रेम में मग्न हो गया है॥३॥ संतजनों ने मुझे प्रभु के मार्ग लगा दिया है। संतों की कृपा से मेरा मन भगवान से मिल गया है। भगवान मेरा स्वामी है और मैं भगवान का सेवक हूँ। हे नानक! गुरदेव ने मुझे सत्य नाम का दान दिया है॥४॥१४॥२१॥

माझ महला ५ ॥ अंम्रित नामु सदा निरमलीआ ॥ सुखदाई दूख बिडारन हरीआ ॥ अवरि साद चखि सगले देखे मन हरि रसु सभ ते मीठा जीउ ॥ १ ॥ जो जो पीवै सो त्रिपतावै ॥ अमरु होवै जो नाम रसु पावै ॥ नाम निधान तिसहि परापति जिसु सबदु गुरू मनि वूठा जीउ ॥ २ ॥ जिनि हरि रसु पाइआ सो त्रिपति अघाना ॥ जिनि हरि सादु पाइआ सो नाहि डुलाना ॥ तिसहि परापति हरि हरि नामा जिसु मसतकि भागीठा जीउ ॥ ३ ॥ हरि इकसु हथि आइआ वरसाणे बहुतेरे ॥ तिसु लगि मुकतु भए घणेरे ॥ नामु निधाना गुरमुखि पाईऐ कहु नानक विरली डीठा जीउ ॥ ४ ॥ १५ ॥ २२ ॥

भगवान का अमृतमयी नाम सदैव ही निर्मल रहता है। भगवान सुख देने वाला और दुर्खो का नाश करने वाला है। हे मेरे मन! तूने अन्य स्वाद चखकर देख लिए हैं परन्तु हरि-रस ही सबसे मीठा है॥१॥ जो कोई भी इस हरि-रस का पान करता है, वह प्रसन्न हो जाता है। जो नाम रस को प्राप्त कर लेता है, वह अमर हो जाता है। नाम की निधि उसको मिलती है, जिसके हृदय में गुरु की वाणी वास करती है॥२॥ जिसने भी हरि रस को पाया है, वह तृप्त हो गया है। जो व्यक्ति हरि-रस का स्वाद प्राप्त कर लेता है, वह फिर कभी डगमगाता नहीं। भगवान का हरि नाम उसे ही प्राप्त होता है, जिसके मस्तक पर भाग्य विद्यमान होता है॥३॥ परमात्मा अकेले गुरु के हाथ लगा है, जिससे बहुत ही लाभ प्राप्त करते हैं। उससे संगति करके बहुत सारे लोग मुक्त हो जाते हैं। नाम की निधि गुरदेव से ही प्राप्त होती है। हे नानक! उस नाम-निधि के विरले पुरुषों ने ही दर्शन किए हैं॥४॥ १५॥२२॥

माझ महला ५ ॥ निधि सिधि रिधि हरि हरि हरि मेरै ॥ जनमु पदारथु गहिर गंभीरै ॥ लाख कोट खुसीआ रंग रावै जो गुर लागा पाई जीउ ॥ १ ॥ दरसनु पेखत भए पुनीता ॥ सगल उधारे भाई मीता ॥ अगम अगोचरु सुआमी अपुना गुर किरपा ते सचु धिआई जीउ ॥ २ ॥ जा कउ खोजहि सरब उपाए ॥ वडभागी दरसनु को विरला पाए ॥ ऊच अपार अगोचर थाना ओहु महलु गुरू देखाई जीउ ॥ ३ ॥ गहिर गंभीर अंम्रित नामु तेरा ॥ मुकति भइआ जिसु रिदै वसेरा ॥ गुरि बंधन तिन के सगले काटे जन नानक सहजि समाई जीउ ॥ ४ ॥ १६ ॥ २३ ॥

हरि-परमेश्वर का हरि-नाम ही मेरी निधियाँ, सिद्धियाँ एवं ऋद्धियाँ हैं। गहरे एवं गम्भीर ईश्वर की दया से मुझे दुर्लभ मनुष्य जन्म मिला है। जो प्राणी गुरु की चरण-सेवा में लगा है, वह लाखों, करोड़ों खुशियाँ एवं आनन्द भोगता है॥१॥ गुरु के दर्शन करके प्राणी पवित्र हो जाता है और वह अपने भ्राताओं एवं सज्जनों को बचा लेता है। गुरदेव की दया से मैं अपने अगम्य, अगोचर व महान सत्य परमात्मा का चिन्तन करता हूँ॥२॥ जिस भगवान की उसके उत्पन्न किए हुए समस्त जीव खोज करते रहते हैं, उसके दर्शन कोई विरला भाग्यशाली ही प्राप्त करता है। प्रभु का निवास सर्वोच्च, अपार एवं अगोचर है तथा गुरु ने मुझे प्रभु निवास के दर्शन करवा दिए हैं॥३॥ हे प्रभु! तू

गहरा और गम्भीर है, तेरा नाम अमृत रूप है। जिसके हृदय में प्रभु वास करता है, वह मुक्त हो जाता है। हे नानक! गुरदेव ने जिनके समस्त बन्धन काट दिए हैं, वह सहज ही प्रभु में विलीन हो जाता है॥४॥१६॥२३॥

माझ महला ५ ॥ प्रभ किरपा ते हरि हरि धिआवउ ॥ प्रभू दइआ ते मंगलु गावउ ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत हरि धिआईऐ सगल अवरदा जीउ ॥ १ ॥ नामु अउखधु मोकउ साधू दीआ ॥ किलबिख काटे निरमलु थीआ ॥ अनदु भइआ निकसी सभ पीरा सगल बिनासे दरदा जीउ ॥ २ ॥ जिस का अंगु करे मेरा पिआरा ॥ सो मुकता सागर संसारा ॥ सति करे जिनि गुरू पछाता सो काहे कउ डरदा जीउ ॥ ३ ॥ जब ते साधू संगति पाए ॥ गुर भेटत हउ गई बलाए ॥ सासि सासि हरि गावै नानकु सतिगुर ढाकि लीआ मेरा पड़दा जीउ ॥ ४ ॥ १७ ॥ २४ ॥

प्रभु की कृपा से मैं हरि–परमेश्वर का ध्यान करता हूँ। प्रभु की दया से मैं उसका मंगल गायन करता हूँ। उठते–बैठते, सोते और जागते सब अवस्थाओं में हमें हरि का ध्यान करना चाहिए॥१॥ संतों ने मुझे नाम रूपी औषधि प्रदान की है। इसने मेरे समस्त पाप काट दिए हैं और मैं पवित्र हो गया हूँ। मेरी सारी पीड़ा दूर हो गई है और मेरे कष्ट मिट गए हैं तथा बड़ा आनंद प्राप्त हो रहा है॥२॥ मेरा प्रियतम प्रभु जिसकी सहायता करता है, वह संसार सागर से मुक्त हो जाता है। जिस व्यक्ति ने गुरु को सत्य रूप में समझ लिया है, वह मृत्यु से क्यों भयभीत हो॥३॥ जब से मैंने साधु की संगति प्राप्त की है, तब से गुरु को मिलने से अहंकार का भूत दूर हो गया है। हे प्रभु! श्वास–श्वास से नानक परमात्मा की कीर्ति गायन करता है। सतिगुरु ने मेरे पाप ढांप लिए हैं॥४॥१७॥२४॥

माझ महला ५ ॥ ओति पोति सेवक संगि राता ॥ प्रभ प्रतिपाले सेवक सुखदाता ॥ पाणी पखा पीसउ सेवक कै ठाकुर ही का आहरु जीउ ॥ १ ॥ काटि सिलक प्रभि सेवा लाइआ ॥ हुकमु साहिब का सेवक मनि भाइआ ॥ सोई कमावै जो साहिब भावै सेवकु अंतरि बाहरि माहरु जीउ ॥ २ ॥ तूं दाना ठाकुरु सभ बिधि जानहि ॥ ठाकुर के सेवक हरि रंग माणहि ॥ जो किछु ठाकुर का सो सेवक का सेवकु ठाकुर ही संगि जाहरु जीउ ॥ ३ ॥ अपुनै ठाकुरि जो पहिराइआ ॥ बहुरि न लेखा पुछि बुलाइआ ॥ तिसु सेवक कै नानक कुरबाणी सो गहिर गभीरा गउहरु जीउ ॥ ४ ॥ १८ ॥ २५ ॥

भगवान अपने सेवकों से ताने–बाने की तरह मिला रहता है। सुखदाता परमेश्वर अपने सेवकों का पालन करता है। हे ईश्वर! जो भक्त तेरे भजन में लीन हैं, मैं उनके घर पानी ढ़ोता, पंखा करता एवं चक्की से आटा पीसता हूँ॥१॥ हे परमात्मा! आपने मेरी वासना रूपी फाँसी को काट मुझे अपनी सेवा में प्रवृत्त कर लिया है। इसलिए प्रभु का हुक्म सेवक के मन को अच्छा लगता है। सेवक वही कर्म करता है जो प्रभु के मन को भला लगता है। इसलिए सेवक भीतर–बाहर सेवा करने में परिपक्व हो जाता है॥२॥ हे प्रभु! तुम बुद्धिमान स्वामी हो और समस्त युक्तियों में सर्वज्ञ हो। परमात्मा के सेवक ईश्वर की प्रीति का आनन्द भोगते हैं। जो कुछ परमात्मा का है, वही उसके सेवक का है। सेवक अपने परमात्मा की संगति में जगत् में लोकप्रिय होता है। जिसको उसका परमात्मा प्रतिष्ठा की पोशाक पहनाता है, उसे फिर बुलाकर उसके कर्मों का लेखा नहीं पूछता। हे नानक! मैं उस सेवक पर सदैव कुर्बान हूँ जो प्रभु की तरह अथाह, गंभीर एवं अमूल्य मोती बन जाता है॥४॥१८॥२५॥

माझ महला ५ ॥ सभ किछु घर महि बाहरि नाही ॥ बाहरि टोलै सो भरमि भुलाही ॥ गुर परसादी जिनी अंतरि पाइआ सो अंतरि बाहरि सुहेला जीउ ॥ १ ॥ झिमि झिमि वरसै अंम्रित धारा ॥ मनु पीवै

सुनि सबदु बीचारा ॥ अनद बिनोद करे दिन राती सदा सदा हरि केला जीउ ॥ २ ॥ जनम जनम का विछुड़िआ मिलिआ ॥ साध क्रिपा ते सूका हरिआ ॥ सुमति पाए नामु धिआए गुरमुखि होए मेला जीउ ॥ ३ ॥ जल तरंगु जिउ जलहि समाइआ ॥ तिउ जोती संगि जोति मिलाइआ ॥ कहु नानक भ्रम कटे किवाड़ा बहुड़ि न होईऐ जउला जीउ ॥ ४ ॥ १६ ॥ २६ ॥

सब कुछ शरीर रूपी घर में ही है और शरीर से बाहर कुछ भी नहीं है। जो व्यक्ति भगवान को हृदय से बाहर ढूँढता है, वह भ्रम में पड़कर भटकता रहता है। गुरु की दया से जिसने भगवान को हृदय में पाया है, वह अन्दर एवं बाहर से सुखी है॥ १॥ उसके अन्दर नाम रूपी अमृत की धारा रिमझिम कर बरसती है। मन उस नाम रूपी अमृत का पान करता है। अनहद शब्द को सुनकर मन उस बारे चिन्तन करता है। मेरा मन दिन-रात आनंद प्राप्त करता है और भगवान के साथ विलास करता है॥२॥ मैं भगवान से जन्म-जन्मांतरों का बिछुड़ा हुआ उससे मिल गया हूँ। साधु की कृपा से मेरा मुरझाया हुआ मन प्रफुल्लित हो गया है। गुरु से सुमति प्राप्त करके नाम-सिमरन करने से मेरा भगवान से मिलाप हो गया है॥३॥ जिस तरह जल की लहरें जल में मिल जाती हैं, इसी तरह मेरी ज्योति परमात्मा की ज्योति में मिल गई है। हे नानक! भगवान ने भ्रम रूपी किवाड़ काट दिए हैं और अब मेरा मन पुनः माया के पीछे नहीं भटकेगा॥४॥१६॥२६॥

माझ महला ५ ॥ तिसु कुरबाणी जिनि तूं सुणिआ ॥ तिसु बलिहारी जिनि रसना भणिआ ॥ वारि वारि जाई तिसु विटहु जो मनि तनि तुधु आराधे जीउ ॥ १ ॥ तिसु चरण पखाली जो तेरै मारगि चालै ॥ नैन निहाली तिसु पुरख दइआलै ॥ मनु देवा तिसु अपुने साजन जिनि गुर मिलि सो प्रभु लाधे जीउ ॥ २ ॥ से वडभागी जिनि तुम जाणे ॥ सभ कै मधे अलिपत निरबाणे ॥ साध कै संगि उनि भउजलु तरिआ सगल दूत उनि साधे जीउ ॥ ३ ॥ तिन की सरणि परिआ मनु मेरा ॥ माणु ताणु तजि मोहु अंधेरा ॥ नामु दानु दीजै नानक कउ तिसु प्रभ अगम अगाधे जीउ ॥ ४ ॥ २० ॥ २७ ॥

हे ईश्वर! मैं उस महापुरुष पर कुर्बान जाता हूँ, जिसने तेरा नाम श्रवण किया है। जिसने अपनी जिह्वा से तेरे नाम का उच्चारण किया है, मैं उस महापुरुष पर कुर्बान जाता हूँ। हे प्रभु! जो प्राणी मन-तन से तेरी आराधना करता है, मैं सदैव ही तन-मन से उस पर न्यौछावर हूँ॥१॥ मैं उस व्यक्ति के चरण धोता हूँ जो तेरे मार्ग पर चलता है। मैं उस दयालु महापुरुष के नयनों से दर्शन करता हूँ। मैं अपना मन अपने उस मित्र को अर्पण करता हूँ, जिसने गुरु से मिलकर उस प्रभु को ढूँढ लिया है॥२॥ हे भगवान! वे मनुष्य बड़े भाग्यशाली हैं, जिन्होंने तुझे समझ लिया है। वे पुरुष सबके मध्य निर्लिप्त और निर्विकार हैं। संतों की संगति करके वे भवसागर से पार हो जाते हैं और काम आदि सकल दूत वश में कर लिए हैं॥३॥ अहंकार, बल एवं अँधेरा पैदा करने वाले मोह को त्याग कर मेरा मन उनकी शरण में आ गया है। हे प्रभु! नानक को अगम्य, अगोचर परमात्मा के नाम का दान प्रदान कीजिए॥४॥२०॥२७॥

माझ महला ५ ॥ तूं पेडु साख तेरी फूली ॥ तूं सूखमु होआ असथूली ॥ तूं जलनिधि तूं फेनु बुदबुदा तुधु बिनु अवरु न भालीऐ जीउ ॥ १ ॥ तूं सूतु मणीए भी तूंहै ॥ तूं गंठी मेरु सिरि तूंहै ॥ आदि मधि अंति प्रभु सोई अवरु न कोइ दिखालीऐ जीउ ॥ २ ॥ तूं निरगुणु सरगुणु सुखदाता ॥ तूं निरबाणु रसीआ रंगि राता ॥ अपणे करतब आपे जाणहि आपे तुधु समालीऐ जीउ ॥ ३ ॥ तूं ठाकुरु सेवकु फुनि आपे ॥ तूं गुपतु परगटु प्रभ आपे ॥ नानक दासु सदा गुण गावै इक भोरी नदरि निहालीऐ जीउ ॥ ४ ॥ २१ ॥ २८ ॥

हे पूज्य परमेश्वर ! तू एक पेड़ है और यह सृष्टि तेरी प्रफुल्लित हुई शाखा है। तू सूक्ष्म रूप से स्थूल रूप में बदल गया है। तू जल का सागर है और तू ही इसकी झाग से पैदा हुआ बुलबुला है। तेरे अलावा जगत् में मुझे अन्य कोई दिखाई नहीं देता॥१॥ हे ईश्वर ! देहि रूपी माला के लिए तुम ही प्राण रूपी सूत हो। उस माला की गांठ भी तुम हो और सब मनकों के ऊपर मेरु मनका भी तुम ही हो। जगत् के आदि, मध्य और अंत में वही परमेश्वर है, तुझ से अलग कोई दृष्टिगोचर नहीं होता॥२॥ हे सुखदाता परमेश्वर ! तू ही निर्गुण एवं तू ही सगुण है। तू स्वयं ही निर्लेप, आनंदकारी और समस्त रंगों में अनुरक्त है। हे प्रभु ! अपनी कला में तुम स्वयं ही दक्ष हो और तुम स्वयं ही अपना सिमरन करते हो॥२१॥ तुम ठाकुर हो और फिर तुम स्वयं ही सेवक। हे पारब्रह्म ! तू स्वयं ही गुप्त भी है और तू ही प्रगट भी है। सेवक नानक सदैव ही प्रभु का यशोगान करता है। एक बार तो अपनी दया दृष्टि से देख॥४॥२१॥२८॥

माझ महला ५ ॥ सफल सु बाणी जितु नामु वखाणी ॥ गुर परसादि किनै विरलै जाणी ॥ धंनु सु वेला जितु हरि गावत सुनणा आए ते परवाना जीउ ॥ १ ॥ से नेत्र परवाणु जिनी दरसनु पेखा ॥ से कर भले जिनी हरि जसु लेखा ॥ से चरण सुहावे जो हरि मारगि चले हउ बलि तिन संगि पछाणा जीउ ॥ २ ॥ सुणि साजन मेरे मीत पिआरे ॥ साधसंगि खिन माहि उधारे ॥ किलविख काटि होआ मनु निरमलु मिटि गए आवण जाणा जीउ ॥ ३ ॥ दुइ कर जोड़ि इकु बिनउ करीजै ॥ करि किरपा डुबदा पथरु लीजै ॥ नानक कउ प्रभ भए क्रिपाला प्रभ नानक मनि भाणा जीउ ॥ ४ ॥ २२ ॥ २९ ॥

वही वाणी शुभ फलदायक है, जिससे हरि के नाम का जाप किया जाता है। कोई विरला ही पुरुष है, जिसने गुरु की कृपा से ऐसी वाणी को समझा है। वह समय बड़ा शुभ है, जब परमात्मा का यशोगान किया जाता एवं सुना जाता है। जगत् में जन्म लेकर उनका आगमन ही स्वीकृत है, जो भगवान का यश गाते एवं सुनते हैं॥ १॥ भगवान को वही नेत्र स्वीकृत होते हैं, जिन्होंने भगवान के दर्शन किए हैं। वह हाथ प्रशंसनीय है जो (ईश्वर की) उपमा लिखते हैं। वह चरण सुन्दर हैं जो परमेश्वर के मार्ग पर चलते हैं। मैं उस पर कुर्बान जाता हूँ जिनकी संगति करके मैंने भगवान को पहचान लिया है॥ २॥ हे मेरे प्रिय मित्र एवं सज्जन ! सुनो, भगवान ने मुझे संतों की संगति में मिलाकर एक क्षण में ही मेरा उद्धार कर दिया है। उसने मेरे पाप काट दिए हैं और मेरा मन निर्मल हो गया है। अब मेरा जन्म-मरण का चक्र मिट गया है॥ ३॥ हे प्रभु ! अपने दोनों हाथ जोड़कर मैं एक प्रार्थना करता हूँ। मुझ पर दया कीजिए और डूबते हुए पत्थर को बचा लीजिए। भगवान नानक पर दयालु हो गया है और नानक के मन को भगवान ही अच्छा लगता है॥ ४॥ २२॥ २६॥

माझ महला ५ ॥ अंम्रित बाणी हरि हरि तेरी ॥ सुणि सुणि होवै परम गति मेरी ॥ जलनि बुझी सीतलु होइ मनूआ सतिगुर का दरसनु पाए जीउ ॥ १ ॥ सूखु भइआ दुखु दूरि पराना ॥ संत रसन हरि नामु वखाना ॥ जल थल नीरि भरे सर सुभर बिरथा कोइ न जाए जीउ ॥ २ ॥ दइआ धारी तिनि सिरजनहारे ॥ जीअ जंत सगले प्रतिपारे ॥ मिहरवान किरपाल दइआला सगले त्रिपति अघाए जीउ ॥ ३ ॥ वणु त्रिणु त्रिभवणु कीतोनु हरिआ ॥ करणहारि खिन भीतरि करिआ ॥ गुरमुखि नानक तिसै अराधे मन की आस पुजाए जीउ ॥ ४ ॥ २३ ॥ ३० ॥

हे हरि-परमेश्वर ! तेरी वाणी अमृत है। इस अमृत वाणी को सुन-सुनकर मुझे परमगति प्राप्त हुई है। सतिगुरु के दर्शन करके मेरे मन की तृष्णा रूपी जलन बुझ गई है और मेरा मन शीतल हो

गया है॥ १॥ जब सन्तजन अपनी जिह्वा से परमात्मा के नाम का उच्चारण करते हैं, तो उसे सुनकर बड़ा सुख प्राप्त होता है और दुख दूर भाग जाते हैं। जैसे वर्षा होने से तमाम सरोवर जल से भलीभांति भर जाते हैं, वैसे ही गुरु के पास आया कोई भी व्यक्ति खाली हाथ नहीं जाता॥ २॥ सृजनहार प्रभु ने अपनी दया न्यौछावर की है और समस्त जीव-जन्तुओं की पालना की है। भगवान मेहरबान है, कृपालु एवं बड़ा दयालु है। भगवान की दी हुई नियामतों से सभी जीव-जन्तु तृप्त एवं संतुष्ट हो गए हैं। वन, तृण, तीनों लोक प्रभु ने हरे-भरे कर दिए हैं। कर्त्ता परमेश्वर ने एक क्षण में ही यह सब कुछ कर दिया। हे नानक! जो व्यक्ति गुरु के माध्यम से भगवान की आराधना करता है, भगवान उसके मन की आशा पूरी कर देता है॥ ४॥ २३॥ ३०॥

माझ महला ५ ॥ तूं मेरा पिता तूंहै मेरा माता ॥ तूं मेरा बंधपु तूं मेरा भ्राता ॥ तूं मेरा राखा सभनी थाई ता भउ केहा काड़ा जीउ ॥ १ ॥ तुमरी क्रिपा ते तुधु पछाणा ॥ तूं मेरी ओट तूंहै मेरा माणा ॥ तुझ बिनु दूजा अवरु न कोई सभु तेरा खेलु अखाड़ा जीउ ॥ २ ॥ जीअ जंत सभि तुधु उपाए ॥ जितु जितु भाणा तितु तितु लाए ॥ सभ किछु कीता तेरा होवै नाही किछु असाड़ा जीउ ॥ ३ ॥ नामु धिआइ महा सुखु पाइआ ॥ हरि गुण गाइ मेरा मनु सीतलाइआ ॥ गुरि पूरै वजी वाधाई नानक जिता बिखाड़ा जीउ ॥ ४ ॥ २४ ॥ ३१ ॥

हे भगवान! तू ही मेरा पिता है एवं तू ही मेरी माता है। तू ही मेरा रिश्तेदार है और तू ही मेरा भ्राता है। जब तू ही समस्त स्थानों में मेरा रक्षक है तो मुझे कैसा भय व चिंता कैसी होगी॥ १॥ तुम्हारी दया से मैं तुझे समझता हूँ। तू ही मेरी शरण है और तू ही मेरी प्रतिष्ठा है। तेरे बिना मेरा अन्य कोई नहीं। यह सारी सृष्टि तेरी एक खेल है और यह धरती जीवों के लिए जीवन खेल का मैदान है॥ २॥ हे भगवान! समस्त जीव-जन्तु तूने ही उत्पन्न किए हैं। जिस तरह तेरी इच्छा है वैसे ही कार्यों में तूने उन्हें कार्यरत किया है। जगत् में जो कुछ भी हो रहा है, सब तेरा ही किया हो रहा है। इसमें हमारा कुछ भी नहीं॥ ३॥ तेरे नाम की आराधना करने से मुझे महासुख प्राप्त हुआ है। हरि प्रभु का यशोगान करने से मेरा मन शीतल हो गया है। हे नानक! पूर्ण गुरु की दया से मैंने काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार रूपी विषम मैदान-ए-जंग जीत लिया है और मुझे विजय की शुभकामनाएँ मिल रही हैं॥ ४॥ २४॥ ३१॥

माझ महला ५ ॥ जीअ प्राण प्रभ मनहि अधारा ॥ भगत जीवहि गुण गाइ अपारा ॥ गुण निधान अंम्रितु हरि नामा हरि धिआइ धिआइ सुखु पाइआ जीउ ॥ १ ॥ मनसा धारि जो घर ते आवै ॥ साधसंगि जनमु मरणु मिटावै ॥ आस मनोरथु पूरनु होवै भेटत गुर दरसाइआ जीउ ॥ २ ॥ अगम अगोचर किछु मिति नही जानी ॥ साधिक सिध धिआवहि गिआनी ॥ खुदी मिटी चूका भोलावा गुरि मन ही महि प्रगटाइआ जीउ ॥ ३ ॥ अनद मंगल कलिआण निधाना ॥ सूख सहज हरि नामु वखाना ॥ होइ क्रिपालु सुआमी अपना नाउ नानक घर महि आइआ जीउ ॥ ४ ॥ २५ ॥ ३२ ॥

भगवान अपने भक्तों की आत्मा, प्राण एवं मन का आधार है। भक्त भगवान की अपार महिमा-स्तुति गायन करके ही जीते हैं। भगवान का नाम अमृत एवं गुणों का भण्डार है और भगवान के भक्त उसका नाम-सिमरन करके बड़ा सुख प्राप्त करते हैं॥ १॥ जो व्यक्ति अभिलाषा धारण करके घर से आता है, वह संतों की संगति करके अपना जन्म-मरण का चक्र मिटा लेता है। गुरु के दर्शन करने से समस्त मनोरथ व दिल की इच्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं॥ २॥ अगम्य व अगोचर प्रभु का अंत

जाना नहीं जा सकता। ज्ञानी, सिद्ध, साधक उस भगवान का ही ध्यान करते हैं। जिस व्यक्ति का अहंकार मिट जाता है और भ्रम दूर हो जाता है, गुरु उसके हृदय में ही भगवान को प्रगट कर देते हैं॥ ३॥ भगवान के नाम का जाप करने से आनंद एवं खुशियाँ प्राप्त हो जाती हैं और यह मुक्तिदायक एवं गुणों का भण्डार है। जो व्यक्ति भगवान के नाम का सिमरन करता है, उसे सुख एवं आनंद उपलब्ध हो जाते हैं। हे नानक! जिस व्यक्ति पर मेरा स्वामी कृपालु हो जाता है, उसके हृदय–घर में ही भगवान का नाम आ बसता है॥ ४॥ २५॥ ३२॥

माझ महला ५ ॥ सुणि सुणि जीवा सोइ तुमारी ॥ तूं प्रीतमु ठाकुरु अति भारी ॥ तुमरे करतब तुम ही जाणहु तुमरी ओट गोपाला जीउ ॥ १ ॥ गुण गावत मनु हरिआ होवै ॥ कथा सुणत मलु सगली खोवै ॥ भेटत संगि साध संतन कै सदा जपउ दइआला जीउ ॥ २ ॥ प्रभु अपुना सासि सासि समारउ ॥ इह मति गुर प्रसादि मनि धारउ ॥ तुमरी क्रिपा ते होइ प्रगासा सरब मइआ प्रतिपाला जीउ ॥ ३ ॥ सति सति सति प्रभु सोई ॥ सदा सदा सद आपे होई ॥ चलित तुमारे प्रगट पिआरे देखि नानक भए निहाला जीउ ॥ ४ ॥ २६ ॥ ३३ ॥

हे प्रभु! अपने कानों से तेरी शोभा सुन–सुनकर ही जीता हूँ। हे मेरे महान ठाकुर! तुम मेरे प्रियतम हो। हे गोपाल! अपने कर्म तू ही जानता है। मुझे तेरा ही आश्रय है॥ १॥ तेरी महिमा–स्तुति गाने से मन प्रफुल्लित हो जाता है। तेरी कथा सुनने से मन के विकारों की तमाम मलिनता दूर हो जाती है। साधुओं एवं संतों की संगति में मिलकर मैं सदैव दया के घर परमात्मा का चिन्तन करता हूँ॥ २॥ अपने प्रभु को मैं श्वास–श्वास से स्मरण करता हूँ। यह मति गुरु की कृपा से अपने मन में धारण करो। हे भगवान! तेरी कृपा से ही मेरे मन में तेरी ज्योति का प्रकाश हुआ है। तू समस्त जीव–जन्तुओं तथा सबका रक्षक है॥ ३॥ वह प्रभु सदैव ही सत्य है और आप ही सदैव होता है। हे प्रिय प्रभु! तेरी अद्भुत लीलाएँ जगत् में प्रत्यक्ष हैं। हे नानक! मैं प्रभु की उन अद्भुत लीलाओं को देखकर कृतार्थ हो गया हूँ॥ ४॥ २६॥ ३३॥

माझ महला ५ ॥ हुकमी वरसण लागे मेहा ॥ साजन संत मिलि नामु जपेहा ॥ सीतल सांति सहज सुखु पाइआ ठाढि पाई प्रभि आपे जीउ ॥ १ ॥ सभु किछु बहुतो बहुतु उपाइआ ॥ करि किरपा प्रभि सगल रजाइआ ॥ दाति करहु मेरे दातारा जीअ जंत सभि धापे जीउ ॥ २ ॥ सचा साहिबु सची नाई ॥ गुर परसादि तिसु सदा धिआई ॥ जनम मरण भै काटे मोहा बिनसे सोग संतापे जीउ ॥ ३ ॥ सासि सासि नानकु सालाहे ॥ सिमरत नामु काटे सभि फाहे ॥ पूरन आस करी खिन भीतरि हरि हरि हरि गुण जापे जीउ ॥ ४ ॥ २७ ॥ ३४ ॥

भगवान के हुक्म से मेघ बरसने लगे हैं। सज्जन संत मिलकर भगवान के नाम का जाप करते हैं। संतों के हृदय शीतल एवं शांत हो गए हैं और उन्हें सहज सुख उपलब्ध हो गया है। भगवान ने स्वयं ही संतों के हृदय में शांति प्रदान की है॥ १॥ भगवान ने सब कुछ अत्यधिक मात्रा में उत्पन्न किया है। अपनी कृपा से परमात्मा ने सभी को सन्तुष्ट कर दिया है। हे मेरे दाता! अपनी देन प्रदान करो ताकि सभी जीव–जन्तु तृप्त हो जाएँ॥ २॥ मेरा मालिक प्रभु सदैव सत्य है और उसकी महिमा भी सत्य है। गुरु की कृपा से मैं सदैव ही उसका ध्यान करता रहता हूँ। उस प्रभु ने मेरा जन्म–मरण का भय एवं माया का मोह नाश कर दिया है॥३॥ नानक तो श्वास–श्वास से भगवान की महिमा–स्तुति ही करता है। भगवान का सिमरन करने से उसकी तमाम जंजीरें कट गई हैं। भगवान ने एक क्षण में उसकी आशा पूरी कर दी है, अब तो वह भगवान के नाम का ही जाप करता रहता है और उसकी ही महिमा गाता रहता है॥ ४॥ २७॥ ३४॥

आउ साजन संत मीत पिआरे ॥ मिलि गावह गुण अगम अपारे ॥ गावत सुणत सभे ही मुकते सो धिआईऐ जिनि हम कीए जीउ ॥ १ ॥ जनम जनम के किलबिख जावहि ॥ मनि चिंदे सेई फल पावहि ॥ सिमरि साहिबु सो सचु सुआमी रिजकु सभसु कउ दीए जीउ ॥ २ ॥ नामु जपत सरब सुखु पाईऐ ॥ सभु भउ बिनसै हरि हरि धिआईऐ ॥ जिनि सेविआ सो पारगिरामी कारज सगले थीए जीउ ॥ ३ ॥ आइ पइआ तेरी सरणाई ॥ जिउ भावै तिउ लैहि मिलाई ॥ करि किरपा प्रभु भगती लावहु सचु नानक अंम्रितु पीए जीउ ॥ ४ ॥ २८ ॥ ३५ ॥

हे मेरे सन्तजनों एवं प्रिय मित्रों ! आओ हम मिलकर अगम्य व अनन्त प्रभु का यशोगान करें। भगवान की महिमा गाने एवं सुनने वाले सभी व्यक्ति माया के बन्धनों से मुक्त हो जाते हैं। आओ हम उस प्रभु की आराधना करें जिसने हमें उत्पन्न किया है॥ १॥ भगवान का सिमरन करने से जन्म–जन्मांतरों के तमाम पाप नष्ट हो जाते हैं और मनोवांछित फल प्राप्त होता है। उस सत्य प्रभु–परमेश्वर की आराधना करो, जो सभी को भोजन पदार्थ देता है॥ २॥ भगवान के नाम का जाप करने से सर्व सुख मिल जाते हैं। हरि–प्रभु की आराधना करने से तमाम भय नाश हो जाते हैं। जो परमात्मा की सेवा करता है, वह पूर्ण पुरुष है और उसके समस्त कार्य संवर जाते हैं॥ ३॥ हे प्रभु ! मैं तेरी शरण में आ गया हूँ, जैसे तुझे अच्छा लगता है वैसे ही मुझे अपने साथ मिला लो। हे प्रभु ! कृपा करके मुझे अपनी भक्ति में लगा लो जिससे हे नानक ! वह प्रभु के सत्य नाम रूपी अमृत का पान करता रहे॥ ४॥ २८॥ ३५॥

माझ महला ५ ॥ भए क्रिपाल गोविंद गुसाई ॥ मेघु वरसै सभनी थाई ॥ दीन दइआल सदा किरपाला ठाढि पाई करतारे जीउ ॥ १ ॥ अपुने जीअ जंत प्रतिपारे ॥ जिउ बारिक माता संमारे ॥ दुख भंजन सुख सागर सुआमी देत सगल आहारे जीउ ॥ २ ॥ जलि थलि पूरि रहिआ मिहरवाना ॥ सद बलिहारि जाईऐ कुरबाना ॥ रैणि दिनसु तिसु सदा धिआई जि खिन महि सगल उधारे जीउ ॥ ३ ॥ राखि लीए सगले प्रभि आपे ॥ उतरि गए सभ सोग संतापे ॥ नामु जपत मनु तनु हरीआवलु प्रभ नानक नदरि निहारे जीउ ॥ ४ ॥ २९ ॥ ३६ ॥

जैसे बादल समस्त स्थानों पर वर्षा करता है, वैसे ही सृष्टि का स्वामी गोविन्द गुसाईं समस्त जीवों पर दयालु हो गया है। सृष्टिकर्त्ता सदैव ही दीनदयालु एवं कृपालु है और उसने अपने भक्तों के हृदय शीतल कर दिए हैं॥ १॥ जैसे माता अपने शिशु की देखभाल करती है, वैसे ही प्रभु अपने जीव–जन्तुओं की पालना करता है। भगवान दुखनाशक एवं सुखों का सागर है। वह समस्त जीवों को खाने के लिए भोजन देता है॥ २॥ दयालु परमात्मा जल एवं धरती में सर्वत्र समाया हुआ है। मैं सदैव उस पर बलिहारी व कुर्बान जाता हूँ। दिन–रात हमें सदैव ही उस भगवान का ध्यान करना चाहिए जो एक क्षण में ही सभी का उद्धार कर देता है॥ ३॥ भगवान ने स्वयं ही अपने भक्तों की रक्षा की है और उनके सभी दुःख एवं संताप दूर हो गए हैं। हे नानक ! भगवान जब कृपा–दृष्टि से देखता है तो उसका नाम–सिमरन करने से मनुष्य का मन एवं तन हरा–भरा हो जाता है॥ ४॥ २९॥ ३६॥

माझ महला ५ ॥ जिथै नामु जपीऐ प्रभ पिआरे ॥ से असथल सोइन चउबारे ॥ जिथै नामु न जपीऐ मेरे गोइदा सेई नगर उजाड़ी जीउ ॥ १ ॥ हरि रुखी रोटी खाइ समाले ॥ हरि अंतरि बाहरि नदरि निहाले ॥ खाइ खाइ करे बदफैली जाणु विसू की वाड़ी जीउ ॥ २ ॥ संता सेती रंगु न लाए ॥ साकत संगि विकरम कमाए ॥ दुलभ देह खोई अगिआनी जड़ अपुणी आपि उपाड़ी जीउ ॥ ३ ॥ तेरी सरणि

मेरे दीन दइआला ॥ सुख सागर मेरे गुर गोपाला ॥ करि किरपा नानकु गुण गावै राखहु सरम असाड़ी जीउ ॥ ४ ॥ ३० ॥ ३७ ॥

हे प्रियतम प्रभु ! जिस स्थान पर तेरे नाम का जाप किया जाता है, वह स्थान स्वर्ण के चौबारे के तुल्य है। हे मेरे गोबिन्द ! जिस स्थान पर तेरे नाम का जाप नहीं किया जाता, वह नगर वीरान भूमि के तुल्य है॥१॥ जो व्यक्ति रूखी–सूखी रोटी खा कर भगवान का सिमरन करता रहता है, उसे भगवान घर एवं बाहर सर्वत्र कृपा–दृष्टि से देखता रहता है। जो व्यक्ति भगवान के दिए पदार्थ खा–खाकर दुष्कर्म करता रहता है, उसे विष की वाटिका समझो॥ २॥ जो व्यक्ति संतों से प्रेम नहीं करता और शाक्तों के साथ मिलकर दुष्कर्म करता है, ऐसा ज्ञानहीन व्यक्ति अपने दुर्लभ जन्म को व्यर्थ गंवा रहा है तथा वह अपनी जड़ को स्वयं ही उखाड़ रहा है॥ ३॥ हे दीनदयाल ! मैं तेरी शरण में आया हूँ। हे मेरे गुरु गोपाल ! तू सुखों का सागर है। मुझ पर कृपा करो। नानक तेरी ही महिमा गायन करता है। मेरी लाज–प्रतिष्ठा रखो॥४॥३०॥३७॥

माझ महला ५ ॥ चरण ठाकुर के रिदै समाणे ॥ कलि कलेस सभ दूरि पइआणे ॥ सांति सूख सहज धुनि उपजी साधू संगि निवासा जीउ ॥ १ ॥ लागी प्रीति न तूटै मूले ॥ हरि अंतरि बाहरि रहिआ भरपूरे ॥ सिमरि सिमरि सिमरि गुण गावा काटी जम की फासा जीउ ॥ २ ॥ अंम्रितु वरखै अनहद बाणी ॥ मन तन अंतरि सांति समाणी ॥ त्रिपति अघाइ रहे जन तेरे सतिगुरि कीआ दिलासा जीउ ॥ ३ ॥ जिस का सा तिस ते फलु पाइआ ॥ करि किरपा प्रभ संगि मिलाइआ ॥ आवण जाण रहे वडभागी नानक पूरन आसा जीउ ॥ ४ ॥ ३१ ॥ ३८ ॥

जब भगवान के सुन्दर चरण मेरे हृदय में स्थित हो गए तो मेरे तमाम दुःख एवं संताप नाश हो गए। संतों की संगति में निवास होने से मेरे अन्तर्मन में अनहद शब्द की मधुर ध्वनि उत्पन्न हो गई और मन में शांति एवं सहज सुख उपलब्ध हो गया है॥ १॥ भगवान से ऐसी प्रीति लगी है, जो कदापि नहीं टूटती। भगवान मेरे अन्दर व बाहर सर्वत्र व्यापक हो रहा है। भगवान का सदैव नाम–सिमरन करने तथा उसकी महिमा–स्तुति द्वारा मेरी मृत्यु की फाँसी कट गई है॥२॥ मेरे मन में अनहद शब्द के प्रगट होने से हरि–रस रूपी अमृत–वर्षा होने लग गई है। मेरे मन एवं तन में शांति प्रवेश कर गई है। हे भगवान ! सतिगुरु ने तेरे भक्तों को आश्वासन दिया है और हरि–रस रूपी अमृत का पान करवा कर उन्हें तृप्त एवं संतुष्ट कर दिया है॥३॥ जिस भगवान का मैं सेवक था, उससे मैंने अपनी की हुई सेवा का फल पाया है। सतिगुरु ने कृपा करके मुझे भगवान से मिला दिया है। हे नानक ! सौभाग्य से मेरा जन्म–मरण का चक्र मिट गया है और भगवान से मिलन की कामना पूरी हो गई है॥४॥३१॥३८॥

माझ महला ५ ॥ मीहु पइआ परमेसरि पाइआ ॥ जीअ जंत सभि सुखी वसाइआ ॥ गइआ कलेसु भइआ सुखु साचा हरि हरि नामु समाली जीउ ॥ १ ॥ जिस के से तिन ही प्रतिपारे ॥ पारब्रहम प्रभ भए रखवारे ॥ सुणी बेनंती ठाकुरि मेरै पूरन होई घाली जीउ ॥ २ ॥ सरब जीआ कउ देवणहारा ॥ गुर परसादी नदरि निहारा ॥ जल थल महीअल सभि त्रिपताणे साधू चरन पखाली जीउ ॥ ३ ॥ मन की इछ पुजावणहारा ॥ सदा सदा जाई बलिहारा ॥ नानक दानु कीआ दुख भंजनि रते रंगि रसाली जीउ ॥ ४ ॥ ३२ ॥ ३९ ॥

वर्षा हुई है, इसे परमेश्वर ने ही बरसाया है। इससे प्रभु ने समस्त जीव–जन्तुओं को सुखी बसा दिया है। हरि–परमेश्वर के नाम का सिमरन करने से उनकी पीड़ा दूर हो गई है और उनको सच्चा

सुख मिल गया है॥१॥ ये जीव–जन्तु जिस परमात्मा के उत्पन्न किए हुए हैं, उसने ही उनकी रक्षा की है। पारब्रह्म–परमेश्वर उनका रक्षक बन गया है। मेरे ठाकुर जी ने मेरी प्रार्थना सुन ली है और मेरी भक्ति सफल हो गई है॥२॥ परमेश्वर समस्त प्राणियों को देने वाला है। गुरु की दया से मैंने उसको अपने नेत्रों में देख लिया है। सागर, धरती एवं गगन में रहने वाले समस्त प्राणी तृप्त हो गए हैं। मैं संत–गुरु के चरण धोता हूँ॥३॥ परमात्मा मन की इच्छा पूरी करने वाला है। मैं सदैव ही उस पर कुर्बान जाता हूँ। हे नानक! दुख नाशक प्रभु ने मुझे यह दान दिया है कि मैं उसकी प्रीति में मग्न हो गया हूँ जो प्रसन्नता का घर है॥४॥३२॥३६॥

माझ महला ५ ॥ मनु तनु तेरा धनु भी तेरा ॥ तूं ठाकुरु सुआमी प्रभु मेरा ॥ जीउ पिंडु सभु रासि तुमारी तेरा जोरु गोपाला जीउ ॥ १ ॥ सदा सदा तूंहै सुखदाई ॥ निवि निवि लागा तेरी पाई ॥ कार कमावा जे तुधु भावा जा तूं देहि दइआला जीउ ॥ २ ॥ प्रभ तुम ते लहणा तूं मेरा गहणा ॥ जो तूं देहि सोई सुखु सहणा ॥ जिथै रखहि बैकुंठु तिथाई तूं सभना के प्रतिपाला जीउ ॥ ३ ॥ सिमरि सिमरि नानक सुखु पाइआ ॥ आठ पहर तेरे गुण गाइआ ॥ सगल मनोरथ पूरन होए कदे न होइ दुखाला जीउ ॥ ४ ॥ ३३ ॥ ४० ॥

हे भगवान! मेरा मन एवं तन तेरा ही दिया हुआ है और धन भी तेरा ही दिया हुआ है। हे ईश्वर! तुम मेरे ठाकुर एवं स्वामी हो। हे प्रभु! मेरे प्राण एवं तन तेरी ही पूँजी है। हे गोपाल! मेरी प्रभुता तुझ से ही है॥१॥ हे परमेश्वर! सर्वदा तुम सुख प्रदान करने वाले हो। मैं नतमस्तक होकर तुझे ही नमन करता हूँ और तेरे चरण स्पर्श करता हूँ। हे दयालु परमात्मा! मैं वही कार्य करूँगा जो तू मुझे करने के लिए देगा और जो तुझे अच्छा लगे॥ २॥ हे भगवान! मैं सबकुछ तुझ से ही लेता हूँ और तुम ही मेरे आभूषण हो। हे अकालपुरुष! जो कुछ तुम मुझे दुःख–सुख देते हो, मैं उसको सुख समझकर सहता हूँ। हे भगवान! जहाँ कहीं भी तुम मुझे रखते हो, वही मेरा स्वर्ग है। तुम सबकी रक्षा करने वाले हो॥३॥ हे नानक! उस परम पिता परमेश्वर की आराधना करने से मुझे सुख उपलब्ध हो गया है। हे प्रभु! दिन के आठों प्रहर तेरी महिमा गायन करता हूँ। उसके हृदय के समस्त मनोरथ पूर्ण हो गए हैं और अब वह कभी भी दुखी नहीं होता॥४॥३३॥४०॥

माझ महला ५ ॥ पारब्रहमि प्रभि मेघु पठाइआ ॥ जलि थलि महीअलि दह दिसि वरसाइआ ॥ सांति भई बुझी सभ तिसना अनदु भइआ सभ ठाई जीउ ॥ १ ॥ सुखदाता दुख भंजनहारा ॥ आपे बखसि करे जीअ सारा ॥ अपने कीते नो आपि प्रतिपाले पइ पैरी तिसहि मनाई जीउ ॥ २ ॥ जा की सरणि पइआ गति पाईऐ ॥ सासि सासि हरि नामु धिआईऐ ॥ तिसु बिनु होरु न दूजा ठाकुरु सभ तिसै कीआ जाई जीउ ॥ ३ ॥ तेरा माणु ताणु प्रभ तेरा ॥ तूं सचा साहिबु गुणी गहेरा ॥ नानकु दासु कहै बेनंती आठ पहर तुधु धिआई जीउ ॥ ४ ॥ ३४ ॥ ४१ ॥

पारब्रह्म प्रभु ने मेघ को वर्षा करने के लिए भेजा है। मेघ ने सागर, धरती एवं आकाश दसों दिशाओं में वर्षा की है। वर्षा से जीवों के अर्न्तमन में सुख–शांति हो गई है तथा उनकी सारी प्यास मिट गई है और समस्त स्थानों पर प्रसन्नता हो गई है॥१॥ हे भगवान! तू सुख प्रदान करने वाला और दुःख नाश करने वाला है। तू स्वयं ही समस्त प्राणियों को क्षमा करता है। अपनी सृष्टि का वह स्वयं ही पालन पोषण करता है। मैं उसके चरणों में नतमस्तक होकर उसे प्रसन्न करता हूँ॥२॥ जिस भगवान की शरण लेने से मुक्ति प्राप्त होती है, श्वास–श्वास से उस भगवान के नाम का ही ध्यान करना चाहिए। उसके अलावा अन्य कोई दूसरा स्वामी नहीं। समस्त स्थान केवल उसी के हैं॥३॥ हे प्रभु! मुझे तेरा ही मान एवं तेरा ही बल है। तू ही मेरा सच्चा स्वामी एवं गुणों का सागर है। दास नानक एक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु! दिन के आठों प्रहर मैं तेरा ही ध्यान करता रहूँ॥४॥३४॥ ४१॥

माझ महला ५ ॥ सभे सुख भए प्रभ तुठे ॥ गुर पूरे के चरण मनि वुठे ॥ सहज समाधि लगी लिव अंतरि सो रसु सोई जाणै जीउ ॥ १ ॥ अगम अगोचरु साहिबु मेरा ॥ घट घट अंतरि वरतै नेरा ॥ सदा अलिपतु जीआ का दाता को विरला आपु पछाणै जीउ ॥ २ ॥ प्रभ मिलणै की एह नीसाणी ॥ मनि इको सचा हुकमु पछाणी ॥ सहजि संतोखि सदा त्रिपतासे अनदु खसम कै भाणै जीउ ॥ ३ ॥ हथी दिती प्रभि देवणहारै ॥ जनम मरण रोग सभि निवारे ॥ नानक दास कीए प्रभि अपुने हरि कीरतनि रंग माणे जीउ ॥ ४ ॥ ३५ ॥ ४२ ॥

जब प्रभु प्रसन्न हो जाते हैं तो समस्त सुख उपलब्ध हो जाते हैं। फिर पूर्ण गुरु के चरण मन में निवास कर लेते हैं। जिसकी प्रभु की सुरति में सहज समाधि लग जाती है, वही व्यक्ति इस आनंद को जानता है॥१॥ मेरा परमेश्वर अगम्य एवं अगोचर है। वह प्रत्येक हृदय में निकट ही रहता है। वह सदैव निर्लेप है और जीवों का दाता है। कोई विरला पुरुष ही अपने स्वरूप को समझता है॥२॥ प्रभु के मिलन का यही लक्षण है कि मनुष्य अपने मन में एक सत्यस्वरूप परमात्मा के हुक्म की ही पहचान करता है। प्रभु की इच्छानुसार चलने वाले मनुष्य को सदैव सुख, संतोष, तृप्ति एवं हर्ष प्राप्त होता है॥३॥ दाता परमेश्वर ने मुझे अपना हाथ दिया है अर्थात् सहारा दिया है और प्रभु ने जीवन–मृत्यु के समूह कष्ट दूर कर दिए हैं। हे नानक! जिनको परमात्मा ने अपना सेवक बना लिया है, वह प्रभु का यशोगान करने का आनंद प्राप्त करते हैं॥४॥३५॥४२॥

माझ महला ५ ॥ कीनी दइआ गोपाल गुसाई ॥ गुर के चरण वसे मन माही ॥ अंगीकारु कीआ तिनि करतै दुख का डेरा ढाहिआ जीउ ॥ १ ॥ मनि तनि वसिआ सचा सोई ॥ बिखड़ा थानु न दिसै कोई ॥ दूत दुसमण सभि सजण होए एको सुआमी आहिआ जीउ ॥ २ ॥ जो किछु करे सु आपे आपै ॥ बुधि सिआणप किछू न जापै ॥ आपणिआ संता नो आपि सहाई प्रभि भरम भुलावा लाहिआ जीउ ॥ ३ ॥ चरण कमल जन का आधारो ॥ आठ पहर राम नामु वापारो ॥ सहज अनंद गावहि गुण गोविंद प्रभ नानक सरब समाहिआ जीउ ॥ ४ ॥ ३६ ॥ ४३ ॥

सृष्टि के पालनहार गोपाल ने मुझ पर कृपा–दृष्टि की है और गुरु के चरण मेरे मन में स्थित हो गए हैं। अब उस सृजनहार प्रभु ने मुझे अपना सेवक स्वीकार करके मुसीबतों का डेरा ही ध्वस्त कर दिया है॥१॥ मेरे तन एवं मन में सत्यस्वरूप परमेश्वर वास करता है और अब मुझे कोई स्थान दुखदायी नहीं लगता। काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार रूपी दूत जो मेरे शत्रु थे, अब वह सभी मेरे मित्र बन गए हैं, क्योंकि मुझे एक जगत् का स्वामी ही प्रिय है॥२॥ भगवान जो कुछ भी करता है, वह स्वयं ही करता है। उसके कार्यों में किसी अन्य की बुद्धि एवं चतुराई काम नहीं करती। ईश्वर अपने संतों का स्वयं ही सहायक होता है। उसने मेरा भ्रम व संशय दूर कर दिया है॥३॥ प्रभु के चरण कमल उसके भक्तों का सहारा है। वह दिन–रात आठ प्रहर राम नाम का व्यापार करते हैं। वह सहज अवस्था में आनंदपूर्वक गोविन्द की महिमा गायन करते रहते हैं। हे नानक! प्रभु समस्त जीवों में समाया हुआ है॥४॥३६॥४३॥

माझ महला ५ ॥ सो सचु मंदरु जितु सचु धिआईऐ ॥ सो रिदा सुहेला जितु हरि गुण गाईऐ ॥ सा धरति सुहावी जितु वसहि हरि जन सचे नाम विटहु कुरबाणो जीउ ॥ १ ॥ सचु वडाई कीम न पाई ॥ कुदरति करमु न कहणा जाई ॥ धिआइ धिआइ जीवहि जन तेरे सचु सबदु मनि माणो जीउ ॥ २ ॥ सचु सालाहणु वडभागी पाईऐ ॥ गुर परसादी हरि गुण गाईऐ ॥ रंगि रते तेरै तुधु भावहि सचु

नामु नीसाणो जीउ ॥ ३ ॥ सचे अंतु न जाणै कोई ॥ थानि थनंतरि सचा सोई ॥ नानक सचु धिआईऐ सद ही अंतरजामी जाणो जीउ ॥ ४ ॥ ३७ ॥ ४४ ॥

सत्य का मन्दिर वहीं है, जहाँ सत्य प्रभु का सिमरन किया जाता है। वही हृदय सुखी है, जिससे भगवान की महिमा का गायन किया जाता है। वह धरती बड़ी सुन्दर है, जहाँ प्रभु के भक्त रहते हैं। वे तेरे सत्य नाम पर कुर्बान जाते हैं॥१॥ सत्य-स्वरूप परमात्मा की महिमा का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। परमेश्वर की कुदरत एवं करम का वर्णन नहीं किया जा सकता। हे प्रभु ! तेरे भक्त सदैव तुझे स्मरण करके जीते हैं। उनकी आत्मा सत्य रूपी वाणी का आनंद लेती है॥२॥ सद्पुरुष परमात्मा की महिमा करनी सौभाग्य से ही प्राप्त होती है। गुरु की दया से परमात्मा का गुणगान किया जाता है। जो तेरी प्रीति में मग्न रहते हैं, वह तुझे अच्छे लगते हैं। हे प्रभु ! तेरे दरबार में जाने के लिए सत्यनाम उनका परिचय चिन्ह है॥३॥ सत्यस्वरूप परमात्मा का अंत कोई नहीं जानता। सच्चा प्रभु सर्वव्यापक है। हे नानक ! उस सत्य प्रभु का सदैव ही सिमरन करना चाहिए, वह अन्तर्यामी समस्त जीवों की भावना को जानता है॥ ४॥ ३७॥ ४४॥

माझ महला ५ ॥ रैणि सुहावड़ी दिनसु सुहेला ॥ जपि अंम्रित नामु संतसंगि मेला ॥ घड़ी मूरत सिमरत पल वंञहि जीवणु सफलु तिथाई जीउ ॥ १ ॥ सिमरत नामु दोख सभि लाथे ॥ अंतरि बाहरि हरि प्रभु साथे ॥ भै भउ भरमु खोइआ गुरि पूरै देखा सभनी जाई जीउ ॥ २ ॥ प्रभु समरथु वड ऊच अपारा ॥ नउ निधि नामु भरे भंडारा ॥ आदि अंति मधि प्रभु सोई दूजा लवै न लाई जीउ ॥ ३ ॥ करि किरपा मेरे दीन दइआला ॥ जाचिकु जाचै साध रवाला ॥ देहि दानु नानकु जनु मागै सदा सदा हरि धिआई जीउ ॥ ४ ॥ ३८ ॥ ४५ ॥

वह रात्रि सुन्दर है और वह दिन भी बड़ा सुखदायक है, जब संतों की सभा में मिलकर अमृत नाम का जाप किया जाता है। जहाँ जीवन-समय की घड़ियाँ, मुहूर्त एवं पल सभी नाम-सिमरन में व्यतीत होते हैं, वहाँ जीवन सफल हो जाता है॥१॥ नाम की स्तुति करने से मेरे समस्त दोष मिट गए हैं और अन्दर-बाहर हरि-प्रभु मेरे साथ रहता है। पूर्ण गुरु ने मेरे भीतर से भय, खौफ व भ्रम निवृत्त कर दिए हैं और अब मैं परमेश्वर को सर्वत्र देखता हूँ॥२॥ परमात्मा सर्वशक्तिमान, महान, सर्वश्रेष्ठ एवं अनन्त है। नवनिधियाँ प्रदान करने वाले नाम से उसके भण्डार भरे हुए हैं। परमात्मा जगत् के आदि, अन्त एवं मध्य तक विद्यमान है। किसी अन्य को मैं अपने निकट नहीं आने देता॥३॥ हे दीनदयाल ! मुझ पर दया कीजिए। मैं तेरे दर का भिखारी हूँ और संतों की चरण-धूलि ही माँगता हूँ। हे प्रभु ! दास नानक तुझ से यही माँगता है कि मुझे यह दान दीजिए कि मैं सदैव ही तेरा सिमरन करता रहूँ॥४॥३८॥४५॥

माझ महला ५ ॥ ऐथै तूंहै आगै आपे ॥ जीअ जंत सभि तेरे थापे ॥ तुधु बिनु अवरु न कोई करते मै धर ओट तुमारी जीउ ॥ १ ॥ रसना जपि जपि जीवै सुआमी ॥ पारब्रहम प्रभ अंतरजामी ॥ जिनि सेविआ तिन ही सुखु पाइआ सो जनमु न जूऐ हारी जीउ ॥ २ ॥ नामु अवखधु जिनि जन तेरै पाइआ ॥ जनम जनम का रोगु गवाइआ ॥ हरि कीरतनु गावहु दिनु राती सफल एहा है कारी जीउ ॥ ३ ॥ द्रिसटि धारि अपना दासु सवारिआ ॥ घट घट अंतरि पारब्रहमु नमसकारिआ ॥ इकसु विणु होरु दूजा नाही बाबा नानक इह मति सारी जीउ ॥ ४ ॥ ३९ ॥ ४६ ॥

हे प्रभु ! इस मृत्यु लोक में तू ही (मेरा आधार) है और आगे परलोक में भी तू ही (मेरा आधार) है। समस्त जीव–जंतु तेरी ही रचना है। हे सृजनहार प्रभु ! तेरे अलावा मेरा अन्य कोई नहीं। तुम ही मेरा सहारा और आधार हो॥१॥ हे जगत् के स्वामी ! मैं तेरा नाम अपनी रसना से जप–जप कर जीता हूँ। पारब्रह्म प्रभु बड़ा अन्तर्यामी है। जो प्राणी प्रभु की भक्ति करता है, वह सुख प्राप्त करता है। वह अपना मनुष्य जीवन जुए के खेल में नहीं हारता॥२॥ हे प्रभु ! तेरे जिन भक्तों ने नाम रूपी औषधि को पा लिया है, उन्होंने अपना जन्म–जन्मांतरों का पुराना रोग दूर कर लिया है। हे मानव ! दिन–रात भगवान का भजन करते रहो, क्योंकि यही कार्य फलदायक है॥३॥ अपनी कृपा–दृष्टि करके प्रभु अपने जिस भक्त को गुणवान बना देता है, वह भक्त प्रत्येक हृदय में विद्यमान प्रभु को नमस्कार करता रहता है। एक ईश्वर के अलावा अन्य कोई नहीं है। हे नानक ! यही मति सर्वश्रेष्ठ है॥४॥३६॥४६॥

माझ महला ५ ॥ मनु तनु रता राम पिआरे ॥ सरबसु दीजै अपना वारे ॥ आठ पहर गोविंद गुण गाईऐ बिसरु न कोई सासा जीउ ॥ १ ॥ सोई साजन मीतु पिआरा ॥ राम नामु साधसंगि बीचारा ॥ साधू संगि तरीजै सागरु कटीऐ जम की फासा जीउ ॥ २ ॥ चारि पदारथ हरि की सेवा ॥ पारजातु जपि अलख अभेवा ॥ कामु क्रोधु किलबिख गुरि काटे पूरन होई आसा जीउ ॥ ३ ॥ पूरन भाग भए जिसु प्राणी ॥ साधसंगि मिले सारंगपाणी ॥ नानक नामु वसिआ जिसु अंतरि परवाणु गिरसत उदासा जीउ ॥ ४ ॥ ४० ॥ ४७ ॥

यह मन एवं तन तो प्रिय राम के प्रेम में ही मग्न रहना चाहिए। हमें अपना सर्वस्व ही प्रभु को न्यौछावर कर देना चाहिए। हमें दिन के आठ प्रहर भगवान की महिमा–स्तुति करनी चाहिए और कोई एक सांस लेते भी उस प्रभु को भूलना नहीं चाहिए॥१॥ वहीं मेरा प्रिय मित्र एवं सज्जन है, जो सत्संग में राम के नाम का चिन्तन करता है। संतों की संगति करने से ही भवसागर पार किया जाता है और मृत्यु की फाँसी कट जाती है॥२॥ चारों पदार्थ–धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष प्रभु की भक्ति से प्राप्त होते हैं। अदृष्य एवं भेद रहित परमात्मा की उपासना ही कल्प वृक्ष है। सतिगुरु जिस व्यक्ति के अन्तर्मन से काम, क्रोध एवं पाप निवृत कर देते हैं, उसकी प्रभु मिलन की आशा पूरी हो जाती है॥३॥ जिस प्राणी के पूर्ण भाग्य उदय होते हैं, उसे संतों की संगति करने से सारंगपाणि भगवान मिल जाता है। हे नानक ! जिसके हृदय में प्रभु का नाम निवास कर जाता है, वह गृहस्थ जीवन व्यतीत करता हुआ भी माया से उदासीन रहता है और भगवान के दरबार में स्वीकृत हो जाता है॥४॥४०॥४७॥

माझ महला ५ ॥ सिमरत नामु रिदै सुखु पाइआ ॥ करि किरपा भगतीं प्रगटाइआ ॥ संतसंगि मिलि हरि हरि जपिआ बिनसे आलस रोगा जीउ ॥ १ ॥ जा कै ग्रिहि नव निधि हरि भाई ॥ तिसु मिलिआ जिसु पुरब कमाई ॥ गिआन धिआन पूरन परमेसुर प्रभु सभना गला जोगा जीउ ॥ २ ॥ खिन महि थापि उथापनहारा ॥ आपि इकंती आपि पसारा ॥ लेपु नही जगजीवन दाते दरसन डिठे लहनि विजोगा जीउ ॥ ३ ॥ अंचलि लाइ सभ सिसटि तराई ॥ आपणा नाउ आपि जपाई ॥ गुर बोहिथु पाइआ किरपा ते नानक धुरि संजोगा जीउ ॥ ४ ॥ ४१ ॥ ४८ ॥

हरि का नाम–सिमरन करने से मुझे हृदय में सुख प्राप्त हुआ है। भगवान के भक्तों ने कृपा करके उसे मेरे मन में प्रगट कर दिया है। संतों की सभा में मिलकर मैंने हरि–प्रभु के नाम का ही जाप किया है और मेरा आलस्य रोग मिट गया है॥१॥ हे भाई ! जिस (भगवान) के गृह में नवनिधियाँ हैं, भगवान उस व्यक्ति को ही मिलता है, जिसने पूर्व जन्म में नाम–सिमरन के शुभ कर्म किए हैं। पूर्ण परमेश्वर

ज्ञान एवं ध्यान से भरपूर है। प्रभु सब कुछ करने में समर्थ है॥२॥ परमेश्वर क्षण में ही जगत् की उत्पत्ति तथा विनाश करने वाला है। ईश्वर स्वयं ही निराकार स्वरूप है और ब्रह्माण्ड रूप सगुण भी स्वयं ही है। प्रभु जगत् का जीवन एवं दाता है और माया उसे प्रभावित नहीं करती, वह निर्लिप्त है। उस प्रभु के दर्शन करने से विरह की पीड़ा निवृत्त हो जाती है॥३॥ वह परमात्मा गुरु के आंचल से लगाकर सारी सृष्टि को भवसागर से पार करवाता है। भगवान गुरु द्वारा अपने नाम की जीवों से स्वयं ही आराधना करवाता है। हे नानक! जिसकी किस्मत में प्रारब्ध से ही संयोग लिखे होते हैं, उसे भगवान की कृपा से भवसागर पार करने के लिए गुरु रूपी जहाज मिल जाता है॥४॥४१॥४८॥

माझ महला ५ ॥ सोई करणा जि आपि कराए ॥ जिथै रखै सा भली जाए ॥ सोई सिआणा सो पतिवंता हुकमु लगै जिसु मीठा जीउ ॥ १ ॥ सभ परोई इकतु धागै ॥ जिसु लाइ लए सो चरणी लागै ॥ ऊंध कवलु जिसु होइ प्रगासा तिनि सरब निरंजनु डीठा जीउ ॥ २ ॥ तेरी महिमा तूंहै जाणहि ॥ अपणा आपु तूं आपि पछाणहि ॥ हउ बलिहारी संतन तेरे जिनि कामु क्रोधु लोभु पीठा जीउ ॥ ३ ॥ तूं निरवैरु संत तेरे निरमल ॥ जिन देखे सभ उतरहि कलमल ॥ नानक नामु धिआइ धिआइ जीवै बिनसिआ भ्रमु भउ धीठा जीउ ॥ ४ ॥ ४२ ॥ ४९ ॥

हे भगवान! मैं वही कुछ करता हूँ जो तुम स्वयं ही मुझ से करवाते हो। मेरे लिए वहीं स्थान उत्तम है, जिस स्थान पर तुम रखते हो। वहीं व्यक्ति बुद्धिमान और प्रतिष्ठित है जिसको ईश्वर का हुक्म मीठा लगता है॥१॥ सारी सृष्टि भगवान ने माया रूपी एक धागे में पिरोई हुई है। वहीं व्यक्ति भगवान के चरणों में लगता है, जिसे वह स्वयं अपने चरणों में लगाता है। भगवान का निवास मनुष्य के हृदय-कमल में है। यह कमल पहले उलटा पड़ा होता है परन्तु भगवान के सिमरन द्वारा सीधा हो जाता है। फिर इस सीधे हुए कमल में भगवान की ज्योति का प्रकाश हो जाता है। जो व्यक्ति उस प्रकाश को देखता है, वह उस सर्वव्यापक निरंजन के दर्शन करता है॥२॥ हे भगवान! अपनी महिमा को तुम स्वयं ही जानते हो और तुम अपने स्वरूप को स्वयं ही पहचान सकते हो। मैं तेरे संतों पर कुर्बान जाता हूँ, जिन्होंने अपने काम, क्रोध एवं लालच को पीस दिया है॥३॥ हे ईश्वर! तुम निर्वैर हो और तेरे सन्त पवित्र हैं, जिनके दर्शनों से समस्त पाप दूर हो जाते हैं। हे नानक! मैं प्रभु के नाम की वंदना एवं सिमरन करके ही जीवित हूँ और मेरा कठोर स्वभाव, भ्रम एवं भय नाश हो गए हैं॥४॥४२॥४९॥

मांझ महला ५ ॥ झूठा मंगणु जे कोई मागै ॥ तिस कउ मरते घड़ी न लागै ॥ पारब्रहमु जो सद ही सेवै सो गुर मिलि निहचलु कहणा ॥ १ ॥ प्रेम भगति जिस कै मनि लागी ॥ गुण गावै अनदिनु निति जागी ॥ बाह पकड़ि तिसु सुआमी मेलै जिस कै मसतकि लहणा ॥ २ ॥ चरन कमल भगतां मनि वुठे ॥ विणु परमेसर सगले मुठे ॥ संत जनां की धूड़ि नित बांछहि नामु सचे का गहणा ॥ ३ ॥ ऊठत बैठत हरि हरि गाईऐ ॥ जिसु सिमरत वरु निहचलु पाईऐ ॥ नानक कउ प्रभ होइ दइआला तेरा कीता सहणा ॥ ४ ॥ ४३ ॥ ५० ॥

यदि कोई व्यक्ति झूठी माया की याचना करे तो उसे मृत्युकाल में एक क्षण भी नहीं लगता। जो व्यक्ति पारब्रह्म प्रभु की सदैव भक्ति करता रहता है, वह गुरु से मिलकर सदैव जीवन प्राप्त कर लेता है॥१॥ जिसका मन प्रभु की भक्ति में मग्न है, वह दिन-रात प्रभु की कीर्ति गायन करता है और सदैव मग्न रहता है। जिसकी किस्मत में नाम की देन लेने का लेख विद्यमान है, उसे ही भुजा से पकड़ कर प्रभु अपने साथ मिला लेता है॥२॥ हरि के चरण कमल उसके भक्तों के हृदय में बसते हैं। महान

परमेश्वर की दया के अलावा सारे ठगे जाते हैं। जो व्यक्ति संतों की चरण–धूलि की नित्य कामना करते रहते हैं, उन्हें संतों द्वारा सत्य प्रभु का नाम रूपी आभूषण मिल जाता है॥३॥ उठते–बैठते हर वक्त हमें भगवान की महिमा–स्तुति करते रहना चाहिए, भगवान का सिमरन करने से अटल प्रभु मिल जाता है। हे नानक! परमात्मा उस पर दयालु हुआ है। हे प्रभु! तुम जो कुछ करते हो, मैं सहर्ष स्वीकार करता हूँ॥४॥ ४३॥ ५०॥

रागु माझ असटपदीआ महला १ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सबदि रंगाए हुकमि सबाए ॥ सची दरगह महलि बुलाए ॥ सचे दीन दइआल मेरे साहिबा सचे मनु पतीआवणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी सबदि सुहावणिआ ॥ अंम्रित नामु सदा सुखदाता गुरमती मंनि वसावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना को मेरा हउ किसु केरा ॥ साचा ठाकुरु त्रिभवणि मेरा ॥ हउमै करि करि जाइ घणेरी करि अवगण पछोतावणिआ ॥ २ ॥ हुकमु पछाणै सु हरि गुण वखाणै ॥ गुर कै सबदि नामि नीसाणै ॥ सभना का दरि लेखा सचै छूटसि नामि सुहावणिआ ॥ ३ ॥ मनमुखु भूला ठउरु न पाए ॥ जम दरि बधा चोटा खाए ॥ बिनु नावै को संगि न साथी मुकते नामु धिआवणिआ ॥ ४ ॥ साकत कूड़े सचु न भावै ॥ दुबिधा बाधा आवै जावै ॥ लिखिआ लेखु न मेटै कोई गुरमुखि मुकति करावणिआ ॥ ५ ॥ पेईअड़ै पिरु जातो नाही ॥ झूठि विछुंनी रोवै धाही ॥ अवगणि मुठी महलु न पाए अवगण गुणि बखसावणिआ ॥ ६ ॥ पेईअड़ै जिनि जाता पिआरा ॥ गुरमुखि बूझै ततु बीचारा ॥ आवणु जाणा ठाकि रहाए सचै नामि समावणिआ ॥ ७ ॥ गुरमुखि बूझै अकथु कहावै ॥ सचे ठाकुर साचो भावै ॥ नानक सचु कहै बेनंती सचु मिलै गुण गावणिआ ॥ ८ ॥ १ ॥

ईश्वर के हुक्म द्वारा सभी गुरु के शब्द में मग्न हैं और परमात्मा के सत्य दरबार में उसकी उपस्थिति में आमंत्रित किए जाते हैं। हे मेरे मालिक! तू दीनदयाल एवं सदैव सत्य है और तेरे सत्य से मेरा मन प्रसन्न हो गया है॥ १॥ मैं उन पर तन–मन से न्यौछावर हूँ, जिन्होंने शब्द द्वारा अपना जीवन सुन्दर बना लिया है। प्रभु का अमृत नाम सदा ही सुख देने वाला है। गुरु के उपदेश द्वारा मैंने प्रभु के नाम को अपने मन में बसा लिया है॥ १॥ रहाउ॥ न ही कोई मेरा है, न ही मैं किसी का हूँ। तीनों लोकों का स्वामी सत्य परमात्मा ही मेरा है। अनेक जीव अहंकार करके प्राण त्याग गए हैं। दुष्कर्म करके प्राणी को बड़ा पश्चाताप होता है॥ २॥ जो परमात्मा के हुक्म को पहचानता है, वही उसका यशोगान करता है। वह गुरु के शब्द द्वारा नाम रूपी परवाना अपने साथ लेकर दरबार में जाता है। सत्य प्रभु के दरबार में समस्त जीवों के कर्मों का लेखा होता है। वहाँ वही व्यक्ति मुक्त होते हैं, जो नाम द्वारा अपना जीवन सुन्दर बना लेते हैं॥ ३॥ मनमुख व्यक्ति को कहीं भी सुख नहीं मिलता। मृत्यु के द्वार पर बंधा हुआ वह चोटें खाता है। वहाँ नाम के अलावा मनुष्य का कोई मित्र अथवा सज्जन नहीं होता। नाम सिमरन करने वाला व्यक्ति मोक्ष प्राप्त करता है॥ ४॥ झूठे शाक्त को सत्य उत्तम नहीं लगता। वह दुविधा में फँसा होने के कारण जन्म–मरण के चक्र में पड़ा रहता है। जीव की किस्मत को कोई मिटा नहीं सकता। गुरु की दया से ही मनुष्य मोक्ष पाता है॥ ५॥ जिस जीव–स्त्री ने अपने पीहर (इहलोक) में अपने मालिक–प्रभु को नहीं समझा, वह झूठी प्रभु से जुदा हुई ऊँची ऊँची विलाप करती है। उस अवगुणों की ठगी हुई जीव–स्त्री को प्रभु के महल में स्थान नहीं मिलता। गुणों का स्वामी प्रभु स्वयं ही जीव के अवगुणों को क्षमा कर देता है॥ ६॥ जिस जीव–स्त्री ने अपने पीहर (मृत्युलोक) में अपने पति–प्रभु को समझ लिया है, वह गुरु के माध्यम से परम तत्त्व अर्थात् प्रभु के

गुणों को समझ लेती है। प्रभु उसके जन्म–मरण के चक्र को मिटा देता है। तदुपरांत वह सत्य प्रभु के नाम में लीन रहती है॥ ७॥ गुरमुख प्रभु के गुणों को स्वयं समझता है और दूसरों से अकथनीय प्रभु की लीला एवं उसके गुणों की कथा करवाता है। सच्चे ठाकुर प्रभु को सत्य नाम ही अच्छा लगता है। हे नानक! वह सत्य प्रभु के समक्ष सच्ची प्रार्थना करता है कि उसे सत्य नाम मिले ताकि वह उसकी महिमा करता रहे॥ ८॥ १॥

माझ महला ३ घरु १ ॥ करमु होवै सतिगुरू मिलाए ॥ सेवा सुरति सबदि चितु लाए ॥ हउमै मारि सदा सुखु पाइआ माइआ मोहु चुकावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी सतिगुर कै बलिहारणिआ ॥ गुरमती परगासु होआ जी अनदिनु हरि गुण गावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तनु मनु खोजे ता नाउ पाए ॥ धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ गुर की बाणी अनदिनु गावै सहजे भगति करावणिआ ॥ २ ॥ इसु काइआ अंदरि वसतु असंखा ॥ गुरमुखि साचु मिलै ता वेखा ॥ नउ दरवाजे दसवै मुकता अनहद सबदु वजावणिआ ॥ ३ ॥ सचा साहिबु सची नाई ॥ गुर परसादी मंनि वसाई ॥ अनदिनु सदा रहै रंगि राता दरि सचै सोझी पावणिआ ॥ ४ ॥ पाप पुंन की सार न जाणी ॥ दूजै लागी भरमि भुलाणी ॥ अगिआनी अंधा मगु न जाणै फिरि फिरि आवण जावणिआ ॥ ५ ॥ गुर सेवा ते सदा सुखु पाइआ ॥ हउमै मेरा ठाकि रहाइआ ॥ गुर साखी मिटिआ अंधिआरा बजर कपाट खुलावणिआ ॥ ६ ॥ हउमै मारि मंनि वसाइआ ॥ गुर चरणी सदा चितु लाइआ ॥ गुर किरपा ते मनु तनु निरमलु निरमल नामु धिआवणिआ ॥ ७ ॥ जीवणु मरणा सभु तुधै ताई ॥ जिसु बखसे तिसु दे वडिआई ॥ नानक नामु धिआइ सदा तूं जंमणु मरणु सवारणिआ ॥ ८ ॥ १ ॥ २ ॥

जिस व्यक्ति पर परमात्मा की मेहर हो जाती है, उसे वह सतिगुरु से मिला देता है। फिर वह व्यक्ति अपनी सुरति प्रभु की सेवा में लगाता और अपना मन शब्द में जोड़ता है। वह अपने अहंकार को त्याग कर सदैव सुख पाता है और अपने माया के मोह को मिटा देता है॥ १॥ मैं अपने सतिगुरु पर तन एवं मन से न्यौछावर हूँ, क्योंकि गुरु की मति द्वारा उसके हृदय में प्रभु ज्योति का प्रकाश हो जाता है। वह व्यक्ति प्रतिदिन भगवान की महिमा–स्तुति करता रहता है॥ १॥ रहाउ॥ जब मनुष्य अपने तन एवं मन में ही उसकी खोज करता है तो उसे ईश्वर का नाम प्राप्त हो जाता है। वह अपने भटकते मन को स्थिर करता है और इसको अपने वश में रखता है। वह रात–दिन गुरु की वाणी गायन करता है और सहज ही प्रभु की भक्ति में जुट जाता है॥ २॥ इस शरीर में विद्यमान अनंत गुणों वाली नाम रूपी वस्तु जब किसी को मिल जाती है तो वह सत्य प्रभु के दर्शन करता है। शरीर रूपी घर को आँखें, कान, नाक, मुँह इत्यादि नौ द्वार लगे हुए है। इन दरवाजों द्वारा मन बाहर भटकता रहता है। जब वह विकारों एवं मोह–माया से मुक्त होकर निर्मल हो जाता है तो वह दसम द्वार में आ जाता है। फिर निर्मल मन में अनहद शब्द बजने लगता है॥ ३॥ परमात्मा सदैव सत्य है एवं उसकी महिमा भी सत्य है। गुरु की कृपा से ही परमात्मा मन में आकर निवास करता है। फिर व्यक्ति दिन–रात परमात्मा के प्रेम में मग्न रहता है और उसे सत्य दरबार की सूझ हो जाती है॥ ४॥ मनमुख प्राणी को पाप एवं पुण्य की पहचान नहीं होती। उसकी बुद्धि मोह–माया में मग्न हो जाती है, जिससे वह भ्रम में फँसकर भटकती रहती है। मोह–माया में ज्ञानहीन मनमुख भगवान के मिलन के मार्ग को नहीं जानता, जिसके कारण वह बार–बार जन्मता एवं मरता रहता है॥ ५॥ गुरमुख गुरु की सेवा करके सदैव ही सुख प्राप्त करते हैं। वह अहंकार को नष्ट करके अपने भटकते हुए मन को विकारों की तरफ जाने से वर्जित करते हैं। गुरु की शिक्षा से उनका अज्ञानता का अँधेरा मिट जाता है और वज्र कपाट

खुल जाते हैं॥६॥ वह अपना अहंकार मिटाकर भगवान को अपने मन में बसा लेते हैं। फिर वह अपना चित्त सदैव ही गुरु के चरणों में लगाकर रखते हैं। गुरु की कृपा से उनका मन एवं तन निर्मल हो जाता है। फिर वह भगवान के निर्मल नाम का सिमरन करते रहते हैं॥७॥ हे प्रभु! जीवों का जन्म एवं मृत्यु सब कुछ तुझ पर निर्भर है और हे प्रभु! आप उसे महानता प्रदान करते हैं, जिसे तुम क्षमा कर देते हो। हे नानक! तू सदैव ही परमेश्वर के नाम का भजन कर, जो मनुष्य के जन्म और मृत्यु को संवार देता है॥८॥१॥२॥

माझ महला ३ ॥ मेरा प्रभु निरमलु अगम अपारा ॥ बिनु तकड़ी तोलै संसारा ॥ गुरमुखि होवै सोई बूझै गुण कहि गुणी समावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हरि का नामु मंनि वसावणिआ ॥ जो सचि लागे से अनदिनु जागे दरि सचै सोभा पावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे सुणै तै आपे वेखै ॥ जिस नो नदरि करे सोई जनु लेखै ॥ आपे लाइ लए सो लागै गुरमुखि सचु कमावणिआ ॥ २ ॥ जिसु आपि भुलाए सु किथै हथु पाए ॥ पूरबि लिखिआ सु मेटणा न जाए ॥ जिन सतिगुरु मिलिआ से वडभागी पूरै करमि मिलावणिआ ॥ ३ ॥ पेईअड़ै धन अनदिनु सुती ॥ कंति विसारी अवगणि मुती ॥ अनदिनु सदा फिरै बिललादी बिनु पिर नीद न पावणिआ ॥ ४ ॥ पेईअड़ै सुखदाता जाता ॥ हउमै मारि गुर सबदि पछाता ॥ सेज सुहावी सदा पिरु रावे सचु सीगारु बणावणिआ ॥ ५ ॥ लख चउरासीह जीअ उपाए ॥ जिस नो नदरि करे तिसु गुरू मिलाए ॥ किलबिख काटि सदा जन निरमल दरि सचै नामि सुहावणिआ ॥ ६ ॥ लेखा मागै ता किनि दीऐ ॥ सुखु नाही फुनि दूऐ तीऐ ॥ आपे बखसि लए प्रभु साचा आपे बखसि मिलावणिआ ॥ ७ ॥ आपि करे तै आपि कराए ॥ पूरे गुर कै सबदि मिलाए ॥ नानक नामु मिलै वडिआई आपे मेलि मिलावणिआ ॥ ८ ॥ २ ॥ ३ ॥

मेरा निर्मल प्रभु अगम्य एवं अपार है। वह तराजु के बिना जगत् को तोलता है। इस तथ्य को वहीं व्यक्ति समझता है, जो गुरु के सान्निध्य में रहता है। वह प्रभु के गुणों को कह-कह कर उसी में विलीन हो जाता है॥१॥ जो व्यक्ति भगवान के नाम को अपने हृदय में बसाते हैं। मेरा तन-मन उन पर न्यौछावर है। जो व्यक्ति सत्य प्रभु के नाम-सिमरन में मग्न हैं, वह रात-दिन जागृत रहते है और सत्य दरबार में बड़ी शोभा पाते हैं॥१॥ रहाउ॥ हे प्रभु! तू स्वयं ही समस्त जीवों की प्रार्थना सुनता है और स्वयं ही उन्हें देखता रहता है। जिस पर प्रभु अपनी कृपा-दृष्टि करता है, वह व्यक्ति प्रभु के दरबार में स्वीकृत हो जाता है। जिसे प्रभु स्वयं ही अपने सिमरन में लगाता है, वहीं व्यक्ति उसके सिमरन में लगता है। गुरमुख ही सत्य नाम की साधना करते हैं॥२॥ वह किस का आश्रय ले सकता है, जिसको प्रभु स्वयं गुमराह करता है? विधाता के विधान को मिटाया नहीं जा सकता अर्थात् पूर्व जन्म का लिखा लेख मिटाया नहीं जाता। वह व्यक्ति बड़े भाग्यशाली हैं, जिन्हें सतिगुरु मिले हैं। पूर्ण भाग्य से ही सतिगुरु जी मिलते हैं॥३॥ मनमुख जीव-स्त्री अपने पीहर (इहलोक) में दिन-रात अज्ञानता में निद्रामग्न रहती है। उसके पति-प्रभु ने उसे विस्मृत कर दिया है और अवगुणों के कारण वह त्याग दी गई है। वह रात-दिन सदैव ही विलाप करती रहती है। अपने पति-प्रभु के बिना उसको सुख की निद्रा नहीं आती॥ ४॥ गुरमुख जीव-स्त्री ने अपने पीहर (इहलोक) में सुखदाता पति-प्रभु को जान लिया है। उसने अपना अहंकार त्याग कर गुरु के शब्द द्वारा अपने पति-प्रभु को पहचान लिया है। वह सदैव ही सुन्दर शय्या पर शयन करती है और पति-प्रभु के साथ रमण करती है। ऐसी जीव-स्त्री प्रभु के सत्य-नाम को अपना शृंगार बनाती है॥५॥ पारब्रह्म-प्रभु ने चौरासी लाख योनियों में अनंत जीव उत्पन्न किए हैं। जिस जीव पर वह अपनी दया-दृष्टि करता है, उसको गुरु से मिला

देता है। वह जीव अपने पापों को धोकर हमेशा के लिए पवित्र हो जाता है और सत्य दरबार के अन्दर नाम से सुहावना लगता है॥६॥ यदि प्रभु कर्मों का हिसाब माँगेगा, वह तब कौन दे सकेगा? तब द्वैत अथवा त्रिगुणी अवस्था में कोई सुख प्राप्त नहीं होना। सत्यस्वरूप परमात्मा स्वयं क्षमाशील है और क्षमा करके अपने आप से मिला लेता है॥७॥ प्रभु स्वयं ही सब कुछ करता है और स्वयं ही जीवों से करवाता है। पूर्ण गुरु के उपदेश से ही प्रभु अपने साथ मिला लेता है। हे नानक! जिस जीव को प्रभु के नाम की शोभा मिलती है, सृष्टि का स्वामी स्वयं ही उसे अपने मिलाप में मिलाता है॥ ८॥२॥३॥

माझ महला ३ ॥ इको आपि फिरै परछंना ॥ गुरमुखि वेखा ता इहु मनु भिंना ॥ त्रिसना तजि सहज सुखु पाइआ एको मंनि वसावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी इकसु सिउ चितु लावणिआ ॥ गुरमती मनु इकतु घरि आइआ सचै रंगि रंगावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु जगु भूला तैं आपि भुलाइआ ॥ इकु विसारि दूजै लोभाइआ ॥ अनदिनु सदा फिरै भ्रमि भूला बिनु नावै दुखु पावणिआ ॥ २ ॥ जो रंगि राते करम बिधाते ॥ गुर सेवा ते जुग चारे जाते ॥ जिस नो आपि देइ वडिआई हरि कै नामि समावणिआ ॥ ३ ॥ माइआ मोहि हरि चेतै नाही ॥ जम पुरि बधा दुख सहाही ॥ अंना बोला किछु नदरि न आवै मनमुख पापि पचावणिआ ॥ ४ ॥ इकि रंगि राते जो तुधु आपि लिव लाए ॥ भाइ भगति तेरै मनि भाए ॥ सतिगुरु सेवनि सदा सुखदाता सभ इछा आपि पुजावणिआ ॥ ५ ॥ हरि जीउ तेरी सदा सरणाई ॥ आपे बखसिहि दे वडिआई ॥ जमकालु तिसु नेड़ि न आवै जो हरि हरि नामु धिआवणिआ ॥ ६ ॥ अनदिनु राते जो हरि भाए ॥ मेरै प्रभि मेले मेलि मिलाए ॥ सदा सदा सचे तेरी सरणाई तूं आपे सचु बुझावणिआ ॥ ७ ॥ जिन सचु जाता से सचि समाणे ॥ हरि गुण गावहि सचु वखाणे ॥ नानक नामि रते बैरागी निज घरि ताड़ी लावणिआ ॥ ८ ॥ ३ ॥ ४ ॥

एक परमेश्वर ही अदृष्य होकर सर्वत्र भ्रमण करता रहता है। जिस व्यक्ति ने गुरु के माध्यम से उसके दर्शन कर लिए हैं, उसका मन उसके प्रेम में भीग गया है। उसने अपनी तृष्णा को त्यागकर सहज सुख प्राप्त कर लिया है। फिर उसने एक प्रभु को ही अपने मन में बसाया है॥१॥ मैं उन पर कुर्बान हूँ, मेरी आत्मा कुर्बान है, जो एक ईश्वर से अपनी सुरति लगाते हैं। गुरु की मति द्वारा उसका मन एक ही आत्मस्वरूप घर में आकर बसता है और सत्य प्रभु के प्रेम में मग्न हो जाता है॥१॥ रहाउ॥ हे प्रभु! यह संसार भ्रम में पड़ा हुआ है और तूने स्वयं ही इसे भ्रम में डाल दिया है। एक ईश्वर को विस्मृत करके यह लोभ लालच में ग्रस्त हुआ पड़ा है। रात-दिन यह भ्रम का भ्रमित हुआ हमेशा भटकता रहता है और नाम के बिना कष्ट उठाता है॥२॥ जो भाग्य विधाता के प्रेम में मग्न रहते हैं, वह गुरु की सेवा करके चारों युगों में प्रसिद्ध हो जाते हैं। जिस प्राणी को प्रभु स्वयं महानता प्रदान करता है, वह ईश्वर के नाम में लीन हो जाता है॥३॥ माया-मोह में ग्रस्त मनुष्य परमेश्वर को स्मरण नहीं करता। फिर यमदूतों की नगरी में जकड़ा हुआ वह कष्ट सहन करता है। मनमुख व्यक्ति अन्धा एवं बहरा है, उसे कुछ भी दृष्टिगोचर नहीं होता और गुनाहों में ही नष्ट हो जाता है॥४॥ हे प्रभु! कई जीव तेरे प्रेम में मग्न रहते हैं, जिन्हें तूने ही नाम के साथ लगाया है। प्रेमा-भक्ति द्वारा वह तेरे हृदय को अच्छे लगते हैं। वह सदैव सुखदाता सतिगुरु की सेवा करते रहते हैं और ईश्वर स्वयं ही उनकी समस्त मनोकामनाएँ पूरी करता है॥५॥ हे पूज्य परमेश्वर! जो व्यक्ति सदैव तेरी शरण में रहता है, तू स्वयं ही उसे क्षमादान करके शोभा प्रदान करते हो। जो व्यक्ति भगवान का नाम-सिमरन करता रहता है, यम उसके निकट नहीं आता॥६॥ जो व्यक्ति भगवान को अच्छे लगते हैं, वह रात-दिन भगवान के प्रेम में मग्न रहते हैं। मेरे प्रभु ने उनका सतिगुरु से मिलाप करवा कर अपने साथ मिला

लिया है। हे सत्य स्वरूप परमेश्वर! जो व्यक्ति सदैव तेरी शरण में हैं। तुम स्वयं ही उन्हें सत्य का ज्ञान प्रदान करते हो॥७॥ जो व्यक्ति सत्य प्रभु को समझ लेते हैं, वे सत्य में ही लीन रहते हैं। वह हरि का यशोगान करते हैं और सत्य का ही बखान करते हैं। हे नानक! जो नाम में मग्न रहते हैं, वे निर्लेप हैं और अपने निज घर आत्मस्वरूप में समाधि लगाते हैं॥८॥३॥४॥

माझ महला ३ ॥ सबदि मरै सु मुआ जापै ॥ कालु न चापै दुखु न संतापै ॥ जोती विचि मिलि जोति समाणी सुणि मन सचि समावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हरि कै नाइ सोभा पावणिआ ॥ सतिगुरु सेवि सचि चितु लाइआ गुरमती सहजि समावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ कची कचा चीरु हंढाए ॥ दूजै लागी महलु न पाए ॥ अनदिनु जलदी फिरै दिनु राती बिनु पिर बहु दुखु पावणिआ ॥ २ ॥ देही जाति न आगै जाए ॥ जिथै लेखा मंगीऐ तिथै छुटै सचु कमाए ॥ सतिगुरु सेवनि से धनवंते ऐथै ओथै नामि समावणिआ ॥ ३ ॥ भै भाइ सीगारु बणाए ॥ गुर परसादी महलु घरु पाए ॥ अनदिनु सदा रवै दिनु राती मजीठै रंगु बणावणिआ ॥ ४ ॥ सभना पिरु वसै सदा नाले ॥ गुर परसादी को नदरि निहाले ॥ मेरा प्रभु अति ऊचो ऊचा करि किरपा आपि मिलावणिआ ॥ ५ ॥ माइआ मोहि इहु जगु सुता ॥ नामु विसारि अंति विगुता ॥ जिस ते सुता सो जागाए गुरमति सोझी पावणिआ ॥ ६ ॥ अपिउ पीऐ सो भरमु गवाए ॥ गुर परसादि मुकति गति पाए ॥ भगती रता सदा बैरागी आपु मारि मिलावणिआ ॥ ७ ॥ आपि उपाए धंधै लाए ॥ लख चउरासी रिजकु आपि अपड़ाए ॥ नानक नामु धिआइ सचि राते जो तिसु भावै सु कार करावणिआ ॥ ८ ॥ ४ ॥ ५ ॥

जो व्यक्ति शब्द द्वारा अपने अहंकार को नष्ट कर देता है, वही मृत माना जाता है। उसे काल (मृत्यु) भी नहीं कुचलता और न ही कोई कष्ट दुखी करता है। उसकी ज्योत परम ज्योति में मिलकर उस में ही समा जाती है। उसका मन भी सत्य नाम को सुनकर सत्य में ही समा जाता है॥१॥ मैं उन पर कुर्बान हूँ, जो ईश्वर के नाम द्वारा जगत् में शोभा पाते हैं। जो व्यक्ति सतिगुरु की सेवा करते हैं एवं सत्य प्रभु में अपना चित्त लगाते हैं, वह गुरु के उपदेश द्वारा सहज अवस्था में लीन रहते हैं॥१॥ रहाउ॥ मनुष्य का शरीर कच्चा अर्थात् क्षणभंगुर है। शरीर जीवात्मा का वस्त्र है और जीवात्मा इस क्षणभंगुर वस्त्र को पहनकर रखती है। जीवात्मा माया के मोह में लीन रहने के कारण अपने आत्मस्वरूप को नहीं पा सकती। वह दिन-रात तृष्णाग्नि में जलती रहती है और पति-प्रभु के बिना बहुत दुखी रहती है॥२॥ मनुष्य का शरीर एवं जाति परलोक में नहीं जाते। जहाँ कर्मों का लेखा तलब किया जाता है, वहाँ सत्य की कमाई द्वारा ही वह मोक्ष को प्राप्त होगा। जो सतिगुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करते हैं, वह धनवान हैं। वह लोक तथा परलोक में हरिनाम में विलीन रहते हैं॥३॥ जो जीव-स्त्री प्रभु के भय एवं प्रेम को अपना हार-शृंगार बनाती है, वह गुरु की दया से अपने घर में ही उसकी उपस्थिति को पा लेती है। वह दिन-रात हमेशा उपने प्रियतम के साथ रमण करती है और मजीठ जैसे पक्की रंगत निश्चित कर लेती है॥४॥ समस्त जीव-स्त्रियों का प्रियतम प्रभु हमेशा ही सभी के साथ रहता है। गुरु की दया से कोई विरला ही अपने नेत्रों से उसके दर्शन करता है। मेरा प्रभु सर्वश्रेष्ठ है। वह अपनी कृपा करके स्वयं ही जीव-स्त्री को अपने साथ मिला लेता है॥ ५॥ यह जगत् मोह-माया में फँसकर अज्ञानता की निद्रा में सोया हुआ है। प्रभु के नाम को विस्मृत करके यह अंतः नष्ट हो जाता है। जिस परमात्मा के हुक्म से यह जगत् निद्रामग्न है, वही इसे ज्ञान प्रदान करके जगाता है। गुरु के उपदेश द्वारा इसको सूझ प्राप्त होती है॥६॥ जो व्यक्ति नाम रूपी अमृत पान करता है, वह अपना भ्रम निवृत्त कर देता है। गुरु की दया से वह मोक्ष की पदवी को प्राप्त कर लेता है।

जो परमेश्वर की भक्ति में मग्न रहता है, वह सदैव ही निर्लेप है। अपने अहं को मारकर वह अपने प्रभु को मिल जाता है॥७॥ हे ईश्वर! तूने स्वयं ही सृष्टि की रचना करके प्राणी उत्पन्न किए हैं और अपने-अपने कर्म में लगा दिया है। हे प्रभु! चौरासी लाख योनियों को स्वयं ही तुम जीविका पहुँचाते हो। हे नानक! जो व्यक्ति प्रभु का नाम-सिमरन करते रहते हैं, वे सत्य प्रभु के प्रेम में मग्न रहते हैं। वह वही कार्य करते हैं, जो प्रभु को अच्छा लगता है॥८॥४॥५॥

माझ महला ३ ॥ अंदरि हीरा लालु बणाइआ ॥ गुर कै सबदि परखि परखाइआ ॥ जिन सचु पलै सचु वखाणहि सचु कसवटी लावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी गुर की बाणी मंनि वसावणिआ ॥ अंजन माहि निरंजनु पाइआ जोती जोति मिलावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसु काइआ अंदरि बहुतु पसारा ॥ नामु निरंजनु अति अगम अपारा ॥ गुरमुखि होवै सोई पाए आपे बखसि मिलावणिआ ॥ २ ॥ मेरा ठाकुरु सचु द्रिड़ाए ॥ गुर परसादी सचि चितु लाए ॥ सचो सचु वरतै सभनी थाई सचे सचि समावणिआ ॥ ३ ॥ वेपरवाहु सचु मेरा पिआरा ॥ किलविख अवगण काटणहारा ॥ प्रेम प्रीति सदा धिआईऐ भै भाइ भगति द्रिड़ावणिआ ॥ ४ ॥ तेरी भगति सची जे सचे भावै ॥ आपे देइ न पछोतावै ॥ सभना जीआ का एको दाता सबदे मारि जीवावणिआ ॥ ५ ॥ हरि तुधु बाझहु मै कोई नाही ॥ हरि तुधै सेवी तै तुधु सालाही ॥ आपे मेलि लैहु प्रभ साचे पूरै करमि तूं पावणिआ ॥ ६ ॥ मै होरु न कोई तुधै जेहा ॥ तेरी नदरी सीझसि देहा ॥ अनदिनु सारि समालि हरि राखहि गुरमुखि सहजि समावणिआ ॥ ७ ॥ तुधु जेवडु मै होरु न कोई ॥ तुधु आपे सिरजी आपे गोई ॥ तूं आपे ही घड़ि भंनि सवारहि नानक नामि सुहावणिआ ॥ ८ ॥ ५ ॥ ६ ॥

भगवान ने आत्मस्वरूप में हीरे एवं लाल जैसा अमूल्य नाम रखा हुआ है। गुरु के शब्द द्वारा इसकी परख की तथा करवाई जाती है। जिनके पास सत्यनाम है, वह सत्य-नाम का ही बखान करते हैं तथा इसकी परख करने के लिए सत्यनाम की ही कसौटी लगानी पड़ती है॥१॥ जिन्होंने गुरु की वाणी को अपने मन में बसा लिया है, मैं उन पर तन-मन से न्यौछावर हूँ। वह माया के अंजन में ही निरंजन प्रभु को पा लेते हैं। वह अपनी ज्योति को प्रभु की परम-ज्योति में मिला देते हैं॥१॥ रहाउ॥ जैसे ब्रह्माण्ड में परमात्मा ने अपना प्रसार किया हुआ है, वैसे ही उसने मनुष्य की काया में अपना अत्यधिक प्रसार किया हुआ है। प्रभु का निरंजन नाम अत्यंत अगम्य एवं अपरंपार है। जो व्यक्ति गुरु के सान्निध्य में रहता है, इस नाम की लब्धि उसे ही हो सकती है। प्रभु गुरमुख व्यक्ति को क्षमा करके स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है॥२॥ मेरा ठाकुर प्रभु जिस व्यक्ति के हृदय में सत्य नाम बसा देता है और गुरु की कृपा से वह सत्य में ही अपना चित्त लगाता है। सत्य का पुंज परमेश्वर स्वयं ही सर्वव्यापक है। वह मनुष्य सत्य प्रभु में ही लीन रहता है॥३॥ मेरा प्रिय प्रभु सदैव सत्य एवं बेपरवाह है। वह जीवों के पापों एवं अवगुणों को नाश करने वाला है। अतः प्रेमपूर्वक सदैव ही उसका सिमरन करते रहना चाहिए। उसका भय मानते हुए प्रेमपूर्वक उसकी भक्ति को अपने हृदय में बसाना चाहिए॥४॥ हे भगवान! तेरी भक्ति सदैव सत्य है और इसकी देन जीव को तेरी इच्छानुसार ही मिलती है। तू स्वयं ही अपनी भक्ति की देन प्रदान करता है परन्तु देन देकर तू पश्चाताप नहीं करता। समस्त जीव-जन्तुओं का दाता एक प्रभु ही है। वह नाम द्वारा जीवों के अहंकार को नष्ट करके उन्हें सत्य जीवन प्रदान करने वाला है॥ ५॥ हे भगवान! तेरे सिवाय मेरा अन्य कोई नहीं। मैं तेरी ही भक्ति करता हूँ और तेरी ही महिमा-स्तुति करता हूँ। हे सत्य परमेश्वर! आप ही मुझे अपने साथ मिला लो। तेरी पूर्ण कृपा से ही तुझे पाया जा सकता है॥ ६॥ हे भगवान! मुझे तेरे जैसा अन्य कोई नजर नहीं

आता। तेरी कृपा–दृष्टि से मेरा शरीर सफल हो सकता है। भगवान प्रतिदिन जीवों की देखरेख करके उनकी रक्षा करता है। अतः गुरमुख सहज ही प्रभु में लीन रहते हैं॥ ७॥ हे भगवान! तेरे जैसा महान मुझे अन्य कोई भी नहीं दिखता। तू स्वयं ही सृष्टि की रचना करता है और स्वयं ही इसका विनाश करता है। हे भगवान! तू स्वयं ही सृष्टि का निर्माण करके एवं विनाश करके संवारता है। हे नानक! भगवान जीवों को अपने नाम में लगाकर उन्हें सुन्दर बना देता है॥८॥५॥६॥

माझ महला ३ ॥ सभ घट आपे भोगणहारा ॥ अलखु वरतै अगम अपारा ॥ गुर कै सबदि मेरा हरि प्रभु धिआईऐ सहजे सचि समावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी गुर सबदु मंनि वसावणिआ ॥ सबदु सूझै ता मन सिउ लूझै मनसा मारि समावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंच दूत मुहहि संसारा ॥ मनमुख अंधे सुधि न सारा ॥ गुरमुखि होवै सु अपणा घरु राखै पंच दूत सबदि पचावणिआ ॥ २ ॥ इकि गुरमुखि सदा सचै रंगि राते ॥ सहजे प्रभु सेवहि अनदिनु माते ॥ मिलि प्रीतम सचे गुण गावहि हरि दरि सोभा पावणिआ ॥ ३ ॥ एकम एकै आपु उपाइआ॥ दुबिधा दूजा त्रिबिधि माइआ ॥ चउथी पउड़ी गुरमुखि ऊची सचो सचु कमावणिआ ॥ ४ ॥ सभु है सचा जे सचे भावै ॥ जिनि सचु जाता सो सहजि समावै ॥ गुरमुखि करणी सचे सेवहि साचे जाइ समावणिआ ॥ ५ ॥ सचे बाझहु को अवरु न दूआ ॥ दूजै लागि जगु खपि खपि मूआ ॥ गुरमुखि होवै सु एको जाणै एको सेवि सुखु पावणिआ ॥ ६ ॥ जीअ जंत सभि सरणि तुमारी ॥ आपे धरि देखहि कची पकी सारी ॥ अनदिनु आपे कार कराए आपे मेलि मिलावणिआ ॥ ७ ॥ तूं आपे मेलहि वेखहि हदूरि ॥ सभ महि आपि रहिआ भरपूरि ॥ नानक आपे आपि वरतै गुरमुखि सोझी पावणिआ ॥ ८ ॥ ६ ॥ ७ ॥

समस्त जीवों में व्यापक होकर भगवान स्वयं ही पदार्थों को भोगने वाला है। अदृष्य, अगम्य, अनन्त परमात्मा सर्वत्र व्यापक हो रहा है। गुरु के शब्द द्वारा मेरे प्रभु–परमात्मा का ध्यान करने से मनुष्य सहज ही सत्य में लीन हो जाता है॥१॥ मैं तन–मन से उन पर न्यौछावर हूँ, जो गुरु की वाणी को अपने हृदय में बसाते हैं। यदि मनुष्य को गुरु की वाणी का ज्ञान हो जाता है, तब वह अपने मन से युद्ध करता है और अपनी तृष्णा को निवृत्त करके परमेश्वर में समा जाता है॥१॥ रहाउ॥ माया के पाँच दूत–काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जगत् के जीवों के सद्गुणों को लूट रहे हैं। ज्ञानहीन अन्धे मनमुख को इसका कोई ज्ञान नहीं। जो गुरमुख हो जाता है, वह अपना हृदय रूपी घर इन दूतों से बचा लेता है। पांचों ही कट्टर वैरी गुरु के उपदेश से नाश किए जाते हैं॥२॥ कई गुरमुख हमेशा सत्यस्वरूप ईश्वर के प्रेम में मग्न रहते हैं। वह स्वाभाविक ही अपने ईश्वर की भक्ति करते हैं और रात–दिन उसके प्रेम में मस्त रहते हैं। जो मनुष्य प्रियतम गुरु से मिलकर सत्यस्वरूप परमात्मा का यशोगान करते हैं, वह ईश्वर के दरबार में शोभा पाते हैं॥३॥ पहले, प्रभु निराकार था। वह स्वयंभू है और उसने स्वयं ही अपना एक साकार रूप पैदा किया, दूसरा, द्वैत–भाव की सूझ को और तीसरा, रज, तम एवं सत त्रिगुणात्मक माया उत्पन्न की। त्रिगुणात्मक माया द्वारा सृष्टि–रचना हुई। त्रिगुणात्मक माया के जीव चौरासी लाख योनियों के चक्र में पड़े रहते हैं। इन जीवों को ब्रह्म–ज्ञान का उपदेश देने के लिए संत, साधु, भक्त एवं ब्रह्मज्ञानी उत्पन्न किए गए जिन्हें गुरमुख कहा जाता है। यह चौथे पद की अवस्था वाले होते हैं। जिसे तुरीया पद भी कहा जाता है। गुरमुख अवस्था सर्वोच्च अवस्था है। वह नाम–सिमरन की साधना करते हैं॥४॥ जो सत्यस्वरूप परमात्मा को अच्छा लगता है, सब सत्य है। जो सत्य को पहचानता है, वह प्रभु में विलीन हो जाता है। गुरमुख की जीवन–मर्यादा सद्पुरुष की भक्ति–सेवा ही करती है। वे जाकर सत्य में ही समा जाते हैं॥५॥ सत्य (ईश्वर) के

अलावा अन्य कोई दूसरा नहीं। माया के मोह में फँस कर दुनिया बड़ी व्याकुल होकर मरती है। जो गुरमुख होता है, वह केवल एक ईश्वर को ही जानता है और एक ईश्वर की भक्ति करके सुख पाता है॥६॥ हे भगवान! समस्त जीव-जन्तु तुम्हारी शरण में हैं। यह जगत् एक चौपड़ की खेल है। तूने जीवों को इस खेल की कच्ची-पक्की गोटियाँ बनाया है। तू स्वयं ही जीवों की देखभाल करता है। तू स्वयं ही जीवों से कामकाज करवाता है और तू स्वयं ही इन्हें गुरु से मिलाकर अपने साथ मिलाने वाला है॥ ७॥ हे प्रभु! जो जीव तुझे प्रत्यक्ष देखते हैं, तू उन्हें स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है। तू स्वयं ही समस्त जीवों में विद्यमान हो रहा है। हे नानक! भगवान स्वयं ही सर्वव्यापक है परन्तु इसका ज्ञान गुरमुखों को ही होता है॥८॥६॥७॥

माझ महला ३ ॥ अंम्रित बाणी गुर की मीठी ॥ गुरमुखि विरले किनै चखि डीठी ॥ अंतरि परगासु महा रसु पीवै दरि सचै सबदु वजावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी गुर चरणी चितु लावणिआ ॥ सतिगुरु है अंम्रित सरु साचा मनु नावै मैलु चुकावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा सचे किनै अंतु न पाइआ ॥ गुर परसादि किनै विरलै चितु लाइआ ॥ तुधु सालाहि न रजा कबहूं सचे नावै की भुख लावणिआ ॥ २ ॥ एको वेखा अवरु न बीआ ॥ गुर परसादी अंम्रितु पीआ ॥ गुर कै सबदि तिखा निवारी सहजे सूखि समावणिआ ॥ ३ ॥ रतनु पदारथु पलरि तिआगै ॥ मनमुखु अंधा दूजै भाइ लागै ॥ जो बीजै सोई फलु पाए सुपनै सुखु न पावणिआ ॥ ४ ॥ अपनी किरपा करे सोई जनु पाए ॥ गुर का सबदु मंनि वसाए ॥ अनदिनु सदा रहै भै अंदरि भै मारि भरमु चुकावणिआ ॥ ५ ॥ भरमु चुकाइआ सदा सुखु पाइआ ॥ गुर परसादि परम पदु पाइआ ॥ अंतरु निरमलु निरमल बाणी हरि गुण सहजे गावणिआ ॥ ६ ॥ सिम्रिति सासत बेद वखाणै ॥ भरमे भूला ततु न जाणै ॥ बिनु सतिगुर सेवे सुखु न पाए दुखो दुखु कमावणिआ ॥ ७ ॥ आपि करे किसु आखै कोई ॥ आखणि जाईऐ जे भूला होई ॥ नानक आपे करे कराए नामे नामि समावणिआ ॥ ८ ॥ ७ ॥ ८ ॥

{इस पद में वाणी का फल एवं स्वरूप विद्यमान है।}

अमृत रूपी गुरु की वाणी बड़ी मीठी है। कोई विरला गुरमुख ही इसको चख कर देखता है। जो इस अमृत रूपी महारस का पान करता है, उसके हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है और सत्य प्रभु के दरबार में अनहद शब्द बजने लगता है॥१॥ मैं उन पर तन-मन से न्यौछावर हूँ, जो गुरु के चरणों में मन को लगाते हैं। सतिगुरु अमृत का सत्य सरोवर है। जब मन इसमें स्नान करता है तो वह अपने विकारों की मैल दूर कर लेता है॥१॥ रहाउ॥ हे सत्यस्वरूप ईश्वर! तेरा अन्त कोई भी नहीं जानता। गुरु की दया से कोई विरला पुरुष ही तेरे चरणों में अपना मन लगाता है। इतनी बड़ी क्षुधा सत्यनाम की मुझे लगी हुई है कि तेरी उपमा करने से मुझे कदाचित तृप्ति नहीं होती॥ २॥ मैं केवल एक ईश्वर को देखता हूँ और किसी अन्य दूसरे को नहीं। गुरु की दया से मैंने नाम रूपी अमृत पान कर लिया है। गुरु के शब्द से मेरी तृष्णा बुझ गई है और मैं स्वाभाविक ही सदैव सुख में लीन हो गया हूँ॥३॥ ज्ञानहीन मनमुख व्यक्ति माया के प्रेम में लीन हो जाता है और रत्न जैसे अमूल्य नाम को व्यर्थ ही त्याग देता है। वह जैसा बीज बोता है, वह तैसा ही फल पाता है। जिसके कारण स्वप्न में भी उसे सुख प्राप्त नहीं होता॥४॥ जिस मनुष्य पर परमात्मा अपनी दया करता है, वही गुरु को प्राप्त करता है। गुरु के शब्द को वह अपने हृदय में बसाता है। दिन-रात वह सदा ही प्रभु के भय में रहता है और यम के भय को मिटा कर वह अपने संशय को निवृत्त कर देता है॥५॥ जो व्यक्ति अपने मन का भ्रम दूर कर देता है, वह सदैव ही सुखी रहता है। गुरु की कृपा से वह परमपद (मोक्ष)

प्राप्त कर लेता है। निर्मल वाणी से उसका अन्तर्मन भी निर्मल हो जाता है और वह सहज ही भगवान की महिमा–स्तुति करता रहता है॥६॥ पण्डित स्मृतियाँ, शास्त्रों एवं वेदों की कथा लोगों को सुनाता रहता है परन्तु वह स्वयं ही भ्रम में पड़कर भटकता रहता है और परम तत्व ब्रह्म को नहीं जानता। सतिगुरु की सेवा किए बिना उसको सुख नहीं मिलता और वह दुःख ही दुःख अर्जित करता है॥७॥ परमात्मा स्वयं ही सब कुछ करता है। फिर किसी को कोई क्या समझा सकता है? किसी को समझाने की तभी आवश्यकता है यदि वह भूल करता हो। हे नानक! परमात्मा स्वयं ही सब कुछ करता और जीवों से करवाता है। नाम सिमरन करके जीव नाम में ही लीन हो जाता है॥८॥७॥८॥

माझ महला ३ ॥ आपे रंगे सहजि सुभाए ॥ गुर कै सबदि हरि रंगु चड़ाए ॥ मनु तनु रता रसना रंगि चलूली भै भाइ रंगु चड़ावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी निरभउ मंनि वसावणिआ ॥ गुर किरपा ते हरि निरभउ धिआइआ बिखु भउजलु सबदि तरावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख मुगध करहि चतुराई ॥ नाता धोता थाइ न पाई ॥ जेहा आइआ तेहा जासी करि अवगण पछोतावणिआ ॥ २ ॥ मनमुख अंधे किछू न सूझै ॥ मरणु लिखाइ आए नही बूझै ॥ मनमुख करम करे नही पाए बिनु नावै जनमु गवावणिआ ॥ ३ ॥ सचु करणी सबदु है सारु ॥ पूरै गुरि पाईऐ मोख दुआरु ॥ अनदिनु बाणी सबदि सुणाए सचि राते रंगि रंगावणिआ ॥ ४ ॥ रसना हरि रसि राती रंगु लाए ॥ मनु तनु मोहिआ सहजि सुभाए ॥ सहजे प्रीतमु पिआरा पाइआ सहजे सहजि मिलावणिआ ॥ ५ ॥ जिसु अंदरि रंगु सोई गुण गावै ॥ गुर कै सबदि सहजे सुखि समावै ॥ हउ बलिहारी सदा तिन विटहु गुर सेवा चितु लावणिआ ॥ ६ ॥ सचा सचो सचि पतीजै ॥ गुर परसादी अंदरु भीजै ॥ बैसि सुथानि हरि गुण गावहि आपे करि सति मनावणिआ ॥ ७ ॥ जिस नो नदरि करे सो पाए ॥ गुर परसादी हउमै जाए ॥ नानक नामु वसै मन अंतरि दरि सचै सोभा पावणिआ ॥ ८ ॥ ८ ॥ ९ ॥

भगवान स्वयं ही जीव को सहज स्वभाव द्वारा अपने प्रेम में रंग देता है और गुरु के शब्द द्वारा अपने प्रेम का रंग चढ़ा देता है। उसका मन एवं तन प्रेम में रंग जाता है और उसकी जिह्वा पोस्त के पुष्प की भाँति लाल वर्ण धारण कर लेती है। भगवान उसे यह नाम रंग उसके मन में अपना भय एवं प्रेम उत्पन्न करके चढ़ाता है॥१॥ मैं उन पर न्यौछावर हूँ मेरा जीवन उन पर कुर्बान है, जो निडर परमात्मा को अपने हृदय में बसाते हैं। गुरु की दया से वे निर्भय परमेश्वर को स्मरण करते हैं और उनकी वाणी द्वारा विषैले संसार सागर को पार कर जाते हैं॥१॥ रहाउ॥ मनमुख मूर्ख व्यक्ति चतुरता करता है। अपने स्नान व स्वच्छता के बावजूद वह स्वीकृत नहीं होता। जिस तरह वह जगत् में आया था, वैसे ही पापों पर पश्चाताप करता हुआ चला जाता है॥२॥ ज्ञानहीन मनमुखों को कुछ भी ज्ञान नहीं होता क्योंकि वह प्रारम्भ से ही अपनी किस्मत में अपनी मृत्यु के लेख लिखवा कर जगत् में आते हैं। वे अपने जीवन–मनोरथ को नहीं समझते। मनमुख कर्म करते रहते हैं परन्तु उन्हें नाम प्राप्त नहीं होता। नामविहीन होकर वह अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा देते हैं॥३॥ सत्यनाम की साधना ही सर्वश्रेष्ठ है। पूर्णगुरु के द्वारा मोक्ष द्वार मिलता है। गुरु जी प्रतिदिन अपनी वाणी द्वारा सिक्खों को नाम सुनाते रहते हैं और वह शब्द द्वारा सत्य प्रभु के प्रेम में मग्न हुए नाम रंग में लीन हो जाते हैं॥४॥ गुरमुख की रसना हरि–रस में रंग जाती है और प्रभु से ही प्यार करती है। सहज स्वभाव ही उसका मन एवं तन प्रभु प्रेम से मुग्ध हो जाता है। वह सहज ही अपने प्रियतम प्रभु को पा लेता है। फिर वह सहज ही सहज अवस्था में समा जाता है॥५॥ जिस मनुष्य में प्रभु का प्रेम विद्यमान है। वह ईश्वर का यशोगायन करता है और गुरु के शब्द द्वारा सहज ही आत्मिक आनंद में समा जाता है। मैं सदैव ही

उन पर कुर्बान जाता हूँ, जो अपने मन को गुरु की सेवा में समर्पित करते हैं॥६॥ वही व्यक्ति सत्यवादी है जो सत्य नाम द्वारा सत्य प्रभु से विश्वस्त हो जाता है। गुरु की कृपा से उसका हृदय नाम–रस से भीग जाता है। वह साध संगत रूपी सुन्दर स्थान पर बैठकर भगवान की महिमा–स्तुति ही करता है। भगवान स्वयं ही उस पर कृपा करके उसके मन में यह श्रद्धा पैदा करता है कि सत्य का गुणानुवाद ही सत्यकर्म है॥७॥ जिस पर प्रभु अपनी दया–दृष्टि करता है, वह उसके नाम को पाता है। गुरु की दया से उसका अहंकार निवृत्त हो जाता है। हे नानक! जिसके मन में ईश्वर का नाम निवास करता है, वह सत्य दरबार में बड़ी शोभा पाता है॥८॥८॥६॥

माझ महला ३ ॥ सतिगुरु सेविऐ वडी वडिआई ॥ हरि जी अचिंतु वसै मनि आई ॥ हरि जीउ सफलिओ बिरखु है अंम्रितु जिनि पीता तिसु तिखा लहावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी सचु संगति मेलि मिलावणिआ ॥ हरि सतसंगति आपे मेलै गुर सबदी हरि गुण गावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु सेवी सबदि सुहाइआ ॥ जिनि हरि का नामु मंनि वसाइआ ॥ हरि निरमलु हउमै मैलु गवाए दरि सचै सोभा पावणिआ ॥ २ ॥ बिनु गुर नामु न पाइआ जाइ ॥ सिध साधिक रहे बिललाइ ॥ बिनु गुर सेवे सुखु न होवी पूरै भागि गुरु पावणिआ ॥ ३ ॥ इहु मनु आरसी कोई गुरमुखि वेखै ॥ मोरचा न लागै जा हउमै सोखै ॥ अनहत बाणी निरमल सबदु वजाए गुर सबदी सचि समावणिआ ॥ ४ ॥ बिनु सतिगुर किहु न देखिआ जाइ ॥ गुरि किरपा करि आपु दिता दिखाइ ॥ आपे आपि आपि मिलि रहिआ सहजे सहजि समावणिआ ॥ ५ ॥ गुरमुखि होवै सु इकसु सिउ लिव लाए ॥ दूजा भरमु गुर सबदि जलाए ॥ काइआ अंदरि वणजु करे वापारा नामु निधानु सचु पावणिआ ॥ ६ ॥ गुरमुखि करणी हरि कीरति सारु ॥ गुरमुखि पाए मोख दुआरु ॥ अनदिनु रंगि रता गुण गावै अंदरि महलि बुलावणिआ ॥ ७ ॥ सतिगुरु दाता मिलै मिलाइआ ॥ पूरै भागि मनि सबदु वसाइआ ॥ नानक नामु मिलै वडिआई हरि सचे के गुण गावणिआ ॥ ८ ॥ ६ ॥ १० ॥

सतिगुरु की सेवा करने से बड़ी शोभा प्राप्त होती है और पूज्य परमेश्वर अकस्मात ही हृदय में आकर निवास करता है। हरि–परमेश्वर एक फलदायक पौधा है जो इसके नाम रूपी अमृत का पान करता है, उसकी प्यास बुझ जाती है॥१॥ मेरा तन, मन एवं प्राण उस प्रभु पर न्यौछावर हैं जो जीवों को सत्संग में मिलाकर अपने साथ मिला लेता है। भगवान स्वयं ही जीवों को सत्संग में मिलाता है और गुरु के शब्द द्वारा जीव भगवान की महिमा–स्तुति करता रहता है॥१॥ रहाउ॥ जो सतिगुरु की सेवा करता है, गुरु की वाणी से शोभा पा रहा है। जिस व्यक्ति ने भगवान का नाम अपने मन में बसा लिया है, निर्मल भगवान उसके मन की अहंकार रूपी मैल को दूर कर देता है और वह व्यक्ति सत्य के दरबार में शोभा प्राप्त करता है॥२॥ गुरु के बिना नाम की प्राप्ति नहीं होती। सिद्ध–साधक इससे विहीन होकर विलाप करते हैं। गुरु की सेवा के बिना सुख नहीं मिलता लेकिन बड़े सौभाग्य से सुकर्मों द्वारा गुरु जी मिलते हैं॥३॥ यह मन एक दर्पण है। कोई विरला गुरमुख ही उसमें अपने–आपको देखता है। यदि मनुष्य अपना अहंकार जला दे तो उसे अहंकार रूपी जंगाल नहीं लगता। जिस गुरमुख के मन में अनहद ध्वनि वाला निर्मल अनहद बजने लग जाता है, वह गुरु के शब्द द्वारा सत्य (परमेश्वर) में समा जाता है॥४॥ सतिगुरु के बिना परमेश्वर किसी तरह भी देखा नहीं जा सकता। अपनी दया करके गुरदेव ने स्वयं ही मुझे ईश्वर के दर्शन करवा दिए हैं। ईश्वर अपने आप स्वयं ही सर्वव्यापक हो रहा है। ब्रह्म–ज्ञान द्वारा मनुष्य सहज ही उसमें लीन हो जाता है॥५॥ जो व्यक्ति गुरमुख बन जाता है, वह एक ईश्वर के साथ स्नेह करता है। गुरु के शब्द द्वारा वह मोह माया रूपी

भ्रम को जला फैंकता है। अपनी देहि में ही वह नाम रूपी वस्तु का व्यापार करता है और सत्यनाम की निधि पा लेता है॥६॥ भगवान की महिमा–स्तुति करना ही गुरमुख की श्रेष्ठ करनी है। इसलिए गुरमुख मोक्ष द्वार को पा लेता है। प्रभु के स्नेह में रंगा हुआ वह रात–दिन उसकी कीर्ति का गायन करता रहता है और प्रभु उसे अपने आत्म–स्वरूप में आमंत्रित कर लेता है॥७॥ सतिगुरु नाम का दाता है और सतिगुरु भगवान का मिलाया हुआ ही जीव को मिलता है। जिस व्यक्ति के पूर्ण भाग्य होते हैं, सतिगुरु उसके मन में नाम बसा देते हैं। हे नानक! यदि सत्यस्वरूप परमात्मा की महिमा–स्तुति की जाए तो ही मनुष्य को नाम की शोभा प्राप्त होती है॥८॥६॥१०॥

माझ महला ३ ॥ आपु वंञाए ता सभ किछु पाए ॥ गुर सबदी सची लिव लाए ॥ सचु वणंजहि सचु संघरहि सचु वापारु करावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हरि गुण अनदिनु गावणिआ ॥ हउ तेरा तूं ठाकुरु मेरा सबदि वडिआई देवणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वेला वखत सभि सुहाइआ ॥ जितु सचा मेरे मनि भाइआ ॥ सचे सेविऐ सचु वडिआई गुर किरपा ते सचु पावणिआ ॥ २ ॥ भाउ भोजनु सतिगुरि तुठै पाए ॥ अन रसु चूकै हरि रसु मंनि वसाए ॥ सचु संतोखु सहज सुखु बाणी पूरे गुर ते पावणिआ ॥ ३ ॥ सतिगुरु न सेवहि मूरख अंध गवारा ॥ फिरि ओइ किथहु पाइनि मोख दुआरा ॥ मरि मरि जंमहि फिरि फिरि आवहि जम दरि चोटा खावणिआ ॥ ४ ॥ सबदै सादु जाणहि ता आपु पछाणहि ॥ निरमल बाणी सबदि वखाणहि ॥ सचे सेवि सदा सुखु पाइनि नउ निधि नामु मंनि वसावणिआ ॥ ५ ॥ सो थानु सुहाइआ जो हरि मनि भाइआ ॥ सतसंगति बहि हरि गुण गाइआ ॥ अनदिनु हरि सालाहहि साचा निरमल नादु वजावणिआ ॥ ६ ॥ मनमुख खोटी रासि खोटा पासारा ॥ कूड़ु कमावनि दुखु लागै भारा ॥ भरमे भूले फिरनि दिन राती मरि जनमहि जनमु गवावणिआ ॥ ७ ॥ सचा साहिबु मै अति पिआरा ॥ पूरे गुर कै सबदि अधारा ॥ नानक नामि मिलै वडिआई दुखु सुखु सम करि जानणिआ ॥ ८ ॥ १० ॥ ११ ॥

यदि मनुष्य अपने अहंत्व को त्याग दे तो वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है। गुरु के शब्द द्वारा वह सत्य परमेश्वर में सुरति लगाता है। वह सत्य–नाम का व्यापार करता है और सत्य नाम रूपी धन ही एकत्रित करता है और सत्य नाम का ही वह दूसरों से व्यापार करवाता है॥१॥ मैं तन–मन से उन पर बलिहारी जाता हूँ, जो सदैव ही ईश्वर का यशोगान करते हैं। हे प्रभु! मैं तेरा सेवक हूँ, तुम मेरे ठाकुर हो। तुम मुझे नाम की शोभा प्रदान करते हो॥१॥ रहाउ॥ वह समय एवं क्षण सभी सुन्दर हैं, जब सत्यस्वरूप परमात्मा मेरे चित्त को अच्छा लगता है। सत्य प्रभु की सेवा–भक्ति द्वारा सच्ची महानता प्राप्त होती है किन्तु गुरु की दया से ही सत्यस्वरूप ईश्वर मिलता है॥२॥ प्रभु प्रीति का भोजन तभी मिलता है जब सतिगुरु जी परम प्रसन्न होते हैं। मनुष्य अन्य रस भूल जाता है जब वह हरि रस को अपने मन में बसा लेता है। प्राणी पूर्ण गुरु की वाणी से ही सत्य, संतोष एवं सहज सुख प्राप्त करता है॥३॥ मूर्ख, अंधे, गंवार मनुष्य सतिगुरु की सेवा नहीं करते। तब वह किस तरह मोक्ष–द्वार को प्राप्त होंगे? वह बार–बार मरते और जन्म लेते हैं और पुनःपुनः जीवन–मृत्यु के बंधन में फँसकर आवागमन करते हैं। मृत्यु के द्वार पर वह चोटें खाते हैं॥४॥ वह अपने स्वरूप की तभी पहचान कर सकते हैं, यदि वह शब्द के स्वाद को जानते हो और निर्मल वाणी द्वारा नाम–सिमरन करते हों। गुरमुख सत्य परमेश्वर की भक्ति द्वारा सदैव सुख प्राप्त करते हैं और अपने चित्त में ईश्वर के नाम की नवनिधि को बसाते हैं॥५॥ वह स्थान अति सुन्दर है जो परमेश्वर के मन को लुभाता है। केवल वही सत्संग है, जिस में बैठकर मनुष्य हरि–प्रभु का यशोगान करता है। गुरमुख प्रतिदिन भगवान की महिमा–स्तुति

करते रहते हैं और उनके मन में निर्मल नाद अर्थात् अनहद शब्द बजने लग जाता है॥६॥ मनमुख व्यक्ति माया–धन संचित करते हैं जो खोटी पूँजी है और वह इस खोटी पूँजी का ही प्रसार करते हैं। वह माया धन की मिथ्या कमाई करते हैं और अत्यंत कष्ट सहन करते हैं। वे भ्रम में फँसकर दिन–रात भटकते रहते हैं और जीवन–मृत्यु के बंधन में पड़कर अपना जीवन व्यर्थ गंवा देते हैं॥७॥ सत्यस्वरूप परमात्मा मुझे अत्यन्त प्रिय है। पूर्ण गुरु का शब्द मेरा जीवन आधार है। हे नानक! जिनको परमात्मा के नाम की शोभा प्राप्त होती है, वह दुख–सुख को एक समान जानते हैं॥८॥१०॥११॥

माझ महला ३ ॥ तेरीआ खाणी तेरीआ बाणी ॥ बिनु नावै सभ भरमि भुलाणी ॥ गुर सेवा ते हरि नामु पाइआ बिनु सतिगुर कोइ न पावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हरि सेती चितु लावणिआ ॥ हरि सचा गुर भगती पाईऐ सहजे मंनि वसावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु सेवे ता सभ किछु पाए ॥ जेही मनसा करि लागै तेहा फलु पाए ॥ सतिगुरु दाता सभना वथू का पूरै भागि मिलावणिआ ॥ २ ॥ इहु मनु मैला इकु न धिआए ॥ अंतरि मैलु लागी बहु दूजै भाए ॥ तटि तीरथि दिसंतरि भवै अहंकारी होरु वधेरै हउमै मलु लावणिआ ॥ ३ ॥ सतिगुरु सेवे ता मलु जाए ॥ जीवतु मरै हरि सिउ चितु लाए ॥ हरि निरमलु सचु मैलु न लागै सचि लागै मैलु गवावणिआ ॥ ४ ॥ बाझु गुरू है अंध गुबारा ॥ अगिआनी अंधा अंधु अंधारा ॥ बिसटा के कीड़े बिसटा कमावहि फिरि बिसटा माहि पचावणिआ ॥ ५ ॥ मुकते सेवे मुकता होवै ॥ हउमै ममता सबदे खोवै ॥ अनदिनु हरि जीउ सचा सेवी पूरै भागि गुरु पावणिआ ॥ ६ ॥ आपे बखसे मेलि मिलाए ॥ पूरे गुर ते नामु निधि पाए ॥ सचै नामि सदा मनु सचा सचु सेवे दुखु गवावणिआ ॥ ७ ॥ सदा हजूरि दूरि न जाणहु ॥ गुर सबदी हरि अंतरि पछाणहु ॥ नानक नामि मिलै वडिआई पूरे गुर ते पावणिआ॥ ८ ॥ ११ ॥ १२ ॥

हे ठाकुर जी! चारों ही उत्पत्ति के स्रोत तेरे हैं और चारों ही वाणी तेरी है। प्रभु के नाम के बिना सारी दुनिया भ्रम में भटकी हुई है। गुरु की सेवा करने से ईश्वर का नाम प्राप्त होता है। सतिगुरु के बिना किसी को भी ईश्वर का नाम नहीं मिल सकता॥१॥ मैं उन पर कुर्बान हूँ, जो ईश्वर के साथ अपना चित्त लगाते हैं। सत्यस्वरूप ईश्वर गुरु–भक्ति से ही प्राप्त होता है और प्रभु सहज ही मनुष्य के हृदय में निवास करता है॥१॥ रहाउ॥ यदि मनुष्य सतिगुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करे, तो वह सबकुछ प्राप्त कर लेता है। जिस तरह की कामना हेतु वह सेवा में सक्रिय होता है, वैसा ही फल वह प्राप्त करता है। सतिगुरु समस्त पदार्थों का दाता है। भगवान सौभाग्यशाली व्यक्ति को ही गुरु से मिलाता है॥२॥ यह मलिन मन एक ईश्वर की आराधना नहीं करता। मोह–माया में फँसने के कारण इसके भीतर बहुत सारी मैल लगी हुई है। अहंकारी मनुष्य दरिया के तट, धार्मिक स्थलों व प्रदेशों में भटकता रहता है परन्तु वह अपने मन को अहंकार की अधिक मैल लगा लेता है॥३॥ यदि वह सतिगुरु की सेवा करे तो उसकी मैल दूर हो जाती है। वह अहंत्व को मारकर हरि प्रभु में अपना चित्त लगाता है। भगवान निर्मल है और उस सत्य प्रभु को अहंकार की मैल नहीं लगती। जो व्यक्ति सत्य के साथ जुड़ जाता है वह अपनी मैल गंवा देता है॥४॥ गुरु के बिना जगत् में अज्ञानता का घोर अंधकार है। ज्ञानहीन व्यक्ति अज्ञानता के अंधेरे में अंधा बना रहता है। उसका ऐसा हाल होता है जैसे विष्टा के कीड़े का होता है, जो विष्टा खाने का कार्य करता है और विष्टा में ही जलकर मर जाता है॥५॥ जो व्यक्ति माया से मुक्त होकर गुरु की सेवा करता है, वही माया से मुक्त होता है। वह नाम द्वारा अपने अहंकार को दूर कर लेता है और रात–दिन पूज्य परमेश्वर की भक्ति करता रहता है। उसे पूर्ण भाग्य से गुरु मिलता है॥६॥ भगवान स्वयं ही मनुष्य को क्षमा कर देता है और उसे गुरु से मिलाकर

अपने साथ मिला लेता है। वह पूर्ण गुरु से नाम रूपी निधि प्राप्त कर लेता है। उसका मन सदैव ही सत्य नाम द्वारा प्रभु का सिमरन करता रहता है। फिर प्रभु का सिमरन करके वह अपना दुख मिटा लेता है॥७॥ भगवान स्वयं ही जीव के समीप रहता है, इसलिए उसे कहीं दूर मत समझो। गुरु के शब्द द्वारा भगवान को अपने मन में विद्यमान समझो। हे नानक! नाम से जीव को बड़ी शोभा प्राप्त होती है परन्तु नाम पूर्ण गुरु द्वारा ही मिलता है॥८॥११॥१२॥

माझ महला ३ ॥ ऐथै साचे सु आगै साचे ॥ मनु सचा सचै सबदि राचे ॥ सचा सेवहि सचु कमावहि सचो सचु कमावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी सचा नामु मंनि वसावणिआ ॥ सचे सेवहि सचि समावहि सचे के गुण गावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंडित पड़हि सादु न पावहि ॥ दूजै भाइ माइआ मनु भरमावहि ॥ माइआ मोहि सभ सुधि गवाई करि अवगण पछोतावणिआ ॥ २ ॥ सतिगुरु मिलै ता ततु पाए ॥ हरि का नामु मंनि वसाए ॥ सबदि मरै मनु मारै अपना मुकती का दरु पावणिआ ॥ ३ ॥ किलविख काटै क्रोधु निवारे ॥ गुर का सबदु रखै उर धारे ॥ सचि रते सदा बैरागी हउमै मारि मिलावणिआ ॥ ४ ॥ अंतरि रतनु मिलै मिलाइआ ॥ त्रिबिधि मनसा त्रिबिधि माइआ ॥ पड़ि पड़ि पंडित मोनी थके चउथे पद की सार न पावणिआ ॥ ५ ॥ आपे रंगे रंगु चड़ाए ॥ से जन राते गुर सबदि रंगाए ॥ हरि रंगु चड़िआ अति अपारा हरि रसि रसि गुण गावणिआ ॥ ६ ॥ गुरमुखि रिधि सिधि सचु संजमु सोई ॥ गुरमुखि गिआनु नामि मुकति होई ॥ गुरमुखि कार सचु कमावहि सचे सचि समावणिआ ॥ ७ ॥ गुरमुखि थापे थापि उथापे ॥ गुरमुखि जाति पति सभु आपे ॥ नानक गुरमुखि नामु धिआए नामे नामि समावणिआ ॥ ८ ॥ १२ ॥ १३ ॥

जो व्यक्ति इहलोक में सत्यवादी है, वह आगे परलोक में भी सत्यवादी है। वह मन सत्य है जो सत्य नाम में लीन रहता है। वह सत्यस्वरूप परमात्मा की आराधना करता है, सत्य नाम का वह जाप करता है और शुद्ध सत्य का ही वह कर्म करता है॥१॥ मेरा तन, मन सर्वस्व उन पर न्यौछावर है, जो व्यक्ति सत्य-नाम को अपने हृदय में बसाते हैं। वे सत्य प्रभु की सेवा करते हैं, सत्य नाम में ही लीन रहते हैं और सत्य-परमेश्वर का ही यश गायन करते हैं॥१॥ रहाउ॥ पण्डित धार्मिक ग्रंथ पढ़ते हैं परन्तु उन्हें आनंद नहीं मिलता। क्योंकि द्वैत भाव के कारण उनका हृदय सांसारिक पदार्थों में भटकता रहता है। माया-मोह की लगन ने उनकी बुद्धि भ्रष्ट कर दी है और दुष्कर्मों के कारण वे पश्चाताप करते हैं॥२॥ यदि मनुष्य को सतिगुरु मिल जाए तो उसे ज्ञान प्राप्त हो जाता है, फिर वह भगवान के नाम को अपने हृदय में बसाता है। वह नाम द्वारा अपने अहंकार को नष्ट करके विनम्रता धारण करता है। वह अपने मन को वश में करके मोक्ष द्वार को पा लेता है॥३॥ वह अपने पापों को नाश कर देता है और क्रोध को दूर कर देता है। वह गुरु की वाणी को अपने हृदय में बसाकर रखता है। वह सत्य नाम के प्रेम में मग्न रहता है और उसके मन में प्रभु-मिलन का वैराग्य बना रहता है। वह अपने अहंकार को नष्ट करके प्रभु को मिल पाता है॥४॥ मनुष्य के हृदय में नाम रूपी अमूल्य रत्न है। यह रत्न उसे गुरु के मिलाने से ही प्राप्त होता है। माया (रज, तम, सत) त्रिगुणात्मक है अतः मन की इच्छाएँ भी तीन प्रकार की होती हैं। पण्डित एवं मौनधारी ऋषि धार्मिक ग्रंथों को पढ़-पढ़कर थक चुके हैं परन्तु उन्हें चतुर्थ पद तुरीया अवस्था का ज्ञान नहीं हुआ॥५॥ ईश्वर स्वयं ही जीवों को अपना प्रेम रंग चढ़ाकर रंग देता है। लेकिन वही पुरुष प्रभु के प्रेम में रंग जाते हैं जो गुरु की वाणी के प्रेम में रंग जाते हैं। उन्हें अपार परमात्मा के प्रेम का रंग इतना चढ़ जाता है कि वह स्वाद ले लेकर भगवान की महिमा-स्तुति करते रहते हैं॥६॥ गुरमुख के लिए वह सद्पुरुष ही ऋद्धि, सिद्धि और

संयम है। गुरमुख को ज्ञान प्राप्त हो जाता है और हरिनाम द्वारा वह माया से मुक्त हो जाता है। पवित्रात्मा गुरमुख सत्य कर्म करता है और सत्य प्रभु के सत्य नाम में लीन हो जाता है॥७॥ भगवान स्वयं ही मनुष्य को गुरमुख बनाता है और गुरमुख यही अनुभव करता है कि ईश्वर ही सृष्टि की रचना करके स्वयं ही प्रलय करता है। गुरमुख का ईश्वर स्वयं ही जाति और समूह सम्मान है। हे नानक! गुरमुख सत्यनाम की आराधना करता है और परमेश्वर के नाम में ही लीन हो जाता है॥८॥१२॥१३॥

माझ महला ३॥ उतपति परलउ सबदे होवै ॥ सबदे ही फिरि ओपति होवै ॥ गुरमुखि वरतै सभु आपे सचा गुरमुखि उपाइ समावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी गुरु पूरा मंनि वसावणिआ ॥ गुर ते साति भगति करे दिनु राती गुण कहि गुणी समावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि धरती गुरमुखि पाणी ॥ गुरमुखि पवणु बैसंतरु खेलै विडाणी ॥ सो निगुरा जो मरि मरि जंमै निगुरे आवण जावणिआ ॥ २ ॥ तिनि करतै इकु खेलु रचाइआ ॥ काइआ सरीरै विचि सभु किछु पाइआ ॥ सबदि भेदि कोई महलु पाए महले महलि बुलावणिआ ॥ ३ ॥ सचा साहु सचे वणजारे ॥ सचु वणंजहि गुर हेति अपारे ॥ सचु विहाझहि सचु कमावहि सचो सचु कमावणिआ ॥ ४ ॥ बिनु रासी को वथु किउ पाए ॥ मनमुख भूले लोक सबाए ॥ बिनु रासी सभ खाली चले खाली जाइ दुखु पावणिआ ॥ ५ ॥ इकि सचु वणंजहि गुर सबदि पिआरे ॥ आपि तरहि सगले कुल तारे ॥ आए से परवाणु होए मिलि प्रीतम सुखु पावणिआ ॥ ६ ॥ अंतरि वसतु मूड़ा बाहरु भाले ॥ मनमुख अंधे फिरहि बेताले ॥ जिथै वथु होवै तिथहु कोइ न पावै मनमुख भरमि भुलावणिआ ॥ ७ ॥ आपे देवै सबदि बुलाए ॥ महली महलि सहज सुखु पाए ॥ नानक नामि मिलै वडिआई आपे सुणि सुणि धिआवणिआ ॥ ८ ॥ १३ ॥ १४ ॥

सृष्टि की रचना एवं प्रलय शब्द द्वारा ही होती है और शब्द द्वारा ही प्रलय के उपरांत ही पुनः सृष्टि की उत्पत्ति होती है। वह सत्य–परमेश्वर स्वयं ही गुरु के रूप में सर्वव्यापक है। गुरु–परमेश्वर स्वयं ही सृष्टि–रचना करके इसमें समाया हुआ है॥१॥ मैं उन पर तन–मन से न्यौछावर हूँ, जिन्होंने पूर्ण गुरु को अपने हृदय में बसाया है। गुरु से ही मनुष्य को शांति प्राप्त होती है और वह दिन–रात भगवान की भक्ति करता रहता है। वह प्रभु के गुण अपने मुख से उच्चरित करता रहता है और गुणों के स्वामी परमात्मा में ही समा जाता है॥१॥ रहाउ॥ गुरु ने ही धरती, जल, पवन एवं अग्नि को पैदा किया है और गुरु स्वयं ही एक अद्भुत खेल को खेल रहा है। निगुरा वह व्यक्ति होता है, जो जन्मता–मरता रहता है। निगुरा जन्म–मरण के चक्र में ही पड़ा रहता है॥२॥ उस सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर ने यह जगत् अपनी एक खेल रचा हुआ है। उसने मानव शरीर में सब कुछ डाल दिया है जो व्यक्ति शब्द द्वारा भगवान के आत्मस्वरूप का भेद समझ लेता है, भगवान उस व्यक्ति को अपने आत्मस्वरूप में आमंत्रित कर लेता है॥३॥ वह परमात्मा ही सच्चा साहूकार है और जीव सच्चे व्यापारी हैं। जीव अनंत प्रभु के रूप गुरु से प्रेम करके सत्य नाम का व्यापार करते हैं। वे सत्य नाम खरीदते हैं और सत्य नाम की कमाई करते रहते हैं। वह सत्य द्वारा सत्य नाम ही कमाते हैं॥४॥ सत्य नाम की पूँजी के बिना सत्य नाम रूपी वस्तु को कोई कैसे प्राप्त कर सकता है? मनमुख व्यक्ति भटके हुए हैं और नाम रूपी पूँजी के बिना वह दुनिया से खाली हाथ चले जाते हैं और खाली हाथ बड़े दुःखी होते हैं॥५॥ जो व्यक्ति गुरु के शब्द द्वारा सत्य नाम का व्यापार करते हैं, वह भवसागर से पार हो जाते हैं और अपनी वंशावलि के समस्त सदस्यों को भी पार करवा देते हैं। ऐसे लोगों का ही जन्म लेकर दुनिया में आगमन सफल होता है और वे अपने प्रिय प्रभु से मिलकर सुखी रहते हैं॥६॥प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में नाम रूपी वस्तु विद्यमान है परन्तु मूर्ख मनमुख इसे अपने शरीर से बाहर ढूँढता

रहता है। ज्ञानहीन मनमुख प्रेतों की तरह पागल हुए फिरते रहते हैं। जहाँ नाम रूपी वस्तु मिलती है, वहाँ कोई भी उसे प्राप्त नहीं करता। मनमुख व्यक्ति भ्रम में फँसकर भटकते रहते हैं॥७॥ परमात्मा स्वयं ही जीव को आमंत्रित करके शब्द द्वारा नाम रूपी वस्तु देता है। जीव परमात्मा के स्वरूप में पहुँच कर परमानंद एवं सुख भोगता है। हे नानक! नाम में लीन रहने वाले को भगवान के दरबार में बड़ी शोभा मिलती है और वह स्वयं ही सुन-सुनकर ध्यान लगाता है॥८॥१३॥१४॥

माझ महला ३ ॥ सतिगुर साची सिख सुणाई ॥ हरि चेतहु अंति होइ सखाई ॥ हरि अगमु अगोचरु अनाथु अजोनी सतिगुर कै भाइ पावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी आपु निवारणिआ ॥ आपु गवाए ता हरि पाए हरि सिउ सहजि समावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरबि लिखिआ सु करमु कमाइआ ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ ॥ बिनु भागा गुरु पाईऐ नाही सबदै मेलि मिलावणिआ ॥ २ ॥ गुरमुखि अलिपतु रहै संसारे ॥ गुर कै तकीऐ नामि अधारे ॥ गुरमुखि जोरु करे किआ तिस नो आपे खपि दुखु पावणिआ ॥ ३ ॥ मनमुखि अंधे सुधि न काई ॥ आतम घाती है जगत कसाई ॥ निंदा करि करि बहु भारु उठावै बिनु मजूरी भारु पहुचावणिआ ॥ ४ ॥ इहु जगु वाड़ी मेरा प्रभु माली ॥ सदा समाले को नाही खाली ॥ जेही वासना पाए तेही वरतै वासू वासु जणावणिआ ॥ ५ ॥ मनमुखु रोगी है संसारा ॥ सुखदाता विसरिआ अगम अपारा ॥ दुखीए निति फिरहि बिललादे बिनु गुर सांति न पावणिआ ॥ ६ ॥ जिनि कीते सोई बिधि जाणै ॥ आपि करे ता हुकमि पछाणै ॥ जेहा अंदरि पाए तेहा वरतै आपे बाहरि पावणिआ ॥ ७ ॥ तिसु बाझहु सचे मै होरु न कोई ॥ जिसु लाइ लए सो निरमलु होई ॥ नानक नामु वसै घट अंतरि जिसु देवै सो पावणिआ ॥ ८ ॥ १४ ॥ १५ ॥

सतिगुरु ने यही सच्ची शिक्षा सुनाई है कि भगवान का भजन करो, जो अंतिमकाल तेरा सहायक बनेगा। भगवान अगम्य, अगोचर एवं अयोनि है, जिसका कोई भी स्वामी नहीं। ऐसे प्रभु को सतिगुरु के प्रेम द्वारा ही पाया जाता है॥१॥ मैं उन पर तन-मन से न्यौछावर हूँ, जो अपने अहंत्व को दूर कर देते हैं। जो व्यक्ति अपने अहंत्व को छोड़ देता है, वह भगवान को पा लेता है और सहज ही भगवान में समा जाता है॥ १॥ रहाउ॥ जीव वही कर्म करता है, जो उसकी किस्मत में पूर्व-जन्म के कर्मों द्वारा लिखा होता है। सतिगुरु की सेवा से वह सदा सुख प्राप्त करता है। भाग्य के बिना मनुष्य को गुरु नहीं मिलता। गुरु नाम द्वारा ही जीव को परमेश्वर से मिलाता है॥२॥ गुरमुख इस संसार में निर्लिप्त होकर रहता है। उसको गुरु का आश्रय एवं नाम का सहारा है। जो गुरमुख है उसके साथ कौन अन्याय कर सकता है? दुष्ट अपने आप ही मर मिटता है और कष्ट झेलता है॥३॥ ज्ञानहीन मनमुख को कोई ज्ञान नहीं होता। वह आत्मघाती और संसार का जल्लाद है। दूसरों की निंदा करके वह पापों का बोझ उठाता है। वह उस मजदूर जैसा है जो बिना मजदूरी लिए दूसरों का भार उठाकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाता है॥४॥ यह संसार एक उपवन है और मेरा प्रभु इसका बागवां है। वह सदा ही इसकी रक्षा करता है। इसका कोई भाग उसकी देखरेख से अधूरा नहीं हुआ। जिस तरह की महक ईश्वर पुष्प में डालता है, वह वैसी ही उसमें प्रबल होती है। सुगंधित पुष्प अपनी सुगंध से जाना जाता है॥५॥ मनमुख प्राणी इस संसार में रोगग्रस्त रोगी है। उसने सुखदाता अगम्य व अनन्त प्रभु को विस्मृत कर दिया है। मनमुख हमेशा ही दुखी होकर रोते-चिल्लाते रहते हैं। गुरु के बिना उनको शांति प्राप्त नहीं होती॥६॥ जिस प्रभु ने उनकी सृजना की है, वह उनकी दशा को समझता है। यदि प्रभु स्वयं दया करे, तब मनुष्य उसके हुक्म की पहचान करता है। जिस तरह की बुद्धि ईश्वर प्राणी में डालता है, वैसे ही प्राणी कार्यरत होता है। परमात्मा स्वयं ही प्राणी को बाहर जगत् में जीवन-मार्ग पर लगाता है॥७॥ उस सत्यस्वरूप परमेश्वर

के अलावा मैं अन्य किसी को भी नहीं जानता। जिसको प्रभु अपनी भक्ति में लगाता है वह पवित्र हो जाता है। हे नानक ! परमेश्वर का नाम मनुष्य के हृदय में निवास करता है। लेकिन जिसे प्रभु अपना नाम देता है, वही इसको प्राप्त करता है॥८॥१४॥१५॥

माझ महला ३॥ अंम्रित नामु मंनि वसाए ॥ हउमै मेरा सभु दुखु गवाए ॥ अंम्रित बाणी सदा सलाहे अंम्रिति अंम्रितु पावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी अंम्रित बाणी मंनि वसावणिआ ॥ अंम्रित बाणी मंनि वसाए अंम्रितु नामु धिआवणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंम्रितु बोलै सदा मुखि वैणी ॥ अंम्रितु वेखै परखै सदा नैणी ॥ अंम्रित कथा कहै सदा दिनु राती अवरा आखि सुनावणिआ ॥ २ ॥ अंम्रित रंगि रता लिव लाए ॥ अंम्रितु गुर परसादी पाए ॥ अंम्रितु रसना बोलै दिनु राती मनि तनि अंम्रितु पीआवणिआ ॥ ३ ॥ सो किछु करै जु चिति न होई ॥ तिस दा हुकमु मेटि न सकै कोई ॥ हुकमे वरतै अंम्रित बाणी हुकमे अंम्रितु पीआवणिआ ॥ ४ ॥ अजब कंम करते हरि केरे ॥ इहु मनु भूला जांदा फेरे ॥ अंम्रित बाणी सिउ चितु लाए अंम्रित सबदि वजावणिआ ॥ ५ ॥ खोटे खरे तुधु आपि उपाए ॥ तुधु आपे परखे लोक सबाए ॥ खरे परखि खजानै पाइहि खोटे भरमि भुलावणिआ ॥ ६ ॥ किउ करि वेखा किउ सालाही ॥ गुर परसादी सबदि सलाही ॥ तेरे भाणे विचि अंम्रितु वसै तूं भाणै अंम्रितु पीआवणिआ ॥ ७ ॥ अंम्रित सबदु अंम्रित हरि बाणी ॥ सतिगुरि सेविऐ रिदै समाणी ॥ नानक अंम्रित नामु सदा सुखदाता पी अंम्रितु सभ भुख लहि जावणिआ ॥ ८ ॥ १५ ॥ १६ ॥

जो व्यक्ति अमृत–नाम को अपने हृदय में बसा लेता है, वह 'मैं' मेरा कहने वाले अहंत्व एवं समस्त दुःखों को नाश कर देता है। वह अमृत–वाणी द्वारा सदैव ही भगवान की महिमा–स्तुति करता रहता है और अमृत–वाणी द्वारा अमृत–नाम को पा लेता है॥१॥ मैं उन पर तन–मन से न्यौछावर हूँ, जो अमृत वाणी को अपने हृदय में बसा लेते हैं। वह अमृत वाणी को अपने हृदय में बसाकर अमृत नाम का ध्यान करता रहता है॥१॥ रहाउ॥ वह अपने मुँह से वचनों द्वारा हमेशा ही अमृत–नाम बोलता रहता है और अपनी आँखों से अमृत रूप परमात्मा को सर्वव्यापक देखता है एवं सत्य की परख करता रहता है। वह सदैव ही दिन–रात हरि की अमृत कथा करता है तथा दूसरों को भी यह कथा बोलकर सुनाता है॥२॥ अमृत–नाम के प्रेम में मग्न हुआ व्यक्ति भगवान में सुरति लगाता है और यह अमृत–नाम उसे गुरु की कृपा से ही मिलता है। वह दिन–रात नाम–अमृत को अपनी रसना से बोलता रहता है और भगवान उसे मन एवं तन द्वारा नाम–अमृत ही पान करवाता है॥३॥ भगवान वही कुछ करता है, जो मनुष्य की कल्पना में भी नहीं होता। उसके हुक्म को कोई भी मिटा नहीं सकता। भगवान के हुक्म से ही गुरु के माध्यम से जीवों को अमृत वाणी का पान करवाया जाता है। भगवान अपने हुक्म से ही मनुष्य को नाम–अमृत का पान करवाता है॥४॥ हे सृजनहार परमेश्वर ! तेरे कौतुक बड़े अद्भुत हैं। जब यह मन भटक जाता है तो तू ही उसे सन्मार्ग लगाता है। जब मनुष्य अमृत–वाणी में अपना चित्त लगाता है तो तू उसके अन्तर्मन में अमृत अनहद शब्द बजा देता है॥५॥ हे भगवान ! बुरे एवं भले जीव तूने ही पैदा किए हैं। समस्त लोगों के अच्छे एवं दुष्कर्मों की परख तू स्वयं ही करता है। भले जीवों को तुम अपने भक्ति–कोष में डाल देते हो परन्तु बुरे जीवों को तुम भ्रम में फँसाकर कुमार्ग लगा देते हो॥६॥ हे भगवान ! मैं तेरे दर्शन कैसे करूँ ? और कैसे तेरी महिमा–स्तुति करूँ ? गुरु की कृपा से ही मैं वाणी द्वारा तेरी ही महिमा कर सकता हूँ। हे प्रभु ! तेरी इच्छा से ही नाम–अमृत की वर्षा होती है और तू अपनी इच्छानुसार ही जीव को नाम–अमृत का पान करवाता है॥७॥ हे भगवान ! तेरा नाम अमृत है और तेरी वाणी भी अमृत है। सतिगुरु की सेवा करने से ही तेरी वाणी

मनुष्य के हृदय में समा जाती है। हे नानक! अमृत–नाम सदैव ही सुखदाता है और नाम रूपी अमृत का पान करने से मनुष्य की तमाम भूख मिट जाती है॥८॥१५॥१६॥

माझ महला ३ ॥ अंम्रितु वरसै सहजि सुभाए ॥ गुरमुखि विरला कोई जनु पाए ॥ अंम्रितु पी सदा त्रिपतासे करि किरपा त्रिसना बुझावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी गुरमुखि अंम्रितु पीआवणिआ ॥ रसना रसु चाखि सदा रहै रंगि राती सहजे हरि गुण गावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर परसादी सहजु को पाए ॥ दुबिधा मारे इकसु सिउ लिव लाए ॥ नदरि करे ता हरि गुण गावै नदरी सचि समावणिआ ॥ २ ॥ सभना उपरि नदरि प्रभ तेरी ॥ किसै थोड़ी किसै है घणेरी ॥ तुझ ते बाहरि किछु न होवै गुरमुखि सोझी पावणिआ ॥ ३ ॥ गुरमुखि ततु है बीचारा ॥ अंम्रिति भरे तेरे भंडारा ॥ बिनु सतिगुर सेवे कोई न पावै गुर किरपा ते पावणिआ ॥ ४ ॥ सतिगुरु सेवै सो जनु सोहै ॥ अंम्रिति नामि अंतरु मनु मोहै ॥ अंम्रिति मनु तनु बाणी रता अंम्रितु सहजि सुणावणिआ ॥ ५ ॥ मनमुखु भूला दूजै भाइ खुआए ॥ नामु न लेवै मरै बिखु खाए ॥ अनदिनु सदा विसटा महि वासा बिनु सेवा जनमु गवावणिआ ॥ ६ ॥ अंम्रितु पीवै जिस नो आपि पीआए ॥ गुर परसादी सहजि लिव लाए ॥ पूरन पूरि रहिआ सभ आपे गुरमति नदरी आवणिआ ॥ ७ ॥ आपे आपि निरंजनु सोई ॥ जिनि सिरजी तिनि आपे गोई ॥ नानक नामु समालि सदा तूं सहजे सचि समावणिआ ॥ ८ ॥ १६ ॥ १७ ॥

नाम–अमृत सहज–स्वभाव ही बरस रहा है। गुरु के माध्यम से इसे कोई विरला पुरुष ही प्राप्त करता है। नाम–अमृत का पान करने वाले सदैव तृप्त रहते हैं। अपनी दया करके प्रभु उनकी प्यास बुझा देता है॥१॥ मैं उन पर न्यौछावर हूँ, जिन्हें गुरु जी नाम अमृत का पान करवाते हैं। नाम अमृत को चखकर जिह्वा सदैव प्रभु की प्रीति में लीन रहती है और सहज ही हरि प्रभु का यशोगान करती है॥१॥ रहाउ॥ गुरु की कृपा से कोई विरला प्राणी ही सहज अवस्था को प्राप्त करता है और अपनी दुविधा का नाश करके एक ईश्वर के साथ सुरति लगाता है। जब परमात्मा दया–दृष्टि करता है तो प्राणी उस प्रभु के गुण गायन करता है और उसकी दया से सत्य में लीन हो जाता है॥२॥ हे मेरे हरि–प्रभु! तेरी कृपा–दृष्टि समस्त जीवों पर है किन्तु यह (कृपा–दृष्टि) किसी पर कम और किसी पर अधिकतर है। आपके सिवाय कुछ भी नहीं होता। इस बात का ज्ञान मनुष्य को गुरु के माध्यम से ही प्राप्त होता है॥३॥ गुरमुख इस तथ्य पर चिंतन करते हैं कि तेरे भण्डार नाम–अमृत से परिपूर्ण हैं। सतिगुरु की सेवा करने के अलावा कोई भी नाम अमृत को प्राप्त नहीं कर सकता। यह तो गुरु की दया से ही मिलता है॥४॥ जो पुरुष सतिगुरु की सेवा करता है, वह शोभनीय है। प्रभु का अमृत–नाम मनुष्य के मन एवं हृदय को मोहित कर देता है। जिनके मन एवं तन अमृत वाणी में मग्न हो जाते हैं, प्रभु उन्हें सहज ही अपना अमृत–नाम सुनाता है॥५॥ स्वेच्छाचारी जीव भटका हुआ है और मोह–माया में फँसकर नष्ट हो जाता है। प्रभु नाम का वह जाप नहीं करता और माया रूपी विष सेवन करके प्राण त्याग देता है। रात–दिन उसका बसेरा सदैव विष्टा रूपी विषय–विकारों में रहता है। गुरु की सेवा के बिना वह अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ ही गंवा देता है॥६॥ जिसको प्रभु स्वयं पिलाता है वही नाम अमृत का पान करता है। गुरु की कृपा से सहज ही वह परमात्मा में सुरति लगाता है। पूर्ण परमेश्वर स्वयं ही सर्वत्र परिपूर्ण हो रहा है। गुरु की मति द्वारा वह प्रत्यक्ष दिखाई देता है॥७॥ वह निरंजन प्रभु सब कुछ अपने आप से ही है। जिस प्रभु ने सृष्टि की रचना की है, वह स्वयं ही इसका विनाश भी करता है। हे नानक! तुम सदैव ही प्रभु नाम का सिमरन करो। ऐसे तुम सहज ही परमात्मा में विलीन हो जाओगे॥८॥१६॥१७॥

माझ महला ३ ॥ से सचि लागे जो तुधु भाए ॥ सदा सचु सेवहि सहज सुभाए ॥ सचै सबदि सचा सलाही सचै मेलि मिलावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी सचु सालाहणिआ ॥ सचु धिआइनि से सचि राते सचे सचि समावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह देखा सचु सभनी थाई ॥ गुर परसादी मंनि वसाई ॥ तनु सचा रसना सचि राती सचु सुणि आखि वखानणिआ ॥ २ ॥ मनसा मारि सचि समाणी ॥ इनि मनि डीठी सभ आवण जाणी ॥ सतिगुरु सेवे सदा मनु निहचलु निज घरि वासा पावणिआ ॥ ३ ॥ गुर कै सबदि रिदै दिखाइआ ॥ माइआ मोहु सबदि जलाइआ ॥ सचो सचा वेखि सालाही गुर सबदी सचु पावणिआ ॥ ४ ॥ जो सचि राते तिन सची लिव लागी ॥ हरि नामु समालहि से वडभागी ॥ सचै सबदि आपि मिलाए सतसंगति सचु गुण गावणिआ ॥ ५ ॥ लेखा पड़ीऐ जे लेखे विचि होवै ॥ ओहु अगमु अगोचरु सबदि सुधि होवै ॥ अनदिनु सचु सबदि सालाही होरु कोइ न कीमति पावणिआ ॥ ६ ॥ पड़ि पड़ि थाके सांति न आई ॥ त्रिसना जाले सुधि न काई ॥ बिखु बिहाझहि बिखु मोह पिआसे कूड़ु बोलि बिखु खावणिआ ॥ ७ ॥ गुर परसादी एको जाणा ॥ दूजा मारि मनु सचि समाणा ॥ नानक एको नामु वरतै मन अंतरि गुर परसादी पावणिआ ॥ ८ ॥ १७ ॥ १८ ॥

हे ईश्वर ! जो तुझे अच्छे लगते हैं, वहीं सत्य (नाम) में लगते हैं। वह सहज–स्वभाव सदैव ही परमेश्वर की सेवा भक्ति करते हैं। वह सत्य–नाम द्वारा सत्य–प्रभु की सराहना करते हैं और सत्य–नाम उन्हें सत्य से मिला देता है॥१॥ मैं उन पर तन–मन से कुर्बान हूँ, जो सत्य परमेश्वर की सराहना करते हैं। जो सत्य परमेश्वर का ध्यान करते हैं, वह सत्य में ही रंग जाते हैं और सत्यवादी बन कर सत्य में लीन हो जाते हैं॥१॥ रहाउ॥ मैं जहाँ कहीं भी देखता हूँ, सत्य परमात्मा मुझे सर्वत्र दिखाई देता है। वह गुरु की कृपा से मनुष्य के मन में आकर निवास करता है। फिर उस मनुष्य का शरीर शाश्वत हो जाता है और उसकी रसना सत्य में ही मग्न हो जाती है। वह मनुष्य सत्य नाम को सुनकर स्वयं भी मुँह से सत्य का ही बखान करता है॥२॥ जब बुद्धि मन की अभिलाषा को नष्ट करके सत्य में समा गई तो इस मन ने देख लिया कि यह सृष्टि जन्मती एवं मरती रहती है। जो व्यक्ति हमेशा ही सतिगुरु की सेवा करता है, उसका मन अटल हो जाता है और अपने आत्म–स्वरूप में निवास प्राप्त कर लेता है॥३॥ गुरु के शब्द ने मुझे प्रभु हृदय में ही दिखा दिया है और मेरे अन्तर्मन में से माया के मोह को जला दिया है। सत्य–प्रभु के दर्शन करके अब मैं उस सत्य–परमात्मा की ही महिमा–स्तुति करता रहता हूँ। वह सत्य गुरु के शब्द द्वारा ही मिलता है॥४॥ जो व्यक्ति सत्य–परमेश्वर के प्रेम में मग्न हो जाते हैं, उनकी प्रभु में सुरति लग जाती है। वह व्यक्ति बड़े भाग्यशाली हैं, जो हरि–नाम का सिमरन करते हैं। सत्य–परमेश्वर उन्हें स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है, जो सत्संग में मिलकर सत्य–परमेश्वर का गुणगान करते हैं॥५॥ परमात्मा लेखे से परे है। उसका लेखा–जोखा हम तब ही पढ़ें, यदि वह किसी लेखे–जोखे में आता हो। वह तो अगम्य एवं अगोचर है तथा उसकी सूझ गुरु के शब्द से ही होती है। मैं प्रतिदिन सत्य वाणी द्वारा उसकी महिमा–स्तुति करता रहता हूँ तथा अन्य कोई भी उसका मूल्यांकन नहीं कर सकता॥६॥ कई विद्वान ग्रंथ पढ़–पढ़कर थक चुके हैं परन्तु उन्हें शान्ति प्राप्त नहीं हुई। वे तृष्णाग्नि में ही जलते रहे और प्रभु बारे कोई ज्ञान नहीं मिला। वह जीवन भर विष रूप माया ही खरीदते रहे और उन्हें विष रूप मोह–माया की प्यास ही लगी रही। अतः वह झूठ बोल–बोलकर विष रूप माया ही सेवन करते रहे॥७॥ जिस व्यक्ति ने गुरु की कृपा से एक परमेश्वर को जाना है, उसका मन माया के मोह को नष्ट करके सत्य में समा गया है। हे नानक ! जिसके मन में एक परमात्मा ही प्रवृत हो रहा है, गुरु की कृपा से वहीं भगवान को प्राप्त करता है॥८॥१७॥१८॥

माझ महला ३ ॥ वरन रूप वरतहि सभ तेरे ॥ मरि मरि जंमहि फेर पवहि घणेरे ॥ तूं एको निहचलु अगम अपारा गुरमती बूझ बुझावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी राम नामु मंनि वसावणिआ ॥ तिसु रूपु न रेखिआ वरनु न कोई गुरमती आपि बुझावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ एका जोति जाणै जे कोई ॥ सतिगुरु सेविऐ परगटु होई ॥ गुपतु परगटु वरतै सभ थाई जोती जोति मिलावणिआ ॥ २ ॥ तिसना अगनि जलै संसारा ॥ लोभु अभिमानु बहुतु अहंकारा ॥ मरि मरि जनमै पति गवाए अपणी बिरथा जनमु गवावणिआ ॥ ३ ॥ गुर का सबदु को विरला बूझै ॥ आपु मारे ता त्रिभवणु सूझै ॥ फिरि ओहु मरै न मरणा होवै सहजे सचि समावणिआ ॥ ४ ॥ माइआ महि फिरि चितु न लाए ॥ गुर कै सबदि सद रहै समाए ॥ सचु सलाहे सभ घट अंतरि सचो सचु सुहावणिआ ॥ ५ ॥ सचु सालाही सदा हजूरे ॥ गुर कै सबदि रहिआ भरपूरे ॥ गुर परसादी सचु नदरी आवै सचे ही सुखु पावणिआ ॥ ६ ॥ सचु मन अंदरि रहिआ समाइ ॥ सदा सचु निहचलु आवै न जाइ ॥ सचे लागै सो मनु निरमलु गुरमती सचि समावणिआ ॥ ७ ॥ सचु सालाही अवरु न कोई॥ जितु सेविऐ सदा सुखु होई ॥ नानक नामि रते वीचारी सचो सचु कमावणिआ ॥८॥१८॥१६॥

हे प्रभु ! जगत् में विभिन्न वर्ण एवं रूप वाले जितने भी जीव है, वह तेरे ही रूप हैं और तू स्वयं ही उन में प्रवृत्त हो रहा है। ये समस्त जीव बार–बार जन्मते एवं मरते रहते हैं और इन्हें जन्म–मरण के अधिकतर चक्र पड़े रहते हैं। लेकिन हे ईश्वर ! एक तू ही अमर, अगम्य एवं अपरंपार है और इस तथ्य का ज्ञान जीवों को तू गुरु की मति द्वारा ही देता है॥१॥ मैं उन पर तन–मन से न्यौछावर हूँ, जो राम नाम को अपने हृदय में बसाते हैं। प्रभु का कोई भी रूप–रंग आकार–प्रकार अथवा वर्ण नहीं है। वह स्वयं ही गुरु की मति द्वारा जीवों को ज्ञान प्रदान करता है॥१॥ रहाउ॥ समस्त जीवों में एक प्रभु की ही ज्योति विद्यमान है परन्तु इस भेद को कोई विरला ही जानता है। सतिगुरु की सेवा करने से यह ज्योति मनुष्य के हृदय में प्रगट हो जाती है अर्थात् उसे अपने हृदय में ही प्रकाश के प्रत्यक्ष दर्शन हो जाते हैं। भगवान अप्रत्यक्ष एवं प्रत्यक्ष रूप में सर्वत्र विद्यमान हैं एवं मनुष्य की ज्योति प्रभु की परम ज्योति में विलीन हो जाती है॥२॥ सारा संसार तृष्णा की अग्नि में जल रहा है। जीवों में लोभ, अभिमान तथा अहंकार अधिकतर बढ़ रहा है। जीव बार–बार मरता और जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिष्ठा गंवाता है। इस तरह वह अपना अनमोल जीवन व्यर्थ ही गंवा देता है॥३॥ कोई विरला पुरुष ही गुरु के शब्द को समझता है। जब मनुष्य अपने अहंकार को नष्ट कर देता है, तब उसको तीनों लोकों का ज्ञान हो जाता है। यद्यपि मनुष्य मिथ्या–तत्व की परख उपरांत मृत्यु प्राप्त करे तो इसके पश्चात मृत्यु नहीं होती और वह सहज ही सत्य–परमात्मा में लीन हो जाता है॥४॥ तब वह अपना मन मोह–माया में नहीं लगाता और गुरु की वाणी में सदैव लीन हुआ रहता है। वह सत्य परमेश्वर की ही महिमा–स्तुति करता है जो सर्वव्यापक है। उसे यूं प्रतीत होता है कि एक सत्य–परमेश्वर ही सब में शोभायमान हो रहा है॥५॥ मैं सत्य–परमेश्वर की ही सराहना करता रहता हूँ और उसे ही सदैव प्रत्यक्ष समझता हूँ। गुरु के शब्द द्वारा मुझे प्रभु सारे जगत् में ही विद्यमान लगता है। सत्य–परमेश्वर के गुरु की कृपा से ही दर्शन होते हैं और सत्य–परमेश्वर से ही सुख प्राप्त होता है॥६॥ सत्य–परमेश्वर प्रत्येक जीव के मन में समाया हुआ है। वह सत्य–परमेश्वर सदैव अमर है और जन्म–मरण में कभी नहीं आता। जो मन सत्य–परमेश्वर के साथ प्रेम करता है, वह निर्मल हो जाता है और गुरु की मति द्वारा सत्य में ही समाया रहता है॥७॥ मैं तो एक परमेश्वर की ही सराहना करता रहता हूँ तथा किसी अन्य की पूजा नहीं करता। उसकी सेवा करने से सदैव ही सुख मिलता रहता है। हे नानक ! जो व्यक्ति परमेश्वर के नाम में मग्न रहते हैं, वे परमेश्वर के बारे ही विचार करते रहते हैं और सत्य–परमेश्वर के सत्य–नाम की ही कमाई करते हैं॥८॥ १८॥१६॥

माझ महला ३ ॥ निरमल सबदु निरमल है बाणी ॥ निरमल जोति सभ माहि समाणी ॥ निरमल बाणी हरि सालाही जपि हरि निरमलु मैलु गवावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी सुखदाता मंनि वसावणिआ ॥ हरि निरमलु गुर सबदि सलाही सबदो सुणि तिसा मिटावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरमल नामु वसिआ मनि आए ॥ मनु तनु निरमलु माइआ मोहु गवाए ॥ निरमल गुण गावै नित साचे के निरमल नादु वजावणिआ ॥ २ ॥ निरमल अंम्रितु गुर ते पाइआ ॥ विचहु आपु मुआ तिथै मोहु न माइआ ॥ निरमल गिआनु धिआनु अति निरमलु निरमल बाणी मंनि वसावणिआ ॥ ३ ॥ जो निरमलु सेवे सु निरमलु होवै ॥ हउमै मैलु गुर सबदे धोवै ॥ निरमल वाजै अनहद धुनि बाणी दरि सचे सोभा पावणिआ ॥ ४ ॥ निरमल ते सभ निरमल होवै ॥ निरमलु मनूआ हरि सबदि सोहै ॥ निरमल नामि लगे बडभागी निरमलु नामि सुहावणिआ ॥ ५ ॥ सो निरमलु जो सबदे सोहै ॥ निरमल नामि मनु तनु मोहै ॥ सचि नामि मलु कदे न लागै मुखु ऊजलु सचु करावणिआ ॥ ६ ॥ मनु मैला है दूजै भाइ ॥ मैला चउका मैलै थाइ ॥ मैला खाइ फिरि मैलु वधाए मनमुख मैलु दुखु पावणिआ ॥ ७ ॥ मैले निरमल सभि हुकमि सबाए ॥ से निरमल जो हरि साचे भाए ॥ नानक नामु वसै मन अंतरि गुरमुखि मैलु चुकावणिआ ॥ ८ ॥ १६ ॥ २० ॥

शब्द निर्मल है और वाणी भी निर्मल है। भगवान की निर्मल ज्योति समस्त जीवों में समाई हुई है। मैं निर्मल वाणी द्वारा भगवान की महिमा–स्तुति करता रहता हूँ और निर्मल परमात्मा का भजन करके अपने मन की अहंत्व रूपी मैल को दूर करता हूँ॥१॥ मैं तन एवं मन से उन पर कुर्बान हूँ, जो सुखदाता परमात्मा को अपने हृदय में बसाते हैं। मैं गुरु के शब्द द्वारा निर्मल भगवान की महिमा–स्तुति करता हूँ और नाम को सुनकर अपनी तृष्णा को मिटा देता हूँ॥१॥ रहाउ॥ अब निर्मल नाम आकर मेरे मन में बस गया है, जिससे मेरा मन एवं तन निर्मल हो गया है और मेरे अन्तर्मन में से मोह–माया का विनाश हो गया है। जो व्यक्ति नित्य ही सत्य–परमेश्वर का गुणानुवाद करता है, उसके मन में निर्मल नाद अर्थात, अनहद शब्द गूंजने लग जाता है॥२॥ जो व्यक्ति गुरु से नाम रूपी निर्मल अमृत प्राप्त कर लेता है, उसके मन में से अहंकार नष्ट हो जाता है और उसके अन्तर्मन में माया का मोह नहीं रहता। उसके मन में निर्मल ज्ञान उत्पन्न हो जाता है और निर्मल प्रभु में उसका पूर्ण ध्यान लगता है। वह निर्मल वाणी को अपने हृदय में बसा लेता है॥३॥ जो व्यक्ति निर्मल परमात्मा की सेवा करता है, वह भी निर्मल हो जाता है। वह गुरु के शब्द द्वारा अपने अन्तर्मन में से अहंकार की मैल को स्वच्छ कर लेता है। उसके मन में अनहद वाणी की निर्मल ध्वनि गूंजने लग जाती है और वह सत्य परमेश्वर के दरबार में बड़ी शोभा प्राप्त करता है॥४॥ निर्मल प्रभु से सभी निर्मल हो जाते हैं। निर्मल भगवान का नाम मनुष्य के मन को स्वयं में पिरो लेता है। सौभाग्यशाली व्यक्ति ही निर्मल नाम में लगते हैं और निर्मल नाम द्वारा शोभा के पात्र बन जाते हैं॥५॥ वहीं व्यक्ति निर्मल हैं, जो शब्द द्वारा सुन्दर हो जाते हैं। निर्मल नाम उनके तन एवं मन को मुग्ध कर देता है। सत्य–नाम में ध्यान लगाने से मन को कभी भी अहंकार की मैल नहीं लगती। सत्य–नाम उसके मुख को प्रभु के दरबार में उज्ज्वल करा देता है॥६॥ मन माया के मोह में फँसकर मैला हो जाता है। यदि मन मैला हो तो उसका चौका भी अपवित्र है और वह स्थान भी अपवित्र है। वह अपवित्र भोजन सेवन करके अपने पापों की मैल और भी अधिक बढ़ा लेता है। ऐसा मनमुख पापों की मैल के कारण बड़ा दुखी होता है॥७॥ सभी जीव भगवान के हुक्म में ही मैले अथवा निर्मल बने हैं। लेकिन वही मनुष्य निर्मल है जो सत्य–परमेश्वर को प्रिय लगता है। हे नानक! जो गुरु के माध्यम से अपने अहंकार की मैल को दूर कर लेता है, नाम उसके मन में ही आकर निवास करता है॥८॥२०॥२१॥

माझ महला ३॥ गोविंदु ऊजलु ऊजल हंसा ॥ मनु बाणी निरमल मेरी मनसा ॥ मनि ऊजल सदा मुख सोहहि अति ऊजल नामु धिआवणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी गोबिंद गुण गावणिआ ॥ गोबिदु गोबिदु कहै दिन राती गोबिद गुण सबदि सुणावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गोबिदु गावहि सहजि सुभाए ॥ गुर कै भै ऊजल हउमै मलु जाए ॥ सदा अनंदि रहहि भगति करहि दिनु राती सुणि गोबिद गुण गावणिआ ॥ २ ॥ मनूआ नाचै भगति द्रिड़ाए ॥ गुर कै सबदि मनै मनु मिलाए ॥ सचा तालु पूरे माइआ मोहु चुकाए सबदे निरति करावणिआ ॥ ३ ॥ ऊचा कूकै तनहि पछाड़े ॥ माइआ मोहि जोहिआ जमकाले ॥ माइआ मोहु इसु मनहि नचाए अंतरि कपटु दुखु पावणिआ ॥ ४ ॥ गुरमुखि भगति जा आपि कराए ॥ तनु मनु राता सहजि सुभाए ॥ बाणी वजै सबदि वजाए गुरमुखि भगति थाइ पावणिआ ॥ ५ ॥ बहु ताल पूरे वाजे वजाए ॥ ना को सुणे न मंनि वसाए ॥ माइआ कारणि पिड़ बंधि नाचै दूजै भाइ दुखु पावणिआ ॥ ६ ॥ जिसु अंतरि प्रीति लगै सो मुकता ॥ इंद्री वसि सच संजमि जुगता ॥ गुर कै सबदि सदा हरि धिआए एहा भगति हरि भावणिआ ॥ ७ ॥ गुरमुखि भगति जुग चारे होई ॥ होरतु भगति न पाए कोई ॥ नानक नामु गुर भगती पाईऐ गुर चरणी चितु लावणिआ ॥ ८ ॥ २० ॥ २१ ॥

गोविन्द उज्ज्वल (सरोवर) है और गोविन्द का अंश जीवात्मा भी उज्ज्वल है। नाम–सिमरन से मेरा मन, वाणी एवं बुद्धि सब निर्मल हो गए हैं। मन उज्ज्वल होने से मेरा मुख हमेशा ही सुन्दर लगता है। मैं अत्यन्त उज्ज्वल नाम का सिमरन करता रहता हूँ॥१॥ मैं उस पर तन एवं मन से कुर्बान हूँ जो गोविन्द का यशोगान करता है। वह दिन–रात गोविन्द–गोविन्द बोलता रहता है और वाणी द्वारा दूसरों को भी गोविन्द की महिमा सुनाता रहता है॥१॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति सहज–स्वभाव ही गोविन्द का गुणानुवाद करता है, गुरु के भय से उसकी अहंकार रूपी मैल दूर हो जाती है और वह उज्ज्वल हो जाता है। जो व्यक्ति दिन–रात भगवान की भक्ति करता है, वह सदैव आनंदपूर्वक रहता है। वह दूसरों से भगवान की महिमा सुनता है और स्वयं भी उसकी महिमा–स्तुति करता है॥२॥ भक्ति करने से मनुष्य का मन प्रसन्न होकर नृत्य करने लग जाता है। वह गुरु की वाणी द्वारा अपने अशुद्ध मन को शुद्ध मन में ही मिलाकर रखता है। माया के मोह को दूर करना ही गुरमुख का ताल बजाना है। उसका नाम–सिमरन ही नृत्य करना है॥३॥ जो जोर–जोर से चिल्लाता है और अपने तन को गिराता है, माया ने उसे मुग्ध किया हुआ है। यम उसकी तरफ देख रहा है। जो इस मन को मोह–माया में नचाता है तथा मन में कपट है, वह बड़ा दुःखी होता है॥४॥ जब भगवान स्वयं मनुष्य से गुरु के सान्निध्य द्वारा अपनी भक्ति करवाता है तो सहज–स्वभाव ही उसका मन एवं तन भगवान के प्रेम में मग्न हो जाता है। जब वाणी का बजाया हुआ अनहद शब्द गुरमुख के हृदय में गूंजने लग जाता है तो ही उसकी भक्ति प्रभु को स्वीकार होती है॥५॥ स्वेच्छाचारी अत्यधिक ताल लगाते एवं बाजे बजाते हैं परन्तु उन में कोई भी न ही प्रभु के नाम को सुनता है और न ही नाम को अपने मन में बसाते हैं। वह तो माया के लिए अखाड़ा बांध कर नाचते हैं और माया के मोह में फँसकर दुःखी होते रहते हैं॥६॥ जिस व्यक्ति के मन में प्रभु की प्रीति उत्पन्न हो जाती है, वही मोह–माया से मुक्त है। इन्द्रियों को नियंत्रण में कर लेना ही संयम रूप सच्ची युक्ति है। भगवान को यही भक्ति अच्छी लगती है कि उसे हमेशा ही गुरु की वाणी द्वारा स्मरण किया जाए॥७॥ भगवान की भक्ति चारों युगों में गुरु के माध्यम से ही होती रही है। किसी अन्य विधि द्वारा भगवान की भक्ति होती ही नहीं। हे नानक! गुरु के चरणों में चित्त लगाने से भगवान का नाम गुरु–भक्ति द्वारा प्राप्त होता है॥८॥२०॥२१॥

माझ महला ३ ॥ सचा सेवी सचु सालाही ॥ सचै नाइ दुखु कब ही नाही ॥ सुखदाता सेवनि सुखु पाइनि गुरमति मंनि वसावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी सुख सहजि समाधि लगावणिआ ॥ जो हरि सेवहि से सदा सोहहि सोभा सुरति सुहावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभु को तेरा भगतु कहाए ॥ सेई भगत तेरै मनि भाए ॥ सचु बाणी तुधै सालाहनि रंगि राते भगति करावणिआ ॥ २ ॥ सभु को सचे हरि जीउ तेरा ॥ गुरमुखि मिलै ता चूकै फेरा ॥ जा तुधु भावै ता नाइ रचावहि तूं आपे नाउ जपावणिआ ॥ ३ ॥ गुरमती हरि मंनि वसाइआ ॥ हरखु सोगु सभु मोहु गवाइआ ॥ इकसु सिउ लिव लागी सद ही हरि नामु मंनि वसावणिआ ॥ ४ ॥ भगत रंगि राते सदा तेरै चाए ॥ नउ निधि नामु वसिआ मनि आए ॥ पूरै भागि सतिगुरु पाइआ सबदे मेलि मिलावणिआ ॥ ५ ॥ तूं दइआलु सदा सुखदाता ॥ तूं आपे मेलिहि गुरमुखि जाता ॥ तूं आपे देवहि नामु वडाई नामि रते सुखु पावणिआ ॥ ६ ॥ सदा सदा साचे तुधु सालाही ॥ गुरमुखि जाता दूजा को नाही ॥ एकसु सिउ मनु रहिआ समाए मनि मंनिऐ मनहि मिलावणिआ ॥ ७ ॥ गुरमुखि होवै सो सालाहे ॥ साचे ठाकुर वेपरवाहे ॥ नानक नामु वसै मन अंतरि गुर सबदी हरि मेलावणिआ ॥ ८ ॥ २१ ॥ २२ ॥

मैं तो सत्यस्वरूप परमात्मा की ही सेवा करता हूँ और उस सत्यस्वरूप परमात्मा की ही महिमा–स्तुति करता रहता हूँ। सत्य परमेश्वर का नाम–सिमरन करने से दुःख कभी भी निकट नहीं आता। जो व्यक्ति सुखदाता भगवान की सेवा करते हैं और गुरु की मति द्वारा उसे अपने हृदय में बसाकर रखते हैं, ऐसे व्यक्ति सदैव सुखी रहते हैं॥१॥ मैं उन पर तन एवं मन से न्यौछावर हूँ, जो सहज सुखदायक समाधि लगाते हैं। जो व्यक्ति भगवान की सेवा करते हैं, वह सदैव ही सुन्दर लगते हैं। वह भगवान में वृत्ति लगाकर शोभा के पात्र बन जाते हैं और भगवान के दरबार में बड़ी शोभा प्राप्त करते हैं॥१॥ रहाउ॥ हे प्रभु–परमेश्वर ! प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को तेरा भक्त कहलवाता है परन्तु तेरे भक्त वहीं हैं जो तेरे मन को प्रिय लगते हैं। वह सच्ची वाणी द्वारा तेरी सराहना करते रहते हैं और तेरे प्रेम में मग्न हुए तेरी भक्ति करते रहते हैं॥२॥ हे सच्चे परमेश्वर ! प्रत्येक जीव तेरा ही उत्पन्न किया हुआ है। यदि मनुष्य को गुरु मिल जाए तो उसका जीवन एवं मृत्यु का चक्र मिट जाता है। हे भगवान ! जब तुझे उपयुक्त लगता है तो तू अपने नाम में जीव की रुचि उत्पन्न कर देता है और तू स्वयं ही उससे अपना नाम जपवाता है॥३॥ हे पूज्य–परमेश्वर ! गुरु के उपदेश द्वारा तू मनुष्य के मन में अपना नाम बसा देता है और उसका हर्ष, शोक एवं मोह सब नष्ट कर देता है। जिसकी सुरति सदैव ही एक परमेश्वर में लीन रहती है, वह भगवान के नाम को अपने मन में बसा लेता है॥४॥ हे प्रभु परमेश्वर ! तेरे भक्त हमेशा ही बड़े चाव से तेरे प्रेम में मग्न रहते हैं और नवनिधियाँ प्रदान करने वाला तेरा नाम, उनके मन में आकर बस जाता है। जो व्यक्ति सौभाग्य से सतिगुरु को पा लेता है, गुरु उसे शब्द द्वारा भगवान से मिला देता है॥५॥ हे प्रभु ! तू बड़ा दयालु एवं सदैव ही जीवों को सुख देता रहता है। तू स्वयं ही जीवों को अपने साथ मिला लेता है और तुझे गुरु के माध्यम से ही जाना जाता है। तू स्वयं ही जीवों को नाम रूपी महानता प्रदान करता है। जो व्यक्ति तेरे नाम में मग्न रहते हैं, वे सदैव ही सुखी रहते हैं॥६॥ हे सत्यस्वरूप परमेश्वर ! मैं हमेशा ही तेरी महिमा–स्तुति करता रहता हूँ। तुझे गुरमुख ने ही जाना है और कोई दूसरा तुझे जान ही नहीं सकता। यदि मनुष्य का मन विश्वस्त हो जाए और वह एक परमेश्वर में ही समाया रहे तो सतिगुरु उसे उसके मन में ही प्रभु से मिला देता है॥७॥ हे मेरे सच्चे ठाकुर ! तू बेपरवाह है, तेरी महिमा–स्तुति वही मनुष्य करता है जो गुरमुख बन जाता है। हे नानक ! जिनके मन में नाम का निवास हो जाता है, गुरु अपनी वाणी द्वारा उसे भगवान से मिला देते हैं॥८॥२१॥२२॥

माझ महला ३ ॥ तेरे भगत सोहहि साचै दरबारे ॥ गुर कै सबदि नामि सवारे ॥ सदा अनंदि रहहि दिनु राती गुण कहि गुणी समावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी नामु सुणि मंनि वसावणिआ ॥ हरि जीउ सचा ऊचो ऊचा हउमै मारि मिलावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि जीउ साचा साची नाई ॥ गुर परसादी किसै मिलाई ॥ गुरि सबदि मिलहि से विछुड़हि नाही सहजे सचि समावणिआ ॥ २ ॥ तुझ ते बाहरि कछू न होइ ॥ तूं करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥ आपे करे कराए करता गुरमति आपि मिलावणिआ ॥ ३ ॥ कामणि गुणवंती हरि पाए ॥ भै भाइ सीगारु बणाए ॥ सतिगुरु सेवि सदा सोहागणि सच उपदेसि समावणिआ ॥ ४ ॥ सबदु विसारनि तिना ठउरु न ठाउ ॥ भ्रमि भूले जिउ सुंञै घरि काउ ॥ हलतु पलतु तिनी दोवै गवाए दुखे दुखि विहावणिआ ॥ ५ ॥ लिखदिआ लिखदिआ कागद मसु खोई ॥ दूजै भाइ सुखु पाए न कोई ॥ कूड़ु लिखहि तै कूड़ु कमावहि जलि जावहि कूड़ि चितु लावणिआ ॥ ६ ॥ गुरमुखि सचो सचु लिखहि वीचारु ॥ से जन सचे पावहि मोख दुआरु ॥ सचु कागदु कलम मसवाणी सचु लिखि सचि समावणिआ ॥ ७ ॥ मेरा प्रभु अंतरि बैठा वेखै ॥ गुर परसादी मिलै सोई जनु लेखै ॥ नानक नामु मिलै वडिआई पूरे गुर ते पावणिआ ॥ ८ ॥ २२ ॥ २३ ॥

हे सत्यस्वरूप परमेश्वर ! तेरे भक्त तेरे सत्य–दरबार में बैठे बड़ी शोभा पा रहे हैं। तूने उन्हें गुरु के शब्द द्वारा नाम में लगाकर ही संवारा है। वह दिन–रात सदैव आनंद में रहते हैं और गुणों के भण्डार प्रभु का गुणानुवाद कर–करके उसमें ही लीन रहते हैं॥१॥ मैं उन पर तन एवं मन से न्यौछावर हूँ जो भगवान के नाम को सुनकर अपने हृदय में बसाते हैं। हे पूज्य परमेश्वर ! तू सदैव सत्य एवं सर्वोपरि है। भगवान जीव के अहंकार को नष्ट करके उसे स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है॥१॥ रहाउ॥पूज्य परमेश्वर सत्यस्वरूप है और उसकी महिमा भी सत्य है। गुरु की कृपा से वह परमेश्वर किसी विरले को ही अपने साथ मिलाता है। जो जीव गुरु की वाणी द्वारा प्रभु से मिल जाते हैं, फिर वह कभी भी प्रभु से जुदा नहीं होते और सहज ही सत्य में समाए रहते हैं॥२॥ हे परमेश्वर ! तेरे हुक्म से बाहर कुछ भी नहीं होता। तू ही जगत् की रचना करके उसकी देखरेख करता है और तू ही सबकुछ जानता है। सृष्टिकर्त्ता स्वयं ही सबकुछ करता और जीवों से करवाता है। वह स्वयं ही गुरु की मति द्वारा जीवों को अपने साथ मिला लेता है॥३॥ गुणवान जीव–स्त्री प्रियतम–प्रभु को पा लेती है। वह प्रभु के भय एवं प्रेम को ही अपना शृंगार बनाती है। जो जीव–स्त्री सतिगुरु की सेवा करती है, वह सदा सुहागिन है और वह सत्य–उपदेश में ही समाई रहती है॥४॥ जो व्यक्ति भगवान के नाम को भुला देते हैं, उन्हें सहारा लेने के लिए कहीं भी आश्रय एवं स्थान नहीं मिलता। वह भ्रम में फँसकर भटकते रहते हैं। वह जगत् में से खाली हाथ यूं ही चले जाते हैं जैसे किसी सूने घर में से कौआ खाली चला जाता है ऐसे व्यक्ति अपना लोक–परलोक दोनों ही गंवा देते हैं और जीवन भर दुखी ही होते रहते हैं॥५॥ मनमुख व्यक्ति माया के लेख लिखते–लिखते अनेक कागज एवं स्याही खत्म कर लेते हैं। कोई भी व्यक्ति माया के मोह में फँसकर सुख नहीं पा सकता। मनमुख मिथ्या माया के लेखे लिखते रहते हैं और मिथ्या माया ही कमाते रहते हैं। मिथ्या माया के मोह में चित्त लगाने वाले तृष्णाग्नि में जलते रहते हैं॥६॥ गुरमुख सत्य–प्रभु का नाम एवं गुणों बारे लिखते रहते हैं। वह सत्यवादी बन जाते हैं और वह मोक्ष का द्वार प्राप्त कर लेते हैं। सत्य नाम ही उनका कागज, कलम एवं स्याही हैं। वे प्रभु की महिमा को लिख–लिख कर सत्य में ही समा जाते हैं॥७॥ मेरा प्रभु समस्त जीवों के हृदय में बैठकर उनके कर्म देख रहा है। जो पुरुष गुरु की दया से परमात्मा को मिलता है, जगत् में उसका आगमन ही सफल है। हे नानक ! प्रभु के नाम से उसके दरबार में महानता प्राप्त होती है और पूर्णगुरु द्वारा ही नाम पाया जाता है॥८॥२२॥२३॥

माझ महला ३ ॥ आतम राम परगासु गुर ते होवै ॥ हउमै मैलु लागी गुर सबदी खोवै ॥ मनु निरमलु अनदिनु भगती राता भगति करे हरि पावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी आपि भगति करनि अवरा भगति करावणिआ ॥ तिना भगत जना कउ सद नमसकारु कीजै जो अनदिनु हरि गुण गावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे करता कारणु कराए ॥ जितु भावै तितु कारै लाए ॥ पूरै भागि गुर सेवा होवै गुर सेवा ते सुखु पावणिआ ॥ २ ॥ मरि मरि जीवै ता किछु पाए ॥ गुर परसादी हरि मंनि वसाए ॥ सदा मुकतु हरि मंनि वसाए सहजे सहजि समावणिआ ॥ ३ ॥ बहु करम कमावै मुकति न पाए ॥ देसंतरु भवै दूजै भाइ खुआए ॥ बिरथा जनमु गवाइआ कपटी बिनु सबदै दुखु पावणिआ ॥ ४ ॥ धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ गुर परसादी परम पदु पाए ॥ सतिगुरु आपे मेलि मिलाए मिलि प्रीतम सुखु पावणिआ ॥ ५ ॥ इकि कूड़ि लागे कूड़े फल पाए ॥ दूजै भाइ बिरथा जनमु गवाए ॥ आपि डुबे सगले कुल डोबे कूड़ु बोलि बिखु खावणिआ ॥ ६ ॥ इसु तन महि मनु को गुरमुखि देखै ॥ भाइ भगति जा हउमै सोखै ॥ सिध साधिक मोनिधारी रहे लिव लाइ तिन भी तन महि मनु न दिखावणिआ ॥ ७ ॥ आपि कराए करता सोई ॥ होरु कि करे कीतै किआ होई ॥ नानक जिसु नामु देवै सो लेवै नामो मंनि वसावणिआ ॥ ८ ॥ २३ ॥ २४ ॥

मनुष्य के हृदय में आत्म–राम का प्रकाश गुरु की कृपा से होता है। जब मनुष्य अपने मन को लगी अहंत्व की मैल को गुरु की वाणी द्वारा स्वच्छ कर लेता है तो उसका निर्मल मन रात–दिन भगवान की भक्ति में मग्न रहता है और भक्ति करके वह भगवान को पा लेता है॥१॥ मैं उन पर तन एवं मन से न्यौछावर हूँ जो स्वयं भी भगवान की भक्ति करते हैं और दूसरों से भी भक्ति करवाते हैं। उन भक्तजनों को सदैव ही प्रणाम करो, जो रात–दिन ईश्वर का यशोगान करते हैं॥१॥ रहाउ॥ सृजनहार प्रभु स्वयं ही कारण बनाता है। जैसे उसको अच्छा लगता है, वैसे ही जीवों को कामकाज में लगाता है। पूर्ण सौभाग्य से ही गुरदेव की सेवा की जाती है और गुरु की सेवा से ही सुख प्राप्त होता है॥२॥ यदि मनुष्य अपने आपको मोह–माया से निर्लिप्त करके प्रभु भक्ति में जीवे तो उसे सबकुछ प्राप्त होता है। गुरु की कृपा से वह ईश्वर को अपने हृदय में बसाता है। जो प्राणी ईश्वर को अपने हृदय में बसा लेता है वह हमेशा के लिए मुक्त हो जाता है और सहज ही प्रभु में समा जाता है॥३॥ जो व्यक्ति अधिकतर धर्म–कर्म करता है, वह मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता। जो व्यक्ति देश–देशांतर भटकता रहता है, वह भी मोह–माया में फँसकर नष्ट हो जाता है। कपटी प्राणी व्यर्थ ही अपना जीवन गंवा देता है। हरि–नाम के बिना वह बहुत कष्ट सहन करता है॥४॥ जो व्यक्ति विषय–विकारों में भटकते हुए अपने मन को नियंत्रित कर लेता है, वह गुरु की कृपा से (परमपद) मोक्ष प्राप्त कर लेता है। सतिगुरु स्वयं ही जीव का भगवान से मिलाप करवाते हैं। फिर वह जीव अपने प्रियतम प्रभु को मिलकर सुख की अनुभूति करता है॥५॥ कई व्यक्ति मिथ्या माया के मोह में फँसे हुए हैं। वे मिथ्या माया रूपी फल ही प्राप्त करते हैं। द्वैत–भाव में फँसकर वह अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा लेते हैं। वह स्वयं तो भवसागर में डूब जाते हैं और अपने समूह वंशों को भी डुबा लेते हैं। झूठ बोलकर वह माया रूपी विष सेवन करते हैं॥६॥ गुरु के माध्यम से कोई विरला पुरुष ही अपने शरीर में अपने मन को देखता है। जब वह अपने अहंकार को मिटा देता है तो ही उसके अन्तर्मन में भगवान की प्रेम–भक्ति उत्पन्न होती है। प्रेम–भक्ति द्वारा उसका अहंकार सूख जाता है। सिद्ध,साधक और मौनधारी सुरति लगाकर थक गए हैं। उन्होंने भी अपने तन में मन को नहीं देखा॥७॥ वह सृजनहार प्रभु स्वयं ही जीवों से कार्य करवाता है। अन्य कोई क्या कर सकता है? प्रभु के उत्पन्न किए जीवों द्वारा करने से क्या हो सकता है? हे नानक! जिसको प्रभु अपने नाम की अनुकंपा करता है, वही उसको पाता है और वह मनुष्य नाम को सदैव ही अपने हृदय में बसाकर रखता है॥८॥२३॥२४॥

माझ महला ३॥ इसु गुफा महि अखुट भंडारा ॥ तिसु विचि वसै हरि अलख अपारा ॥ आपे गुपतु परगटु है आपे गुर सबदी आपु वंञावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी अंम्रित नामु मंनि वसावणिआ ॥ अंम्रित नामु महा रसु मीठा गुरमती अंम्रितु पीआवणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउमै मारि बजर कपाट खुलाइआ ॥ नामु अमोलकु गुर परसादी पाइआ ॥ बिनु सबदै नामु न पाए कोई गुर किरपा मंनि वसावणिआ ॥ २ ॥ गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ ॥ अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥ जोती जोति मिली मनु मानिआ हरि दरि सोभा पावणिआ ॥ ३ ॥ सरीरहु भालणि को बाहरि जाए ॥ नामु न लहै बहुतु वेगारि दुखु पाए ॥ मनमुख अंधे सूझै नाही फिरि घिरि आइ गुरमुखि वथु पावणिआ ॥ ४ ॥ गुर परसादी सचा हरि पाए ॥ मनि तनि वेखै हउमै मैलु जाए ॥ बैसि सुथानि सद हरि गुण गावै सचै सबदि समावणिआ ॥ ५ ॥ नउ दर ठाके धावतु रहाए ॥ दसवै निज घरि वासा पाए ॥ ओथै अनहद सबद वजहि दिनु राती गुरमती सबदु सुणावणिआ ॥ ६ ॥ बिनु सबदै अंतरि आनेरा ॥ न वसतु लहै न चूकै फेरा ॥ सतिगुर हथि कुंजी होरतु दरु खुलै नाही गुरु पूरै भागि मिलावणिआ ॥ ७ ॥ गुपतु परगटु तूं सभनी थाई ॥ गुर परसादी मिलि सोझी पाई ॥ नानक नामु सालाहि सदा तूं गुरमुखि मंनि वसावणिआ ॥ ८ ॥ २४ ॥ २५ ॥

इस शरीर रूपी गुफा में ही नाम का अमूल्य भण्डार मौजूद हैं। इस गुफा में ही अलक्ष्य एवं अपरंपार प्रभु निवास करता है। वह स्वयं ही अप्रत्यक्ष एवं स्वयं ही प्रत्यक्ष है और गुरु के शब्द से आत्माभिमान नष्ट हो जाता है॥१॥ मैं उन पर तन–मन से न्यौछावर हूँ जो अमृत नाम को अपने हृदय में बसाते हैं। यह अमृत नाम महारस है और इसका स्वाद बड़ा मधुर है। यह नाम रूपी अमृत गुरु के उपदेश द्वारा पान किया जाता है॥१॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति अपने अहंकार को नष्ट करके वज्र कपाट खोल लेता है, वह गुरु की कृपा से अमूल्य नाम को प्राप्त कर लेता है। गुरु के शब्द बिना किसी को भी नाम प्राप्त नहीं होता। नाम को गुरु की दया से ही हृदय में बसाया जा सकता है॥ २॥ जो व्यक्ति गुरु का ज्ञान रूपी सच्चा सुरमा अपने नेत्रों में डालता है, उसके हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है और अज्ञानता का अँधेरा मिट जाता है। उसकी ज्योति परम ज्योति में विलीन हो जाती है तथा उसका मन नाम–सिमरन से संतुष्ट हो जाता है और भगवान के दरबार में वह बड़ी शोभा प्राप्त करता है॥३॥ यदि कोई व्यक्ति अपनी देहि से बाहर किसी अन्य स्थान पर प्रभु की तलाश में जाए तो वह नाम को नहीं पाता, अपितु बेगारी की तरह अधिक कष्ट सहन करता है। ज्ञानहीन मनमुख व्यक्ति इधर–उधर भटकने के पश्चात पुनः अपने घर लौट आता है परन्तु उसे नाम का ज्ञान नहीं होता। लेकिन सतिगुरु द्वारा वह असली पदार्थ को भीतर से ही प्राप्त कर लेता है॥४॥ गुरु की कृपा से वह सत्यस्वरूप परमात्मा को पा लेता है। उसकी अहंकार की मलिनता दूर हो जाती है और अपने मन एवं तन में वह प्रभु के ही दर्शन करता है। श्रेष्ठ स्थान सत्संग में विराजमान होकर वह सदैव प्रभु का यशोगान करता है और सत्य–परमेश्वर में लीन हो जाता है॥५॥ शरीर रूपी घर को दो नेत्र, दो कान, दो नासिका, मुँह, गुदा एवं इन्द्री यह नौ द्वार लगे हुए हैं। इनके द्वारा ही मन बाहर भटकता रहता है। जो व्यक्ति इन द्वारों को बंद करके अपने भटकते मन को नियंत्रित कर लेता है तो उसका मन अपने आत्म–स्वरूप में निवास कर लेता है। वहाँ पर दिन–रात अनहद शब्द गूंजता रहता है। अनहद शब्द को गुरु की मति द्वारा ही सुना जा सकता है॥६॥ शब्द के बिना अन्तर्मन में अज्ञानता का अँधेरा बना रहता है। मनुष्य को नाम रूपी वस्तु प्राप्त नहीं होती और उसका आवागमन का चक्र मिटता नहीं। सतिगुरु के पास ब्रह्म–विद्या रूपी कुंजी है। किसी अन्य विधि से यह द्वार खुलता नहीं

और गुरु पूर्ण भाग्य से ही मिलता है॥७॥ हे ईश्वर ! तू गुप्त अथवा प्रत्यक्ष रूप में सर्वत्र विद्यमान है। गुरु की कृपा से प्रभु को मिलने से ही मनुष्य को इस भेद का ज्ञान होता है। हे नानक ! तू सदैव भगवान के नाम की महिमा–स्तुति किया कर, चूंकि गुरु के माध्यम से ही मनुष्य के मन में नाम का निवास होता है॥ ८॥ २४॥ २५॥

माझ महला ३ ॥ गुरमुखि मिलै मिलाए आपे ॥ कालु न जोहै दुखु न संतापे ॥ हउमै मारि बंधन सभ तोड़ै गुरमुखि सबदि सुहावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हरि हरि नामि सुहावणिआ ॥ गुरमुखि गावै गुरमुखि नाचै हरि सेती चितु लावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि जीवै मरै परवाणु ॥ आरजा न छीजै सबदु पछाणु ॥ गुरमुखि मरै न कालु न खाए गुरमुखि सचि समावणिआ ॥ २ ॥ गुरमुखि हरि दरि सोभा पाए॥ गुरमुखि विचहु आपु गवाए ॥ आपि तरै कुल सगले तारे गुरमुखि जनमु सवारणिआ ॥ ३ ॥ गुरमुखि दुखु कदे न लगै सरीरि ॥ गुरमुखि हउमै चूकै पीर ॥ गुरमुखि मनु निरमलु फिरि मैलु न लागै गुरमुखि सहजि समावणिआ ॥ ४ ॥ गुरमुखि नामु मिलै वडिआई ॥ गुरमुखि गुण गावै सोभा पाई ॥ सदा अनंदि रहै दिनु राती गुरमुखि सबदु करावणिआ ॥ ५ ॥ गुरमुखि अनदिनु सबदे राता ॥ गुरमुखि जुग चारे है जाता ॥ गुरमुखि गुण गावै सदा निरमलु सबदे भगति करावणिआ ॥ ६ ॥ बाझु गुरू है अंध अंधारा॥ जमकालि गरठे करहि पुकारा ॥ अनदिनु रोगी बिसटा के कीड़े बिसटा महि दुखु पावणिआ ॥ ७॥ गुरमुखि आपे करे कराए ॥ गुरमुखि हिरदै वुठा आपि आए ॥ नानक नामि मिलै वडिआई पूरे गुर ते पावणिआ ॥ ८ ॥ २५ ॥ २६ ॥

जो व्यक्ति गुरु की शरण में आता है, उसे भगवान मिल जाता है और भगवान स्वयं ही गुरु से मिलाकर अपने साथ मिला लेता है। ऐसे व्यक्ति को मृत्यु देख भी नहीं सकती और कोई दुख–क्लेश उसे पीड़ित नहीं कर सकता। ऐसा व्यक्ति अपने अहंकार को नष्ट करके माया के तमाम बन्धनों को तोड़ देता है। गुरु की शरण में रहने वाला व्यक्ति नाम द्वारा सुशोभित हो जाता है॥१॥ मैं उन पर तन–मन से न्यौछावर हूँ जो हरि–प्रभु के नाम से सुन्दर बन जाते हैं। गुरमुख भगवान की महिमा–स्तुति करता रहता है और मस्त होकर नाचता झूमता है और वह भगवान से अपना चित्त लगाकर रखता है॥१॥ रहाउ॥ गुरमुख का जीना एवं मरना प्रमाणिक है। उसका जीवन व्यर्थ नहीं जाता, क्योंकि वह परमात्मा को पहचानता है। गुरमुख मरता नहीं और न ही उसको मृत्यु निगलती है। गुरमुख सत्य में लीन रहता है॥ २॥ ऐसे गुरमुख ईश्वर के दरबार में बड़ी शोभा पाते हैं। गुरमुख अपने मन में से अहंकार को मिटा देता है। गुरमुख स्वयं भवसागर से पार हो जाता है और अपने समूचे वंश को भी पार कर लेता है और अपना जीवन संवार लेता है॥३॥ गुरमुख के शरीर को कभी कोई दुःख नहीं लगता। गुरमुख के अहंकार की वेदना–पीड़ा दूर हो जाती है। गुरमुख का मन अहंत्व की मैल से निर्मल हो जाता है और उसे फिर अहंत्व की मैल नहीं लगती। गुरमुख सहज ही समाया रहता है॥४॥ गुरमुख ईश्वर के नाम की महानता प्राप्त करता है। गुरमुख भगवान का गुणानुवाद करता है और दुनिया में बड़ी शोभा प्राप्त करता है। वह सदैव ही दिन–रात आनंदपूर्वक रहता है। गुरमुख भगवान के नाम की ही साधना करता है॥५॥ गुरमुख रात–दिन शब्द में मग्न रहता है। गुरमुख चारों युगों में जाना जाता है। गुरमुख सदा निर्मल प्रभु का यशोगान करता है और शब्द द्वारा भगवान की भक्ति करता रहता है॥६॥ गुरु के बिना घनघोर अंधकार है। यमदूत द्वारा जकड़े हुए मनुष्य जोर–जोर से चिल्लाते हैं। वह रात–दिन रोगी बने रहते हैं, जैसे विष्टा के कीड़े विष्टा में दुखी होते रहते हैं॥७॥ गुरमुख स्वयं ही भगवान की भक्ति करते एवं अन्यों से भी करवाते हैं। गुरमुख के हृदय में परमेश्वर स्वयं आकर निवास कर लेता है। हे नानक ! प्रभु के नाम से महानता प्राप्त होती है। पूर्ण गुरु द्वारा ही नाम पाया जाता है॥८॥२५॥२६॥

माझ महला ३ ॥ एका जोति जोति है सरीरा ॥ सबदि दिखाए सतिगुरु पूरा ॥ आपे फरकु कीतोनु घट अंतरि आपे बणत बणावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हरि सचे के गुण गावणिआ ॥ बाझु गुरू को सहजु न पाए गुरमुखि सहजि समावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तूं आपे सोहहि आपे जगु मोहहि ॥ तूं आपे नदरी जगतु परोवहि ॥ तूं आपे दुखु सुखु देवहि करते गुरमुखि हरि देखावणिआ ॥ २ ॥ आपे करता करे कराए ॥ आपे सबदु गुर मंनि वसाए ॥ सबदे उपजै अंम्रित बाणी गुरमुखि आखि सुणावणिआ ॥ ३ ॥ आपे करता आपे भुगता ॥ बंधन तोड़े सदा है मुकता ॥ सदा मुकतु आपे है सचा आपे अलखु लखावणिआ ॥ ४ ॥ आपे माइआ आपे छाइआ ॥ आपे मोहु सभु जगतु उपाइआ ॥ आपे गुणदाता गुण गावै आपे आखि सुणावणिआ ॥ ५ ॥ आपे करे कराए आपे ॥ आपे थापि उथापे आपे ॥ तुझ ते बाहरि कछू न होवै तूं आपे कारै लावणिआ ॥ ६ ॥ आपे मारे आपि जीवाए ॥ आपे मेले मेलि मिलाए ॥ सेवा ते सदा सुखु पाइआ गुरमुखि सहजि समावणिआ ॥ ७ ॥ आपे ऊचा ऊचो होई ॥ जिसु आपि विखाले सु वेखै कोई ॥ नानक नामु वसै घट अंतरि आपे वेखि विखालणिआ ॥ ८ ॥ २६ ॥ २७ ॥

समस्त शरीरों में जो ज्योति विद्यमान है, वह ज्योति एक ही है अर्थात् एक ईश्वर की ज्योति सब में विद्यमान है। पूर्ण सतिगुरु शब्द द्वारा मनुष्य को इस ज्योति के दर्शन करवा देते हैं। विभिन्न शरीरों में ईश्वर ने स्वयं ही विविधता उत्पन्न की है और स्वयं ही जीवों के शरीर की रचना की है॥१॥ मैं उन पर तन-मन से कुर्बान हूँ जो सत्यस्वरूप परमेश्वर का गुणगान करते हैं। गुरु के अलावा किसी को भी सहज प्राप्त नहीं होता। गुरमुख सहज ही समाया रहता है॥१॥ रहाउ॥ हे प्रभु! तू स्वयं ही सर्वत्र सुन्दर रूप में शोभा दे रहा है और स्वयं ही जगत् को मोहित कर रहा है। तूने स्वयं ही अपनी कृपा-दृष्टि से समूचे जगत् को मोह-माया में पिरोया हुआ है। हे मेरे हरि-परमेश्वर! तुम स्वयं ही दुख और सुख प्रदान करते हो और गुरमुखों को हरि-दर्शन करवाते हो॥२॥ जगत् का रचयिता प्रभु स्वयं ही सब कुछ करता और जीवों से करवाता है। वह स्वयं गुरु का शब्द मनुष्य के हृदय में बसाता है। शब्द से अमृत-वाणी उत्पन्न होती है। गुरमुख इस अमृत-वाणी को बोलकर दूसरों को सुनाते हैं॥३॥ हरि-प्रभु स्वयं ही कर्त्ता और स्वयं ही जगत् के पदार्थों को भोगने वाला है। भगवान जिस व्यक्ति के बन्धनों को तोड़ देता है, वह हमेशा के लिए मुक्त हो जाता है। सत्य स्वरूप परमेश्वर स्वयं भी माया के बन्धनों से हमेशा के लिए मुक्त है। वह अलक्ष्य परमेश्वर स्वयं ही अपने स्वरूप के दर्शन करवाता है॥४॥ परमेश्वर स्वयं ही माया है और स्वयं ही उस माया में प्रतिबिम्बित है। उस प्रभु ने स्वयं ही माया के मोह को पैदा किया है और स्वयं ही जगत् की रचना की है। परमेश्वर स्वयं ही गुणदाता है और वह स्वयं ही अपने गुण गा रहा है। वह स्वयं ही अपने गुण बोलकर सुना रहा है॥५॥ प्रभु स्वयं ही प्राणियों का कर्त्ता और उनसे कर्म करवाता है। परमात्मा स्वयं ही सृष्टि-रचना करता है और स्वयं ही सृष्टि का विनाश भी करता है। हे प्रभु! तेरे हुक्म के बिना कुछ भी नहीं हो सकता। तुमने स्वयं ही प्राणियों को विभिन्न कर्मों में लगाया हुआ है॥६॥ भगवान स्वयं ही जीवों को मारता है और स्वयं ही उन्हें जीवित भी रखता है। वह स्वयं ही जीवों को गुरु से मिलाता है और उन्हें गुरु के सम्पर्क में रखकर अपने साथ मिला लेता है। गुरु की सेवा करने से मनुष्य को सदैव ही सुख प्राप्त होता है और गुरु की प्रेरणा से जीव सहज ही सत्य में समा जाता है॥७॥ हे भगवान! तू स्वयं ही बड़ों से भी बड़ा अर्थात् सर्वश्रेष्ठ है। जिस व्यक्ति को तू स्वयं अपना रूप दिखाता है, वहीं तेरे दर्शन कर सकता है। हे नानक! जिसके हृदय में नाम का निवास हो जाता है, फिर प्रभु स्वयं ही उसके हृदय में प्रगट होकर अपने स्वरूप के दर्शन करवा देता है॥८॥२६॥२७॥

माझ महला ३ ॥ मेरा प्रभु भरपूरि रहिआ सभ थाई ॥ गुर परसादी घर ही महि पाई ॥ सदा सरेवी इक मनि धिआई गुरमुखि सचि समावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी जगजीवनु मंनि वसावणिआ ॥ हरि जगजीवनु निरभउ दाता गुरमति सहजि समावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घर महि धरती धउलु पाताला ॥ घर ही महि प्रीतमु सदा है बाला ॥ सदा अनंदि रहै सुखदाता गुरमति सहजि समावणिआ ॥ २ ॥ काइआ अंदरि हउमै मेरा ॥ जंमण मरणु न चूकै फेरा ॥ गुरमुखि होवै सु हउमै मारे सचो सचु धिआवणिआ ॥ ३ ॥ काइआ अंदरि पापु पुंनु दुइ भाई ॥ दुही मिलि कै सिसटि उपाई ॥ दोवै मारि जाइ इकतु घरि आवै गुरमति सहजि समावणिआ ॥ ४ ॥ घर ही माहि दूजै भाइ अनेरा ॥ चानणु होवै छोडै हउमै मेरा ॥ परगटु सबदु है सुखदाता अनदिनु नामु धिआवणिआ ॥ ५ ॥ अंतरि जोति परगटु पासारा ॥ गुर साखी मिटिआ अंधिआरा ॥ कमलु बिगासि सदा सुखु पाइआ जोती जोति मिलावणिआ ॥ ६ ॥ अंदरि महल रतनी भरे भंडारा ॥ गुरमुखि पाए नामु अपारा ॥ गुरमुखि वणजे सदा वापारी लाहा नामु सद पावणिआ ॥ ७ ॥ आपे वथु राखै आपे देइ ॥ गुरमुखि वणजहि केई केइ ॥ नानक जिसु नदरि करे सो पाए करि किरपा मंनि वसावणिआ ॥ ८ ॥ २७ ॥ २८ ॥

मेरा प्रभु समस्त स्थानों में रहता है। गुरु की कृपा से मैंने उसको अपने हृदय घर में ही पा लिया है। मैं हमेशा ईश्वर की सेवा करता हूँ और एकाग्रचित्त होकर उसका ही ध्यान करता हूँ। गुरु के द्वारा मैं सत्यस्वरूप परमात्मा में लीन हो गया हूँ॥१॥ मैं तन–मन से उन पर कुर्बान हूँ जो अपने मन में जगजीवन को बसाते हैं। भगवान जगत् का जीवन, निर्भीक एवं दाता है। गुरु की मति द्वारा जीव सहज ही उसमें समा जाता है॥१॥ रहाउ॥ धरती, धवल एवं पाताल–यह सबकुछ मानव के शरीर रूपी घर में ही हैं। मेरा नितनूतन प्रियतम परमेश्वर भी शरीर रूपी घर में ही रहता है। सुखदाता प्रभु सदैव ही आनंदपूर्वक रहता है और गुरु की मति द्वारा मनुष्य सहज ही उसमें समा जाता है॥२॥ जब तक काया के भीतर अहंकार एवं ममत्व है, तब तक जन्म–मरण का चक्र समाप्त नहीं होता। जो प्राणी गुरमुख बन जाता है, वह अपने अहंकार को निवृत्त कर लेता है और परम सत्य प्रभु का ध्यान करता है॥३॥ पाप एवं पुण्य दोनों भाई शरीर में ही रहते हैं। इन दोनों ने मिलकर सृष्टि को पैदा किया है जो व्यक्ति इन दोनों का वध करके आत्म–स्वरूप में निवास कर लेता है, वह गुरु की मति द्वारा सहज ही समाया रहता है॥४॥ मोह–माया में फँसने के कारण मनुष्य के हृदय–घर में अज्ञानता का अँधेरा बना रहता है। यदि वह अहंत्व एवं ममत्व की भावना को त्याग दे तो उसके हृदय में प्रभु–ज्योति का प्रकाश हो जाता है। जब सुखदाता अनहद शब्द मन में प्रगट हो जाता है तो मनुष्य प्रतिदिन नाम का ध्यान करता रहता है॥५॥ जिस परमात्मा ने जगत् को प्रगट किया है, समस्त जीवों में उसकी ही ज्योति विद्यमान है। मनुष्य का अज्ञानता का अँधेरा गुरु की शिक्षा से मिट जाता है और उसका हृदय कंवल प्रफुल्लित हो जाता है। फिर मनुष्य की ज्योति परम–ज्योति प्रभु में विलीन हो जाती है॥६॥ भगवान के आत्म–स्वरूप रूपी महल में नाम रूपी रत्न के भण्डार भरे हुए हैं परन्तु मनुष्य अनंत प्रभु के नाम को गुरु के माध्यम से ही प्राप्त करता है। जीव रूपी व्यापारी हमेशा ही गुरु के माध्यम से नाम का व्यापार करता है और हमेशा ही नाम रूपी लाभ प्राप्त करता है॥७॥ भगवान स्वयं ही अपने आत्म–स्वरूप रूपी महल में नाम–वस्तु को रखता है और स्वयं यह नाम–वस्तु गुरु के माध्यम से जीवों को देता है। कोई विरला पुरुष गुरु के माध्यम से ही यह व्यापार करता है। हे नानक ! परमेश्वर जिस पर अपनी कृपा–दृष्टि करता है, वहीं नाम को प्राप्त करता है। परमेश्वर अपनी कृपा करके नाम को उसके हृदय में बसा देता है॥८॥२७॥२८॥

माझ महला ३ ॥ हरि आपे मेले सेव कराए ॥ गुर कै सबदि भाउ दूजा जाए ॥ हरि निरमलु सदा गुणदाता हरि गुण महि आपि समावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी सचु सचा हिरदै वसावणिआ ॥ सचा नामु सदा है निरमलु गुर सबदी मंनि वसावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे गुरु दाता करमि बिधाता ॥ सेवक सेवहि गुरमुखि हरि जाता ॥ अंम्रित नामि सदा जन सोहहि गुरमति हरि रसु पावणिआ ॥ २ ॥ इसु गुफा महि इकु थानु सुहाइआ ॥ पूरै गुरि हउमै भरमु चुकाइआ ॥ अनदिनु नामु सलाहनि रंगि राते गुर किरपा ते पावणिआ ॥ ३ ॥ गुर कै सबदि इहु गुफा वीचारे ॥ नामु निरंजनु अंतरि वसै मुरारे ॥ हरि गुण गावै सबदि सुहाए मिलि प्रीतम सुखु पावणिआ ॥ ४ ॥ जमु जागाती दूजै भाइ करु लाए ॥ नावहु भूले देइ सजाए ॥ घड़ी मुहत का लेखा लेवै रतीअहु मासा तोल कढावणिआ ॥ ५ ॥ पेईअड़ै पिरु चेते नाही ॥ दूजै मुठी रोवै धाही ॥ खरी कुआलिओ कुरूपि कुलखणी सुपनै पिरु नही पावणिआ ॥ ६ ॥ पेईअड़ै पिरु मंनि वसाइआ ॥ पूरै गुरि हदूरि दिखाइआ ॥ कामणि पिरु राखिआ कंठि लाइ सबदे पिरु रावै सेज सुहावणिआ ॥ ७ ॥ आपे देवै सदि बुलाए ॥ आपणा नाउ मंनि वसाए ॥ नानक नामु मिलै वडिआई अनदिनु सदा गुण गावणिआ ॥ ८ ॥ २८ ॥ २९ ॥

भगवान स्वयं ही जीव को अपने साथ मिलाता है और उससे अपनी सेवा करवाता है। फिर गुरु के शब्द द्वारा माया का प्रेम जीव के मन से दूर हो जाता है। भगवान निर्मल है और सदैव ही गुणों का दाता है। भगवान स्वयं ही जीव को अपने गुणों में लीन करता है॥१॥ मैं कुर्बान हूँ और मेरा जीवन भी उन पर कुर्बान है जो परम सत्य परमात्मा को अपने अन्तर्मन में बसाते हैं। सत्य नाम हमेशा ही निर्मल है। इस निर्मल नाम को जीव गुरु के शब्द द्वारा अपने मन में बसा लेता है॥१॥ रहाउ॥ भगवान स्वयं ही जीवों को नाम की देन देने वाला गुरु है और स्वयं ही जीवों के कर्मों का भाग्यविधाता है। भगवान के सेवक उसकी सेवा करते हैं और गुरु के माध्यम से वह भगवान को पहचान लेते हैं। जो व्यक्ति हमेशा ही नाम-अमृत का पान करते रहते हैं वह सुन्दर बन जाते हैं। वह गुरु की मति द्वारा हरि-रस को प्राप्त कर लेते हैं॥२॥ इस शरीर रूपी गुफा में आत्मस्वरूप रूपी एक अत्यंत सुन्दर स्थान है। पूर्ण गुरु ने जिनका अहंकार नाश कर दिया है, वे रात-दिन प्रेमपूर्वक मग्न होकर नाम की सराहना करते रहते हैं। ऐसे लोगों को गुरु की कृपा से ही नाम प्राप्त होता है॥३॥ जो व्यक्ति गुरु के शब्द द्वारा इस गुफा का चिन्तन करता है, उसके हृदय में मुरारि प्रभु का निरंजन नाम बस जाता है। वह भगवान की महिमा गाता है और शब्द द्वारा प्रभु के दरबार में शोभा प्राप्त करता है। फिर वह अपने प्रियतम-प्रभु से मिलकर सुख अनुभव करता है॥४॥ कर वसूल करने वाला यम द्वैत भाव रखने वाले लोगों पर कर लगाता है। जो ईश्वर के नाम को विस्मृत करते हैं वह उनको दण्ड देता है। यम प्रत्येक जीव से प्रत्येक घड़ी एवं मुहूर्त में किए कर्मों का लेखा-जोखा लेता है और उनके अंश के कण मात्र वजन के कर्मों को भी तोलता है॥ ५॥ जो जीव-स्त्री अपने पीहर (मृत्युलोक) में अपने पति-परमेश्वर को स्मरण नहीं करती, वह माया के प्रेम में फँसकर लुटी जा रही है, वह कर्मों का लेखा देते समय चिल्ला-चिल्ला कर विलाप करती है। वह नीच घराने की बहुत कुरुप और कुलक्षणी है और स्वप्न में भी वह अपने पति-परमेश्वर से नहीं मिलती॥ ६॥ जिस जीव-स्त्री ने अपने पति-प्रभु को अपने मन में बसा लिया है, पूर्ण गुरु ने उसे पति-प्रभु के प्रत्यक्ष दर्शन करवा दिए हैं। ऐसी जीव-स्त्री अपने प्रियतम को अपने हृदय के साथ लगाए रखती है और नाम द्वारा अपने प्रियतम के साथ उसकी सुन्दर सेज पर रमण करती है॥७॥ भगवान स्वयं ही अपने सेवक को बुला कर उसे नाम की देन प्रदान करता है। वह अपना नाम उसके मन में बसा देता है। हे नानक! नाम द्वारा सेवक को भगवान के दरबार में बड़ी शोभा मिलती है। फिर भगवान का सेवक रात-दिन सदैव ही उसका गुणगान करता रहता है॥८॥२८॥२९॥

माझ महला ३ ॥ ऊतम जनमु सुथानि है वासा ॥ सतिगुरु सेवहि घर माहि उदासा ॥ हरि रंगि रहहि सदा रंगि राते हरि रसि मनु त्रिपतावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी पड़ि बुझि मंनि वसावणिआ ॥ गुरमुखि पड़हि हरि नामु सलाहहि दरि सचै सोभा पावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अलख अभेउ हरि रहिआ समाए ॥ उपाइ न किती पाइआ जाए ॥ किरपा करे ता सतिगुरु भेटै नदरी मेलि मिलावणिआ ॥ २ ॥ दूजै भाइ पड़ै नही बूझै ॥ त्रिबिधि माइआ कारणि लूझै ॥ त्रिबिधि बंधन तूटहि गुर सबदी गुर सबदी मुकति करावणिआ ॥ ३ ॥ इहु मनु चंचलु वसि न आवै ॥ दुबिधा लागै दह दिसि धावै ॥ बिखु का कीड़ा बिखु महि राता बिखु ही माहि पचावणिआ ॥ ४ ॥ हउ हउ करे तै आपु जणाए ॥ बहु करम करै किछु थाइ न पाए ॥ तुझ ते बाहरि किछू न होवै बखसे सबदि सुहावणिआ ॥ ५ ॥ उपजै पचै हरि बूझै नाही ॥ अनदिनु दूजै भाइ फिराही ॥ मनमुख जनमु गइआ है बिरथा अंति गइआ पछुतावणिआ ॥ ६ ॥ पिरु परदेसि सिगारु बणाए ॥ मनमुख अंधु ऐसे करम कमाए ॥ हलति न सोभा पलति न ढोई बिरथा जनमु गवावणिआ ॥ ७ ॥ हरि का नामु किनै विरलै जाता ॥ पूरे गुर कै सबदि पछाता ॥ अनदिनु भगति करे दिनु राती सहजे ही सुखु पावणिआ ॥ ८ ॥ सभ महि वरतै एको सोई ॥ गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ नानक नामि रते जन सोहहि करि किरपा आपि मिलावणिआ ॥ ९ ॥ २९ ॥ ३० ॥

जो व्यक्ति सत्संगति रूपी श्रेष्ठ स्थान पर रहते हैं, उनका जन्म उत्तम बन जाता है। ऐसे व्यक्ति अपने सच्चे गुरु की सेवा करते रहते हैं और गृहस्थ में रहते हुए भी निर्लिप्त रहते हैं। वह सदैव ही प्रभु के प्रेम में मग्न रहते हैं। उनका मन हरि–रस का पान करके तृप्त हो जाता है॥१॥ मैं उन पर कुर्बान हूँ, मेरा जीवन उन पर बलिहारी है जो ब्रह्म–ज्ञान को पढ़कर एवं समझकर अपने मन में बसाते हैं। गुरमुख ब्रह्म–ज्ञान को पढ़कर हरि–नाम की महिमा–स्तुति करते हैं और सत्य के दरबार में शोभा पाते हैं॥१॥ रहाउ॥ अलक्ष्य एवं अभेद परमात्मा सर्वव्यापक है। किसी भी उपाय से वह प्राप्त नहीं किया जा सकता। यदि परमात्मा कृपा करे तो मनुष्य को गुरु मिल जाता है। परमात्मा अपनी कृपा–दृष्टि से मनुष्य को सतिगुरु से मिलाकर उस द्वारा अपने साथ मिला लेता है॥२॥ जो व्यक्ति द्वैतभाव के कारण ग्रंथों का अध्ययन करता है, उसे कुछ भी ज्ञान प्राप्त नहीं होता। वह त्रिगुणात्मक माया के लिए उलझता रहता है। लेकिन त्रिगुणात्मक माया के बंधन गुरु के शब्द से टूट जाते हैं और गुरु के शब्द से ही मोह–माया से मोक्ष प्राप्त होता है॥३॥ मनुष्य का यह मन बड़ा ही चंचल है और यह मनुष्य के वश में नहीं आता। यह दुविधा उत्पन्न करने वाली माया के पीछे लगकर दसों दिशाओं में भटकता रहता है। इस तरह मनुष्य विष–रूपी माया का कीड़ा बनकर विष रूपी विषय–विकारों में मग्न रहता है और विष रूपी माया के विषय–विकारों में ही गल–सड़ जाता है॥४॥ जो व्यक्ति अहंकार से बोलता है और स्वयं को बड़ा प्रगट करता है, वह अधिकतर धर्म–कर्म करता है परन्तु प्रभु के दरबार में स्वीकार नहीं होता। हे प्रभु! तेरे हुक्म से बाहर कुछ भी नहीं होता। जिसे तुम क्षमा कर देते हो, वह शब्द द्वारा सुन्दर बन जाता है॥५॥ मनमुख जन्मता एवं मरता रहता है। उसे भगवान का ज्ञान ही नहीं होता। वह रात–दिन माया के मोह में फँसकर भटकता रहता है। इस तरह मनमुख व्यक्ति अपना अमूल्य जन्म व्यर्थ ही गंवा देता है और अन्त में पश्चाताप करता हुआ जगत् से चला जाता है॥६॥ मनमुख ऐसे व्यर्थ कर्म करता है, जैसे कोई स्त्री जिसका पति तो परदेस गया हुआ है परन्तु फिर भी वह अपने शरीर का शृंगार करती रहती है। उसकी न इहलोक में शोभा होती है और न ही उसे परलोक में कोई सहारा मिलता है। उसका जीवन व्यर्थ ही चला जाता है॥७॥ किसी विरले ने ही

भगवान के नाम को जाना है। नाम की पहचान पूर्ण गुरु के शब्द द्वारा ही होती है। जो व्यक्ति दिन–रात हर समय भगवान की भक्ति करता रहता है, उसे सहज ही सुख उपलब्ध हो जाता है॥ ८॥एक परमेश्वर समस्त जीवों में मौजूद है। परन्तु इस भेद को गुरु के माध्यम से कोई विरला पुरुष ही समझता है। हे नानक! भगवान के दरबार में वहीं व्यक्ति शोभा प्राप्त करते हैं, जो उसके नाम में मग्न रहते हैं। भगवान स्वयं ही कृपा करके जीव को अपने साथ मिला लेता है॥७॥२६॥३०॥

माझ महला ३ ॥ मनमुख पड़हि पंडित कहावहि ॥ दूजै भाइ महा दुखु पावहि ॥ बिखिआ माते किछु सूझै नाही फिरि फिरि जूनी आवणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हउमै मारि मिलावणिआ ॥ गुर सेवा ते हरि मनि वसिआ हरि रसु सहजि पीआवणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वेदु पड़हि हरि रसु नही आइआ ॥ वादु वखाणहि मोहे माइआ ॥ अगिआनमती सदा अंधिआरा गुरमुखि बूझि हरि गावणिआ ॥ २ ॥ अकथो कथीऐ सबदि सुहावै ॥ गुरमती मनि सचो भावै ॥ सचो सचु खहि दिनु राती इहु मनु सचि रंगावणिआ ॥ ३ ॥ जो सचि रते तिन सचो भावै ॥ आपे देइ न पछोतावै ॥ गुर कै सबदि सदा सचु जाता मिलि सचे सुखु पावणिआ ॥ ४ ॥ कूड़ु कुसतु तिना मैलु न लागै ॥ गुर परसादी अनदिनु जागै ॥ निरमल नामु वसै घट भीतरि जोती जोति मिलावणिआ ॥ ५ ॥ त्रै गुण पड़हि हरि ततु न जाणहि ॥ मूलहु भुले गुर सबदु न पछाणहि ॥ मोह बिआपे किछु सूझै नाही गुर सबदी हरि पावणिआ ॥ ६ ॥ वेदु पुकारै त्रिबिधि माइआ ॥ मनमुख न बूझहि दूजै भाइआ ॥ त्रै गुण पड़हि हरि एकु न जाणहि बिनु बूझे दुखु पावणिआ ॥ ७ ॥ जा तिसु भावै ता आपि मिलाए ॥ गुर सबदी सहसा दूखु चुकाए ॥ नानक नावै की सची वडिआई नामो मंनि सुखु पावणिआ ॥ ८ ॥ ३० ॥ ३१ ॥

स्वेच्छाचारी जीव द्वैतभाव में ग्रंथ पढ़ते रहते हैं और स्वयं को विद्वान कहलवाते हैं। वे माया के मोह में फँसकर बहुत दुखी होते हैं। वह विष रूपी माया के मोह में मग्न रहते हैं और प्रभु बारे उन्हें कोई ज्ञान नहीं मिलता, जिसके कारण वह पुनः पुनः योनियों के चक्र में पड़े रहते हैं॥१॥ मैं कुर्बान हूँ, मेरा जीवन उन पर कुर्बान है जो अपने अहंकार को नष्ट करके ईश्वर में विलीन हो जाते हैं। गुरु की सेवा से ईश्वर मनुष्य के हृदय में आ बसता है और वह सहज ही हरि–रस पान करता रहता है॥१॥ रहाउ॥ कुछ व्यक्ति वेद पढ़ते हैं परन्तु उन्हें हरि–रस का आनंद नहीं मिलता। मोह–माया के कारण बुद्धिहीन हुए वह वाद–विवाद करते रहते हैं। अज्ञान बुद्धि वाले हमेशा अज्ञानता के अँधकार में हैं। गुरमुख ईश्वर को जान लेते हैं और हरि का यशोगान करते रहते हैं॥२॥ जो व्यक्ति अकथनीय प्रभु की महिमा का कथन करता रहता है, वह नाम द्वारा सुन्दर बन जाता है। गुरु की मति द्वारा सत्य–प्रभु उसके मन को प्रिय लगता है। वह दिन–रात सत्य–परमेश्वर का ही सिमरन करता रहता है। उसका यह मन सत्य–प्रभु के प्रेम में मग्न रहता है॥३॥ जो सत्य–प्रभु के प्रेम में मग्न रहते हैं, उन्हें सत्य–प्रभु ही प्रिय लगता है। प्रभु उन्हें अपने प्रेम की देन स्वयं ही देता है और यह देन देकर वह अफसोस नहीं करता। गुरु के शब्द से सत्य प्रभु सदैव ही जाना जाता है। सत्यस्वरूप प्रभु को मिलने से बड़ा आनंद प्राप्त होता है॥४॥ झूठ एवं कपट की मैल उनको नहीं लगती क्योंकि वे रात–दिन गुरु की कृपा से भजन में जागते हैं। निर्मल नाम उनके हृदय में निवास करता है और उनकी ज्योति प्रभु की ज्योति में विलीन हो जाती है॥५॥ मनमुख ऐसी पुस्तकें पढ़ते हैं, जिनका संबंध त्रिगुणात्मक माया से होता है। वह परम तत्व ईश्वर को नहीं समझ सकते। ऐसे व्यक्ति जगत् के मूल प्रभु को भूले हुए हैं परन्तु गुरु की वाणी का बोध नहीं करते। वे मोह–माया में मग्न हैं और उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं होता कि भगवान गुरु की वाणी द्वारा ही मिलता है॥६॥ वेद पुकार–पुकार कर

कह रहे हैं कि माया त्रिगुणात्मक है परन्तु स्वेच्छाचारी जीवों को कोई सूझ ही नहीं होती, उन्हें तो माया का मोह ही प्यारा लगता है। वह त्रिगुणात्मक माया से संबंधित ग्रंथ पढ़ते रहते हैं परन्तु उस एक ईश्वर को नहीं जान सकते। वह एक ईश्वर को समझे बिना बहुत दुःखी होते हैं॥७॥ जब भगवान को उपयुक्त लगता है तो ही वह जीव को अपने साथ मिला लेता है। भगवान गुरु–शब्द द्वारा जीव का भय एवं दुःख दूर कर देता है। हे नानक! भगवान जिसे अपने नाम की महानता प्रदान कर देता है, वह अपने मन में नाम को बसाकर सुख प्राप्त करता है॥८॥३०॥३१॥

माझ महला ३ ॥ निरगुणु सरगुणु आपे सोई ॥ ततु पछाणै सो पंडितु होई ॥ आपि तरै सगले कुल तारै हरि नामु मंनि वसावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी हरि रसु चखि सादु पावणिआ ॥ हरि रसु चाखहि से जन निरमल निरमल नामु धिआवणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो निहकरमी जो सबदु बीचारे ॥ अंतरि ततु गिआनि हउमै मारे ॥ नामु पदारथु नउ निधि पाए त्रै गुण मेटि समावणिआ ॥ २ ॥ हउमै करै निहकरमी न होवै ॥ गुर परसादी हउमै खोवै ॥ अंतरि बिबेकु सदा आपु वीचारे गुर सबदी गुण गावणिआ ॥ ३ ॥ हरि सरु सागरु निरमलु सोई ॥ संत चुगहि नित गुरमुखि होई ॥ इसनानु करहि सदा दिनु राती हउमै मैलु चुकावणिआ ॥ ४ ॥ निरमल हंसा प्रेम पिआरि ॥ हरि सरि वसै हउमै मारि ॥ अहिनिसि प्रीति सबदि साचै हरि सरि वासा पावणिआ ॥ ५ ॥ मनमुखु सदा बगु मैला हउमै मलु लाई ॥ इसनानु करै परु मैलु न जाई ॥ जीवतु मरै गुर सबदु बीचारै हउमै मैलु चुकावणिआ ॥ ६ ॥ रतनु पदारथु घर ते पाइआ ॥ पूरै सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥ गुर परसादि मिटिआ अंधिआरा घटि चानणु आपु पछानणिआ ॥ ७ ॥ आपि उपाए तै आपे वेखै ॥ सतिगुरु सेवै सो जनु लेखै ॥ नानक नामु वसै घट अंतरि गुर किरपा ते पावणिआ ॥ ८ ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

ईश्वर स्वयं ही निर्गुण और स्वयं ही सगुण है। जो इस ज्ञान को समझ लेता है वही पण्डित बन जाता है। जो मनुष्य हरिनाम अपने हृदय में बसा लेता है, वह स्वयं भवसागर से पार हो जाता है और अपने समूचे वंश को भी भवसागर से पार करवा देता है॥१॥ मैं कुर्बान हूँ, मेरा जीवन भी उन पर कुर्बान है जो हरि रस का पान करते हैं और इसके स्वाद को प्राप्त करते हैं। जो हरि रस का पान करते हैं, वह पवित्र पुरुष हैं और वह निर्मल नाम का सिमरन करते हैं॥१॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति शब्द का चिन्तन करता है, वहीं कर्मयोगी है। उसके हृदय में परम तत्व प्रभु का ज्ञान प्रगट हो जाता है और वह अपने अहंकार को नष्ट कर देता है। वह नाम–पदार्थ से नवनिधि पा लेता है और माया के त्रिगुणों को मिटाकर भगवान में लीन हो जाता है॥२॥ जो व्यक्ति अहंकार करता है, वह कर्मों के बंधनों से मुक्त नहीं होता। लेकिन गुरु की कृपा से मनुष्य अपना अहंकार नष्ट कर देता है। उसके अन्तर्मन में विवेक उत्पन्न हो जाता है, वह सदा अपने स्वरूप का चिंतन करता है और गुरु के शब्द से हरि–प्रभु का यशोगान करता है॥३॥ निर्मल भगवान स्वयं ही सरोवर है और स्वयं ही सागर है। संत रूपी हंस गुरु के माध्यम से सदैव ही इस सरोवर में से नाम रूपी मोती चुगते हैं। वह भगवान रूपी सरोवर में दिन–रात स्नान करते रहते हैं और अपने अहंकार की मैल स्वच्छ करते रहते हैं॥४॥ जीव रूपी हंस प्रेम एवं प्यार से निर्मल हो जाते हैं और अपने अहंकार को मार कर भगवान रूपी सरोवर में निवास करते हैं। वह दिन–रात सत्य नाम के प्रेम में अनुरक्त रहते हैं और भगवान के सागर में बसेरा कर लेते हैं॥५॥ मनमुख पाखंडी बगुले की तरह हमेशा मैला रहता है, जिसके मन को अहंकार की मैल लगी हुई है। वह तीर्थों पर स्नान करता है परन्तु उसके अहंकार की मैल दूर नहीं होती। उसकी अहंकार की मैल तभी दूर हो सकती है, यदि वह गुरु–शब्द का चिंतन करे और नम्रतापूर्वक जीवन व्यतीत करे॥६॥ जब

पूर्ण सतिगुरु ने उसे अपना शब्द सुनाया तो उसने अपनी आत्मा में ही हरि नाम रूपी अमूल्य रत्न पदार्थ पा लिया। गुरु की दया से उसके मन में से अज्ञानता का अंधकार मिट गया है। उसके हृदय में ज्योति का प्रकाश हो गया है और उसने स्वयं ही अपने स्वरूप को पहचान लिया है॥७॥ प्रभु ने स्वयं ही जीवों की रचना की है और स्वयं ही अपनी रचना की देखभाल करता है। जो मनुष्य सतिगुरु की सेवा करता है, वह प्रभु के दरबार में स्वीकार हो जाता है। हे नानक! जिसके हृदय में प्रभु का नाम निवास करता है, गुरु की कृपा से वह प्रभु को प्राप्त कर लेता है॥८॥३१॥३२॥

माझ महला ३ ॥ माइआ मोहु जगतु सबाइआ ॥ त्रै गुण दीसहि मोहे माइआ ॥ गुर परसादी को विरला बूझै चउथै पदि लिव लावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी माइआ मोहु सबदि जलावणिआ ॥ माइआ मोहु जलाए सो हरि सिउ चितु लाए हरि दरि महली सोभा पावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देवी देवा मूलु है माइआ ॥ सिंम्रिति सासत जिंनि उपाइआ ॥ कामु क्रोधु पसरिआ संसारे आइ जाइ दुखु पावणिआ ॥ २ ॥ तिसु विचि गिआन रतनु इकु पाइआ ॥ गुर परसादी मंनि वसाइआ ॥ जतु सतु संजमु सचु कमावै गुरि पूरै नामु धिआवणिआ ॥ ३ ॥ पेईअड़ै धन भरमि भुलाणी ॥ दूजै लागी फिरि पछोताणी ॥ हलतु पलतु दोवै गवाए सुपनै सुखु न पावणिआ ॥ ४ ॥ पेईअड़ै धन कंतु समाले ॥ गुर परसादी वेखै नाले ॥ पिर कै सहजि रहै रंगि राती सबदि सिंगारु बणावणिआ ॥ ५ ॥ सफलु जनमु जिना सतिगुरु पाइआ ॥ दूजा भाउ गुर सबदि जलाइआ ॥ एको रवि रहिआ घट अंतरि मिलि सतसंगति हरि गुण गावणिआ ॥ ६ ॥ सतिगुरु न सेवै सो काहे आइआ ॥ धिगु जीवणु बिरथा जनमु गवाइआ ॥ मनमुखि नामु चिति न आवै बिनु नावै बहु दुखु पावणिआ ॥ ७ ॥ जिनि सिसटि साजी सोई जाणै ॥ आपे मेलै सबदि पछाणै ॥ नानक नामु मिलिआ तिन जन कउ जिन धुरि मसतकि लेखु लिखावणिआ ॥ ८ ॥ १ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

सम्पूर्ण संसार मोह–माया में लिप्त है। त्रिगुणी प्राणी माया में मोहित हुए दिखाई देते हैं। गुरु की कृपा से कोई विरला पुरुष ही सत्य का बोध करता है और अपनी वृत्ति सहज ही चतुर्थ अवस्था में लगाता है॥ १॥ मैं उन पर तन–मन से कुर्बान हूँ जो गुरु की वाणी से मोह–माया की तृष्णा को जला देते हैं। जो प्राणी मोह–माया की तृष्णा को जला देता है और अपना मन हरि–प्रभु से लगाता है, वह हरि के दरबार में बड़ी शोभा पाता है॥ १॥ रहाउ॥ देवी–देवताओं का मूल माया है, जिन्होंने स्मृतियों एवं शास्त्रों को उत्पन्न किया है। इस संसार में काम, क्रोध प्रवृत्त है, इसलिए प्राणी आवागमन के चक्र में पड़कर जन्मता–मरता एवं कष्ट सहन करता है॥ २॥ भगवान ने मानव शरीर में एक ज्ञान रूपी रत्न डाल दिया है, जिसे गुरु की कृपा से हृदय में बसाया जाता है। वे ब्रह्मचार्य, जितेन्द्रिय, संयम धारण करके सत्य की भक्ति करते हैं परन्तु पूर्ण गुरु की दया से नाम का स्मरण प्राप्त होता है॥३॥ जो जीव–स्त्री अपने पीहर (मृत्युलोक) में भ्रम में पड़कर कुमार्ग लगी हुई है। द्वैतभाव में फँसी हुई वह अन्तः पश्चाताप करती है। वह अपना लोक तथा परलोक दोनों ही गंवा देती है और स्वप्न में भी उसको सुख नहीं मिलता॥ ४॥ जो जीव–स्त्री इहलोक में अपने पति–परमेश्वर को स्मरण करती है, गुरु की कृपा से वह पति–परमेश्वर के निकट ही दर्शन करती है। वह सहज ही अपने प्रियतम के प्रेम में मग्न रहती है और उसकी वाणी को अपना हार–शृंगार बनाती है॥ ५॥ उनका ही जन्म सफल है जिन्होंने सतिगुरु को पाया है। गुरु के शब्द द्वारा उन्होंने माया–मोह को जला दिया है। सत्संग में सम्मिलित होकर वह एक ईश्वर का यशोगान करते हैं जो सबके हृदय में व्यापक है॥ ६॥ जो मनुष्य सतिगुरु की सेवा नहीं करता, वह संसार में क्यों आया है? उसके जीवन को धिक्कार है। उसने अपना अनमोल मनुष्य जीवन व्यर्थ ही गंवाया है। मनमुख नाम का सुमिरन नहीं करता। हरि नाम के बिना

वह बहुत कष्ट सहन करता है॥ ७॥ जिस प्रभु ने इस सृष्टि की रचना की है, वह इस बारे सबकुछ जानता है। प्रभु उनको अपने साथ मिला लेता है जो गुरु–शब्द को सदैव अपने नेत्रों में रखता है। हे नानक! नाम उन्हें ही मिलता है, जिनके मस्तक पर सुकर्मों के कारण आदि से ही भाग्य रेखाएँ विद्यमान हैं॥ ८॥ १॥ ३२॥ ३३॥

माझ महला ४ ॥ आदि पुरखु अपरंपरु आपे ॥ आपे थापे थापि उथापे ॥ सभ महि वरतै एको सोई गुरमुखि सोभा पावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी निरंकारी नामु धिआवणिआ॥ तिसु रूपु न रेखिआ घटि घटि देखिआ गुरमुखि अलखु लखावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू दइआलु किरपालु प्रभु सोई ॥ तुधु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ गुरु परसादु करे नामु देवै नामे नामि समावणिआ ॥ २ ॥ तूं आपे सचा सिरजणहारा ॥ भगती भरे तेरे भंडारा ॥ गुरमुखि नामु मिलै मनु भीजै सहजि समाधि लगावणिआ ॥ ३ ॥ अनदिनु गुण गावा प्रभ तेरे ॥ तुधु सालाही प्रीतम मेरे ॥ तुधु बिनु अवरु न कोई जाचा गुर परसादी तूं पावणिआ ॥ ४ ॥ अगमु अगोचरु मिति नही पाई ॥ अपणी क्रिपा करहि तूं लैहि मिलाई ॥ पूरे गुर कै सबदि धिआईऐ सबदु सेवि सुखु पावणिआ ॥ ५ ॥ रसना गुणवंती गुण गावै ॥ नामु सलाहे सचे भावै ॥ गुरमुखि सदा रहै रंगि राती मिलि सचे सोभा पावणिआ ॥ ६ ॥ मनमुखु करम करे अहंकारी ॥ जूऐ जनमु सभ बाजी हारी ॥ अंतरि लोभु महा गुबारा फिरि फिरि आवण जावणिआ ॥ ७ ॥ आपे करता दे वडिआई ॥ जिन कउ आपि लिखतु धुरि पाई ॥ नानक नामु मिलै भउ भंजनु गुर सबदी सुखु पावणिआ ॥ ८ ॥ १ ॥ ३४ ॥

हे ईश्वर! तुम ही आदिपुरुष, अपरम्पार एवं सर्वज्ञ हो। वह स्वयं ही सृष्टि की रचना करता है और स्वयं ही प्रलय करके सृष्टि का विनाश भी करता है। सबके भीतर एक ईश्वर ही व्यापक है। इस प्रकार अनुभव करके गुरमुख प्रभु के दरबार में बड़ी शोभा पाते हैं॥ १॥ मैं तन–मन से उन पर बलिहारी हूँ, जो निरंकार परमात्मा के नाम का ध्यान करते हैं। उस प्रभु का न ही कोई रूप है अथवा न ही कोई रेखा है, उसे गुरमुखों ने घट–घट में देखा है। गुरमुख दूसरों को भी प्रभु के स्वरूप के दर्शन करवाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ हे ईश्वर! तुम बड़े दयालु एवं कृपालु हो और तेरे अलावा अन्य कोई भी नहीं। जिस पर गुरु कृपा करता है, उसे ही वह अपना नाम देता है। वह व्यक्ति नाम द्वारा तेरे नाम में ही समा जाता है॥ २॥ हे नाथ! तुम स्वयं ही सच्चे सृजनहार हो। तेरे भण्डार प्रभु–भक्ति से परिपूर्ण हैं। जिसे गुरु के माध्यम से तेरा नाम मिल जाता है, उसका मन प्रसन्न हो जाता है और वह सहज ही समाधि लगाता है॥ ३॥ हे प्रभु! रात–दिन मैं तेरा ही यशोगान करता हूँ। हे मेरे प्रियतम प्रभु! मैं तेरी ही सराहना करता हूँ। हे ईश्वर! तेरे अलावा मैं किसी अन्य से नहीं माँगता। गुरु की दया से ही तुम प्राप्त होते हो॥ ४॥ हे अगम्य, अगोचर प्रभु! तेरी सीमा का पार नहीं पाया जा सकता। हे सृष्टिकर्त्ता! अपनी कृपा से तुम प्राणी को अपने साथ मिला लेते हो। तेरा ध्यान पूर्ण गुरु के शब्द द्वारा ही करना चाहिए। परमेश्वर की सेवा से बड़ा सुख प्राप्त होता है॥ ५॥ वही रसना गुणवान है जो प्रभु का गुणगान करती है। नाम की उपमा करने से प्राणी सत्य स्वरूप ईश्वर को अच्छा लगने लग जाता है। पवित्रात्मा अपने प्रियतम–प्रभु के प्रेम में मग्न रहती है और सत्य से मिलकर बड़ी शोभा प्राप्त करती है॥ ६॥ मनमुख अपना कर्म–धर्म अहंकारवश ही करता है। वह अपना समूचा जीवन जुए के खेल में पराजित कर देता है। उसके हृदय में लालच एवं अज्ञानता का घोर अंधकार है, इसलिए वह पुनःपुनः जन्म लेता और मरता है अर्थात् आवागमन के चक्र में फँसा रहता है॥ ७॥ हे सृष्टिकर्त्ता! तुम उन्हें स्वयं ही महानता प्रदान करते हो, जिनकी किस्मत में उसने स्वयं ही आदि से ऐसा लेख लिखा हुआ है। हे नानक! जिसे गुरु के शब्द द्वारा भयनाशक परमात्मा का नाम मिल जाता है, वह बहुत सुख प्राप्त करता है॥ ८॥ १॥ ३४॥

माझ महला ५ घरु १ ॥ अंतरि अलखु न जाई लखिआ ॥ नामु रतनु लै गुझा रखिआ ॥ अगमु अगोचरु सभ ते ऊचा गुर कै सबदि लखावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी कलि महि नामु सुणावणिआ ॥ संत पिआरे सचै धारे वडभागी दरसनु पावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधिक सिध जिसै कउ फिरदे ॥ ब्रहमे इंद्र धिआइनि हिरदे ॥ कोटि तेतीसा खोजहि ता कउ गुर मिलि हिरदै गावणिआ ॥ २ ॥ आठ पहर तुधु जापे पवना ॥ धरती सेवक पाइक चरना ॥ खाणी बाणी सरब निवासी सभना कै मनि भावणिआ ॥ ३ ॥ साचा साहिबु गुरमुखि जापै ॥ पूरे गुर कै सबदि सिञापै ॥ जिन पीआ सेई त्रिपतासे सचे सचि अघावणिआ ॥ ४ ॥ तिसु घरि सहजा सोई सुहेला ॥ अनद बिनोद करे सद केला ॥ सो धनवंता सो वड साहा जो गुर चरणी मनु लावणिआ ॥ ५ ॥ पहिलो दे तैं रिजकु समाहा ॥ पिछो दे तैं जंतु उपाहा ॥ तुधु जेवडु दाता अवरु न सुआमी लवै न कोई लावणिआ ॥ ६ ॥ जिसु तूं तुठा सो तुधु धिआए ॥ साध जना का मंत्रु कमाए ॥ आपि तरै सगले कुल तारे तिसु दरगह ठाक न पावणिआ ॥ ७ ॥ तूं वडा तूं ऊचो ऊचा ॥ तूं बेअंतु अति मूचो मूचा ॥ हउ कुरबाणी तेरै वंञा नानक दास दसावणिआ ॥ ८ ॥ १ ॥ ३५ ॥

अलक्ष्य परमात्मा जीव के हृदय में ही विद्यमान है लेकिन उसे देखा नहीं जा सकता। उसने नाम–रत्न को आत्म–स्वरूप में गुप्त रखा हुआ है। अगम्य, अगोचर परमात्मा सर्वश्रेष्ठ है, जिसे गुरु के शब्द द्वारा ही जाना जा सकता है॥ १॥ मैं तन–मन से उन पर कुर्बान हूँ, जो इस कलियुग में जीवों को भगवान का नाम सुनाते हैं। हे सच्चे परमेश्वर! तुझे संत अति प्रिय हैं, जिन्हें तूने सहारा दिया हुआ है। बड़े सौभाग्य से उनके दर्शन प्राप्त होते हैं॥ १॥ रहाउ॥ जिस प्रभु को पाने के लिए साधक, सिद्ध ढूँढते फिरते हैं, ब्रह्मा, इन्द्र भी अपने हृदय में उसी का ध्यान करते हैं और जिसे तेतीस करोड़ देवी–देवता तलाशते हैं, गुरु से भेंट करके उस प्रभु का संतजन अपने मन में यशोगान करते रहते हैं॥२॥ हे प्रभु! वायु देवता आठ प्रहर तेरा ही सिमरन करता रहता है और धरती माता तेरे चरणों की सेवा करती है। हे ईश्वर! समस्त दिशाओं एवं समस्त वाणियों में तेरा निवास है। सर्वव्यापक परमात्मा सबके मन को अच्छा लगता है॥ ३॥ हे सत्यस्वरूप परमात्मा! गुरमुख तेरा ही जाप करते हैं। लेकिन पूर्ण गुरु की वाणी द्वारा ही बोध होता है। जो परमात्मा के नाम अमृत का पान करते हैं, वे तृप्त हो जाते हैं। वे सत्य प्रभु के सत्य–नाम से कृतार्थ हो गए हैं॥ ४॥ जिस व्यक्ति के हृदय–घर में सहज अवस्था विद्यमान है वही सुखी रहता है। वह मोद–प्रमोद से सदैव आनन्द करता है। वही धनवान है और वही परम सम्राट है, जो गुरु चरणों में अपना हृदय लगाता है॥ ५॥ हे अकाल पुरुष! सर्वप्रथम तूने प्राणियों के लिए भोजन पहुँचाया है। तदुपरांत तुमने प्राणियों को उत्पन्न किया है। हे मेरे स्वामी! तेरे जैसा महान दाता अन्य कोई भी नहीं। हे प्रभु! कोई भी तेरी बराबरी नहीं कर सकता॥ ६॥ हे ईश्वर! जिस पर तुम परम–प्रसन्न हुए हो, वही तेरी आराधना करता है। ऐसा व्यक्ति ही संत–जनों के मंत्र का अनुसरण करता है। वह स्वयं इस संसार सागर से पार हो जाता है और अपने समूचे वंश को भी पार करवा देता है। प्रभु के दरबार में पहुँचने में उसे कोई रोक–टोक नहीं होती॥७॥ हे प्रभु! तुम महान हो, तुम सर्वोच्च एवं सर्वोपरि हो। हे दाता! तुम अनन्त हो और सर्वश्रेष्ठ हो। हे प्रभु! मैं तुझ पर बलिहारी जाता हूँ। हे नानक! मैं प्रभु के दासों का दास हूँ॥ ८॥ १॥ ३५॥

माझ महला ५ ॥ कउणु सु मुकता कउणु सु जुगता ॥ कउणु सु गिआनी कउणु सु बकता ॥ कउणु सु गिरही कउणु उदासी कउणु सु कीमति पाए जीउ ॥ १ ॥ किनि बिधि बाधा किनि बिधि छूटा ॥ किनि बिधि आवणु जावणु तूटा ॥ कउण करम कउण निहकरमा कउणु सु कहै कहाए जीउ

॥ २ ॥ कउणु सु सुखीआ कउणु सु दुखीआ ॥ कउणु सु सनमुखु कउणु वेमुखीआ ॥ किनि बिधि मिलीऐ किनि बिधि बिछुरै इह बिधि कउणु प्रगटाए जीउ ॥ ३ ॥ कउणु सु अखरु जितु धावतु रहता ॥ कउणु उपदेसु जितु दुखु सुखु सम सहता ॥ कउणु सु चाल जितु पारब्रहमु धिआए किनि बिधि कीरतनु गाए जीउ ॥ ४ ॥ गुरमुखि मुकता गुरमुखि जुगता ॥ गुरमुखि गिआनी गुरमुखि बकता ॥ धंनु गिरही उदासी गुरमुखि गुरमुखि कीमति पाए जीउ ॥ ५ ॥ हउमै बाधा गुरमुखि छूटा ॥ गुरमुखि आवणु जावणु तूटा ॥ गुरमुखि करम गुरमुखि निहकरमा गुरमुखि करे सु सुभाए जीउ ॥ ६ ॥ गुरमुखि सुखीआ मनमुखि दुखीआ ॥ गुरमुखि सनमुखु मनमुखि वेमुखीआ ॥ गुरमुखि मिलीऐ मनमुखि विछुरै गुरमुखि बिधि प्रगटाए जीउ ॥ ७ ॥ गुरमुखि अखरु जितु धावतु रहता ॥ गुरमुखि उपदेसु दुखु सुखु सम सहता ॥ गुरमुखि चाल जितु पारब्रहमु धिआए गुरमुखि कीरतनु गाए जीउ ॥ ८ ॥ सगली बणत बणाई आपे ॥ आपे करे कराए थापे ॥ इकसु ते होइओ अनंता नानक एकसु माहि समाए जीउ ॥ ९ ॥ २ ॥ ३६ ॥

{यहाँ पर गुरुदेव ने चौबीस प्रश्न प्रस्तुत किए हैं और बाद में प्रश्नों के उत्तर दिए हैं।}

वह कौन है जो माया के बंधनों से मुक्त हो गया है? और कौन परमात्मा से नाम द्वारा जुड़ा हुआ है? कौन ज्ञानी है? और कौन वक्ता है? कौन गृहस्थी है? और कौन त्यागी है? और परमेश्वर का मूल्य कौन पा सकता है?॥ १॥ मनुष्य कैसे माया के बंधनों में बंध जाता है? और कैसे मुक्त हो जाता है? किस विधि द्वारा जीव आवागमन (जन्म-मरण) से बच सकता है? धर्म-कर्म करने वाला कौन है? और वासना रहित होकर कर्म करने वाला कौन है? कौन ईश्वर के नाम की महिमा करता और अन्यों से महिमा करवाता है॥ २॥ जगत् में कौन सुखी है और कौन दुखी है? कौन समक्ष है और कौन विमुख? किस विधि से परमात्मा मिलता है और किस विधि से मनुष्य उससे बिछुड़ जाता है? यह विधि मुझे कौन बतलाएगा?॥ ३॥ वह कौन-सा दिव्य अक्षर है, जिसके अध्ययन से मन का भटकना मिट जाता है? वह कौन-सा उपदेश है? जिसके द्वारा प्राणी सुख-दुख को एक समान जानकर सहन करता है। वह कौन-सी युक्ति है? जिसके द्वारा प्राणी पारब्रह्म-परमेश्वर की आराधना करे? किस विधि द्वारा प्रभु का भजन कर सकता है?॥ ४॥ गुरु जी उत्तर देते हैं कि गुरमुख मुक्त है और गुरमुख ईश्वर से जुड़ा रहता है। गुरमुख ज्ञानी है और गुरमुख वक्ता है। धन्य है वह गुरमुख चाहे वह गृहस्थी हो अथवा त्यागी। गुरमुख ही प्रभु का मूल्यांकन जानता है॥ ५॥ जीव अहंकारवश माया के बंधनों में बंध जाता है परन्तु गुरमुख माया के बधनों से मुक्त हो जाता है। गुरमुख का आवागमन जीवन-मृत्यु का चक्र समाप्त हो जाता है। गुरमुख सुकर्म (धर्म-कर्म) करता है, परन्तु फल की इच्छा नहीं रखता। गुरमुख प्रभु-प्रेम में जो भी कर्म करता है, वह शोभनीय है॥ ६॥ इस दुनिया में गुरमुख सदैव सुखी रहता है परन्तु मनमुख सदैव दुखी रहता है। गुरमुख हमेशा ही भगवान के समक्ष रहता है किन्तु मनमुख भगवान से विमुख हो जाता है। गुरमुख ही भगवान से मिलता है। परन्तु मनमुख भगवान से बिछुड़ जाता है। गुरु ही भगवान से मिलन की विधि प्रगट करता है॥ ७॥ गुरु का उपदेश दिव्य अक्षर है, जिससे भटका हुआ मन वश में आ जाता है। गुरु के उपदेश द्वारा मनुष्य दुःख एवं सुख को एक समान समझता है। गुरु का उपदेश ही सद्मार्ग है, जिस द्वारा पारब्रह्म प्रभु का चिन्तन किया जाता है। गुरमुख ही परमेश्वर का कीर्तन गायन करते हैं॥ ८॥ जगत-रचना की सारी संरचना प्रभु ने आप ही की है। परमात्मा प्राणियों का कर्त्ता है, स्वयं ही कर्म करवाता है और स्वयं ही जीवों को पैदा करता है। वह सृष्टि रचना के समय अनन्त रूप हो जाता है। हे नानक! जगत् के प्रलयकाल में समस्त प्राणी एक ईश्वर में ही समा जाते हैं॥ ९॥ २॥ ३६॥

माझ महला ५ ॥ प्रभु अबिनासी ता किआ काड़ा ॥ हरि भगवंता ता जनु खरा सुखाला ॥ जीअ प्रान मान सुखदाता तूं करहि सोई सुखु पावणिआ ॥ १ ॥ हउ वारी जीउ वारी गुरमुखि मनि तनि भावणिआ ॥ तूं मेरा परबतु तूं मेरा ओला तुम संगि लवै न लावणिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरा कीता जिसु लागै मीठा ॥ घटि घटि पारब्रहमु तिनि जनि डीठा ॥ थानि थनंतरि तूंहै तूंहै इको इकु वरतावणिआ ॥ २ ॥ सगल मनोरथ तूं देवणहारा ॥ भगती भाइ भरे भंडारा ॥ दइआ धारि राखे तुधु सेई पूरै करमि समावणिआ ॥ ३ ॥ अंध कूप ते कंढै चाड़े ॥ करि किरपा दास नदरि निहाले ॥ गुण गावहि पूरन अबिनासी कहि सुणि तोटि न आवणिआ ॥ ४ ॥ ऐथै ओथै तूंहै रखवाला ॥ मात गरभ महि तुम ही पाला ॥ माइआ अगनि न पोहै तिन कउ रंगि रते गुण गावणिआ ॥ ५ ॥ किआ गुण तेरे आखि समाली ॥ मन तन अंतरि तुधु नदरि निहाली ॥ तूं मेरा मीतु साजनु मेरा सुआमी तुधु बिनु अवरु न जानणिआ ॥ ६ ॥ जिस कउ तूं प्रभ भइआ सहाई ॥ तिसु तती वाउ न लगै काई ॥ तू साहिबु सरणि सुखदाता सतसंगति जपि प्रगटावणिआ ॥ ७ ॥ तूं ऊच अथाहु अपारु अमोला ॥ तूं साचा साहिबु दासु तेरा गोला ॥ तूं मीरा साची ठकुराई नानक बलि बलि जावणिआ ॥ ८ ॥ ३ ॥ ३७ ॥

हे अविनाशी प्रभु ! जब तू मेरा रखवाला है तो मुझे क्या चिंता है ? हे हरि–परमेश्वर ! जब तू मेरा रक्षक है तो मैं तेरा उपासक बहुत सुखी रहता हूँ। तू ही मेरी आत्मा, प्राण एवं मान–प्रतिष्ठा है और तू ही सुखदाता है। तुम जो कुछ भी करते हो, उससे ही मैं सुख प्राप्त करता हूँ॥ १॥ मैं उन गुरमुखों पर तन–मन से बलिहारी हूँ जिनके मन एवं तन को तुम अच्छे लगते हो। तू ही मेरा पर्वत है और तू ही मेरा आधार है। हे प्रभु ! तेरे साथ कोई भी समानता नहीं कर सकता॥ १॥ रहाउ॥ जिस व्यक्ति को तेरा किया (इच्छा) मीठा लगता है, उसे पारब्रह्म–प्रभु प्रत्येक जीव के हृदय में विद्यमान दिखाई देता है। एक तू ही समस्त स्थानों में रहता है। एक तू ही सर्वत्र अपना हुक्म चला रहा है॥ २॥ हे प्रभु ! तुम समस्त मनोरथ पूर्ण करने वाले हो। तेरे भण्डार प्रेम एवं भक्ति से भरे हुए हैं। हे नाथ ! जिन पर तुम दया करके रक्षा करते हो, वह तेरी पूर्ण कृपा से तुझ में ही समा जाते हैं॥ ३॥ हे ईश्वर ! तूने अपनी कृपा–दृष्टि करके अपने भक्तों को कृतार्थ कर दिया है और उन्हें संसार रूपी अंधकूप में से निकाल कर पार कर दिया है। हे पूर्ण अविनाशी प्रभु ! सेवक तेरे गुणों का गुणगान करते हैं। कहने एवं श्रवण करने से भी प्रभु के गुणों में कभी कमी नहीं आती॥ ४॥ हे प्रभु ! इहलोक तथा परलोक में तुम ही रक्षक हो। तुम ही माता के गर्भ में आए शिशु का पालन–पोषण करते हो। जो प्रभु के प्रेम में मग्न हुए उसकी कीर्ति का गायन करते हैं, उन्हें माया की अग्नि प्रभावित नहीं कर सकती॥ ५॥ हे परमात्मा ! मैं तेरे कौन–कौन से गुणों को कहकर स्मरण करूँ? मैं अपने मन एवं तन में तुझे ही मौजूद देखता हूँ। हे प्रभु ! तुम ही मेरे मित्र, मेरे साजन एवं मेरे स्वामी हो। तेरे अलावा मैं अन्य किसी को भी नहीं जानता॥ ६॥ हे प्रभु ! जिस पुरुष के तुम सहायक सिद्ध हुए हो, उसे कोई गर्म हवा भी नहीं लगती अर्थात् किसी प्रकार की कोई पीड़ा नहीं आती। हे परमात्मा ! तू सबका मालिक है, तू ही आश्रयदाता एवं सुखदाता है। सत्संग में तेरे नाम की आराधना करने से तुम प्रकट हो जाते हो॥ ७॥ हे प्रभु ! तुम सर्वोच्च, अथाह, अनन्त एवं अनमोल हो। तू ही मेरा सच्चा साहिब है और मैं तेरा सेवक एवं दास हूँ। तुम सम्राट हो और तेरा साम्राज्य सत्य है। हे नानक ! मैं प्रभु पर तन–मन से न्यौछावर हूँ॥ ८॥ ३॥ ३७॥

माझ महला ५ घरु २ ॥ नित नित दयु समालीऐ ॥ मूलि न मनहु विसारीऐ ॥ रहाउ ॥ संता संगति पाईऐ ॥ जितु जम कै पंथि न जाईऐ ॥ तोसा हरि का नामु लै तेरे कुलहि न लागै गालि जीउ ॥ १ ॥ जो सिमरंदे सांईऐ ॥ नरकि न सेई पाईऐ ॥ तती वाउ न लगई जिन मनि वुठा आइ जीउ ॥ २ ॥ सेई सुंदर सोहणे ॥ साधसंगि जिन बैहणे ॥ हरि धनु जिनी संजिआ सेई गंभीर अपार जीउ ॥ ३ ॥ हरि अमिउ रसाइणु पीवीऐ ॥ मुहि डिठै जन कै जीवीऐ ॥ कारज सभि सवारि लै नित पूजहु गुर के पाव जीउ ॥ ४ ॥ जो हरि कीता आपणा ॥ तिनहि गुसाई जापणा ॥ सो सूरा परधानु सो मसतकि जिस दै भागु जीउ ॥ ५ ॥ मन मंधे प्रभु अवगाहीआ ॥ एहि रस भोगण पातिसाहीआ ॥ मंदा मूलि न उपजिओ तरे सची कारै लागि जीउ ॥ ६ ॥ करता मंनि वसाइआ ॥ जनमै का फलु पाइआ ॥ मनि भावंदा कंतु हरि तेरा थिरु होआ सोहागु जीउ ॥ ७ ॥ अटल पदारथु पाइआ ॥ भै भंजन की सरणाइआ ॥ लाइ अंचलि नानक तारिअनु जिता जनमु अपार जीउ ॥ ८ ॥ ४ ॥ ३८ ॥

हे प्राणी ! हमें सदैव ही दयालु भगवान का सिमरन करना चाहिए और उस प्रभु को कभी भी अपने हृदय से विस्मृत नहीं करना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥ यदि सन्तों की संगति की जाए तो जीव को यम–मार्ग में नहीं जाना पड़ेगा। हरि के नाम का यात्रा–खर्च प्राप्त करो। उसे प्राप्त करने से तेरी वंश को कोई कलंक नहीं लगेगा॥ १॥ जो व्यक्ति परमात्मा की आराधना करते हैं, उन्हें नरक में नहीं डाला जाता। जिनके मन में ईश्वर ने आकर निवास कर लिया है, उनको गर्म हवा भी नहीं लगती अर्थात् उन्हें कोई दुःख नहीं पहुँचता॥ २॥ वहीं व्यक्ति सुन्दर एवं शोभनीय हैं जो सत्संग में वास करते हैं। जिन्होंने ईश्वर के नाम का धन अर्जित किया है वह बड़े दूरदर्शी और अपरम्पार हैं॥ ३॥ जो प्रभु–भक्त सत्संग में मिलकर हरि–नाम रूपी अमृत रस का पान करता है, मैं उस भक्त के दर्शन करके ही जीता हूँ। हे प्राणी ! सदैव गुरु–चरणों की पूजा करके अपने समस्त कार्य संवार लो॥ ४॥ जिसे प्रभु ने अपना सेवक बना लिया है, वही भगवान का सिमरन करता है। वही शूरवीर है और वही प्रधान है जिसके मस्तक पर भाग्य रेखाएँ विद्यमान हैं॥ ५॥ जिस व्यक्ति ने भगवान का अपने मन में सिमरन किया है, उसने ही इस रस का पान किया है। हरि–रस का भोग ही प्रभुत्ता के रस मानने की भाँति है। नाम–सिमरन करने वालों के मन में कदाचित बुराई उत्पन्न नहीं होती। वे नाम–सिमरन के शुभ–कर्म में लगकर भवसागर से पार हो जाते हैं॥ ६॥ जिसने सृष्टि–कर्त्ता प्रभु को अपने हृदय में बसा लिया है उसने मानव जीवन का फल प्राप्त कर लिया है। हे जीव–स्त्री ! तुझे अपना मनपसंद हरि–प्रभु मिल गया है और अब तेरा सुहाग स्थिर हो गया है॥ ७॥ भयनाशक प्रभु की शरण में आने से तुझे हरि–नाम रूपी अटल पदार्थ मिल गया है। हे नानक ! भगवान ने अपने दामन से लगाकर तुझे भवसागर से पार कर दिया है और तूने अपनी जीवन–बाजी को जीत कर अपार प्रभु को प्राप्त कर लिया है॥ ८॥ ४॥ ३८॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ माझ महला ५ घरु ३ ॥

हरि जपि जपे मनु धीरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरि सिमरि गुरदेउ मिटि गए भै दूरे ॥ १ ॥ सरनि आवै पारब्रहम की ता फिरि काहे झूरे ॥ २ ॥ चरन सेव संत साध के सगल मनोरथ पूरे ॥ ३ ॥ घटि घटि एकु वरतदा जलि थलि महीअलि पूरे ॥ ४ ॥ पाप बिनासनु सेविआ पवित्र संतन की धूरे ॥ ५ ॥ सभ छडाई खसमि आपि हरि जपि भई ठरूरे ॥ ६ ॥ करतै कीआ तपावसो दुसट मुए होइ मूरे ॥ ७ ॥ नानक रता सचि नाइ हरि वेखै सदा हजूरे ॥ ८ ॥ ५ ॥ ३६ ॥ १ ॥ ३२ ॥ १ ॥ ५ ॥ ३६॥

भगवान का नाम जपने से मेरे मन को धैर्य हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ गुरदेव का नाम–सिमरन करने से मेरे तमाम भय मिट गए हैं॥ १॥ जो पारब्रह्म की शरण में आ जाता है, वह फिर चिन्ता क्यों करेगा ?॥ २॥ संतों व साधुजनों के चरणों की सेवा करने से मेरी समस्त अभिलाषाएँ पूर्ण हो गई हैं॥ ३॥ कण–कण में एक ईश्वर ही विद्यमान है। जल, थल एवं गगन में भी वही समाया हुआ है॥ ४॥ संतों के चरणों की धूलि द्वारा पवित्र होकर मैंने पापों के विनाशक प्रभु की सेवा की है॥ ५॥ सारी सृष्टि को मालिक प्रभु ने स्वयं ही माया–जाल में से मुक्त किया है और सारी सृष्टि भगवान का नाम जप कर शीतल हो गई है॥ ६॥ सृजनहार प्रभु ने स्वयं इन्साफ किया है और काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि सभी दुष्ट मूक होकर प्राण त्याग गए हैं॥ ७॥ हे नानक ! जो व्यक्ति सत्य–नाम में मग्न हो जाता है, वह प्रभु–परमेश्वर को सदैव अपने नेत्रों के समक्ष प्रत्यक्ष देखता है॥ ८॥ ५॥ ३६॥ १॥ ३२॥ १॥ ५॥ ३६॥

बारह माहा मांझ महला ५ घरु ४ १ओ सितिगुर प्रसादि ॥

किरति करम के वीछुड़े करि किरपा मेलहु राम ॥ चारि कुंट दह दिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम ॥ धेनु दुधै ते बाहरी कितै न आवै काम ॥ जल बिनु साख कुमलावती उपजहि नाही दाम ॥ हरि नाह न मिलीऐ साजनै कत पाईऐ बिसराम ॥ जितु घरि हरि कंतु न प्रगटई भठि नगर से ग्राम ॥ सब सीगार तंबोल रस सणु देही सभ खाम ॥ प्रभ सुआमी कंत विहूणीआ मीत सजण सभि जाम ॥ नानक की बेनंतीआ करि किरपा दीजै नामु ॥ हरि मेलहु सुआमी संगि प्रभ जिस का निहचल धाम ॥ १ ॥

हे मेरे राम ! पूर्व जन्म के कृत–कर्मों के अनुसार लिखी किस्मत के कारण हम तुझसे बिछुड़ गए हैं, अतः कृपा करके हमें अपने साथ मिला लो। हे प्रभु ! चारों ही कोनों उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम एवं दसों दिशाओं में भटकने के पश्चात थककर हम तेरी शरण में आए हैं। दूध न देने वाली गाय किसी भी कार्य नहीं आती। जल के बिना फसल मुरझा जाती है और उससे दाम बटोरने हेतु अनाज पैदा नहीं होता। यदि हम प्रभु–पति अपने मित्र से न मिलें तो हम किस तरह विश्राम पा सकते हैं ? वह घर, गांव एवं नगर जहाँ पर हरि प्रभु प्रत्यक्ष नहीं होता, अग्निकुण्ड के तुल्य है। समूह हार–शृंगार, पान एवं रस सहित शरीर के सभी अंग व्यर्थ हैं। प्रभु–परमेश्वर के बिना सभी मित्र एवं सखा यमदूत के तुल्य हैं। नानक की विनती है कि हे प्रभु ! अपनी कृपा करके मुझे अपना नाम प्रदान कीजिए। हे सतिगुरु ! मुझे मेरे स्वामी प्रभु से मिला दो, जिसका धाम (वैकुण्ठ) सदैव अटल है॥ १॥

चेति गोविंदु अराधीऐ होवै अनंदु घणा॥ संत जना मिलि पाईऐ रसना नामु भणा॥ जिनि पाइआ प्रभु आपणा आए तिसहि गणा॥ इकु खिनु तिसु बिनु जीवणा बिरथा जनमु जणा ॥ जलि थलि महीअलि पूरिआ रविआ विचि वणा ॥ सो प्रभु चिति न आवई कितड़ा दुखु गणा ॥ जिनी राविआ सो प्रभू तिंना भागु मणा ॥ हरि दरसन कंउ मनु लोचदा नानक पिआस मना॥ चेति मिलाए सो प्रभू तिस कै पाइ लगा॥ २ ॥

यदि चैत्र के महीने में गोविन्द का सिमरन किया जाए तो बड़ा आनन्द प्राप्त होता है। संतजनों से मिलकर जिह्वा से नाम का जाप करने से हरि–प्रभु पाया जाता है। जिन्होंने हरि–प्रभु को प्राप्त कर लिया है, उनका ही जगत् में जन्म लेना सफल है। प्रभु को एक क्षण भर के लिए भी स्मरण न करने से मनुष्य के तमाम जन्म को ही व्यर्थ गया समझो। परमेश्वर जल, थल, एवं गगन में सर्वत्र विद्यमान

है और वनों में भी मौजूद है। यदि ऐसा प्रभु मुझे स्मरण न हो तो कैसे बताऊं कि मुझे कितना दुःख होता है? जिन्होंने उस पारब्रह्म-प्रभु को स्मरण किया है, वे बड़े भाग्यवान हैं। हे नानक! मेरा मन हरि के दर्शन करने हेतु अभिलाषी है और मेरे मन में उसके दर्शनों की तीव्र लालसा बनी हुई है। मैं उसके चरण स्पर्श करता हूँ जो मुझे चैत्र के महीने में उस ईश्वर से मिला दे॥ २॥

वैसाखि धीरनि किउ वाढीआ जिना प्रेम बिछोहु ॥ हरि साजनु पुरखु विसारि कै लगी माइआ धोहु ॥ पुत्र कलत्र न संगि धना हरि अविनासी ओहु ॥ पलचि पलचि सगली मुई झूठै धंधै मोहु ॥ इकसु हरि के नाम बिनु अगै लईअहि खोहि ॥ दयु विसारि विगुचणा प्रभ बिनु अवरु न कोइ ॥ प्रीतम चरणी जो लगे तिन की निरमल सोइ ॥ नानक की प्रभ बेनती प्रभ मिलहु परापति होइ ॥ वैसाखु सुहावा तां लगै जा संतु भेटै हरि सोइ ॥ ३ ॥

वैसाख के महीने में वह जीव-स्त्रियाँ कैसे धैर्य करें, जिनका अपने प्रियतम से विरहा हुआ है। अपने हरि-प्रभु साजन को भुलाकर वह झूठी माया के मोह में फँस गई हैं। मरणोपरांत पुत्र, पत्नी तथा धन-दौलत प्राणी के साथ नहीं जाते अपितु अविनाशी प्रभु ही उसका रक्षक बनता है। सारी दुनिया झूठे कर्मों की लगन में मोहबद्ध उलझ-उलझकर नष्ट हो गई है। आगे परलोक में एक ईश्वर के नाम के अलावा मनुष्य के किए हुए सभी कर्म-धर्म छीन लिए जाते हैं। अर्थात् उन्हें कोई फल नहीं मिलता। दयालु परमात्मा को विस्मृत करके मनुष्य तबाह हो जाता है। हरि-प्रभु के अलावा अन्य कोई भी जीव का रक्षक नहीं बनता। जो प्रियतम के चरणों में लग जाते हैं, वे बड़े पवित्र हैं और उनकी बहुत शोभा होती है। नानक की प्रभु के समक्ष प्रार्थना है कि हे प्रभु! मुझे आकर मिलो एवं मुझे तेरे दर्शन प्राप्त होते रहें। वैसाख का महीना मुझे तभी सुन्दर लगता है यदि कोई हरि का संत मिल जाए॥ ३॥

हरि जेठि जुड़ंदा लोड़ीऐ जिसु अगै सभि निवंनि ॥ हरि सजण दावणि लगिआ किसै न देई बंनि ॥ माणक मोती नामु प्रभ उन लगै नाही संनि ॥ रंग सभे नाराइणै जेते मनि भावंनि ॥ जो हरि लोड़े सो करे सोई जीअ करंनि ॥ जो प्रभि कीते आपणे सेइ कहीअहि धंनि ॥ आपण लीआ जे मिलै विछुड़ि किउ रोवंनि ॥ साधू संगु परापते नानक रंग माणंनि ॥ हरि जेठु रंगीला तिसु धणी जिस कै भागु मथंनि ॥ ४ ॥

ज्येष्ठ के महीने में सिमरन द्वारा उस भगवान से जुड़ने की आवश्यकता है जिसके समक्ष जगत् के सभी जीव अपना सिर झुकाते हैं। जो व्यक्ति हरि-मित्र के दामन से जुड़ा हुआ है अर्थात् शरण में है, उसे यम इत्यादि कोई भी बंदी नहीं बना सकता। प्रभु का नाम ऐसे माणिक-मोतियों के तुल्य है, जिसे कोई भी सेंध लगाकर चुरा नहीं सकता। जितने भी रंग-रूप मन को प्रिय लगते हैं, वे सभी रंग नारायण के ही हैं। भगवान वही कुछ करता है, जो उसकी इच्छा होती है और जगत् के सभी जीव भी वही कुछ करते हैं। जिनको प्रभु ने अपना सेवक बनाया है, लोग उन्हें ही धन्य-धन्य कहते हैं। यदि मनुष्य को भगवान उसके अपने प्रयास से मिल सकता हो तो वह उनसे जुदा होकर क्यों विलाप करें? हे नानक! जिन्हें संतों की संगति मिल जाती है, वे प्रभु से मिलकर आनंद भोगते हैं। ज्येष्ठ का महीना उसके लिए ही हर्षोल्लास वाला है, जिसे जगत् का स्वामी भगवान मिल जाता है। लेकिन भगवान उसे ही मिलता है जिसके माथे पर किस्मत के शुभ लेख होते हैं॥ ४॥

आसाड़ु तपंदा तिसु लगै हरि नाहु न जिना पासि ॥ जगजीवन पुरखु तिआगि कै माणस संदी आस ॥ दुयै भाइ विगुचीऐ गलि पईसु जम की फास ॥ जेहा बीजै सो लुणै मथै जो लिखिआसु ॥ रैणि

विहाणी पछुताणी उठि चली गई निरास ॥ जिन कौ साधू भेटीऐ सो दरगह होइ खलासु ॥ करि किरपा प्रभ आपणी तेरे दरसन होइ पिआस ॥ प्रभ तुधु बिनु दूजा को नही नानक की अरदासि ॥ आसाड़ु सुहंदा तिसु लगै जिसु मनि हरि चरण निवास ॥ ५ ॥

आषाढ़ का महीना, उसे ही तपता हुआ लगता है जिसके पास हरि–प्रभु नहीं है। जो जीव–स्त्री जगजीवन प्रभु को त्याग कर मनुष्य पर उम्मीद और विश्वास रखती है, वह मोह–माया में फँसकर नष्ट हो जाती है और मरणोपरांत उसके गले में यम की फाँसी डाली जाती है। मनुष्य जैसा कर्म करेगा, वैसा ही फल प्राप्त होगा अर्थात् प्राणी जिस तरह बोएगा वैसे ही काटेगा, जो कुछ मस्तक में भाग्य विद्यमान है। जब जीव–स्त्री की जीवन–रात्रि व्यतीत हो जाती है तो वह पश्चाताप करती है और निराश होकर संसार त्याग देती है। जो संतों से मिलते हैं, वह प्रभु के दरबार में बन्धनमुक्त हुए शोभायमान होते हैं। हे प्रभु ! मुझ पर कृपा कीजिए जिससे तेरे दर्शनों की अभिलाषा हो। नानक की यही प्रार्थना है कि हे प्रभु ! तेरे अलावा मेरा अन्य कोई भी नहीं। आषाढ़ का महीना उसे ही सुहावना लगता है, जिसके हृदय में ईश्वर के चरणों का निवास हो जाता है॥ ५॥

सावणि सरसी कामणी चरन कमल सिउ पिआरु ॥ मनु तनु रता सच रंगि इको नामु अधारु ॥ बिखिआ रंग कूड़ाविआ दिसनि सभे छारु ॥ हरि अंम्रित बूंद सुहावणी मिलि साधू पीवणहारु ॥ वणु तिणु प्रभ संगि मउलिआ संम्रथ पुरख अपारु ॥ हरि मिलणै नो मनु लोचदा करमि मिलावणहारु ॥ जिनी सखीए प्रभु पाइआ हंउ तिन कै सद बलिहार ॥ नानक हरि जी मइआ करि सबदि सवारणहारु ॥ सावणु तिना सुहागणी जिन राम नामु उरि हारु ॥ ६ ॥

श्रावण के महीने में वहीं जीव–स्त्री वनस्पति की तरह प्रफुल्लित हो जाती है, जिसका प्रभु के चरण कंवलों से प्रेम है। उसका तन–मन सद्पुरुष के प्रेम से मग्न हो जाता है और सत्य–परमेश्वर का नाम ही उसका एकमात्र सहारा बन जाता है। विष–रूपी माया का मोह झूठा है। सब कुछ जो दृष्टिमान होता है, वह क्षणभंगुर है। हरि–नाम रूपी अमृत की बूँद बहुत सुन्दर है। संतों–गुरुओं से मिलकर मनुष्य उनका पान करता है। प्रभु के मिलन से सारी वनस्पति वन एवं तृण प्रफुल्लित हो गए हैं। प्रभु बेअंत एवं सब कुछ करने में समर्थ है। ईश्वर के मिलन हेतु मेरा हृदय बहुत व्याकुल है। परन्तु प्रभु अपनी कृपा से ही जीव को अपने साथ मिलाता है। जो सखियाँ ईश्वर को प्राप्त हुई हैं, उन पर मैं सदैव कुर्बान हूँ। नानक जी का कथन है कि हे प्रभु ! मुझ पर दया करो। प्रभु अपने नाम द्वारा जीव को संवारने वाला है। श्रावण का महीना उन सुहागिनों के लिए ही सुन्दर है, जिन्होंने राम नाम को अपने हृदय का हार बना लिया है॥ ६॥

भादुइ भरमि भुलाणीआ दूजै लगा हेतु ॥ लख सीगार बणाइआ कारजि नाही केतु॥ जितु दिनि देह विनससी तितु वेलै कहसनि प्रेतु ॥ पकड़ि चलाइनि दूत जम किसै न देनी भेतु॥ छडि खड़ोते खिनै माहि जिन सिउ लगा हेतु॥ हथ मरोड़ै तनु कपे सिआहहु होआ सेतु॥ जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु ॥ नानक प्रभ सरणागती चरण बोहिथ प्रभ देतु॥ से भादुइ नरकि न पाईअहि गुरु रखण वाला हेतु॥ ७॥

भाद्रों के महीने में जो जीवात्मा पति–प्रभु को छोड़कर द्वैतभाव से प्रीति लगाती है, वह भ्रम में भटकी हुई है। चाहे वह लाखों ही हार–शृंगार कर ले परन्तु वह किसी भी लाभ के नहीं। जिस दिन शरीर नाश होता है, उस समय लोग उसे प्रेत कहते हैं। यमदूत आत्मा को पकड़ कर चल देते हैं और

किसी को भी भेद नहीं बताते। जिनके साथ मनुष्य का बड़ा स्नेह होता है, एक क्षण में उस को त्याग कर दूर चले जाते हैं। जब मनुष्य की मृत्यु आती है तो वह अपने हाथ मरोड़ता है। यमदूतों को देख कर उसका शरीर कांपता है और प्राण निकलने के पश्चात् उसका शरीर काले से सफेद हो जाता है। मनुष्य जैसा बोता है वैसा ही काटता है अर्थात् जैसे कर्म करता है वैसा ही फल पाता है। हे नानक! जो व्यक्ति प्रभु की शरण में आता है, प्रभु उसे भवसागर से पार होने के लिए चरण रूपी जहाज दे देता है अर्थात् अपने चरणों की सेवा प्रदान करता है। भाद्रों के महीने में जो व्यक्ति रक्षक गुरु से स्नेह करते हैं, वे नरककुण्ड में नहीं पड़ते॥ ७॥

असुनि प्रेम उमाहड़ा किउ मिलीऐ हरि जाइ ॥ मनि तनि पिआस दरसन घणी कोई आणि मिलावै माइ ॥ संत सहाई प्रेम के हउ तिन कै लागा पाइ ॥ विणु प्रभ किउ सुखु पाईऐ दूजी नाही जाइ ॥ जिंन्ही चाखिआ प्रेम रसु से त्रिपति रहे आघाइ ॥ आपु तिआगि बिनती करहि लेहु प्रभू लड़ि लाइ ॥ जो हरि कंति मिलाईआ सि विछुड़ि कतहि न जाइ ॥ प्रभ विणु दूजा को नही नानक हरि सरणाइ ॥ असू सुखी वसंदीआ जिना मइआ हरि राइ ॥ ८ ॥

आश्विन के महीने में मेरे मन में प्रभु से प्रेम करने के लिए उत्साह उत्पन्न हुआ है। मैं कैसे जाकर ईश्वर से मिलूं? मेरे मन एवं तन में ईश्वर के दर्शनों की अधिकतर तृष्णा है। हे मेरी जननी! कोई संत आकर मुझे उससे मिला दे। मैं संतों के चरणों में लगा हूँ क्योंकि संत प्रभु से प्रेम करने वालों की सहायता करते हैं। परमेश्वर के बिना सुख की उपलब्धि हेतु अन्य कोई स्थान नहीं है। जिन्होंने प्रभु प्रेम का अमृतपान किया है, वह तृप्त एवं संतुष्ट रहते हैं। अपना अहंकार त्याग कर वह प्रार्थना करते हैं, "हे ईश्वर! हमें अपने दामन के साथ लगा लो।" जिन जीव-स्त्रियों को प्रभु पति ने अपने साथ मिला लिया है, वह कदापि जुदा होकर अन्य कहीं भी नहीं जाती। हे नानक! भगवान की शरण लो, क्योंकि उस प्रभु के अलावा अन्य कोई भी शरण देने में समर्थ नहीं है। आश्विन के महीने में जिन पर परमेश्वर की दया होती है, वह बहुत सुखपूर्वक रहती हैं॥ ८॥

कतिकि करम कमावणे दोसु न काहू जोगु ॥ परमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग ॥ वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग ॥ खिन महि कउड़े होइ गए जितड़े माइआ भोग ॥ विचु न कोई करि सकै किस थै रोवहि रोज ॥ कीता किछू न होवई लिखिआ धुरि संजोग ॥ वडभागी मेरा प्रभु मिलै तां उतरहि सभि बिओग ॥ नानक कउ प्रभ राखि लेहि मेरे साहिब बंदी मोच ॥ कतिक होवै साधसंगु बिनसहि सभे सोच ॥ ९ ॥

कार्तिक माह में हे प्राणी! पूर्व जन्मों में किए शुभ-अशुभ कर्मों के फल भोगने ही पड़ते हैं। अत: किसी अन्य पर दोष लगाना न्यायसंगत नहीं। पारब्रह्म-प्रभु को विस्मृत करके मनुष्य को समस्त रोग लग जाते हैं। जो व्यक्ति राम से विमुख हो जाते हैं, वे जन्म-जन्म के लिए जुदा हो जाते हैं। जितने भी भोगने वाले पदार्थ हैं, वह एक क्षण में ही उसके लिए कड़वे हो जाते हैं। फिर अपने रोज के दुःख किसके समक्ष रोएँ? जुदाई को दूर करने के लिए कोई भी मध्यस्थ नहीं बनता। मनुष्य के करने से कुछ भी नहीं हो सकता, यदि प्रारम्भ से ही मनुष्य की किस्मत में ऐसा संयोग लिखा हुआ था। सौभाग्य से मेरा प्रभु मिल जाता है तो जुदाई के समूह दुख दूर हो जाते हैं। नानक का कथन है कि हे मेरे प्रभु! तू जीवों को माया के बंधनों से मुक्त करने वाला है इसलिए नानक को भी बंधनों से मुक्त कर दो। यदि कार्तिक के महीने में संतों की संगति हो जाए तो समस्त चिंताएँ मिट जाती हैं॥ ९॥

मंघिरि माहि सोहंदीआ हरि पिर संगि बैठड़ीआह ॥ तिन की सोभा किआ गणी जि साहिबि मेलड़ीआह ॥ तनु मनु मउलिआ राम सिउ संगि साध सहेलड़ीआह ॥ साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह ॥ तिन दुखु न कबहू उतरै से जम कै वसि पड़ीआह ॥ जिनी राविआ प्रभु आपणा से दिसनि नित खड़ीआह ॥ रतन जवेहर लाल हरि कंठि तिना जड़ीआह ॥ नानक बांछै धूड़ि तिन प्रभ सरणी दरि पड़ीआह ॥ मंघिरि प्रभु आराधणा बहुड़ि न जनमड़ीआह ॥ १० ॥

मार्गशीर्ष महीने में जीव–स्त्रियाँ भगवान के साथ बैठी भजन करती हुई बहुत सुन्दर लगती हैं। उनकी शोभा वर्णन नहीं की जा सकती, जिनको ईश्वर ने अपने साथ मिला लिया है। अपनी सत्संगी सहेलियों के साथ सत्संग में मिलकर राम का सिमरन करने से मेरा मन एवं तन प्रफुल्लित हो गया है। जो जीव–स्त्रियाँ संतजनों की संगति से वंचित रहती हैं, वे पति–प्रभु से जुदा होने के कारण अकेली रहती हैं। उनका पति–प्रभु से जुदाई का दुःख कभी दूर नहीं होता और वह यमदूत के पंजे में फँस जाती हैं। जिन्होंने अपने ईश्वर के साथ रमण किया है, वह उसकी सेवा में सदैव खड़ी दिखती हैं। उनका कण्ठ प्रभु–नाम रुपी रत्न–जवाहर, माणिकों तथा हीरों से जड़ित हुआ है। हे नानक! वह उनके चरणों की धूलि का अभिलाषी है, जो ईश्वर के दरबार पर उसकी शरण में पड़े हैं। जो लोग मार्गशीर्ष महीने में ईश्वर की आराधना करते हैं, वह मुड़ कर जीवन–मृत्यु के बंधन में नहीं पड़ते और मुक्त हो जाते हैं॥ १०॥

पोखि तुखारु न विआपई कंठि मिलिआ हरि नाहु ॥ मनु बेधिआ चरनारबिंद दरसनि लगड़ा साहु ॥ ओट गोविंद गोपाल राइ सेवा सुआमी लाहु ॥ बिखिआ पोहि न सकई मिलि साधू गुण गाहु ॥ जह ते उपजी तह मिली सची प्रीति समाहु ॥ करु गहि लीनी पारब्रहमि बहुड़ि न विछुड़ीआहु ॥ बारि जाउ लख बेरीआ हरि सजणु अगम अगाहु ॥ सरम पई नाराइणै नानक दरि पईआहु ॥ पोखु सोहंदा सरब सुख जिसु बखसे वेपरवाहु ॥ ११ ॥

पोष के महीने में हरि–प्रभु जिस जीव–स्त्री को उसके गले से लगकर मिलता है, उसे शीत नहीं लगती। प्रभु के चरण–कमलों का प्रेम उसके मन को बांधकर रखता है और उसकी सुरति मालिक–प्रभु के दर्शनों में लगी रहती है। वह गोविन्द गोपाल का सहारा लेती है और अपने स्वामी की सेवा करके नाम रूपी लाभ प्राप्त करती है। विष रूपी माया उसे प्रभावित नहीं कर सकती और वह संतों से मिलकर भगवान की महिमा गायन करती रहती है। वह जिस प्रभु से उत्पन्न हुई है, उसे मिलकर उसके प्रेम में लीन रहती है। पारब्रह्म प्रभु ने उसका हाथ पकड़ लिया है, वह पुनः जुदा नहीं होती। मैं लाख बार अपने अगम्य एवं अगोचर साजन हरि पर कुर्बान जाता हूँ। हे नानक! जो जीव–स्त्रियाँ नारायण के द्वार पर नतमस्तक हो गई हैं, वह उनकी लाज–प्रतिष्ठा रखता है। पोष महीना उसके लिए सुन्दर एवं सर्वसुख प्रदान करने वाला है, जिसको बेपरवाह परमेश्वर क्षमा कर देता है॥ ११॥

माघि मजनु संगि साधूआ धूड़ी करि इसनानु ॥ हरि का नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु ॥ जनम करम मलु उतरै मन ते जाइ गुमानु ॥ कामि करोधि न मोहीऐ बिनसै लोभु सुआनु ॥ सचै मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु ॥ अठसठि तीरथ सगल पुंन जीअ दइआ परवानु ॥ जिस नो देवै दइआ करि सोई पुरखु सुजानु ॥ जिना मिलिआ प्रभु आपणा नानक तिन कुरबानु ॥ माघि सुचे से कांढीअहि जिन पूरा गुरु मिहरवानु ॥ १२ ॥

माघ के महीने में साधुओं की चरणरज में स्नान करने को तीर्थ स्थलों के स्नान तुल्य समझो। भगवान के नाम का ध्यान करो एवं उसे सुनो तथा दूसरों को भी नाम का दान दो। नाम–सिमरन से जन्म–जन्मान्तरों की दुष्कर्मों की मलिनता दूर हो जाती है और मन का अहंकार दूर हो जाता है। इस तरह काम–क्रोध मोहित नहीं करते और लालच का कूकर (कुत्ता) नाश हो जाता है। संसार उनकी महिमा करता है जो सद्मार्ग पर चलते हैं। अठसठ तीर्थ स्थानों पर स्नान करने एवं समस्त दान–पुण्य करने से प्राणियों पर दया करना अधिकतर स्वीकार्य है। जिस पर दया करके ईश्वर यह गुण प्रदान करता है वह बुद्धिमान पुरुष है। नानक उन पर बलिहारी जाता है जो अपने ईश्वर से मिल गए हैं। माघ महीने में वहीं पवित्र कहे जाते हैं जिन पर पूर्ण गुरदेव जी मेहरवान हैं॥ १२॥

फलगुणि अनंद उपारजना हरि सजण प्रगटे आइ ॥ संत सहाई राम के करि किरपा दीआ मिलाइ ॥ सेज सुहावी सरब सुख हुणि दुखा नाही जाइ ॥ इछ पुनी वडभागणी वरु पाइआ हरि राइ ॥ मिलि सहीआ मंगलु गावही गीत गोविंद अलाइ ॥ हरि जेहा अवरु न दिसई कोई दूजा लवै न लाइ ॥ हलतु पलतु सवारिओनु निहचल दितीअनु जाइ ॥ संसार सागर ते रखिअनु बहुड़ि न जनमै धाइ ॥ जिहवा एक अनेक गुण तरे नानक चरणी पाइ ॥ फलगुणि नित सलाहीओ जिस नो तिलु न तमाइ ॥ १३ ॥

फाल्गुन के महीने में केवल वही आनंद प्राप्त करते हैं, जिनके हृदय में साजन हरि प्रभु प्रकट हुआ है। संतजन राम से मिलन करवाने हेतु जीव की सहायता कहते हैं। प्रभु ने कृपा करके संतों से मिला दिया है। उसकी हृदय रूपी शैय्या बहुत सुन्दर है, अब सर्व सुख प्राप्त हुए हैं और दुखों के लिए अब कोई स्थान नहीं। भाग्यशाली जीव–स्त्री की इच्छा पूरी हो गई है, उसे हरि–प्रभु वर के रूप में मिल गया है। वह अपनी सत्संगी सखियों सहित मंगल गीत गायन करती है और वह गोविन्द का ही भजन करती रहती है। हरि–प्रभु समान उसे अन्य कोई दिखाई नहीं देता। उस प्रभु के समान अन्य कोई नहीं है। प्रभु ने उसका लोक–परलोक संवार दिया है और उसे अटल स्थान दे दिया है। प्रभु ने उसे भवसागर से बचा लिया है और वह पुनः जन्म–मरण के चक्र में नहीं आएगी। हे नानक! मनुष्य की रसना तो एक है परन्तु प्रभु के गुण असीम हैं। मनुष्य उसके चरणों से लगकर भवसागर से पार हो जाता है। हे मनुष्य! फाल्गुन के महीने में हमें सदैव उस प्रभु की महिमा–स्तुति करनी चाहिए, जिसे तिल मात्र भी अपनी महिमा करवाने की लालसा नहीं॥ १३॥

जिनि जिनि नामु धिआइआ तिन के काज सरे ॥ हरि गुरु पूरा आराधिआ दरगह सचि खरे ॥ सरब सुखा निधि चरण हरि भउजलु बिखमु तरे ॥ प्रेम भगति तिन पाईआ बिखिआ नाहि जरे ॥ कूड़ गए दुबिधा नसी पूरन सचि भरे ॥ पारब्रहमु प्रभु सेवदे मन अंदरि एकु धरे ॥ माह दिवस मूरत भले जिस कउ नदरि करे ॥ नानकु मंगै दरस दानु किरपा करहु हरे ॥ १४ ॥ १ ॥

जिन–जिन प्राणियों ने भगवान का नाम–सिमरन किया है, उनके समस्त कार्य सम्पूर्ण हुए हैं। जो परमेश्वर स्वरूप पूर्ण गुरु का चिन्तन करते हैं, वह हरि के दरबार में सच्चे एवं शुद्ध सिद्ध हुए हैं। ईश्वर के चरण सर्व–सुखों का भण्डार हैं। प्रभु द्वारा मनुष्य भयानक एवं विषम संसार–सागर से पार हो जाता है। वे प्रेमा–भक्ति को प्राप्त होते हैं और विषय–वासनाओं में नहीं जलते। उनका झूठ लुप्त हो गया है और द्वैत भाव भाग गया है और वह सत्य के साथ पूर्ण तौर पर निश्चय से भरे हुए हैं। वह पारब्रह्म प्रभु की भरपूर सेवा करते हैं और अद्वितीय प्रभु को अपने हृदय में धारण करते हैं। सारे महीने, दिवस एवं मुहूर्त उनके लिए भले हैं जिन पर प्रभु दया–दृष्टि करता है। हे परमात्मा! नानक तेरे दर्शनों के दान की याचना करता है। हे प्रभु! अपनी कृपा उस पर न्यौछावर कीजिए॥ १४॥ १॥

माझ महला ५ दिन रैणि १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सेवी सतिगुरु आपणा हरि सिमरी दिन सभि रैण ॥ आपु तिआगि सरणी पवां मुखि बोली मिठड़े वैण ॥ जनम जनम का विछुड़िआ हरि मेलहु सजणु सैण ॥ जो जीअ हरि ते विछुड़े से सुखि न वसनि भैण ॥ हरि पिर बिनु चैनु न पाईऐ खोजि डिठे सभि गैण ॥ आप कमाणै विछुड़ी दोसु न काहू देण ॥ करि किरपा प्रभ राखि लेहु होरु नाही करण करेण ॥ हरि तुधु विणु खाकू रूलणा कहीऐ किथै वैण ॥ नानक की बेनंतीआ हरि सुरजनु देखा नैण ॥ १ ॥ जीअ की बिरथा सो सुणे हरि संम्रिथ पुरखु अपारु ॥ मरणि जीवणि आराधणा सभना का आधारु ॥ ससुरै पेईऐ तिसु कंत की वडा जिसु परवारु ॥ ऊचा अगम अगाधि बोध किछु अंतु न पारावारु ॥ सेवा सा तिसु भावसी संता की होइ छारु ॥ दीना नाथ दैआल देव पतित उधारणहारु ॥ आदि जुगादी रखदा सचु नामु करतारु ॥ कीमति कोइ न जाणई को नाही तोलणहारु ॥ मन तन अंतरि वसि रहे नानक नही सुमारु ॥ दिनु रैणि जि प्रभ कंउ सेवदे तिन कै सद बलिहार ॥ २ ॥ संत अराधनि सद सदा सभना का बखसिंदु ॥ जीउ पिंडु जिनि साजिआ करि किरपा दितीनु जिंदु ॥ गुर सबदी आराधीऐ जपीऐ निरमल मंतु ॥ कीमति कहणु न जाईऐ परमेसुरु बेअंतु ॥ जिसु मनि वसै नराइणो सो कहीऐ भगवंतु ॥ जीअ की लोचा पूरीऐ मिलै सुआमी कंतु ॥ नानकु जीवै जपि हरी दोख सभे ही हंतु ॥ दिनु रैणि जिसु न विसरै सो हरिआ होवै जंतु ॥ ३ ॥ सरब कला प्रभ पूरणो मंजु निमाणी थाउ ॥ हरि ओट गही मन अंदरे जपि जपि जीवां नाउ ॥ करि किरपा प्रभ आपणी जन धूड़ी संगि समाउ ॥ जिउ तूं राखहि तिउ रहा तेरा दिता पैना खाउ ॥ उदमु सोई कराइ प्रभ मिलि साधू गुण गाउ ॥ दूजी जाइ न सुझई किथै कूकण जाउ ॥ अगिआन विनासन तम हरण ऊचे अगम अमाउ ॥ मनु विछुड़िआ हरि मेलीऐ नानक एहु सुआउ ॥ सरब कलिआणा तितु दिनि हरि परसी गुर के पाउ ॥ ४ ॥ १ ॥

हे प्रभु ! मैं अपने सतिगुरु की सेवा करके समस्त दिन–रात्रि तेरी आराधना करता रहूँ। अपना अहंकार त्याग कर मैं ईश्वर का आश्रय ग्रहण करूँ और अपने मुख से मधुर वचन उच्चारण करूँ। हे मेरे मित्र एवं संबंधी प्रभु ! अनेक जन्मों से मैं तुझ से बिछुड़ा हुआ हूँ, मुझे अपने साथ मिला लो। हे मेरी बहन ! जो प्राणी ईश्वर से बिछुड़े हुए हैं, वह सुख में नहीं बसते। मैंने समस्त मण्डल खोज कर देख लिए हैं। ईश्वर पति के अलावा सुख प्राप्त नहीं होता। क्योंकि अपने मंदे कर्मों ने ही मुझे ईश्वर से जुदा किया है। फिर मैं किस पर दोष लगाऊँ ? हे नाथ ! कृपा करके मेरी रक्षा करें। तेरे सिवाय अन्य कोई भी कुछ करने एवं करवाने में समर्थ नहीं। हे हरि ! तेरे अलावा धूल में मिलना है। मैं अपने दुखों के वचन किसके समक्ष व्यक्त करूँ ? नानक यही प्रार्थना करता है, अपने नेत्रों से मैं महान परमात्मा के ही दर्शन करूँ॥ १॥ जो सर्वशक्तिमान एवं अनन्त हरि है, वही प्राणी की पीड़ा को सुनता है। मृत्यु एवं जीवन में उसकी ही आराधना करनी चाहिए, जो सबका आधार है। लोक–परलोक में जीव–स्त्री उस प्रभु की है, जिसका बड़ा परिवार है। प्रभु सर्वोच्च एवं अगम्य है। उसका ज्ञान अथाह है और उसके आर–पार का कोई अन्त नहीं। उसे वही सेवा भली लगती है जो सन्तों की चरण धूलि बनकर की जाती है। वह परमात्मा दीनानाथ एवं दयालु है और पापियों का कल्याण करने वाला है। सृष्टि के आदि–जुगादि काल से ही सृजनहार का सत्य नाम भक्तों की रक्षा करता रहा है। स्वामी के मूल्य को कोई भी नहीं जानता और न ही कोई इसका वजन करने वाला है। हे नानक ! जो परमात्मा गणना से परे है, वह मन एवं तन में निवास कर रहा है। मैं सदैव उन पर बलिहारी जाता

हूँ जो परमात्मा की दिन–रात सेवा करते हैं॥ २॥ संतजन हमेशा ही भगवान की आराधना करते रहते हैं, जो समस्त जीवों पर क्षमावान है और जिसने आत्मा एवं तन की सृजना की है और दया करके प्राण प्रदान किए हैं। हे प्राणी! गुरु के शब्द द्वारा उस प्रभु की आराधना करनी चाहिए और निर्मल मंत्र रूपी नाम को स्मरण करना चाहिए। उस अनन्त परमेश्वर का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। उस व्यक्ति को ही भाग्यवान कहा जाता है, जिसके हृदय में नारायण निवास करता है। प्रभु–पति को मिलने से हृदय की समस्त अभिलाषाएँ पूर्ण हो जाती हैं। नानक ईश्वर की स्तुति करने से जीता है और उसके समस्त पाप नष्ट हो गए हैं। दिन–रात जो ईश्वर को विस्मृत नहीं करता वह प्राणी कृतार्थ हो जाता है॥ ३॥ सर्वकला सम्पूर्ण परमेश्वर परिपूर्ण है। मुझ निराश्रित का तू ही आश्रय है। अपने हृदय में मैंने प्रभु का आश्रय लिया हुआ है और मैं नाम स्मरण एवं चिन्तन करने से जीता हूँ। हे ईश्वर! अपनी ऐसी कृपा कीजिए जो तेरे दासों की चरणधूलि के साथ मैं मिल जाऊँ। हे नाथ! जिस तरह तुम मुझे रखते हो, वैसे ही मैं रहता हूँ। जो तुम मुझे देते हो, मैं वही पहनता और खाता हूँ। हे प्रभु! मुझे वह उपाय प्रदान करो जिससे मैं संतों से मिलकर तेरा यशोगान करूँ। तेरे सिवाय मैं किसी अन्य का ख्याल नहीं कर सकता। फिर मैं विनती करने के लिए कहाँ जाऊँ? हे प्रभु! तुम अज्ञान का नाश करने वाले हो, तमोगुण के भी विनाशक, सर्वोच्च, अगम्य एवं माप से रहित हो। हे प्रभु! नानक का एक यही स्वार्थ है कि मुझ बिछुड़े हुए मन को अपने साथ मिला लो। हे प्रभु! उस दिन सर्व कल्याण होगा अर्थात् मोक्ष जानूंगा, जब मैं गुरु के चरण स्पर्श करूँगा॥ ४॥ १॥

वार माझ की तथा सलोक महला १

मलक मुरीद तथा चंद्रहड़ा सोहीआ की धुनी गावणी ॥ १ ओ सति नामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥

सलोकु मः १ ॥ गुरु दाता गुरु हिवै घरु गुरु दीपकु तिह लोइ ॥ अमर पदारथु नानका मनि मानिऐ सुखु होइ ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ गुरु नाम का दाता है और गुरु ही हिम अर्थात् शांति का घर है। गुरु ही तीनों लोकों में ज्ञान का प्रकाश करने वाला दीपक है। हे नानक! नाम रूपी पदार्थ जीव को अमर करने वाला है। यदि मनुष्य का मन गुरु की शरण लेने हेतु विश्वस्त हो जाए तो सुख उपलब्ध हो जाता है॥ १॥

मः १ ॥ पहिलै पिआरि लगा थण दुधि ॥ दूजै माइ बाप की सुधि ॥ तीजै भया भाभी बेब ॥ चउथै पिआरि उपंनी खेड ॥ पंजवै खाण पीअण की धातु ॥ छिवै कामु न पुछै जाति ॥ सतवै संजि कीआ घर वासु ॥ अठवै क्रोधु होआ तन नासु ॥ नावै धउले उभे साह ॥ दसवै दधा होआ सुआह ॥ गए सिगीत पुकारी धाह ॥ उडिआ हंसु दसाए राह ॥ आइआ गइआ मुइआ नाउ ॥ पिछै पतलि सदिहु काव ॥ नानक मनमुखि अंधु पिआरु ॥ बाझु गुरू डुबा संसारु ॥ २ ॥

महला १॥ अपने जीवन की प्रथम अवस्था बचपन में प्राणी माता के दुग्ध से प्रेम पाता है। द्वितीय अवस्था में उसको अपने माता–पिता का ज्ञान होता है। तृतीय अवस्था में वह अपने भाई, भाभी एवं अपनी बहन को पहचानता है। चौथी अवस्था में उसमें खेलने की रुचि उत्पन्न हो जाती है। पंचम अवस्था में वह खाने–पीने की ओर दौड़ता है। छठी अवस्था में उसके भीतर कामवासना उत्पन्न होती है और वह कामवासना से अंधा हुआ जाति–कुजाति भी नहीं देखता। सप्तम अवस्था में वह धन–दौलत एकत्रित करता है और अपने घर में निवास कर लेता है। आठवीं अवस्था में उसका तन क्रोध में नष्ट हो जाता है। नौवीं अवस्था में उसके बाल–सफेद हो जाते हैं, और उसका सांस लेना कठिन हो जाता है। दसवीं अवस्था में उसका शरीर जल कर भस्म हो जाता है, उसके संगी साथी चित्ता तक उसके साथ जाते

हैं और अश्रु बहाते हैं। राजहंस (आत्मा) उड़ जाती है और जाने का मार्ग पूछती है। वह इस संसार में आया था और चला गया है और उसका नाम भी मर मिट गया है। उसके उपरांत पत्तलों पर भोजन दिया जाता है और कौए बुलाए जाते हैं अर्थात् श्राद्ध किए जाते हैं। हे नानक! स्वेच्छाचारी जीव का जगत् से मोह ज्ञानहीनों वाला है। गुरु के बिना सारा जगत् ही भवसागर में डूब रहा है॥ २॥

मः १ ॥ दस बालतणि बीस रवणि तीसा का सुंदरु कहावै ॥ चालीसी पुरु होइ पचासी पगु खिसै सठी के बोढेपा आवै ॥ सतरि का मतिहीणु असीहां का विउहारु न पावै ॥ नवै का सिहजासणी मूलि न जाणै अप बलु ॥ ढंढोलिमु ढूढिमु डिठु मै नानक जगु धूए का धवलहरु ॥ ३ ॥

महला १॥ मनुष्य के दस वर्ष बचपन में बीत जाते हैं। बीस वर्ष का युवक और तीस वर्ष का सुन्दर कहा जाता है। चालीस पर वह पूर्ण होता है। पचास वर्ष में उसके पग पीछे मुड़ जाते हैं और साठ वर्ष में वृद्धावस्था आ जाती है। सत्तर वर्ष में उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और अस्सी वर्ष की आयु में वह अपने कार्य नहीं कर सकता। नब्बे वर्ष में उसका आसन बिस्तर पर होता है और क्षीण होने के कारण वह बिल्कुल नहीं समझता कि शक्ति क्या है? खोज-तलाश करके मैंने देख लिया है, हे नानक! यह संसार धुएँ का क्षणभंगुर महल है॥ ३॥

पउड़ी ॥ तूं करता पुरखु अगंमु है आपि सिसटि उपाती ॥ रंग परंग उपारजना बहु बहु बिधि भाती ॥ तूं जाणहि जिनि उपाईऐ सभु खेलु तुमाती॥ इकि आवहि इकि जाहि उठि बिनु नावै मरि जाती ॥ गुरमुखि रंगि चलूलिआ रंगि हरि रंगि राती ॥ सो सेवहु सति निरंजनो हरि पुरखु बिधाती ॥ तूं आपे आपि सुजाणु है वड पुरखु वडाती ॥ जो मनि चिति तुधु धिआइदे मेरे सचिआ बलि बलि हउ तिन जाती ॥ १ ॥

पउड़ी॥ हे कर्त्ता प्रभु! तू सर्वशक्तिमान एवं अगम्य है। तूने स्वयं सृष्टि की रचना की है। तूने अनेक प्रकार के रंग तथा विविध प्रकार के पक्षियों के रंग-बिरंगे पंख उपजाए हैं। तू ही जिसने यह सृष्टि-रचना की है, इस भेद को जानता है कि क्यों रचना की है। यह जगत् तेरी एक लीला है। कई प्राणी जन्म लेते हैं और कई संसार त्याग कर चले जाते हैं। नाम सिमरन के बिना सभी नाश हो जाते हैं। गुरमुख सदैव भगवान के प्रेम में गहरे लाल रंग की भाँति मग्न रहते हैं। उस सदैव सत्य एवं निरंजन प्रभु की सेवा करो जो हम सबका विधाता है। हे प्रभु! तू स्वयं चतुर है और जगत् में सबसे बड़ा महापुरुष है। हे मेरे सत्य परमेश्वर! मैं उन पर तन-मन से न्यौछावर हूँ जो एकाग्रचित होकर तेरा ध्यान करते रहते हैं॥ १॥

सलोक मः १ ॥ जीउ पाइ तनु साजिआ रखिआ बणत बणाइ ॥ अखी देखै जिहवा बोलै कंनी सुरति समाइ ॥ पैरी चलै हथी करणा दिता पैनै खाइ ॥ जिनि रचि रचिआ तिसहि न जाणै अंधा अंधु कमाइ ॥ जा भजै ता ठीकरु होवै घाड़त घड़ी न जाइ ॥ नानक गुर बिनु नाहि पति पति विणु पारि न पाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ भगवान ने पंचभूतक तन की रचना करके उसमें प्राण कला प्रदान की है और इसकी रक्षा का प्रबंध किया है। मनुष्य अपने नेत्रों से देखता है, और जिह्वा से बोलता है। इसके कानों में सुनने की शक्ति समाई हुई है। वह पैरों से चलता है, हाथों से कार्य करता है और जो कुछ उसे मिलता है, उसको पहनता एवं सेवन करता है। लेकिन बड़े दुःख की बात है कि जिस परमात्मा ने मानव की रचना की है, उसे यह जानता ही नहीं। अंधा मनुष्य ज्ञानहीन होने के कारण बुरे कर्म करता

है। जब मनुष्य का शरीर रूपी घड़ा टूटता है तो वह टुकड़े-टुकड़े हो जाता है और इसकी बनावट पुनः नहीं की जा सकती। हे नानक! गुरु के बिना मान-सम्मान नहीं मिलता और इस मान-सम्मान के अलावा मनुष्य संसार से पार नहीं हो सकता॥ १॥

मः २ ॥ देंदे थावहु दिता चंगा मनमुखि ऐसा जाणीऐ ॥ सुरति मति चतुराई ता की किआ करि आखि वखाणीऐ ॥ अंतरि बहि कै करम कमावै सो चहु कुंडी जाणीऐ ॥ जो धरमु कमावै तिसु धरम नाउ होवै पापि कमाणै पापी जाणीऐ ॥ तूं आपे खेल करहि सभि करते किआ दूजा आखि वखाणीऐ ॥ जिचरु तेरी जोति तिचरु जोती विचि तूं बोलहि विणु जोती कोई किछु करिहु दिखा सिआणीऐ ॥ नानक गुरमुखि नदरी आइआ हरि इको सुघड़ु सुजाणीऐ ॥ २ ॥

महला २॥ मनमुख ऐसा समझता है कि देने वाले प्रभु से उसकी दी हुई वस्तु उत्तम है। उसकी बुद्धिमत्ता, समझ एवं चतुरता बारे क्या कथन किया जाए? चाहे वह अपने घर में बैठकर छिपकर दुष्कर्म करता है परन्तु फिर भी चारों दिशाओं में लोगों को इनका पता लग जाता है। जो व्यक्ति धर्म करता है, उसका नाम धर्मात्मा हो जाता है और जो पाप करता है, वह पापी जाना जाता है। हे सृजनहार प्रभु! तुम स्वयं ही समस्त लीलाएँ रचते हो। किसी अन्य की क्यों बात एवं कथा करें? हे प्रभु! जब तक तेरी ज्योति मानव शरीर में है, तब तक तुम ज्योतिमान देहि में बोलते हो। यदि कोई प्राणी दिखा दे कि उसने तेरी ज्योति के अलावा कुछ कर लिया है तो मैं उसको बुद्धिमान कहूँगा। हे नानक! गुरमुख को तो सर्वत्र एक चतुर एवं सर्वज्ञ प्रभु ही दिखाई देता है॥ २॥

पउड़ी ॥ तुधु आपे जगतु उपाइ कै तुधु आपे धंधै लाइआ ॥ मोह ठगउली पाइ कै तुधु आपहु जगतु खुआइआ ॥ तिसना अंदरि अगनि है नह तिपतै भुखा तिहाइआ ॥ सहसा इहु संसारु है मरि जंमै आइआ जाइआ ॥ बिनु सतिगुर मोहु न तुटई सभि थके करम कमाइआ ॥ गुरमती नामु धिआईऐ सुखि रजा जा तुधु भाइआ ॥ कुलु उधारे आपणा धंनु जणेदी माइआ ॥ सोभा सुरति सुहावणी जिनि हरि सेती चितु लाइआ ॥ २ ॥

पउड़ी॥ हे प्रभु! तुमने स्वयं ही जगत् को उत्पन्न किया और तुमने स्वयं ही इसको कामकाज में लगा दिया है। सांसारिक मोह रूपी नशीली बूटी खाने के लिए देकर तुमने स्वयं ही संसार को कुमार्ग लगा दिया है। प्राणी के भीतर तृष्णा की अग्नि विद्यमान है। वह तृप्त नहीं होता और भूखा तथा प्यासा ही रहता है। यह संसार सहसा भूल-भुलैया है। यह मरता, जन्म लेता, आता और जाता रहता है। सतिगुरु के बिना मोह नहीं टूटता। सभी प्राणी अपने कर्म करके थक चुके हैं। हे स्वामी! जब तुझे अच्छा लगता है, गुरु के उपदेश से प्राणी तेरे नाम की आराधना करके प्रसन्नता से संतुष्ट हो जाता है। वह अपने वंश का कल्याण कर लेता है। ऐसे व्यक्ति को जन्म देने वाली माता धन्य है। जिन्होंने प्रभु से अपना चित्त लगाया है, उनकी जगत् में बड़ी शोभा होती है एवं उनकी सुरति सुन्दर हो जाती है॥ २॥

सलोकु मः २ ॥ अखी बाझहु वेखणा विणु कंना सुनणा ॥ पैरा बाझहु चलणा विणु हथा करणा ॥ जीभै बाझहु बोलणा इउ जीवत मरणा ॥ नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा ॥ १ ॥

श्लोक महला २॥ यहाँ पर गुरु जी जीवनमुक्त मनुष्य के लक्षण इस प्रकार बताते हैं कि नेत्रों के बिना देखना, कानों के बिना सुनना, पैरों के बिना चलना, हाथों के बिना कार्य करना और जिह्वा के बिना वचन करना, अर्थात् नेत्रों से नहीं सुरति द्वारा ईश्वर को देखना चाहिए और स्थूल कानों से

नहीं अपितु श्रद्धा से प्रभु का यशोगान श्रवण करना चाहिए और हाथों के बिना मानसिक पूजा रूपी कर्म करना चाहिए, स्थूल जिह्वा के बिना प्रेम जिह्वा से उसका यश करना चाहिए। हे नानक! प्रभु का हुक्म पहचान कर प्राणी अपने पति–परमेश्वर को मिल सकता है॥ १॥

मः २ ॥ दिसै सुणीऐ जाणीऐ साउ न पाइआ जाइ ॥ रुहला टुंडा अंधुला किउ गलि लगै धाइ ॥ भै के चरण कर भाव के लोइण सुरति करेइ ॥ नानकु कहै सिआणीए इव कंत मिलावा होइ ॥ २ ॥

महला २॥ मनुष्य को अपने नेत्रों से भगवान सर्वत्र दिखाई देता भी है, वह महापुरुषों से सुनता भी है कि वह सर्वव्यापक है और उसे ज्ञान हो भी जाता है कि वह हर जगह मौजूद है परन्तु फिर भी वह उससे मिलकर आनंद प्राप्त नहीं कर सकता। वह भगवान को मिले भी कैसे? क्योंकि उसको मिलने हेतु उसके पास पैर नहीं है, हाथ नहीं है और आँखे भी नहीं हैं। एक लंगड़ा, अपाहिज और नेत्रहीन पुरुष किस तरह दौड़कर परमात्मा को गले लगा सकता है? इसलिए नानक कहते हैं कि हे चतुर जीव–स्त्री! प्रभु से इस तरह मिलन हो सकता है कि तू ईश्वर के भय को अपने चरण, उसके प्रेम को अपने हाथ एवं उसके ज्ञान को अपने नेत्र बना॥ २॥

पउड़ी ॥ सदा सदा तूं एकु है तुधु दूजा खेलु रचाइआ ॥ हउमै गरबु उपाइ कै लोभु अंतरि जंता पाइआ ॥ जिउ भावै तिउ रखु तू सभ करे तेरा कराइआ ॥ इकना बखसहि मेलि लैहि गुरमती तुधै लाइआ ॥ इकि खड़े करहि तेरी चाकरी विणु नावै होरु न भाइआ ॥ होरु कार वेकार है इकि सची कारै लाइआ ॥ पुतु कलतु कुटंबु है इकि अलिपतु रहे जो तुधु भाइआ ॥ ओहि अंदरहु बाहरहु निरमले सचै नाइ समाइआ ॥ ३ ॥

पउड़ी॥ हे प्रभु! तुम सदैव एक हो, अन्य क्रीड़ा रूपी संसार तूने माया द्वारा पैदा किया है। हे नाथ! तूने अहंकार एवं ममत्व पैदा करके प्राणियों के भीतर लोभ इत्यादि अवगुणों को डाल दिया है। हे स्वामी! जिस तरह तुझे अच्छा लगता है, वैसे ही जीवों को रखो। प्रत्येक प्राणी वैसा ही कर्म करता है जिस तरह तुम करवाते हो। कुछ जीवों को तूने क्षमा करके अपने साथ मिला लिया है और कुछ जीवों को तूने ही गुरु की मति में लगाया है। कई तेरे मन्दिर में खड़े होकर भक्ति करते हैं। नाम के अलावा उनको कुछ भी अच्छा नहीं लगता। कईओं को तुमने सत्य कर्म में लगा दिया है। कोई अन्य कर्म उनके लिए लाभहीन है। जिन प्राणियों का कर्म तुझे लुभाया है, वे प्राणी स्त्री, पुत्र एवं परिवार से तटस्थ रहते हैं। हे प्रभु! ऐसे व्यक्ति अन्दर एवं बाहर से पवित्र हैं और वे सत्य नाम में लीन रहते हैं॥ ३॥

सलोकु मः १ ॥ सुइने कै परबति गुफा करी कै पाणी पइआलि ॥ कै विचि धरती कै आकासी उरधि रहा सिरि भारि ॥ पुरु करि काइआ कपड़ु पहिरा धोवा सदा कारि ॥ बगा रता पीअला काला बेदा करी पुकार ॥ होइ कुचीलु रहा मलु धारी दुरमति मति विकार ॥ ना हउ ना मै ना हउ होवा नानक सबदु वीचारि ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ चाहे मैं स्वर्गलोक में जाकर सोने के सुमेर पर्वत पर रहने के लिए गुफा बना लूँ, चाहे पाताललोक में जाकर जल में रहूँ, चाहे मैं धरती अथवा आकाश के किसी लोक में सिर के बल उलटा खड़ा होकर तपस्या करूँ, चाहे मैं पूरी तरह शरीर को स्वच्छ करके वस्त्र पहनूँ और हमेशा ही यह कर्म करके अपने शरीर एवं वस्त्रों को स्वच्छ करता रहूँ, चाहे मैं सफेद, लाल, पीले एवं काले वस्त्र पहनकर चारों वेद–ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद का पाठ करूँ, चाहे मैं गन्दा एवं मलिन रहूँ। परन्तु यह सब कर्म दुर्बुद्धि होने के कारण व्यर्थ ही हैं। हे नानक! मैं केवल शब्द का चिन्तन करता हूँ, जिसके अलावा किसी भी मूल्य का मैं नहीं था, न ही मैं हूँ और न ही मैं होऊंगा॥ १॥

मः १ ॥ वसत्र पखालि पखाले काइआ आपे संजमि होवै ॥ अंतरि मैलु लगी नही जाणै बाहरहु मलि मलि धोवै ॥ अंधा भूलि पइआ जम जाले ॥ वसतु पराई अपुनी करि जानै हउमै विचि दुखु घाले ॥ नानक गुरमुखि हउमै तुटै ता हरि हरि नामु धिआवै ॥ नामु जपे नामो आराधे नामे सुखि समावै ॥ २ ॥

महला १॥ जो व्यक्ति अपने वस्त्र धो कर एवं स्नान करके संयमी बन बैठता है, उसे अपने मन में लगी अहंकार रूपी मैल का पता ही नहीं लगता और वह अपने शरीर को बाहर से ही रगड़ रगड़ कर स्वच्छ करता रहता है। वह ज्ञानहीन होता है और कुमार्ग में पड़कर यम के जाल में फँस जाता है। वह पराई वस्तु को अपनी समझता है और अहंकारवश बड़े दुख सहन करता है। हे नानक! जब गुरु के माध्यम से मनुष्य का अहंकार नष्ट हो जाता है तो वह हरि–परमेश्वर के नाम का ध्यान करता रहता है। वह नाम का जाप करता है, नाम को स्मरण करता है और नाम द्वारा सुख में समा जाता है॥ २॥

पवड़ी ॥ काइआ हंसि संजोगु मेलि मिलाइआ ॥ तिन ही कीआ विजोगु जिनि उपाइआ ॥ मूरखु भोगे भोगु दुख सबाइआ ॥ सुखहु उठे रोग पाप कमाइआ ॥ हरखहु सोगु विजोगु उपाइ खपाइआ ॥ मूरख गणत गणाइ झगड़ा पाइआ ॥ सतिगुर हथि निबेड़ु झगड़ु चुकाइआ ॥ करता करे सु होगु न चलै चलाइआ ॥ ४ ॥

पउड़ी॥ भगवान ने संयोग बनाकर तन एवं आत्मा का मिलन कर दिया है। जिस प्रभु ने इनकी रचना की है, उसी ने उनको जुदा किया है। मूर्ख प्राणी भोग भोगता रहता है और यह भोग ही उसके तमाम दुःखों का कारण बनता है। वह सुख की उपलब्धि हेतु पाप करता है और इन सुखों से उसके शरीर में रोग उत्पन्न हो जाते हैं। हर्ष से शोक तथा संयोग से वियोग और जन्म से मृत्यु उत्पन्न होते हैं। मूर्ख प्राणी ने दुष्कर्मों की गिनती गिनाकर जीवन–मृत्यु का विवाद खड़ा कर लिया है अर्थात् मूर्ख दुष्कर्मों में फँस जाता है। निर्णय सतिगुरु के हाथ में है, जो इस विवाद को खत्म कर देते हैं। सृष्टिकर्त्ता प्रभु जो करता है, वही कुछ होता है और प्राणी का चलाया हुक्म नहीं चलता॥ ४॥

सलोकु मः १ ॥ कूड़ु बोलि मुरदारु खाइ ॥ अवरी नो समझावणि जाइ ॥ मुठा आपि मुहाए साथै ॥ नानक ऐसा आगू जापै ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ जो व्यक्ति झूठ बोलकर दूसरों का हक खाता है वह मुर्दे को खाता है अर्थात् हराम खाता है। फिर भी वह दूसरों को उपदेश करने जाता है कि झूठ मत बोलो। हे नानक! वह इस तरह का नेता मालूम होता है, जो स्वयं लुटा जा रहा है और अपने साथियों को भी लुटा रहा है॥ १॥

महला ४ ॥ जिस दै अंदरि सचु है सो सचा नामु मुखि सचु अलाए ॥ ओहु हरि मारगि आपि चलदा होरना नो हरि मारगि पाए ॥ जे अगै तीरथु होइ ता मलु लहै छपड़ि नातै सगवी मलु लाए ॥ तीरथु पूरा सतिगुरू जो अनदिनु हरि हरि नामु धिआए ॥ ओहु आपि छुटा कुटंब सिउ दे हरि हरि नामु सभ सिसटि छडाए ॥ जन नानक तिसु बलिहारणै जो आपि जपै अवरा नामु जपाए ॥ २ ॥

महला ४॥ जिसके हृदय में सत्य विद्यमान है, वही सत्यवादी है और वह अपने मुख से सत्य बोलता है। वह स्वयं हरि के मार्ग चलता है और दूसरों को भी हरि के मार्ग लगाता है। यदि सामने पवित्र तीर्थ रूपी सत्संग हो, तब मैल उतर जाती है। लेकिन मंदे पुरुषों के साथ संगति करने से मैल उतरने की जगह और भी मैल लग जाती है। सतिगुरु जी पूर्णरूपेण तीर्थ हैं जो दिन–रात हरि–प्रभु

के नाम का ध्यान करते रहते हैं। वह अपने कुटुंब सहित संसार सागर से पार हो जाता है अर्थात् उसे मोक्ष मिल जाता है और हरि–परमेश्वर का नाम प्रदान करके सारे संसार को पार कर देता है। हे नानक! मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ, जो स्वयं हरि के नाम का जाप करता है और दूसरों से भी नाम का जाप करवाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ इकि कंद मूलु चुणि खाहि वण खंडि वासा ॥ इकि भगवा वेसु करि फिरहि जोगी संनिआसा ॥ अंदरि त्रिसना बहुतु छादन भोजन की आसा ॥ बिरथा जनमु गवाइ न गिरही न उदासा ॥ जमकालु सिरहु न उतरै त्रिबिधि मनसा ॥ गुरमती कालु न आवै नेड़ै जा होवै दासनि दासा ॥ सचा सबदु सचु मनि घर ही माहि उदासा ॥ नानक सतिगुरु सेवनि आपणा से आसा ते निरासा ॥ ५ ॥

पउड़ी॥ कई साधू वन प्रदेश में निवास करते हैं और कंदमूल चुनकर उनका सेवन करते हैं। कई भगवे रंग के वस्त्र पहन कर योगियों एवं संन्यासियों की भाँति फिरते हैं। उनके भीतर अधिकतर तृष्णा है और वे वस्त्रों एवं भोजन की लालसा करते हैं। वह अपना अनमोल जीवन व्यर्थ ही गंवा देते हैं। इस तरह न वह गृहस्थी हैं और न ही त्यागी। यमराज उनके सिर पर मंडराता रहता है क्योंकि वे त्रिगुणात्मक वासना के शिकार हैं। जब गुरु के उपदेश से प्राणी परमात्मा के सेवकों का सेवक हो जाता है, तो काल उनके निकट नहीं आता। सत्य–नाम उसके सत्यवादी हृदय में निवास करता है और वे घर में रहते हुए भी निर्लिप्त रहते हैं। हे नानक! जो प्राणी अपने सतिगुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करते हैं, वे सांसारिक अभिलाषाओं से तटस्थ हो जाते हैं॥ ५॥

सलोकु मः १ ॥ जे रतु लगै कपड़ै जामा होइ पलीतु ॥ जो रतु पीवहि माणसा तिन किउ निरमलु चीतु ॥ नानक नाउ खुदाइ का दिलि हछै मुखि लेहु ॥ अवरि दिवाजे दुनी के झूठे अमल करेहु ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ यदि वस्त्रों को रक्त लग जाए तो वस्त्र अपवित्र हो जाता है। जो व्यक्ति दूसरों पर अत्याचार करके उनका रक्त चूसते हैं, उनका मन किस तरह पवित्र हो सकता है? हे नानक! उस अल्लाह का नाम साफ दिल से मुख से बोलो। नाम के बिना आपके सभी कार्य दुनिया के दिखावा मात्र ही हैं और आप सभी झूठे कर्म करते हैं॥ १॥

मः १ ॥ जा हउ नाही ता किआ आखा किहु नाही किआ होवा ॥ कीता करणा कहिआ कथना भरिआ भरि भरि धोवां ॥ आपि न बुझा लोक बुझाई ऐसा आगू होवां ॥ नानक अंधा होइ कै दसे राहै सभसु मुहाए साथै ॥ अगै गइआ मुहे मुहि पाहि सु ऐसा आगू जापै ॥ २ ॥

महला १॥ जब मैं कुछ भी नहीं तो दूसरों को मैं क्या उपदेश कर सकता हूँ? अथवा जब मुझ में कोई भी गुण नहीं तो मैं कैसे गुणों का दिखावा करूँ? जिस तरह का ईश्वर ने मुझे बनाया है, वैसे ही मैं करता हूँ। जिस तरह उसने मुझे कहा है, वैसे ही मैं बोलता हूँ। मैं बुरे कर्मों के कारण पापों से भरा हुआ हूँ। उनको अब मैं धोने का प्रयास करता हूँ। मैं स्वयं समझता नहीं लेकिन फिर भी दूसरों को समझाता हूँ। मैं इस तरह का ज्ञानहीन मार्गदर्शक बन सकता हूँ। हे नानक! जो व्यक्ति स्वयं ज्ञानहीन अंधा होकर मार्ग–दर्शन करता है, वह अपने साथियों को भी लुटवा देता है। आगे परलोक में जाकर उसके मुख पर जूते पड़ते हैं और फिर पता चलता है कि वह किस तरह का पाखंडी मार्गदर्शक था॥२॥

पउड़ी ॥ माहा रुती सभ तूं घड़ी मूरत वीचारा ॥ तूं गणतै किनै न पाइओ सचे अलख अपारा ॥ पड़िआ मूरखु आखीऐ जिसु लबु लोभु अहंकारा ॥ नाउ पड़ीऐ नाउ बुझीऐ गुरमती वीचारा ॥ गुरमती

नामु धनु खटिआ भगती भरे भंडारा ॥ निरमलु नामु मंनिआ दरि सचै सचिआरा ॥ जिस दा जीउ पराणु है अंतरि जोति अपारा ॥ सचा साहु इकु तूं होरु जगतु वणजारा ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ हे अकालपुरुष! समस्त महीनों, ऋतुओं, घड़ी, मुहूर्त में मैं तेरी वन्दना करता हूँ। हे सच्चे अलख, अपार प्रभु! कर्मों की गणना करके तुझे किसी ने भी नहीं पाया। उस पढ़े हुए विद्वान व्यक्ति को महामूर्ख ही समझो, जिसके अन्तर्मन में लोभ, लालच एँव अहंकार है। गुरु की मति द्वारा हमें विचार करके नाम को पढ़ना एवं समझना चाहिए। जिस व्यक्ति ने गुरु की मति द्वारा नाम रूपी धन की कमाई की है, उसके भण्डार भक्ति से भर गए हैं। जिस व्यक्ति ने निर्मल नाम का मन से सिमरन किया है, वह सत्य के दरबार में सत्यवादी स्वीकृत हो जाता है। जिसने प्रत्येक जीव को आत्मा एवं प्राण दिए हैं, वह प्रभु अनंत है और उसकी ज्योति प्रत्येक जीव के हृदय में विद्यमान है। हे प्रभु! एक तू ही सच्चा शाह है और शेष सारा जगत् वणजारा है॥ ६॥

सलोकु मः १ ॥ मिहर मसीति सिदकु मुसला हकु हलालु कुराणु ॥ सरम सुंनति सीलु रोजा होहु मुसलमाणु ॥ करणी काबा सचु पीरु कलमा करम निवाज ॥ तसबी सा तिसु भावसी नानक रखै लाज ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ जीवों पर दया करना ही मस्जिद में जाकर सजदा करना है। अल्लाह पर पूर्ण श्रद्धा रखना ही मुसल्ले पर बैठ कर नमाज पढ़ना है। हक–हलाल अर्थात् धर्म–कर्म करना ही कुरान को पढ़ना है। नाम की कमाई करना ही सुन्नत करवाना है। शील स्वभाव का बनना ही रोजा रखना है। तभी तुम एक सच्चे मुसलमान बनोगे। सत्य कर्म करना ही मक्का जाकर काबे के दर्शन करना है। सच्चे खुदा को जानना ही पीर की पूजा करना है। शुभ कर्म करना ही कलमा एवं नमाज है। अल्लाह की रजा में रहना ही माला फेर कर नाम जपना है। हे नानक! जो इन गुणों से युक्त होगा तो ही अल्लाह को अच्छा लगेगा और ऐसे मुसलमान की खुदा लाज–प्रतिष्ठा रखता है॥ १॥

मः १ ॥ हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥ गुरु पीरु हामा ता भरे जा मुरदारु न खाइ ॥ गली भिसति न जाईऐ छुटै सचु कमाइ ॥ मारण पाहि हराम महि होइ हलालु न जाइ ॥ नानक गली कूड़ीई कूड़ो पलै पाइ ॥ २ ॥

महला १॥ हे नानक! पराया हक खाना मुसलमान के लिए सूअर खाने के समान है और हिन्दू के लिए गाय खाने के समान है। हिन्दुओं का गुरु एवं मुसलमानों का पीर खुदा की दरगाह में तभी मनुष्य की रक्षा की हामी भरेंगे यदि वह पराया हक न खाए। अधिक बातें करने से प्राणी स्वर्गलोक को नहीं जाता। मुक्ति तो सत्य की कमाई द्वारा ही संभव है। हराम के भोजन में मसाला डालने से वह हलाल नहीं हो जाता, क्योंकि रिश्वत का धन दान करने से शुद्ध नहीं होता। हे नानक! झूठी बातों से केवल झूठ ही हासिल होता है॥ २॥

मः १ ॥ पंजि निवाजा वखत पंजि पंजा पंजे नाउ ॥ पहिला सचु हलाल दुइ तीजा खैर खुदाइ ॥ चउथी नीअति रासि मनु पंजवी सिफति सनाइ ॥ करणी कलमा आखि कै ता मुसलमाणु सदाइ ॥ नानक जेते कूड़िआर कूड़ै कूड़ी पाइ ॥ ३ ॥

महला १॥ मुसलमानों के लिए पाँच नमाज़ें हैं, एवं नमाज़ों के लिए पाँच ही वक्त हैं और पाँचों नमाजों के पाँच अलग–अलग नाम हैं। पहली नमाज यह है कि सच्चे खुदा की बंदगी करो। दूसरी

नमाज है कि हक हलाल अर्थात् धर्म की कमाई करो। तीसरी नमाज यह है कि अल्लाह से सबकी भलाई माँगो, दान–पुण्य करो। चौथी नमाज यह है कि अपनी नीयत एवं मन को साफ रखो। पाँचवी नमाज यह है कि अल्लाह की महिमा एवं प्रशंसा करो। तू शुभ कर्मों का कलमा पढ़ और तभी तू स्वयं को सच्चा मुसलमान कहलवा सकता है। हे नानक ! जितने भी झूठे हैं, उनकी प्रतिष्ठा भी झूठी है और उन्हें झूठ ही प्राप्त होगा॥ ३॥

पउड़ी ॥ इकि रतन पदारथ वणजदे इकि कचै दे वापारा ॥ सतिगुरि तुठै पाईअनि अंदरि रतन भंडारा ॥ विणु गुर किनै न लधिआ अंधे भउकि मुए कूड़िआरा ॥ मनमुख दूजै पचि मुए ना बूझहि वीचारा ॥ इकसु बाझहु दूजा को नही किसु अगै करहि पुकारा ॥ इकि निरधन सदा भउकदे इकना भरे तुजारा ॥ विणु नावै होरु धनु नाही होरु बिखिआ सभु छारा ॥ नानक आपि कराए करे आपि हुकमि सवारणहारा ॥ ७ ॥

पउड़ी॥ जीव जगत् में व्यापार करने आते हैं। कई जीव नाम रूपी रत्न पदार्थों का व्यापार करते हैं और कई जीव कांच अर्थात् क्षणभंगुर सुखों का व्यापार करते हैं। यदि सतिगुरु प्रसन्न हो जाए तो यह नाम रूपी रत्न–पदार्थों का अक्षय भण्डार मिल जाता है। जीव के हृदय में ही नाम रूपी रत्न पदार्थों का भण्डार है परन्तु यह भण्डार गुरु के बिना किसी को भी नहीं मिला। अर्थात् परमेश्वर प्राप्त नहीं होता। झूठे एवं अज्ञानी लोग टक्करें मार–मारकर प्राण त्याग गए हैं। मनमुख लोग द्वैत भाव में पड़कर गल सड़कर मर जाते हैं और ज्ञान को नहीं समझते। एक ईश्वर के अलावा संसार में दूसरा कोई भी नहीं। वह किसके समक्ष जाकर फरियाद करें? कई धनहीन निर्धन हैं और हमेशा भटकते फिरते हैं और कईओं के खजाने दौलत से परिपूर्ण हैं। लेकिन इस संसार में हरि नाम के अलावा शेष कोई भी धन जीव के साथ जाने वाला नहीं। अन्य सब कुछ विष रूपी माया–धन धूलि के तुल्य है। हे नानक ! ईश्वर स्वयं ही सब कुछ करता है और स्वयं ही जीवों से करवाता है। अपने आदेश द्वारा वह प्रभु स्वयं ही प्राणियों को संवारने वाला है॥ ७॥

सलोकु मः १ ॥ मुसलमाणु कहावणु मुसकलु जा होइ ता मुसलमाणु कहावै ॥ अवलि अउलि दीनु करि मिठा मसकल माना मालु मुसावै ॥ होइ मुसलिमु दीन मुहाणै मरण जीवण का भरमु चुकावै ॥ रब की रजाइ मंने सिर उपरि करता मंने आपु गवावै ॥ तउ नानक सरब जीआ मिहरंमति होइ त मुसलमाणु कहावै ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ मुसलमान कहलाना बड़ा कठिन है। यदि कोई गुणों से युक्त सच्चा मुसलमान है, तो ही वह अपने आपको मुसलमान कहलवा सकता है। सच्चा मुसलमान बनने के लिए सर्वप्रथम बात यह है कि वह अपने पैगम्बर के चलाए धर्म को मीठा समझकर माने। दूसरी बात यह है कि वह अपनी मेहनत की कमाई का धन गरीबों में यूं बांट दे जैसे रंग मार लोहे के जंग को दूर कर देता है। वह अपने पैगम्बर के धर्म का सच्चा मुरीद (शिष्य) होकर मृत्यु एवं जीवन के भ्रम को मिटा दे। सच्चे दिल से वह ईश्वर की इच्छा को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकृत करे, सृष्टिकर्त्ता परमात्मा की वन्दना करे और अपना अहंकार नष्ट कर दे। हे नानक ! यदि वह समस्त प्राणियों पर दयालु हो तो ही वह मुसलमान कहलवा सकता है॥१॥

महला ४ ॥ परहरि काम क्रोधु झूठु निंदा तजि माइआ अहंकारु चुकावै ॥ तजि कामु कामिनी मोहु तजै ता अंजन माहि निरंजनु पावै ॥ तजि मानु अभिमानु प्रीति सुत दारा तजि पिआस आस राम लिव लावै ॥ नानक साचा मनि वसै साच सबदि हरि नामि समावै ॥ २ ॥

महला ४॥ जो व्यक्ति काम, क्रोध, झूठ, निंदा एवं धन–दौलत को त्यागकर अपना अहंकार मिटा देता है, कामवासना का त्याग करके अपनी स्त्री का मोह त्याग देता है, वह माया में रहता हुआ भी निरंजन प्रभु को पा लेता है। हे नानक! सत्यस्वरूप प्रभु उस व्यक्ति के मन में आकर निवास करता है, जो व्यक्ति मान–अभिमान, अपने पुत्र एवं स्त्री का प्रेम, माया की तृष्णा एवं इच्छा को त्याग कर राम में सुरति लगाता है। ऐसा व्यक्ति सच्चे शब्द द्वारा हरिनाम में ही समा जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ राजे रयति सिकदार कोइ न रहसीओ ॥ हट पटण बाजार हुकमी ढहसीओ ॥ पके बंक दुआर मूरखु जाणै आपणे ॥ दरबि भरे भंडार रीते इकि खणे ॥ ताजी रथ तुखार हाथी पाखरे ॥ बाग मिलख घर बार किथै सि आपणे ॥ तंबू पलंघ निवार सराइचे लालती ॥ नानक सच दातारु सिनाखतु कुदरती ॥ ८ ॥

पउड़ी॥ राजा, प्रजा एवं प्रधानों में किसी ने भी इस संसार में नहीं रहना। दुकानें, नगर एवं बाज़ार ईश्वर की इच्छा से नष्ट हो जाएँगे। मूर्ख मनुष्य सुन्दर द्वारों वाले पक्के मन्दिरों को अपना समझते हैं। धन–दौलत से परिपूर्ण भण्डार एक क्षण में ही खाली हो जाते हैं। घोड़ों, सुन्दर रथों, ऊँट, अम्बारियों वाले हाथी, उद्यान, सम्पत्तियाँ, घर एवं इमारतें इत्यादि जिन्हें मनुष्य अपना जानता है, वे अपने कहाँ हैं? तम्बू, निवार के पलंग, अतलस की कनातें सब क्षणभंगुर हैं। हे नानक! सदैव स्थिर एक सत्य परमेश्वर ही है, जो लोगों को यह सब वस्तुएँ देने वाला दाता है। उसकी पहचान उसकी कुदरत द्वारा ही होती है॥ ८॥

सलोकु मः १ ॥ नदीआ होवहि धेणवा सुंम होवहि दुधु घीउ ॥ सगली धरती सकर होवै खुसी करे नित जीउ ॥ परबतु सुइना रुपा होवै हीरि लाल जड़ाउ ॥ भी तूंहै सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ हे भगवान! यदि मेरे लिए नदियां कामधेनु गाय बन जाएँ, समुद्रों का जल दूध एवं घी बन जाए, सारी धरती शक्कर बन जाए और मेरा मन इन पदार्थों का सेवन करके प्रसन्न होता हो, यदि हीरे एवं जवाहरों से जड़ित सोने एवं चांदी का पर्वत भी मुझे मिल जाए, मैं फिर भी तेरा ही यशोगान करूँगा और तेरी महिमा करने की मेरी उमंग खत्म नहीं होगी॥ १॥

मः १ ॥ भार अठारह मेवा होवै गरुड़ा होइ सुआउ ॥ चंदु सूरजु दुइ फिरदे रखीअहि निहचलु होवै थाउ ॥ भी तूंहै सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥ २ ॥

महला १॥ हे प्रभु! यदि मेरे लिए अठारह भार वाली सारी वनस्पति मेवा बन जाए, जिसका स्वाद गुड़ जैसा मीठा हो, यदि मेरा निवास स्थान अटल हो जाए, जिसके आस–पास सूर्य एवं चंद्रमा दोनों ही घूमते रहें, फिर भी मैं तेरा ही यश करूँगा और तेरा यश करने का मेरा चाव हृदय से नहीं हटेगा॥ २॥

मः १ ॥ जे देहै दुखु लाईऐ पाप गरह दुइ राहु ॥ रतु पीणे राजे सिरै उपरि रखीअहि एवै जापै भाउ ॥ भी तूंहै सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥ ३ ॥

महला १॥ हे भगवान! यदि मेरे शरीर को दुख लग जाए और दोनों पापी ग्रह राहु–केतु मुझे कष्ट दें। यदि रक्तपिपासु राजा मेरे सिर पर शासन करते हों मुझे फिर भी यूं ही लगे कि जैसे तुम मुझे प्रेम करते हो, हे ईश्वर! फिर भी मैं तेरी ही सराहना करूँगा और तेरा यश करने की चाहत खत्म नहीं होगी॥ ३॥

मः १ ॥ अगी पाला कपड़ु होवै खाणा होवै वाउ ॥ सुरगै दीआ मोहणीआ इसतरीआ होवनि नानक सभो जाउ ॥ भी तूहै सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥ ४ ॥

महला १॥ यदि मेरे लिए अग्नि एवं शीत मेरा परिधान हो, हवा मेरा भोजन हो और यदि स्वर्ग की मोहिनी अप्सराएँ मेरी पत्नियाँ हों, हे नानक ! यह सब पदार्थ क्षणभंगुर हैं। हे प्रभु ! तो भी मैं तेरी ही महिमा गायन करूँगा। तेरी महिमा करने की तीव्र लालसा मिटती ही नहीं॥ ४॥

पवड़ी ॥ बदफैली गैबाना खसमु न जाणई ॥ सो कहीऐ देवाना आपु न पछाणई ॥ कलहि बुरी संसारि वादे खपीऐ ॥ विणु नावै वेकारि भरमे पचीऐ ॥ राह दोवै इकु जाणै सोई सिझसी ॥ कुफर गोअ कुफराणै पइआ दझसी ॥ सभ दुनीआ सुबहानु सचि समाईऐ ॥ सिझै दरि दीवानि आपु गवाईऐ ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ जो दुष्कर्मी हैवान है, वह परमात्मा को नहीं जानता। वह पागल कहा जाता है जो अपने स्वरूप को नहीं समझता। इस संसार में कलह हानिकारक है, क्योंकि वाद-विवाद में मनुष्य व्यर्थ ही पीड़ित हो जाता है। हरिनाम के अलावा प्राणी व्यर्थ है और भ्रम-विकारों में वह नष्ट हो जाता है। जो दोनों मार्गों को एक प्रभु की ओर जाते समझता है वह मुक्त हो जाएगा। झूठ बोलने वाला नरक में पड़कर जलकर राख हो जाता है। यदि मनुष्य सत्य में लीन रहता है तो उसके लिए सारी दुनिया ही सुन्दर है। वह अपना अहंकार मिटाकर प्रभु के दरबार में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल हो जाता है॥ ६॥

मः १ सलोकु ॥ सो जीविआ जिसु मनि वसिआ सोइ ॥ नानक अवरु न जीवै कोइ ॥ जे जीवै पति लथी जाइ ॥ सभु हरामु जेता किछु खाइ ॥ राजि रंगु मालि रंगु ॥ रंगि रता नचै नंगु ॥ नानक ठगिआ मुठा जाइ ॥ विणु नावै पति गइआ गवाइ ॥ १ ॥

महला १ श्लोक॥ जिसके मन में भगवान का निवास है, उस व्यक्ति को ही जिया समझो। हे नानक ! भगवान के नाम बिना किसी को भी जिया नहीं कहा जा सकता, वह तो मृतक के समान होता है। यदि वह जीता भी है तो वह जगत् में से अपनी मान-प्रतिष्ठा गंवा कर चला जाता है। वह जो कुछ भी खाता है, वह सब हराम बन जाता है। किसी व्यक्ति का शासन से प्रेम है और किसी का धन-दौलत से प्रेम है। ऐसा बेशर्म व्यक्ति मिथ्या माया के मोह में मग्न हुआ नग्न नृत्य कर रहा है। हे नानक ! वह ठगा और लुटपुट जाता है। ईश्वर के नाम के अलावा वह अपनी प्रतिष्ठा गंवा कर चला जाता है॥ १॥

मः १ ॥ किआ खाधै किआ पैधै होइ ॥ जा मनि नाही सचा सोइ ॥ किआ मेवा किआ घिउ गुड़ु मिठा किआ मैदा किआ मासु ॥ किआ कपड़ु किआ सेज सुखाली कीजहि भोग बिलास ॥ किआ लसकर किआ नेब खवासी आवै महली वासु ॥ नानक सचे नाम विणु सभे टोल विणासु ॥ २ ॥

महला १॥ हे जीव ! यदि तेरे मन में उस भगवान का निवास ही नहीं तो स्वादिष्ट भोजन खाने एवं सुन्दर वस्त्र पहनने का क्या अभिप्राय है? मेवा, घी, मीठा गुड़, मैदा एवं माँस खाने का क्या अभिप्राय है? सुन्दर वस्त्र पहनने, सुखदायक शय्या पर विश्राम करने और भोग-विलास का आनंद प्राप्त करने का क्या अभिप्राय है? सेना, द्वारपाल, कर्मचारी रखने एवं महलों में निवास करने का क्या अभिप्राय है ? हे नानक ! सत्य-परमेश्वर के नाम के सिवाय सभी पदार्थ क्षणभंगुर हैं॥२॥

पवड़ी ॥ जाती दै किआ हथि सचु परखीऐ ॥ महुरा होवै हथि मरीऐ चखीऐ ॥ सचे की सिरकार जुगु जुगु जाणीऐ ॥ हुकमु मंने सिरदारु दरि दीबाणीऐ ॥ फुरमानी है कार खसमि पठाइआ ॥ तबलबाज बीचार सबदि सुणाइआ ॥ इकि होए असवार इकना साखती ॥ इकनी बधे भार इकना ताखती ॥ १० ॥

पउड़ी॥ उच्च जाति वाले के वश में कुछ भी नहीं है, क्योंकि परमात्मा तो जीवों के शुभ–अशुभ कर्मों की ही जाँच करता है। ऊँची जाति का अभिमान विष समान है। यदि किसी व्यक्ति के हाथ में विष हो तो वह उस विष को खा कर प्राण त्याग देता है। सत्य परमेश्वर की सरकार युग–युग में जानी जाती है। जो उसके हुक्म का पालन करता है, वह उसके दरबार में प्रतिष्ठित हो जाता है। सत्य प्रभु का यही हुक्म है कि नाम–सिमरन का कर्म करो। इसलिए प्रभु ने मनुष्य को संसार में भेजा है। गुरु नगाड़ची ने वाणी द्वारा इस परमेश्वर की आराधना लोगों को सुनाई है। इसको श्रवण करके गुरमुख अपने घोड़ों पर सवार हो गए हैं और कई उनको तैयार कर रहे हैं। कईओं ने अपना सामान बांध लिया है और कई तो सवार होकर चले भी गए हैं॥ १०॥

सलोकु मः १ ॥ जा पका ता कटिआ रही सु पलरि वाड़ि ॥ सणु कीसारा चिथिआ कणु लइआ तनु झाड़ि ॥ दुइ पुड़ चकी जोड़ि कै पीसण आइ बहिठु ॥ जो दरि रहे सु उबरे नानक अजबु डिठु ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ जब अनाज पक जाता है तो किसान उसे काट लेता है। केवल घासफूस और बाड़ रह जाती है। अनाज फसल से उतार लिया जाता है और उड़ा कर फसल से दाने अलग कर लिए जाते हैं। चक्की के दोनों पाट इकट्ठे करके मनुष्य आकर दानों को पीसने बैठ जाते हैं। जो केन्द्रीय धुरे से जुड़े रहते हैं, वह बच जाते हैं। हे नानक! यह एक आश्चर्यजनक बात देखी है॥ १॥

मः १ ॥ वेखु जि मिठा कटिआ कटि कुटि बधा पाइ ॥ खुंढा अंदरि रखि कै देनि सु मल सजाइ ॥ रसु कसु टटरि पाईऐ तपै तै विललाइ ॥ भी सो फोगु समालीऐ दिचै अगि जालाइ ॥ नानक मिठै पतरीऐ वेखहु लोका आइ ॥ २ ॥

महला १॥ देखो कि गन्ना कट जाता है। इसको साफ करके ठोक पीटकर बन्धनों में बांधा है। बेलनों के बीच रखकर मलकर अथवा पहलवानों के समान जो पुरुष हैं वह इसको दबाते और दण्ड देते हैं। उसका रस खींचकर कड़ाहे में डाला जाता है और यह जलता हुआ चीखता–चिल्लाता है। गन्ने की खोई भी जिसका रस निकाल लिया है उसे भी इकट्ठा करके अग्नि में जला दिया जाता है। हे नानक! मीठे पत्तों वाले गन्ने से किस तरह का व्यवहार हुआ है, हे प्राणियों! आकर देखो॥ २॥

पवड़ी ॥ इकना मरणु न चिति आस घणेरिआ ॥ मरि मरि जंमहि नित किसै न केरिआ ॥ आपनड़ै मनि चिति कहनि चंगेरिआ ॥ जमराजै नित नित मनमुख हेरिआ ॥ मनमुख लूण हराम किआ न जाणिआ ॥ बधे करनि सलाम खसम न भाणिआ ॥ सचु मिलै मुखि नामु साहिब भावसी ॥ करसनि तखति सलामु लिखिआ पावसी ॥ ११ ॥

पउड़ी॥ कुछ लोगों को मृत्यु स्मरण नहीं, उनके मन में दुनिया के सुख भोगने की अधिक आशा होती है। वह हमेशा जन्मते–मरते रहते हैं तथा किसी के भी सच्चे मित्र नहीं बनते। वह अपने मन ही मन में अपने आपको भला कहते हैं। यमराज हमेशा इन मनमुखों को समाप्त करने के लिए देखता रहता है। मनमुख नमक खाकर हराम करने वाला है और अपने ऊपर किए हुए परमेश्वर के उपकार का धन्यवादी नहीं होता। जो दबाव अधीन प्रणाम करते हैं वह प्रभु को अच्छे नहीं लगते। जो मुख से सत्यनाम बोलते हैं वह ईश्वर के मन को अच्छे लगने लग जाते हैं॥ ११॥

मः १ सलोकु ॥ मछी तारू किआ करे पंखी किआ आकासु ॥ पथर पाला किआ करे खुसरे किआ घर वासु ॥ कुते चंदनु लाईऐ भी सो कुती धातु ॥ बोला जे समझाईऐ पड़ीअहि सिंम्रिति पाठ ॥ अंधा चानणि रखीऐ दीवे बलहि पचास ॥ चउणे सुइना पाईऐ चुणि चुणि खावै घासु ॥ लोहा मारणि पाईऐ ढहै न होइ कपास ॥ नानक मूरख एहि गुण बोले सदा विणासु ॥ १ ॥

महला १ श्लोक॥ मछली को गहरे जल का क्या लाभ है, यदि वह उसे मछेरे से नहीं बचा सकता? खुले आकाश का पक्षी को क्या लाभ है, यदि वह उसे शिकारी से नहीं बचा सकता ? पत्थर को शीत का क्या लाभ है, जब उस पर सर्दी का कोई प्रभाव ही नहीं होता ? नपुंसक को विवाह करवाने का क्या लाभ है, यदि वह दुल्हन से भोग का आनंद ही नहीं ले सकता ? यदि कुत्ते को चंदन लगा दिया जाए तो फिर भी उसका कुत्ते वाला स्वभाव ही रहेगा और कुत्तिया की ओर ही दौड़ेगा। यदि बहरे मनुष्य को स्मृतियों का पाठ पढ़कर सुनाए तो भी वह सुनकर समझता नहीं। यदि अंधे मनुष्य के समक्ष पचास दीपकों का प्रकाश भी कर दिया जाए तो भी उसे कुछ भी दिखाई नहीं देगा। मनुष्य चाहे गाय एवं भैंसों के समूह के पास सोना रख दे तो भी वह घास को ही चुन-चुनकर खाएँगे। लोहे को कपास के समान लकड़ी के साथ झाड़ें तो भी वह नरम नहीं होता। हे नानक ! मूर्ख मनुष्य में यही गुण होते हैं कि वह जो कुछ भी बोलता है, उससे उसका अपना ही विनाश होता है॥ १॥

मः १ ॥ कैहा कंचनु तुटै सारु ॥ अगनी गंढु पाए लोहारु ॥ गोरी सेती तुटै भतारु ॥ पुतीं गंढु पवै संसारि ॥ राजा मंगै दितै गंढु पाइ ॥ भुखिआ गंढु पवै जा खाइ ॥ काला गंढु नदीआ मीह झोल ॥ गंढु परीती मिठे बोल ॥ बेदा गंढु बोले सचु कोइ ॥ मुइआ गंढु नेकी सतु होइ ॥ एतु गंढि वरतै संसारु ॥ मूरख गंढु पवै मुहि मार ॥ नानकु आखै एहु बीचारु ॥ सिफती गंढु पवै दरबारि ॥ २ ॥

महला १॥ जब कांस्य, सोना एवं लोहा टूट जाए तो सुनार अग्नि से गांठ लगा देता है। यदि पत्नी के साथ पति नाराज़ हो जाए तो पुत्र के द्वारा जगत् में पुनः संबंध कायम हो जाते हैं। राजा अपनी प्रजा से कर माँगता है और उसे कर देने से प्रजा का राजा से संबंध बना रहता है। भूखे लोगों का दानी सज्जनों से संबंध बन जाता है क्योंकि वे उनसे माँगकर भोजन खाते रहते हैं। अकाल पड़ने से लोगों का नदियों से संबंध तब बनता है, जब वर्षा होने पर उनमें से बहुत जल मिलने लगता है। प्रेम व मधुर वचनों का मेलजोल है। यदि कोई सत्य बोले तो उसका संबंध वेदों से हो जाता है। जो व्यक्ति अपने जीवन में भलाई करते हैं और दान देते हैं, मरणोपरांत उनका संबंध दुनिया से बना रहता है। इस तरह का मेल-मिलाप इस संसार में प्रचलित है। मूर्ख के सुधार का हल केवल यही है कि वह मुँह की मार खाए। नानक एक ज्ञान की बात कहता है कि भगवान की महिमा-स्तुति करने से मनुष्य का उसके दरबार से संबंध कायम हो जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ आपे कुदरति साजि कै आपे करे बीचारु ॥ इकि खोटे इकि खरे आपे परखणहारु ॥ खरे खजानै पाईअहि खोटे सटीअहि बाहर वारि ॥ खोटे सची दरगह सुटीअहि किसु आगै करहि पुकार ॥ सतिगुर पिछै भजि पवहि एहा करणी सारु ॥ सतिगुरु खोटिअहु खरे करे सबदि सवारणहारु ॥ सची दरगह मंनीअनि गुर कै प्रेम पिआरि ॥ गणत तिना दी को किआ करे जो आपि बखसे करतारि ॥ १२ ॥

पउड़ी॥ परमेश्वर स्वयं ही सृष्टि की रचना करके स्वयं ही विचार करता है। कई जीव दुष्ट हैं और कई जीव धर्मात्मा हैं। इन दुष्ट एवं धर्मी जीवों की जाँच भगवान स्वयं ही करता है। जैसे खजानची शुद्ध सिक्कों को खजाने में डाल देता है और खोटे सिक्कों को खजाने से बाहर फैंक देता है, वैसे

ही पापियों को प्रभु के दरबार में से बाहर फैंक दिया जाता है। वे पापी जीव किसके समक्ष विनती कर सकते हैं। वह दौड़कर सतिगुरु की शरण में आएँ, यही कर्म श्रेष्ठ है। सतिगुरु पापियों को पवित्र बना देता है। वह पापी मनुष्य को प्रभु के नाम से सुशोभित करने वाला है। गुरु के साथ प्रेम एवं स्नेह करने से प्राणी सत्य दरबार में प्रशंसा के पात्र हो जाते हैं। जिन्हें सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर ने स्वयं क्षमा कर दिया है, उनके कर्मों का कौन मूल्यांकन कर सकता है॥ १२॥

सलोकु मः १ ॥ हम जेर जिमी दुनीआ पीरा मसाइका राइआ ॥ मे खदि बादिसाहा अफजू खुदाइ ॥ एक तूही एक तुही ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ पीर, शेख एवं राजा इत्यादि सभी दुनिया के लोग जमीन में दफन कर दिए जाते हैं। बादशाह भी अंत में दुनिया से चले जाते हैं। केवल एक खुदा ही सदैव विद्यमान है। हे अल्लाह! एक तू ही हैं और तू ही इस दुनिया में हमेशा रहने वाला है।

मः १ ॥ न देव दानवा नरा ॥ न सिध साधिका धरा ॥ असति एक दिगरि कुई ॥ एक तुई एक तुई ॥ २ ॥

महला १॥ धरती पर सदैव रहने वाले न देवता हैं, न दैत्य हैं, न ही मनुष्य हैं, न ही सिद्ध एवं साधक हैं। यह सभी क्षणभंगुर हैं। हे ईश्वर! एक तेरे सिवाय दूसरा कोई भी सदैव स्थिर नहीं है। तीनों कालों में एक तू ही सदैव सत्य है॥ २॥

मः १ ॥ न दादे दिहंद आदमी ॥ न सपत जेर जिमी ॥ असति एक दिगरि कुई ॥ एक तुई एक तुई ॥ ३ ॥

महला १॥ जगत् में न धरती के उपरोक्त आकाश के सप्त लोक स्थिर हैं, जहाँ मनुष्यों के कर्मों का न्याय करने वाले देवते रहते हैं, न जमीन के नीचे सात पाताल के लोग स्थिर हैं, जहाँ दैत्य रहते हैं। सभी क्षणभंगुर हैं। हे प्रभु! एक तेरे सिवाय दूसरा कोई भी अमर नहीं है। एक तुम ही हो, आदि में भी तुम ही हो और अन्त में भी तुम ही हो॥ ३॥

मः १ ॥ न सूर ससि मंडलो ॥ न सपत दीप नह जलो ॥ अंन पउण थिरु न कुई ॥ एकु तुई एकु तुई ॥ ४ ॥

महला १॥ न सूर्यमण्डल, न चंद्र मण्डल, न ही सप्त द्वीप, न ही सागर, न ही अनाज और हवा कोई भी स्थिर नहीं। हे प्रभु! केवल तुम ही हो, तीनों कालों में एक तुम ही हो॥ ४॥

मः १ ॥ न रिजकु दसत आ कसे ॥ हमा रा एकु आस वसे ॥ असति एकु दिगर कुई ॥ एक तुई एकु तुई ॥ ५ ॥

महला १॥ जगत् के समस्त जीवों का भोजन पदार्थ उस प्रभु के सिवाय किसी अन्य के वश में नहीं है। हम सबको एक प्रभु की ही आशा है। शेष सब क्षणभंगुर है। हे प्रभु! एक तेरे सिवाय अन्य कोई दूसरा सदैव स्थिर नहीं है। तीनों कालों में केवल तुम ही हो॥ ५॥

मः १ ॥ परंदए न गिराह जर ॥ दरखत आब आस कर ॥ दिहंद सुई ॥ एक तुई एक तुई ॥ ६ ॥

महला १॥ परिंदों के न अपने घर हैं और न ही उनके पास धन है। वह जीने के लिए जल एवं वृक्षों में अपनी आशा रखते हैं। उन्हें भी आहार देने वाला एक प्रभु ही है। हे प्रभु! तीनों कालों में तुम ही हो। एक तू ही अटल है॥ ६॥

मः १ ॥ नानक लिलारि लिखिआ सोइ ॥ मेटि न साकै कोइ ॥ कला धरै हिरै सुई ॥ एकु तुई एकु तुई ॥ ७ ॥

महला १॥ हे नानक! इन्सान के माथे पर जो तकदीर के लेख परमात्मा ने लिख दिए हैं, उन्हें कोई भी मिटा नहीं सकता। हे प्रभु! एक तू ही जीवों में प्राण–कला को धारण करते हो, तुम ही उसे वापिस निकाल लेते हो। हे ठाकुर! तीनों कालों में तुम ही हो। एक तू ही अनश्वर है॥ ७॥

पउड़ी ॥ सचा तेरा हुकमु गुरमुखि जाणिआ ॥ गुरमती आपु गवाइ सचु पछाणिआ ॥ सचु तेरा दरबारु सबदु नीसाणिआ ॥ सचा सबदु वीचारि सचि समाणिआ ॥ मनमुख सदा कूड़िआर भरमि भुलाणिआ ॥ विसटा अंदरि वासु सादु न जाणिआ ॥ विणु नावै दुखु पाइ आवण जाणिआ ॥ नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ ॥ १३ ॥

पउड़ी॥ हे भगवान! तेरा हुक्म सदैव सत्य है और इसे गुरु द्वारा ही जाना जा सकता है। जो व्यक्ति गुरु के उपदेश द्वारा अपने अहंत्व को त्याग देता है, वह भगवान को पहचान लेता है। हे प्रभु! तेरा दरबार सत्य है और तेरा शब्द तेरे दरबार में जाने हेतु निशान है। जो व्यक्ति सत्य–नाम का चिंतन करता है, वह सत्य में ही समा जाता है। मनमुख सदैव झूठे हैं और भ्रम में पड़कर भटके हुए हैं। मरणोपरांत उनका निवास विष्टा में ही होता है क्योंकि अपने जीवन में कभी भी नाम के स्वाद को जाना नहीं होता अर्थात् उन्होंने कभी भी नाम–सिमरन नहीं किया होता। नाम के बिना वे बहुत दुःखी होते हैं। वे योनियों के चक्र में फँस कर जन्मते–मरते रहते हैं। हे नानक! ईश्वर स्वयं ही पारखी है, वह पापी एवं धर्मी की पहचान कर लेता है॥१३॥

सलोकु मः १ ॥ सीहा बाजा चरगा कुहीआ एना खवाले घाह ॥ घाहु खानि तिना मासु खवाले एहि चलाए राह ॥ नदीआ विचि टिबे देखाले थली करे असगाह ॥ कीड़ा थापि देइ पातिसाही लसकर करे सुआह ॥ जेते जीअ जीवहि लै साहा जीवाले ता कि असाह ॥ नानक जिउ जिउ सचे भावै तिउ तिउ देइ गिराह ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ यदि भगवान की इच्छा हो तो वह शेरों, बाजों, चीलों तथा कुईयों इत्यादि माँसाहारी पशु–पक्षियों को घास खिला देता है। जो घास खाने वाले पशु हैं, उनको वह माँस खिला देता है। वह जीवों को ऐसे मार्ग पर चला देता है। वह नदियों में टीले बनाकर दिखा देता है और रेगिस्तान में गहरा सागर बना देता है। वह चाहे तो तुच्छ जीव को भी साम्राज्य सौंप देता है और राजाओं की सशक्त सेना का वध करके राख बना देता है। जगत् में जितने भी जीव हैं वे सभी श्वास लेकर जीते हैं अर्थात् श्वासों के बिना जीवित नहीं रह सकते परन्तु यदि परमात्मा की इच्छा हो तो उन्हें श्वासों के बिना भी जीवित रख सकता है। हे नानक! जिस तरह सत्य प्रभु को अच्छा लगता है, वैसे ही वह जीवों को आहार देता है॥ १॥

मः १ ॥ इकि मासहारी इकि तिणु खाहि ॥ इकना छतीह अंम्रित पाहि ॥ इकि मिटीआ महि मिटीआ खाहि ॥ इकि पउण सुमारी पउण सुमारि ॥ इकि निरंकारी नाम आधारि ॥ जीवै दाता मरै न कोइ ॥ नानक मुठे जाहि नाही मनि सोइ ॥ २ ॥

महला १॥ कई जीव माँसाहारी हैं जैसे शेर, बाघ, चीते एवं बाज इत्यादि। कई जीव घास खाते हैं जैसे गाय, भैंस एवं घोड़े इत्यादि। कई जीव छत्तीस प्रकार के स्वादिष्ट भोजन खाते है जैसे मनुष्य। कई जीव मिट्टी में ही रहते हैं और मिट्टी ही खाते हैं। कई जीव पवन आहारी गिने जाते हैं। कई जीव निरंकार के पुजारी हैं और उन्हें नाम का ही आधार है। जीवनदाता प्रभु सदैव जीवित है। कोई भी जीव

भूखा नहीं मरता क्योंकि प्रभु सबको आहार देता है। हे नानक ! जो उस परमेश्वर को अपने हृदय में नहीं बसाते, वे मोह-माया के हाथों ठगे जाते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ पूरे गुर की कार करमि कमाईऐ ॥ गुरमती आपु गवाइ नामु धिआईऐ ॥ दूजी कारै लगि जनमु गवाईऐ ॥ विणु नावै सभ विसु पैझै खाईऐ ॥ सचा सबदु सालाहि सचि समाईऐ ॥ विणु सतिगुरु सेवे नाही सुखि निवासु फिरि फिरि आईऐ ॥ दुनीआ खोटी रासि कूड़ु कमाईऐ ॥ नानक सचु खरा सालाहि पति सिउ जाईऐ ॥ १४ ॥

पउड़ी॥ भाग्य से ही पूर्ण गुरु की सेवा की जाती है। गुरु की मति द्वारा हमें अपने अहंत्व को मिटाकर भगवान के नाम का ध्यान करते रहना चाहिए। धन-दौलत कमाने के कार्य में लगकर हम अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ ही गंवा देते हैं। नाम के सिवाय हमारा वस्त्र पहनना एवं भोजन ग्रहण करना सब कुछ ही विष खाने के समान है। अतः सत्यनाम की महिमा-स्तुति करने से ही सत्य में समाया जा सकता है। सतिगुरु की सेवा किए बिना मनुष्य का सुख में निवास नहीं होता और वह बार-बार जन्मता एवं मरता है। झूठे संसार में प्राणी झूठे कर्म करता रहता है। हे नानक ! निर्मल सत्य नाम का यशोगान करने से मनुष्य सत्य के दरबार में सम्मानपूर्वक संसार से जाता है॥ १४॥

सलोकु मः १ ॥ तुधु भावै ता वावहि गावहि तुधु भावै जलि नावहि ॥ जा तुधु भावहि ता करहि बिभूता सिंङी नादु वजावहि ॥ जा तुधु भावै ता पड़हि कतेबा मुला सेख कहावहि ॥ जा तुधु भावै ता होवहि राजे रस कस बहुतु कमावहि ॥ जा तुधु भावै तेग वगावहि सिर मुंडी कटि जावहि ॥ जा तुधु भावै जाहि दिसंतरि सुणि गला घरि आवहि ॥ जा तुधु भावै नाइ रचावहि तुधु भाणे तूं भावहि ॥ नानकु एक कहै बेनंती होरि सगले कूड़ु कमावहि ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ हे भगवान ! जब तुझे अच्छा लगता है तो मनुष्य संगीतमय बाजे बजाता और गाता है। जब तेरी इच्छा होती है तो वह जल में स्नान करता है। जब तुझे अच्छा लगता है तो प्राणी अपने शरीर पर विभूति मलता है और सिंगी नाद बजाता है। जब तुझे अच्छा लगता है तो मनुष्य कुरान पढ़ता है और मुल्ला और शेख कहलाया जाता है। हे नाथ ! जब तेरी इच्छा होती है, तो कई राजा बन जाते हैं और अधिकतर स्वादों का आनंद लेते हैं। हे ठाकुर ! जब तुझे उपयुक्त लगता है तो मनुष्य तलवार चलाते हैं और शीश को धड़ से काट फैंकते हैं। हे स्वामी ! जब तेरी इच्छा होती है तो लोग देश-देशांतरों में जाते हैं और अनेकों सूचनाएँ श्रवण करके घर लौट आते हैं। हे प्राणपति ! जब तुझे उपयुक्त लगता है, तो मनुष्य तेरे नाम में लीन हो जाता है और जब तेरी इच्छा होती है, वह तुझे अच्छा लगने लग जाता है। नानक एक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु ! तेरी इच्छा में चलने वालों के अलावा शेष सभी जीव झूठ ही कमाते हैं॥ १॥

मः १ ॥ जा तूं वडा सभि वडिआंईआ चंगै चंगा होई ॥ जा तूं सचा ता सभु को सचा कूड़ा कोइ न कोई ॥ आखणु वेखणु बोलणु चलणु जीवणु मरणा धातु ॥ हुकमु साजि हुकमै विचि रखै नानक सचा आपि ॥ २ ॥

महला १॥ हे ईश्वर ! जब तू महान है, तो सारी महानता तुझ से ही प्रकट होती है। तुम स्वयं भले हो और तुझसे भला ही होना है। जब तू स्वयं सत्य है तो जो तेरी पूजा करते हैं वह सभी सत्यवादी बन जाते हैं। तेरे सच्चे भक्त को कोई भी मनुष्य झूठा दिखाई नहीं देता। जीवों का कहना, देखना, बोलना, चलना, जीना एवं मरना इत्यादि यह तेरी माया खेल ही है। हे नानक ! सत्यस्वरूप परमात्मा स्वयं ही अपने हुक्म द्वारा सृष्टि रचना करता है और अपने हुक्म में ही समस्त प्राणियों को रखता है॥ २॥

पउड़ी ॥ सतिगुरु सेवि निसंगु भरमु चुकाईऐ ॥ सतिगुरु आखै कार सु कार कमाईऐ ॥ सतिगुरु होइ दइआलु त नामु धिआईऐ ॥ लाहा भगति सु सारु गुरमुखि पाईऐ ॥ मनमुखि कूड़ु गुबारु कूड़ु कमाईऐ ॥ सचे दै दरि जाइ सचु चवांईऐ ॥ सचै अंदरि महलि सचि बुलाईऐ ॥ नानक सचु सदा सचिआरु सचि समाईऐ ॥ १५ ॥

पउड़ी॥ यदि हम सतिगुरु की निष्काम सेवा करें तो भ्रम दूर हो जाते है। हमें वही कार्य करना चाहिए जो सतिगुरु करने के लिए कहते हैं। यदि सतिगुरु जी दयालु हो जाएँ, तो ही हम नाम सिमरन कर सकते हैं। मनमुख व्यक्ति के लिए अज्ञानता का अँधेरा बना रहता और वे झूठे धन की ही कमाई करते रहते हैं। जो व्यक्ति सत्य के दर सत्य प्रभु का नाम–सिमरन करता है, ऐसे सत्यवादी को सत्य प्रभु के आत्मस्वरूप में बुला लिया जाता है। हे नानक! जो व्यक्ति हमेशा ही सत्य–नाम का सिमरन करता रहता है, वही सत्यवादी है और वह सत्य में ही समा जाता है॥ १५॥

सलोकु मः १ ॥ कलि काती राजे कासाई धरमु पंख करि उडरिआ ॥ कूड़ु अमावस सचु चंद्रमा दीसै नाही कह चड़िआ ॥ हउ भालि विकुंनी होई ॥ आधेरै राहु न कोई ॥ विचि हउमै करि दुखु रोई ॥ कहु नानक किनि बिधि गति होई ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ कलियुग छुरी है और बादशाह कसाई है। धर्म पंख लगाकर दुनिया में से उड़ गया है अर्थात् कलियुग में धर्म का नाश हो गया है। झूठ की इस अमावस्या की रात्रि में सत्य का चाँद कहीं उदय हुआ दिखाई नहीं देता अर्थात हर तरफ झूठ ही विद्यमान है और सत्य का नाश हो गया है। मैं सत्य की खोज–तलाश करती हुई पागल हो गई हूँ, सारी दुनिया ही झूठ के अंधेरे में अहंकारवश दुखी होकर विलाप कर रही है। हे नानक! इस झूठ से किस विधि द्वारा जीवों की मुक्ति होगी?॥ १॥

मः ३ ॥ कलि कीरति परगटु चानणु संसारि ॥ गुरमुखि कोई उतरै पारि ॥ जिस नो नदरि करे तिसु देवै ॥ नानक गुरमुखि रतनु सो लेवै ॥ २ ॥

महला ३॥ कलियुग में भगवान की महिमा दुनिया में ज्ञान रूपी प्रकाश प्रगट कर देती है। कोई विरला गुरमुख ही भवसागर को तर कर पार होता है। हे नानक! जिस व्यक्ति पर भगवान अपनी कृपा–दृष्टि करता है, उसे ही अपनी महिमा की देन प्रदान करता है किन्तु गुरमुख ही नाम रूपी रत्न प्राप्त करता है॥ २॥

पउड़ी ॥ भगता तै सैसारीआ जोड़ु कदे न आइआ ॥ करता आपि अभुलु है न भुलै किसै दा भुलाइआ ॥ भगत आपे मेलिअनु जिनी सचो सचु कमाइआ ॥ सैसारी आपि खुआइअनु जिनी कूड़ु बोलि बोलि बिखु खाइआ ॥ चलण सार न जाणनी कामु करोधु विसु वधाइआ ॥ भगत करनि हरि चाकरी जिनी अनदिनु नामु धिआइआ ॥ दासनि दास होइ कै जिनी विचहु आपि गवाइआ ॥ ओना खसमै कै दरि मुख उजले सचै सबदि सुहाइआ ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ भगवान के भक्तों एवं दुनिया के जीवों में मिलाप कभी भी योग्य नहीं बना। भगवान स्वयं अचूक है। वह किसी दूसरे के भुलाने से भी भूल नहीं करता। जिन्होंने सत्यवादी बनकर सत्य की ही साधना की है ऐसे भक्तों को भगवान ने स्वयं ही अपने साथ मिलाया हुआ है। जिन लोगों ने झूठ बोल–बोलकर माया रूपी विष खाया है, ऐसे लोगों को भगवान ने स्वयं ही कुमार्गगामी कर दिया है। जिन्होंने दिन–रात नाम का ही ध्यान किया है, ऐसे भक्तजन ही भगवान की भक्ति एवं सेवा करते रहते हैं। जिन्होंने प्रभु के दासों के दास बनकर अपने अन्तर्मन से अहंकार को मिटा दिया है, मालिक–प्रभु के दरबार में उनके ही मुख उज्ज्वल होते हैं और वे सत्य नाम द्वारा सत्य के दरबार में बड़ी शोभा प्राप्त करते हैं॥ १६॥

सलोकु मः १ ॥ सबाही सालाह जिनी धिआइआ इक मनि ॥ सेई पूरे साह वखतै उपरि लड़ि मुए ॥ दूजै बहुते राह मन कीआ मती खिंडीआ ॥ बहुतु पए असगाह गोते खाहि न निकलहि ॥ तीजै मुही गिराह भुख तिखा दुइ भउकीआ ॥ खाधा होइ सुआह भी खाणे सिउ दोसती ॥ चउथै आई ऊंघ अखी मीटि पवारि गइआ ॥ भी उठि रचिओनु वादु सै वरि्आ की पिड़ बधी ॥ सभे वेला वखत सभि जे अठी भउ होइ ॥ नानक साहिबु मनि वसै सचा नावणु होइ ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ जो व्यक्ति प्रातः काल एकाग्रचित होकर ईश्वर का यश करते और उसे स्मरण करते हैं, वही पूर्ण सम्राट हैं और सही वक्त पर लड़कर मृत्यु को प्राप्त हुए हैं। दूसरे प्रहर में मन की वृत्ति बिखर जाती है और मन अनेक मार्गों पर दौड़ता है। मनुष्य बहुत सारे धंधों के झंझटों रूपी अथाह सागर में गिर जाता है और ऐसे गोते खाता है कि उसमें से बाहर निकल ही नहीं सकता। तीसरे प्रहर में जब भूख और प्यास रूपी दोनों कुत्ते भौंकने लग जाते हैं तो मनुष्य को उनके मुँह में भोजन एवं पानी डालना पड़ता है, जब पहला भोजन का ग्रास हजम हो जाता है तो और भोजन खाने की लालसा उत्पन्न होती है। चौथे प्रहर में मनुष्य को निद्रा आ जाती है, वह अपने नेत्र बन्द कर लेता है और स्वप्न मण्डलों में चला जाता है। फिर निद्रा से उठकर, वह पुनः विवाद खड़ा कर देता है और यूं अखाड़ा बनता है, जिस तरह उसने सैकड़ों वर्ष जीना है। यद्यपि मनुष्य के मन में आठों प्रहर परमात्मा का भय बना रहे तो उसके लिए सभी वक्त नाम-सिमरन हेतु शुभ हैं। हे नानक! यदि भगवान मनुष्य के हृदय में निवास कर ले तो उसका यह सच्चा स्नान हो जाता है॥१॥

मः २ ॥ सेई पूरे साह जिनी पूरा पाइआ ॥ अठी वेपरवाह रहनि इकतै रंगि ॥ दरसनि रूपि अथाह विरले पाईअहि ॥ करमि पूरै पूरा गुरू पूरा जा का बोलु ॥ नानक पूरा जे करे घटै नाही तोलु ॥ २ ॥

महला २॥ वही व्यक्ति पूर्ण शाह हैं, जिन्होंने पूर्ण प्रभु को पा लिया है। वह दुनिया से बेपरवाह होकर आठों प्रहर एक परमेश्वर के प्रेम में मग्न रहते हैं। ऐसे विरले पुरुष हैं जो अनंत परमात्मा के दर्शन प्राप्त करते हैं। बड़ी तकदीर से ही पूर्ण गुरु मिलता है, जिस गुरु के सारे ही किए वचन पूर्ण होते हैं। हे नानक! यदि गुरु जी किसी सेवक को सम्पूर्ण बना दें तो उसका विवेक कम नहीं होता॥ २॥

पउड़ी ॥ जा तूं ता किआ होरि मै सचु सुणाईऐ ॥ मुठी धंधै चोरि महलु न पाईऐ ॥ एनै चिति कठोरि सेव गवाईऐ ॥ जितु घटि सचु न पाइ सु भंनि घड़ाईऐ ॥ किउ करि पूरै वटि तोलि तुलाईऐ ॥ कोइ न आखै घटि हउमै जाईऐ ॥ लईअनि खरे परखि दरि बीनाईऐ ॥ सउदा इकतु हटि पूरै गुरि पाईऐ ॥ १७ ॥

पउड़ी॥ हे मेरे प्रभु! मैं सत्य कहता हूँ जब तुम मेरे हो, तो मुझे शेष और क्या चाहिए? जिस जीव-स्त्री को लौकिक कार्यों रूपी चोरों ने लूट लिया है, वह प्रभु के आत्म-स्वरूप को प्राप्त नहीं कर सकती। उसने अपने निष्ठुर हृदय के कारण सेवा-भक्ति का अवसर गंवा दिया है। जिसके हृदय में सत्यस्वरूप परमात्मा का निवास नहीं होता उसको नष्ट करके नए तरीके से बनाया जाता है। अर्थात् उसका जन्म-मरण होता रहता है। ऐसा व्यक्ति अपने कर्मों का लेखा देते वक्त पूरे माप सहित तोलने से कैसे पूरा तोला जाएगा? यदि जीव का अहंकार दूर हो जाए तो उसके कर्मों के तोल को कोई भी कम नहीं कहेगा। सभी जीव चतुर प्रभु के दरबार पर परखे जाते हैं कि वह धर्मात्मा है अथवा पापी हैं। नाम का सौदा एक सत्संग रूपी दुकान से ही मिलता है। यह पूर्ण गुरु द्वारा ही प्राप्त होता है॥ १७॥

सलोक मः २ ॥ अठी पहरी अठ खंड नावा खंडु सरीरु ॥ तिसु विचि नउ निधि नामु एकु भालहि गुणी गहीरु ॥ करमवंती सालाहिआ नानक करि गुरु पीरु ॥ चउथै पहरि सबाह कै सुरतिआ उपजै चाउ ॥ तिना दरीआवा सिउ दोसती मनि मुखि सचा नाउ ॥ ओथै अंम्रितु वंडीऐ करमी होइ पसाउ ॥ कंचन काइआ कसीऐ वंनी चड़ै चड़ाउ ॥ जे होवै नदरि सराफ की बहुड़ि न पाई ताउ ॥ सती पहरी सतु भला बहीऐ पड़िआ पासि ॥ ओथै पापु पुंनु बीचारीऐ कूड़ै घटै रासि ॥ ओथै खोटे सटीअहि खरे कीचहि साबासि ॥ बोलणु फादलु नानका दुखु सुखु खसमै पासि ॥ १ ॥

श्लोक महला २॥ दिन–रात के वक्त को आठ भागों में विभक्त किया हुआ है, जिन्हें आठ प्रहर कहा जाता है। एक प्रहर तीन घण्टों का होता है। इन आठों प्रहरों में से एक प्रहर का संबंध शरीर से है। इस प्रहर को अगली तुकों में प्रातः काल का चतुर्थ प्रहर कहा गया है। उस शरीर में अद्वितीय परमात्मा के नाम की नवनिधि है। भले और गंभीर पुरुष उन निधियों को ढूँढते हैं। हे नानक! भाग्यशाली मनुष्य गुरु अथवा पीर धारण करके भगवान की महिमा गायन करते हैं। दिन के चौथे प्रहर प्रातः काल नाम में वृत्ति लगाने वाले व्यक्तियों के मन में उत्साह उत्पन्न होता है। उनकी मित्रता नदियों से होती है अर्थात् सत्संग रूपी नदिया पर जाकर स्नान है और उनके मन एवं मुख में सत्य नाम विद्यमान है। उस सत्संग में अमृत रूप ईश्वर का नाम बांटा जाता है और भाग्यशालियों को नाम की देन प्राप्त होती है। उनके सोने जैसे अर्थात् शुद्ध तन को जब नाम रूपी कसौटी लगाई जाती है तो उनके तन को भक्ति का सुन्दर रंग चढ़ जाता है। जब सतिगुरु रूपी सर्राफ की उन पर कृपा–दृष्टि हो जाती है तो उन्हें जन्म–मरण रूपी कष्ट नहीं मिलता। शेष सातों प्रहरों में सत्य बोलना एवं विद्वानों के पास बैठना अति उत्तम है। वहाँ पाप एवं पुण्य की पहचान होती है और झूठ की पूँजी कम होती है। वहाँ खोटे पुरुष दूर फैंके जाते हैं और भले पुरुषों को शाबाशी मिलती है। हे नानक! जीवों को दुःख एवं सुख भगवान स्वयं ही देता है और मनुष्य का किसी प्रकार का शिकवा करना व्यर्थ है॥ १॥

मः २ ॥ पउणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥ दिनसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥ चंगिआईआ बुरिआईआ वाचे धरमु हदूरि ॥ करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥ जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥ नानक ते मुख उजले होर केती छुटी नालि ॥ २ ॥

महला २॥ सारी दुनिया का गुरु पवन है, जल पिता है और पृथ्वी बड़ी माता है। दिन एवं रात्रि दोनों उपपिता एवं उपमाता है, जिनकी गोद में सारी दुनिया खेल रही है। परलोक में भगवान के समक्ष यमराज जीवों के शुभ–अशुभ कर्मों का विवेचन करता है। अपने–अपने कर्मों के अनुसार कुछ जीव ईश्वर के निकट एवं कुछ जीव दूर होते हैं। जिन्होंने भगवान का नाम–सिमरन किया है, वे पूजा–तपस्या इत्यादि की मेहनत को साकार कर गए हैं। हे नानक! ऐसे प्राणियों के चेहरे उज्ज्वल हुए हैं और अनेकों ही उनके साथ वाले मुक्ति प्राप्त कर गए हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ सचा भोजनु भाउ सतिगुरि दसिआ ॥ सचे ही पतीआइ सचि विगसिआ ॥ सचै कोटि गिरांइ निज घरि वसिआ ॥ सतिगुरि तुठै नाउ प्रेमि रहसिआ ॥ सचै दै दीबाणि कूड़ि न जाईऐ ॥ झूठो झूठु वखाणि सु महलु खुआईऐ ॥ सचै सबदि नीसाणि ठाक न पाईऐ ॥ सचु सुणि बुझि वखाणि महलि बुलाईऐ ॥ १८ ॥

पउड़ी॥ सतिगुरु ने जिस व्यक्ति को यह ज्ञान बता दिया है कि भगवान का प्रेम ही खाने योग्य सत्य–भोजन है, वही व्यक्ति सत्य प्रभु में निष्ठावान हुआ है और सत्य में समाकर फूल की तरह खिल

गया है। उसके गांव रूपी शरीर में जो भगवान का आत्मस्वरूप रूपी किला है, वहाँ स्थित हो गया है। सतिगुरु ने प्रसन्न होकर उसे नाम प्रदान किया है और वह भगवान के प्रेम से कृतार्थ हो गया है। कोई भी व्यक्ति सत्य के दरबार में झूठ की कमाई करके नहीं जा सकता। जो व्यक्ति केवल झूठ ही बोलता रहता है, वह आत्मस्वरूप में नहीं जा सकता। जो व्यक्ति सत्य–नाम का परवाना लेकर जाता है, उसे आत्मस्वरूप में जाने से कोई भी रोक नहीं सकता। जो व्यक्ति भगवान के सत्यनाम को सुनता, समझता एवं उसे जपता है, वह आत्म–स्वरूप में निमंत्रित कर लिया जाता है॥१८॥

सलोकु मः १ ॥ पहिरा अगनि हिवै घरु बाधा भोजनु सारु कराई ॥ सगले दूख पाणी करि पीवा धरती हाक चलाई ॥ धरि ताराजी अंबरु तोली पिछै टंकु चढ़ाई ॥ एवडु वधा मावा नाही सभसै नथि चलाई ॥ एता ताणु होवै मन अंदरि करी भि आखि कराई ॥ जेवडु साहिबु तेवड दाती दे दे करे रजाई ॥ नानक नदरि करे जिसु उपरि सचि नामि वडिआई ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ यदि मैं अग्नि की पोशाक धारण कर लूँ, हिम में अपना घर बना लूँ और लोहे को अपना आहार बना लूँ, समस्त दुखों को यदि मैं जल की भाँति पान कर लूँ और धरती को पशुओं की भाँति हाँक कर चलाऊँ। आकाश को तराजू में रखकर तोलूँ और यदि मैं दूसरी ओर चार माशे के तोल से तोलूँ, यदि मैं अपने शरीर को इतना बड़ा कर लूँ कि कहीं भी समा न सकूँ और यदि मैं समस्त जीवों के नाक में नुकेल डालकर अपने हुक्म में चलाता रहूँ, यदि मेरे मन में इतना बल हो कि इस तरह की बातें मैं करूँ और अपने कथन से दूसरों से भी कराऊँ पर यह सब कुछ व्यर्थ है। जितना महान परमेश्वर है उतने महान ही उसके दान हैं। वह अपनी इच्छानुसार जीवों को दान देता है। हे नानक! जिस पर प्रभु अपनी कृपा–दृष्टि करता है, उसको सत्य नाम की महानता प्राप्त होती है॥१॥

मः २ ॥ आखणु आखि न रजिआ सुनणि न रजे कंन ॥ अखी देखि न रजीआ गुण गाहक इक वंन ॥ भुखिआ भुख न उतरै गली भुख न जाइ ॥ नानक भुखा ता रजै जा गुण कहि गुणी समाइ ॥ २ ॥

महला २॥ इन्सान का मुँह बातें कह–कह कर तृप्त नहीं होता, उसके कान बातें अथवा संगीत सुन–सुनकर संतुष्ट नहीं होते और उसकी आँखें सुन्दर रूप देख–देखकर तृप्त नहीं होतीं। प्रत्येक अंग एक प्रकार की विशेषता का ग्राहक है। भूखों की भूख निवृत्त नहीं होती। मौखिक बातों से भूख दूर नहीं होती। हे नानक! भूखा मनुष्य तभी तृप्त होता है यदि वह गुणों के भण्डार परमात्मा की महिमा करके उसमें समा जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ विणु सचे सभु कूड़ु कूड़ु कमाईऐ ॥ विणु सचे कूड़िआरु बंनि चलाईऐ ॥ विणु सचे तनु छारु छारु रलाईऐ ॥ विणु सचे सभ भुख जि पैझै खाईऐ ॥ विणु सचे दरबारु कूड़ि न पाईऐ ॥ कूड़ै लालचि लगि महलु खुआईऐ ॥ सभु जगु ठगिओ ठगि आईऐ जाईऐ ॥ तन महि त्रिसना अगि सबदि बुझाईऐ ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ सत्य नाम के अलावा सभी कार्य झूठे हैं और झूठ का ही कर्म करते हैं। सत्यनाम के सिवाय अन्य झूठे कार्य करने वाले लोगों को यमदूत बांधकर यमपुरी ले जाते हैं। सत्य नाम के अलावा यह तन मिट्टी समान है और मिट्टी में ही मिल जाता है। सत्यनाम के सिवाय मनुष्य जितना बढ़िया पहनता एवं खाता है, उससे उसकी भूख में ही वृद्धि होती है। मनुष्य सत्य नाम के बिना झूठे कार्य करके प्रभु के दरबार को प्राप्त नहीं कर सकता। सच्चे परमात्मा के अलावा झूठे लोग ईश्वर के मन्दिर

को प्राप्त नहीं होते। झूठे लोभ से सम्मिलित होकर मनुष्य प्रभु के मन्दिर को गंवा देता है। सारा जगत् धोखेबाज माया ने छल लिया है और प्राणी योनियों में फँसकर जन्म लेता और मरता रहता है। प्राणी के तन में तृष्णा की अग्नि विद्यमान है। यह प्रभु के नाम से ही बुझाई जा सकती है॥ १६॥

सलोक मः १ ॥ नानक गुरु संतोखु रुखु धरमु फुलु फल गिआनु ॥ रसि रसिआ हरिआ सदा पकै करमि धिआनि ॥ पति के साद खादा लहै दाना कै सिरि दानु ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ हे नानक! गुरु संतोष रूपी वृक्ष है, इस वृक्ष को धर्म रूपी फूल लगता है और ज्ञान रूपी फल लगते हैं। हरि-रस रूपी जल से सींचा हुआ यह वृक्ष सदैव ही हरा-भरा रहता है। भगवान की कृपा से ध्यान द्वारा यह ज्ञान रूपी फल पकते हैं। इस ज्ञान रूपी फल को खाने वाला मनुष्य पति-प्रभु के मिलाप के आनंद को प्राप्त करता है। ज्ञान रूपी दान ही समस्त दानों में से बड़ा दान है॥ १॥

मः १ ॥ सुइने का बिरखु पत परवाला फुल जवेहर लाल ॥ तितु फल रतन लगहि मुखि भाखित हिरदै रिदै निहालु ॥ नानक करमु होवै मुखि मसतकि लिखिआ होवै लेखु ॥ अठिसठि तीरथ गुर की चरणी पूजै सदा विसेखु ॥ हंसु हेतु लोभु कोपु चारे नदीआ अगि ॥ पवहि दझहि नानका तरीऐ करमी लगि ॥ २ ॥

महला १॥ गुरु सोने का वृक्ष है, जिसके पत्ते मूंगे हैं और इसके पुष्प जवाहर एवं माणिक हैं। उस पौधे को गुरु के मुखारविंद के वचन की मणि का फल लगा हुआ है। जो व्यक्ति गुरु के वचनों को अपने हृदय में बसा लेता है, वह कृतार्थ हो जाता है। हे नानक! गुरु के शब्द रूपी फल उस व्यक्ति के मुँह में ही पड़ते हैं, जिस पर भगवान की कृपा होती है और उसके माथे पर तकदीर का शुभ लेख लिखा होता है। गुरु के चरणों में आने से अठसठ तीर्थों के स्नान से भी अधिक फल मिलता है। अतः हमेशा ही गुरु के चरणों की पूजा करनी चाहिए। हे नानक! हिंसा, मोह, लालच एवं क्रोध यह चारों ही अग्नि की नदियाँ हैं। इनमें पड़ने से प्राणी दग्ध हो जाता है। इन नदियों में से वही मनुष्य पार होते हैं जो भगवान की कृपा से नाम-सिमरन में लग जाते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ जीवदिआ मरु मारि न पछोताईऐ॥ झूठा इहु संसारु किनि समझाईऐ ॥ सचि न धरे पिआरु धंधै धाईऐ ॥ कालु बुरा खै कालु सिरि दुनीआईऐ ॥ हुकमी सिरि जंदारु मारे दाईऐ ॥ आपे देइ पिआरु मंनि वसाईऐ ॥ मुहतु न चसा विलंमु भरीऐ पाईऐ ॥ गुर परसादी बुझि सचि समाईऐ ॥ २० ॥

पउड़ी॥ जीवित ही मर जाओ अर्थात् अपने अहंकार को नष्ट कर दो। अहंकार को नष्ट करने के उपरांत पश्चाताप नहीं होगा। यह दुनिया झूठी है, परन्तु किसी विरले ने ही यह बात गुरु से समझी है। मनुष्य सत्यनाम से प्रेम नहीं करता और दुनिया के धंधों में लगकर भटकता रहता है। यम बहुत निर्दयी है और जीवों का नाश करने वाला है। यह दुनिया के लोगों पर सवार है। ईश्वर के आदेश से यमदूत अवसर पाकर मनुष्य के सिर पर डण्डा मारता है। परमेश्वर स्वयं ही अपना प्रेम प्रदान करता है और इसे प्राणी के मन में वास कराता है। मनुष्य का शरीर त्यागने में मुहूर्त अथवा क्षण भर का विलम्ब नहीं होता। गुरु की कृपा से इस भेद को समझ कर प्राणी सत्य में ही समा जाता है॥ २०॥

सलोकु मः १ ॥ तुमी तुमा विसु अकु धतूरा निमु फलु॥ मनि मुखि वसहि तिसु जिसु तूं चिति न आवही॥ नानक कहीऐ किसु हंढनि करमा बाहरे ॥ १॥

श्लोक महला १॥ हे प्रभु! जिस व्यक्ति को तू हृदय में याद नहीं आता, उस व्यक्ति के मन एवं मुँह में तुंबी, विष, आक, धतूरा एवं नीम फल जैसी कड़वाहट बनी रहती है। हे नानक! ऐसे भाग्यहीन व्यक्ति भटकते रहते हैं और उनकी दुखद दशा किसे बताई जाए॥ १॥

मः १॥ मति पंखेरू किरतु साथि कब उतम कब नीच ॥ कब चंदनि कब अकि डालि कब उची परीति ॥ नानक हुकमि चलाईऐ साहिब लगी रीति ॥ २ ॥

महला १॥ आदमी की मति एक पक्षी है। आदमी की किस्मत उस पक्षी के पंख हैं जो उसके साथ रहते हैं। यह पक्षी पंखों से उड़कर कभी उत्तम एवं कभी नीच स्थानों पर बैठता है। यह कभी स्वर्ग रूपी चंदन के वृक्ष और कभी नरक रूपी आक की डाली पर बैठता है। यह कभी भगवान से भी प्रेम कर लेता है। हे नानक! भगवान प्राणियों को अपनी इच्छानुसार चलाता है। यह रीति आदिकाल से प्रचलित है॥ २॥

पउड़ी ॥ केते कहहि वखाण कहि कहि जावणा ॥ वेद कहहि वखिआण अंतु न पावणा ॥ पड़िऐ नाही भेदु बुझिऐ पावणा ॥ खटु दरसन कै भेखि किसै सचि समावणा ॥ सचा पुरखु अलखु सबदि सुहावणा ॥ मंने नाउ बिसंख दरगह पावणा ॥ खालक कउ आदेसु ढाढी गावणा ॥ नानक जुगु जुगु एकु मंनि वसावणा ॥ २१॥

पउड़ी॥ कितने ही लोग भगवान के गुणों का बखान कर रहे हैं और कितने ही लोग बखान कर करके दुनिया से चले गए हैं। वेद भगवान के गुणों का बखान करते हैं परन्तु उसके गुणों का अंत नहीं पा सकते। पढ़ने से उसका भेद नहीं पाया जा सकता। उसका भेद ज्ञान से ही पाया जाता है। षट्दर्शन के छः मत्त हैं परन्तु उनके द्वारा कोई विरला पुरुष ही परमात्मा में लीन होता है। जिस प्राणी ने गुरु की शिक्षा से सच्चा अलख पुरुष पाया है, वह शोभायमान है। जिन्होंने अनन्त ईश्वर के नाम का चिंतन–मनन किया है, वह उसके दरबार में जाता है। मैं ढाडी हूँ और सृष्टि के सृजनहार को प्रणाम करता उसका यशोगान करता रहता हूँ। हे नानक! वह एक ईश्वर प्रत्येक युग में विद्यमान है और उसे ही अपने मन में बसाना चाहिए॥ २१॥

सलोकु महला २ ॥ मंती होइ अठूहिआ नागी लगै जाइ ॥ आपण हथी आपणै दे कूचा आपे लाइ ॥ हुकमु पइआ धुरि खसम का अती हू धका खाइ ॥ गुरमुख सिउ मनमुखु अड़ै डुबै हकि निआइ ॥ दुहा सिरिआ आपे खसमु वेखै करि विउपाइ ॥ नानक एवै जाणीऐ सभ किछु तिसहि रजाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला २॥ यदि कोई आदमी मन्त्र तो बिच्छू का जानता हो, लेकिन सर्पों को जाकर पकड़ ले तो वह अपने हाथों से स्वयं अपने आपको अग्नि का लूका लगा लेता है। आदिकाल से ही ईश्वर का यह हुक्म हुआ है कि जो बुरा करता है वह भारी ठोकर खाता है। जो मनमुख इन्सान गुरमुख से विरोध करता है, वह नष्ट हो जाता है। यही सच्चा न्याय है। लोक एवं परलोक दोनों तरफ का न्याय करने वाला मालिक–प्रभु स्वयं ही न्याय करके देखता है। हे नानक! इसे इस तरह समझो कि सबकुछ परमात्मा की इच्छानुसार ही हो रहा है॥ १॥

महला २ ॥ नानक परखे आप कउ ता पारखु जाणु ॥ रोगु दारू दोवै बुझै ता वैदु सुजाणु ॥ वाट न करई मामला जाणै मिहमाणु ॥ मूलु जाणि गला करे हाणि लाए हाणु ॥ लबि न चलई सचि रहै सो विसटु परवाणु ॥ सरु संधे आगास कउ किउ पहुचै बाणु ॥ अगै ओहु अगंमु है वाहेदड़ु जाणु ॥ २ ॥

महला २॥ हे नानक! यदि मनुष्य अपने आप को परखे, केवल तभी उसे पारखी समझो। यदि मनुष्य रोग एवं औषधि दोनों को समझता हो तो ही वह चतुर वैद्य है। मानव को चाहिए कि वह इस दुनिया में स्वयं को एक अतिथि समझे तथा धर्म–मार्ग पर चलता हुआ दूसरों से विवाद मत करे। वह जगत् के मूल प्रभु को समझकर दूसरों से प्रभु बारे विचार–विमर्श करे। वह दुनिया में नाम–सिमरन

करने आया है तथा उसे कामादिक हानिकारक पापों को नष्ट कर देना चाहिए। जो लालच के मार्ग पर नहीं चलता और सत्य में वास करता है, वह मध्यस्थ ही प्रभु के दरबार में स्वीकृत होता है। यदि बाण आकाश को मारा जाए, वह बाण किस तरह वहाँ पहुँच सकता है? ऊपर वह आकाश अगम्य है, इसलिए समझ लीजिए कि बाण उलटकर बाण चलाने वाले पर ही लगेगा॥ २॥

पउड़ी ॥ नारी पुरख पिआरु प्रेमि सीगारीआ ॥ करनि भगति दिनु राति न रहनी वारीआ ॥ महला मंझि निवासु सबदि सवारीआ ॥ सचु कहनि अरदासि से वेचारीआ ॥ सोहनि खसमै पासि हुकमि सिधारीआ ॥ सखी कहनि अरदासि मनहु पिआरीआ ॥ बिनु नावै धिगु वासु फिटु सु जीविआ ॥ सबदि सवारीआसु अंम्रितु पीविआ ॥ २२ ॥

पउड़ी॥ जीव–स्त्रियाँ अपने प्रभु–पति से मुहब्बत करती हैं और उन्होंने प्रेम का शृंगार किया हुआ है। दिन–रात वह प्रभु की भक्ति करती हैं और भक्ति करने से वह रुकती नहीं। परमेश्वर के मन्दिर में उनका निवास है और प्रभु के नाम से वह संवरी हुई हैं। वह विनीत होकर सच्चे हृदय से प्रार्थना करती हैं। वह अपने स्वामी के पास सुन्दर लगती हैं और पति–प्रभु के हुक्म में उसके पास पहुँची हैं। वह प्रभु को श्रद्धा से प्रेम करती है। वे सभी सखियां प्रभु के समक्ष प्रार्थना करती हैं। प्रभु–नाम के बिना मनुष्य का जीवन धिक्कार–योग्य है और उसका निवास भी धिक्कार योग्य है। जो जीव–स्त्री नाम द्वारा संवर गई है उसने ही नाम रूपी अमृत पान कर लिया है॥ २२॥

सलोकु मः १ ॥ मारू मीहि न त्रिपतिआ अगी लहै न भुख ॥ राजा राजि न त्रिपतिआ साइर भरे किसुक ॥ नानक सचे नाम की केती पुछा पुछ ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ जैसे मरुस्थल वर्षा से तृप्त नहीं होता वैसे ही अग्नि की भूख लकड़ियों से दूर नहीं होती। कोई भी सम्राट साम्राज्य से तृप्त नहीं होता और सागर को कभी कोई नहीं भर सका। हे नानक! भक्तजनों को सत्य नाम की कितनी भूख लगी रहती है, वह बताई नहीं जा सकती अर्थात् भक्त नाम जप–जप कर तृप्त ही नहीं होते॥१॥

महला २ ॥ निहफलं तसि जनमसि जावतु ब्रहम न बिंदते ॥ सागरं संसारसि गुर परसादी तरहि के ॥ करण कारण समरथु है कहु नानक बीचारि ॥ कारणु करते वसि है जिनि कल रखी धारि ॥ २ ॥

महला २॥ जब तक इन्सान को परमेश्वर का ज्ञान नहीं होता उसका जीवन व्यर्थ है। गुरु की कृपा से विरले पुरुष ही संसार सागर से पार होते हैं। नानक विचार कर कहते हैं कि परमेश्वर सब कार्य करने में समर्थ है। जगत् का कारण सृजनहार प्रभु के वश में है और प्रभु की कला ने इस जगत् को धारण किया हुआ है॥ २॥

पउड़ी ॥ खसमै कै दरबारि ढाढी वसिआ ॥ सचा खसमु कलाणि कमलु विगसिआ ॥ खसमहु पूरा पाइ मनहु रहसिआ ॥ दुसमन कढे मारि सजण सरसिआ ॥ सचा सतिगुरु सेवनि सचा मारगु दसिआ ॥ सचा सबदु बीचारि कालु विधउसिआ ॥ ढाढी कथे अकथु सबदि सवारिआ ॥ नानक गुण गहि रासि हरि जीउ मिले पिआरिआ ॥ २३ ॥

पउड़ी॥ भाट (यशोगान करने वाला) प्रभु के दरबार में वास करता है। सत्यस्वरूप परमेश्वर की महिमा गायन करने से उसका हृदय कंवल प्रफुल्लित हो गया है। ईश्वर से पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने से अपने हृदय में वह परम प्रसन्न हो गया है। उसने अपने हृदय में काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार इत्यादि शत्रुओं को मार कर बाहर निकाल दिया है और उसके सज्जन–सत्य, संतोष, दया एवं धर्म इत्यादि

प्रसन्न हो गए हैं। सच्चे सतिगुरु ने उसे प्रभु–मिलन का सन्मार्ग बता दिया है। सत्यस्वरूप ब्रह्म का चिन्तन करने से उसने काल (मृत्यु) को नष्ट कर दिया है। यशोगान करने वाला चारण अकथनीय प्रभु की महिमा बखान करता है और प्रभु नाम से शृंगारा गया है अर्थात् उसका जन्म सफल हो गया है। हे नानक! शुभ गुणों की पूँजी पकड़ कर रखने से उसने पूज्य परमेश्वर हरि से भेंट कर ली है॥ २३॥

सलोकु मः १ ॥ खतिअहु जंमे खते करनि त खतिआ विचि पाहि ॥ धोते मूलि न उतरहि जे सउ धोवण पाहि ॥ नानक बखसे बखसीअहि नाहि त पाही पाहि ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ हम जीवों के जन्म पूर्वकृत किए पापों के कारण हुए हैं। हम जन्म लेकर अब फिर पाप किए जा रहे हैं और अगले जन्मों में भी हम पाप कर्मों में ही पड़ेंगे। हमारे यह पाप धर्म–कर्म करने से बिल्कुल ही नहीं मिटते, चाहे हम हजारों बार तीर्थ–स्नान करके पाप धोने का प्रयास ही कर लें। हे नानक! यदि प्रभु क्षमादान कर दें तो यह पाप क्षमा कर दिए जाते हैं, अन्यथा अत्यन्त प्रताड़ना मिलती है॥१॥

मः १ ॥ नानक बोलणु झखणा दुख छडि मंगीअहि सुख ॥ सुखु दुखु दुइ दरि कपड़े पहिरहि जाइ मनुख ॥ जिथै बोलणि हारीऐ तिथै चंगी चुप ॥ २ ॥

महला १॥ हे नानक! यदि हम भगवान से दुखों को छोड़कर सुख ही माँगें, तो यह बोलना व्यर्थ ही है। सुख एवं दुख यह दोनों ही भगवान के दरबार से मिले हुए वस्त्र हैं, जिन्हें मानव दुनिया में आकर पहनता है। जहाँ बोलने से पराजित ही होना है, वहाँ चुप रहने में ही भलाई है॥ २॥

पउड़ी ॥ चारे कुंडा देखि अंदरु भालिआ ॥ सचै पुरखि अलखि सिरजि निहालिआ ॥ उझड़ि भुले राह गुरि वेखालिआ ॥ सतिगुर सचे वाहु सचु समालिआ ॥ पाइआ रतनु घराहु दीवा बालिआ ॥ सचै सबदि सलाहि सुखीए सच वालिआ ॥ निडरिआ डरु लगि गरबि सि गालिआ ॥ नावहु भुला जगु फिरै बेतालिआ ॥ २४ ॥

पउड़ी॥ चारों दिशाओं में ढूँढने के पश्चात मैंने परमात्मा को अपने हृदय में ही ढूँढ लिया है। उस अलक्ष्य, सद्पुरुष एवं सृष्टिकर्त्ता को देखकर कृतार्थ हो गया हूँ। मैं उजाड़ संसार में भटक गया था लेकिन गुरदेव ने मुझे सद्मार्ग दिखा दिया है। सत्य के पुंज सतिगुरु धन्य हैं, जिनकी दया से मैंने सत्य स्वरूप परमात्मा की आराधना की है। सतिगुरु ने मेरे अन्तर्मन में ही ज्ञान रूपी दीपक प्रज्वलित कर दिया है, जिससे मैंने अपने हृदय–घर में नाम रूपी रत्न को पा लिया है। गुरु के शब्द द्वारा सत्यस्वरूप परमात्मा की महिमा–स्तुति करके मैं सुखी हो गया हूँ और सत्यवादी बन गया हूँ। जिन लोगों को प्रभु का भय नहीं, उन्हें यम का भय लगा रहता है और वे अहंकार में ही नष्ट हो जाते हैं। नाम को विस्मृत करके संसार प्रेत की भाँति भटकता रहता है॥ २४॥

सलोकु मः ३ ॥ भै विचि जंमै भै मरै भी भउ मन महि होइ ॥ नानक भै विचि जे मरै सहिला आइआ सोइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ मानव भय में जन्म लेता है और भय में ही प्राण त्याग देता है। जन्म–मरण के उपरांत भी उसके मन में भय ही बना रहता है। हे नानक! यदि मानव प्रभु के भय में मरता है अर्थात् मानता है तो उसका जगत् में आगमन सफल सुखदायक हो जाता है॥ १॥

मः ३ ॥ भै विणु जीवै बहुतु बहुतु खुसीआ खुसी कमाइ ॥ नानक भै विणु जे मरै मुहि काले उठि जाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ ईश्वर का भय धारण किए बिना प्राणी बहुत ज्यादा देर तक जीता और आनन्द ही आनन्द प्राप्त करता है। हे नानक ! यदि वह ईश्वर के भय बिना प्राण त्याग दे तो वह चेहरे पर कालिख लगा कर दुनिया से चला जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ सतिगुरु होइ दइआलु त सरधा पूरीऐ ॥ सतिगुरु होइ दइआलु न कबहूं झूरीऐ ॥ सतिगुरु होइ दइआलु ता दुखु न जाणीऐ ॥ सतिगुरु होइ दइआलु ता हरि रंगु माणीऐ ॥ सतिगुरु होइ दइआलु ता जम का डरु केहा ॥ सतिगुरु होइ दइआलु ता सद ही सुखु देहा ॥ सतिगुरु होइ दइआलु ता नव निधि पाईऐ ॥ सतिगुरु होइ दइआलु त सचि समाईऐ ॥ २५ ॥

पउड़ी॥ जिस व्यक्ति पर सतिगुरु दयालु हो जाते हैं, उसकी श्रद्धा पूर्ण हो जाती है। जब सतिगुरु दयालु हो जाएँ तो मनुष्य कभी पश्चाताप नहीं करता। जब सतिगुरु दयालु हो जाएँ तो मनुष्य दुख को जानता ही नहीं। जब सतिगुरु दयालु हो जाएँ तो मनुष्य हरि की प्रीति का आनंद प्राप्त करता है। जब सतिगुरु जी दयालु हो जाएँ तो मनुष्य को यम का भय नहीं रहता। जब सतिगुरु जी दयालु हो जाएँ तो तन को सदा सुख प्राप्त होता है। जब सतिगुरु जी दयालु हो जाएँ तो नवनिधियाँ प्राप्त हो जाती हैं। जब सतिगुरु दयालु हो जाएँ तो मनुष्य सत्य में ही समा जाता है॥२५॥

सलोकु मः १ ॥ सिरु खोहाइ पीअहि मलवाणी जूठा मंगि मंगि खाही ॥ फोलि फदीहति मुहि लैनि भड़ासा पाणी देखि सगाही ॥ भेडा वागी सिरु खोहाइनि भरीअनि हथ सुआही ॥ माऊ पीऊ किरतु गवाइनि टबर रोवनि धाही ॥ ओना पिंडु न पतलि किरिआ न दीवा मुए किथाऊ पाही ॥ अठसठि तीरथ देनि न ढोई ब्रहमण अंनु न खाही ॥ सदा कुचील रहहि दिनु राती मथै टिके नाही ॥ झुंडी पाइ बहनि निति मरणै दड़ि दीबाणि न जाही ॥ लकी कासे हथी फुंमण अगो पिछी जाही ॥ ना ओइ जोगी ना ओइ जंगम ना ओइ काजी मुंला ॥ दयि विगोए फिरहि विगुते फिटा वतै गला ॥ जीआ मारि जीवाले सोई अवरु न कोई रखै ॥ दानहु तै इसनानहु वंजे भसु पई सिरि खुथै ॥ पाणी विचहु रतन उपंने मेरु कीआ माधाणी ॥ अठसठि तीरथ देवी थापे पुरबी लगै बाणी ॥ नाइ निवाजा नातै पूजा नावनि सदा सुजाणी ॥ मुइआ जीवदिआ गति होवै जां सिरि पाईऐ पाणी ॥ नानक सिरखुथे सैतानी एना गल न भाणी ॥ वुठै होइऐ होइ बिलावलु जीआ जुगति समाणी ॥ वुठै अंनु कमादु कपाहा सभसै पड़दा होवै ॥ वुठै घाहु चरहि निति सुरही सा धन दही विलोवै ॥ तितु घिइ होम जग सद पूजा पइऐ कारजु सोहै ॥ गुरु समुंदु नदी सभि सिखी नातै जितु वडिआई ॥ नानक जे सिरखुथे नावनि नाही ता सत चटे सिरि छाई ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ वह सिर के केश उखड़वाते हैं, मलिन जल पीते और दूसरों की जूठन बार-बार माँगते और खाते हैं। वह गंदगी बिखेरते हैं, अपने मुख से गन्दी हवा लेते हैं और जल देखने से संकोच करते हैं। भस्म से लथपथ हुए हाथों से भेड़ों की भाँति वह अपने केश उखड़वाते हैं। माता-पिता के प्रति जो कर्म था अर्थात् उनकी सेवा की मर्यादा वह त्याग देते हैं और उनके सगे-संबंधी फूट-फूट कर अश्रु बहाते हैं। उनके लिए कोई भी पिण्डदान, पत्तल क्रिया नहीं करता है, न ही अन्तिम संस्कार करता है, न ही कोई मिट्टी का दीपक प्रज्वलित करता है। मरणोपरांत वह कहाँ फैंके जाएँगे ? अठसठ तीर्थ स्थान भी उनको आश्रय नहीं देते और ब्राह्मण उनका भोजन नहीं करते। वह सदा दिन-रात मलिन रहते हैं और उनके माथे पर तिलक भी नहीं। शोक करने वालों की भाँति वह समूह बना कर बैठते हैं। अथवा जैसे मृतक के घर महिलाएँ मुख पर कपड़ा डालकर शोक

मनाती हैं और प्रभु–भक्तों के सत्संग में नहीं जाते। वे कमर से माँगने वाले प्याले लटकाते हुए और हाथों में धागों के गुच्छों सहित आगे–पीछे चलते हैं। न ही वह योगी हैं, न ही वह शिव के उपासक, न ही वह काजी और न ही मुल्लां हैं। प्रभु द्वारा कुमार्गगामी किए हुए वह अपमानित हुए फिरते हैं और उनका समूह समुदाय भ्रष्ट हो जाता है। वह यह भी नहीं समझते कि प्राणियों को केवल वही परमात्मा मारता और पुनर्जीवित करता है। दूसरा कोई भी उनको बचा नहीं सकता। वह पुण्य करने एवं स्नान करने से वंचित रह जाते हैं। उनके उखड़े हुए सिरों पर राख पड़ती है। वह इस बात को भी नहीं समझते कि जब देवताओं एवं दैत्यों ने मिलकर क्षीर सागर को सुमेर पर्वत की मथनी बनाकर मंथन किया था तो जल में से १४ रत्न निकले थे। देवताओं ने अठसठ तीर्थ–स्थलों को नियुक्त किया है। जहाँ पर्व त्यौहार मनाए जाते हैं और भजन गाए जाते हैं। अर्थात् वहाँ वाणी द्वारा हरि की कथा होती है। स्नान उपरांत मुसलमान नमाजें पढ़ते हैं और स्नान करके हिन्दु पूजा–अर्चना करते हैं और सभी बुद्धिमान सदैव नहाते हैं। जब मनुष्य जन्मते–मरते हैं, तब उनके सिर पर जल डाला जाता है ताकि उनकी गति हो जाए। हे नानक! सिर उखड़ाने वाले शैतान हैं और स्नान की बात उन्हें अच्छी नहीं लगती। जब जल बरसता है, हर तरफ प्रसन्नता होती है। प्राणियों के जीवन की युक्ति जल में विद्यमान है। जब जल बरसता है, अनाज, गन्ना, कपास इत्यादि जो सबके पोषक हैं उत्पन्न होते हैं। कपास, जो सबको ढांपने वाली चादर बनती है। जब मेघ बरसते हैं, गाएँ सदा घास चरती हैं और उनके दूध से दहीं होता है। तब स्त्रियां मंथन करती हैं। उसमें से जो घी निकलता है, उससे होम, यज्ञ, पवित्र भण्डारे और नित्य पूजा सदा ही सम्पन्न होते हैं और घी से अन्य संस्कार सुशोभित होते हैं। गुरु सागर है, गुरु–वाणी सभी नदियां (उनकी सेविकाएँ) हैं, जिन में स्नान करने से महानता प्राप्त होती है। हे नानक! यदि सिर मुंडाने वाले मुनि स्नान नहीं करते हैं तो उनके सिर पर सौ अंजुलि भस्म ही पड़ती है॥ १॥

मः २ ॥ अगी पाला कि करे सूरज केही राति ॥ चंद अनेरा कि करे पउण पाणी किआ जाति ॥ धरती चीजी कि करे जिसु विचि सभु किछु होइ ॥ नानक ता पति जाणीऐ जा पति रखै सोइ ॥ २ ॥

महला २॥ सर्दी अग्नि का क्या बिगाड़ सकती है? रात्रि सूर्य का क्या बिगाड़ सकती है? अंधेरा चाँद का क्या बिगाड़ सकता है? कोई जाति पवन एवं जल का क्या बिगाड़ सकती है? धरती का वस्तुएँ क्या बिगाड़ सकती हैं, जिसके भीतर सब वस्तुएँ उत्पन्न होती हैं। हे नानक! प्राणी केवल तभी प्रतिष्ठित समझा जाता है, जब प्रभु उसका मान–सम्मान बरकरार रखे॥ २॥

पउड़ी ॥ तुधु सचे सुबहानु सदा कलाणिआ ॥ तूं सचा दीबाणु होरि आवण जाणिआ ॥ सचु जि मंगहि दानु सि तुधै जेहिआ ॥ सचु तेरा फुरमानु सबदे सोहिआ ॥ मंनिऐ गिआनु धिआनु तुधै ते पाइआ ॥ करमि पवै नीसानु न चलै चलाइआ ॥ तूं सचा दातारु नित देवहि चड़हि सवाइआ ॥ नानकु मंगै दानु जो तुधु भाइआ ॥ २६ ॥

पउड़ी॥ हे मेरे आश्चर्यजनक परमेश्वर! मैं सदैव तेरी महिमा–स्तुति करता हूँ। तू सदैव स्थिर है और तेरा दरबार सत्य है तथा अन्य सभी जीव जन्मते–मरते रहते हैं। हे प्रभु! जो तुझसे सत्यनाम का दान माँग लेता है, वह तेरा नाम जप–जप कर तेरे जैसा ही बन जाता है। तेरा हुक्म सत्य है और मनुष्य तेरे नाम से शोभा पाते हैं। हे प्रभु! तेरा हुक्म मानने से ही मनुष्य को तुझसे ज्ञान–ध्यान की सूझ मिलती है। तेरे दरबार में जाने हेतु नाम रूपी परवाना तेरी कृपा से ही मिलता है तथा वहाँ अन्य कोई परवाना चलाया नहीं चलता। हे प्रभु! तू ही सच्चा दाता है और सदैव ही जीवों को देते रहते हो। तेरे भण्डार कभी भी समाप्त नहीं होते अपितु अधिकतर होते जाते हैं। हे प्रभु! नानक तुझसे वही दान माँगता है, जो तुझे अच्छा लगता है॥ २६॥

सलोकु मः २ ॥ दीखिआ आखि बुझाइआ सिफती सचि समेउ ॥ तिन कउ किआ उपदेसीऐ जिन गुरु नानक देउ ॥ १ ॥

श्लोक महला २॥ जिन्हें गुरु ने शिक्षा अथवा उपदेश देकर समझा दिया है, वे सत्यनाम की महिमा करके सत्य में ही समा गए हैं। अब उनको उपदेश देने का क्या अभिप्राय है? जिनका गुरु नानक देव है॥१॥

मः १ ॥ आपि बुझाए सोई बूझै ॥ जिसु आपि सुझाए तिसु सभु किछु सूझै ॥ कहि कहि कथना माइआ लूझै ॥ हुकमी सगल करे आकार ॥ आपे जाणै सरब वीचार ॥ अखर नानक अखिओ आपि ॥ लहै भराति होवै जिसु दाति ॥ २ ॥

महला १॥ जिसको प्रभु स्वयं समझा देता है, वही उसको समझता है। जिसे ईश्वर स्वयं ज्ञान प्रदान करता है, वह सर्वज्ञ जान लेता है। जो व्यक्ति कह-कह कर कथन ही करता रहता है, वह माया के झंझटों में फँसा रहता है। प्रभु ने अपने हुक्म से ही सूर्य, चन्द्रमा एवं पृथ्वी इत्यादि की रचना की है। वह स्वयं ही सबके विचारों को समझता है। हे नानक! प्रभु ने स्वयं ही वाणी का उच्चारण किया है। जिसको यह देन मिल जाती है, उसका अज्ञानता का अँधेरा दूर हो जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ हउ ढाढी वेकारु कारै लाइआ ॥ राति दिहै कै वार धुरहु फुरमाइआ ॥ ढाढी सचै महलि खसमि बुलाइआ ॥ सची सिफति सालाह कपड़ा पाइआ ॥ सचा अंम्रित नामु भोजनु आइआ ॥ गुरमती खाधा रजि तिनि सुखु पाइआ ॥ ढाढी करे पसाउ सबदु वजाइआ ॥ नानक सचु सालाहि पूरा पाइआ ॥ २७ ॥ सुधु

पउड़ी॥ मुझ बेकार ढाढी को प्रभु ने अपनी भक्ति कार्य में लगा लिया है। आदिकाल से प्रभु ने मुझे रात-दिन अपना यशोगान करने का हुक्म दिया है। स्वामी ने ढाढी को अपने सत्य दरबार में निमंत्रण दिया है। परमात्मा ने अपनी सच्ची महिमा-स्तुति की पोशाक मुझे पहना दी है। तब से सत्यनाम मेरा अमृत स्वरूप आहार बन गया है। जो गुरु के उपदेश से इस आहार को पेट भर कर सेवन करते हैं, वे सदा सुख पाते हैं। गुरु-वाणी गायन करने से मैं चारण परमेश्वर की महानता का प्रसार करता हूँ। हे नानक! सत्यनाम की स्तुति करके मैंने परमात्मा को प्राप्त कर लिया है॥ २७॥ सुधु॥

(रागु माझ समाप्त)

☆☆☆

रागु गउड़ी गुआरेरी महला १ चउपदे दुपदे

१ ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

परमात्मा एक है, उसका नाम सत्य है। वह सृष्टि का रचयिता सर्वशक्तिमान है। वह निडर है, उसकी किसी से शत्रुता नहीं, वह कालातीत, अयोनि एवं स्वयंभू है। उसकी लब्धि गुरु–कृपा से होती है।

भउ मुचु भारा वडा तोलु ॥ मन मति हउली बोले बोलु ॥ सिरि धरि चलीऐ सहीऐ भारु ॥ नदरी करमी गुर बीचारु ॥ १ ॥ भै बिनु कोइ न लंघसि पारि ॥ भै भउ राखिआ भाइ सवारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भै तनि अगनि भखै भै नालि ॥ भै भउ घड़ीऐ सबदि सवारि ॥ भै बिनु घाड़त कचु निकच ॥ अंधा सचा अंधी सट ॥ २ ॥ बुधी बाजी उपजै चाउ ॥ सहस सिआणप पवै न ताउ ॥ नानक मनमुखि बोलणु वाउ ॥ अंधा अखरु वाउ दुआउ ॥ ३ ॥ १ ॥

ईश्वर का भय बहुत भारी और बड़ा वजनदार है। मन की मति पर चलने वाला मनुष्य तुच्छ मति अनुसार अपने मुँह से घटिया वचन ही बोलता है। प्रभु का भय अपने सिर पर धारण करके चलना चाहिए और उसका बोझ सहन करना चाहिए। प्रभु की कृपा–दृष्टि एवं भाग्य से ही मनुष्य को गुरु की शिक्षा मिलती है॥ १॥ परमात्मा के भय बिना कोई भी प्राणी संसार सागर से पार नहीं हो सकता। प्रभु के साथ जीव के प्रेम को प्रभु का भय ही संवार कर रखता है॥ १॥ रहाउ॥ मनुष्य के शरीर की क्रोध रूपी अग्नि ईश्वर के भय से जल जाती है। प्रभु के भय से शब्द की रचना सुन्दर बन जाती है। प्रभु के भय के बिना शब्द की रचना बहुत ही कच्ची रह जाती है। शब्द रचने वाला सांचा अर्थात् मनुष्य की बुद्धि ज्ञानहीन होती है और ज्ञानहीन बुद्धि पर ज्ञान रूपी हथौड़े की चोट कोई प्रभाव नहीं करती॥ २॥ जीवन बाजी खेलने का चाव मनुष्य की बुद्धि द्वारा ही उत्पन्न होता है। हजारों ही चतुराइयों के बावजूद ईश्वर–भय की तपस (आंच) नहीं लगती। हे नानक! मनमुख की बातचीत निरर्थक होती है। उसका उपदेश निकम्मा और व्यर्थ होता है॥ ३॥ १॥

गउड़ी महला १ ॥ डरि घरु घरि डरु डरि डरु जाइ ॥ सो डरु केहा जितु डरि डरु पाइ ॥ तुधु बिनु दूजी नाही जाइ ॥ जो किछु वरतै सभ तेरी रजाइ ॥ १ ॥ डरीऐ जे डरु होवै होरु ॥ डरि डरि डरणा मन का सोरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना जीउ मरै न डूबै तरै ॥ जिनि किछु कीआ सो किछु करै ॥ हुकमे आवै हुकमे जाइ ॥ आगै पाछै हुकमि समाइ ॥ २ ॥ हंसु हेतु आसा असमानु ॥ तिसु विचि भूख बहुतु नै सानु ॥ भउ खाणा पीणा आधारु ॥ विणु खाधे मरि होहि गवार ॥ ३ ॥ जिस का कोइ कोई कोइ कोइ ॥ सभु को तेरा तूं सभना का सोइ ॥ जा के जीअ जंत धनु मालु ॥ नानक आखणु बिखमु बीचारु ॥ ४ ॥ २ ॥

अपने हृदय–घर में प्रभु के भय को धारण करना चाहिए। जब प्रभु का भय हृदय–घर में निवास कर जाता है तो मृत्यु का भय भयभीत होकर भाग जाता है। यह प्रभु भय किस प्रकार का है, जिस द्वारा मृत्यु का भय भयभीत हो जाता है। हे भगवान! तेरे अलावा दूसरा कोई सुख का स्थान नहीं। जो कुछ भी होता है, सब तेरी इच्छानुसार ही होता है॥ १॥ हे प्रभु! हम भयभीत तब हों, जब कोई दूसरा भय कायम रहे। ईश्वर–भय बिना दूसरे के भय से सहम जाना मन का शोर है॥ १॥ रहाउ॥ आत्मा न ही मरती है, न ही जल में डूबती है और न ही जल में तैरती है। जिस परमात्मा ने सृष्टि

रचना की है, वही सब कुछ करता है। मनुष्य ईश्वर के हुक्म से संसार में आता है और उसके हुक्मानुसार संसार से कूच करता है। वर्तमान काल एवं भविष्य काल में भी प्राणी उसके हुक्म में लीन रहता है॥ २॥ जिस व्यक्ति के हृदय में हिंसा, मोह, आशा एवं अहंकार होता है उसमें नदी के जल की तरह माया की अत्यधिक भूख होती है। ऐसे व्यक्ति को इनसे मुक्ति पाने के लिए प्रभु के भय को अपना भोजन–पानी एवं जीवन का आधार बनाना चाहिए। जो मूर्ख व्यक्ति प्रभु के भय का सेवन नहीं करते, वह मरते एवं बर्बाद होते रहते हैं॥३॥ यदि प्राणी का कोई अपना है तो वह कोई बहुत ही विरला है। हे परमेश्वर! सभी जीव तेरे हैं और तुम सबके हो। हे नानक! जिस भगवान के ये जीव–जन्तु एवं धनमाल निर्मित किए हैं, उस बारे कहना एवं विचार करना बड़ा कठिन है॥ ४॥ २॥

गउड़ी महला १ ॥ माता मति पिता संतोखु ॥ सतु भाई करि एहु विसेखु ॥ १ ॥ कहणा है किछु कहणु न जाइ ॥ तउ कुदरति कीमति नही पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरम सुरति दुइ ससुर भए ॥ करणी कामणि करि मन लए ॥ २ ॥ साहा संजोगु वीआहु विजोगु ॥ सचु संतति कहु नानक जोगु ॥ ३ ॥ ३ ॥

मैंने बुद्धि को अपनी माता, संतोष को अपना पिता और सत्य को अपना भाई बना लिया है। बुद्धि, संतोष एवं सत्य मेरे अच्छे संबंधी हैं॥ १॥ भगवान के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ परन्तु मुझसे कुछ कहा नहीं जा सकता। हे भगवान! तेरी कुदरत का मूल्यांकन नहीं पाया जा सकता॥ १॥ रहाउ॥ लज्जा एवं सुरति दोनों मेरे सास–ससुर बन गए हैं। सदाचरण को मैंने अपनी पत्नी बना लिया है॥ २॥ सत्संग मेरे विवाह का समय है और संसार से टूट जाना मेरा विवाह है। हे नानक! ऐसे प्रभु मिलन से मेरे यहाँ सत्य की संतान उत्पन्न हुई है॥ ३॥ ३॥

गउड़ी महला १ ॥ पउणै पाणी अगनी का मेलु ॥ चंचल चपल बुधि का खेलु ॥ नउ दरवाजे दसवा दुआरु ॥ बुझु रे गिआनी एहु बीचारु ॥ १ ॥ कथता बकता सुनता सोई ॥ आपु बीचारे सु गिआनी होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देही माटी बोलै पउणु ॥ बुझु रे गिआनी मूआ है कउणु ॥ मूई सुरति बादु अहंकारु ॥ ओहु न मूआ जो देखणहारु ॥ २ ॥ जै कारणि तटि तीरथ जाही ॥ रतन पदारथ घट ही माही ॥ पड़ि पड़ि पंडितु बादु वखाणै ॥ भीतरि होदी वसतु न जाणै ॥ ३ ॥ हउ न मूआ मेरी मुई बलाइ ॥ ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ ॥ कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखाइआ ॥ मरता जाता नदरि न आइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥

मानव–शरीर की रचना पवन, जल एवं अग्नि के मिलन से हुई है। यह शरीर चंचल मन एवं चतुर बुद्धि का बनाया हुआ एक खिलौना है। इस शरीर को दो नेत्र, दो कान, दो नासिका, मुँह, गुदा एवं इन्द्री रूपी नौ द्वार लगे हुए हैं और दसम द्वार गुप्त है। हे ज्ञानी! इस विचार को समझो॥ १॥ भगवान स्वयं ही कथा करने वाला, बोलने वाला एवं सुनने वाला है। वही व्यक्ति ज्ञानी होता है जो अपने आत्मिक जीवन को सोचता–समझता है॥ १॥ रहाउ॥ यह शरीर मिट्टी है और पवन उसमें बोलती है। हे ज्ञानी! इस तथ्य को समझो कि वह कौन है? जो प्राण त्याग गया है? यह शरीर एवं विवाद पैदा करने वाला अहंकार मरे हैं। भगवान का अंश आत्मा नहीं मरी जो दुनिया रूपी खेल देखने वाली है॥ २॥ जिस नाम रूपी रत्न–पदार्थ के लिए तुम तीर्थों के तट पर जाते हो, वह नाम रूपी अमूल्य रत्न तेरे हृदय में ही विद्यमान है। पण्डित ग्रंथ पढ़–पढ़ कर परस्पर विवाद करते हैं परन्तु वह उस नाम रूपी अमूल्य वस्तु को नहीं जानते जो उनके हृदय में ही है॥३॥ मैं नहीं मरा, अपितु मेरी विपदा लाने वाली अज्ञानता रूपी बला मरी है। वह आत्मा नहीं मरी, जो सब में समाई हुई है। हे नानक! गुरु ने मुझे ब्रह्म के दर्शन करवा दिए हैं और अब मुझे कोई भी मरता एवं जन्म लेता दिखाई नहीं देता॥ ४॥ ४॥

गउड़ी महला १ दखणी ॥ सुणि सुणि बूझै मानै नाउ ॥ ता कै सद बलिहारै जाउ ॥ आपि भुलाए ठउर न ठाउ ॥ तूं समझावहि मेलि मिलाउ ॥ १ ॥ नामु मिलै चलै मै नालि ॥ बिनु नावै बाधी सभ कालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खेती वणजु नावै की ओट ॥ पापु पुंनु बीज की पोट ॥ कामु क्रोधु जीअ महि चोट ॥ नामु विसारि चले मनि खोट ॥ २ ॥ साचे गुर की साची सीख ॥ तनु मनु सीतलु साचु परीख ॥ जल पुराइनि रस कमल परीख ॥ सबदि रते मीठे रस ईख ॥ ३ ॥ हुकमि संजोगी गड़ि दस दुआर ॥ पंच वसहि मिलि जोति अपार ॥ आपि तुलै आपे वणजार ॥ नानक नामि सवारणहार ॥ ४ ॥ ५ ॥

मैं हमेशा ही उस पर कुर्बान जाता हूँ, जो प्रभु–नाम को निरन्तर सुनकर उसे समझने का प्रयास करता, एवं उस पर आस्था रखता है। हे प्रभु ! जिसे तू स्वयं विस्मृत कर देता है, उसे कहीं भी स्थान नहीं मिलता। तू ही जीव को ज्ञान देता है और फिर उसे गुरु से साक्षात्कार करवा कर अपने साथ मिला लेता है॥ १॥ मेरी यही कामना है कि मुझे नाम प्राप्त हो, जो मेरे साथ परलोक में जाएगा। प्रभु के नाम के अलावा सारी दुनिया काल ने बंधन में डाली हुई है॥ १॥ रहाउ॥ मेरी कृषि एवं व्यापार प्रभु के नाम के आश्रय में ही है। मनुष्य ने अपने सिर पर पाप एवं पुण्य रूपी कर्मों के बीज की पोटली उठाई हुई है। काम, क्रोध प्राणी के अन्तर्मन में घाव हैं। खोटे मन वाले प्रभु नाम को विस्मृत करके संसार से चले जाते हैं॥ २॥ सच्चे गुरु की शिक्षा सत्य है। सत्य नाम का सही मूल्यांकन जानने से तन एवं मन शीतल हो जाते हैं। सतिगुरु की यही परख है कि वह विकारों रूपी स्वादों से यूं निर्लिप्त रहता है जैसे कमल का फूल कीचड़ से निर्लिप्त रहता है। प्रभु के नाम में मग्न हुआ वह गन्ने के रस की भाँति मीठा है॥ ३॥ यह दस द्वारों वाला शरीर रूपी किला परमात्मा के हुक्म में बनाया गया है। इसमें अपार प्रभु की ज्योति के साथ मिलकर पाँच ज्ञान–इन्द्रियाँ रहती हैं। परमात्मा स्वयं ही व्यापारी है और स्वयं ही तुलने वाला सौदा है। हे नानक ! परमात्मा का नाम ही जीव का जीवन सुन्दर बनाने वाला है॥४॥५॥

गउड़ी महला १ ॥ जातो जाइ कहा ते आवै ॥ कह उपजै कह जाइ समावै ॥ किउ बाधिओ किउ मुकती पावै ॥ किउ अबिनासी सहजि समावै ॥ १ ॥ नामु रिदै अंम्रितु मुखि नामु ॥ नरहर नामु नरहर निहकामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहजे आवै सहजे जाइ ॥ मन ते उपजै मन माहि समाइ ॥ गुरमुखि मुकतो बंधु न पाइ ॥ सबदु बीचारि छुटै हरि नाइ ॥ २ ॥ तरवर पंखी बहु निसि बासु ॥ सुख दुखीआ मनि मोह विणासु ॥ साझ बिहाग तकहि आगासु ॥ दह दिसि धावहि करमि लिखिआसु ॥ ३ ॥ नाम संजोगी गोइलि थाटु ॥ काम क्रोध फूटै बिखु माटु ॥ बिनु वखर सूनो घरु हाटु ॥ गुर मिलि खोले बजर कपाट ॥ ४ ॥ साधु मिलै पूरब संजोग ॥ सचि रहसे पूरे हरि लोग ॥ मनु तनु दे लै सहजि सुभाइ ॥ नानक तिन कै लागउ पाइ ॥ ५ ॥ ६ ॥

क्या यह जाना जा सकता है कि आत्मा कहाँ से आई है ? वह कहाँ से उत्पन्न हुई है और वह कहाँ जाकर समा जाती है ? वह किस तरह मोह–माया के बंधनों में फँस जाती है और कैसे बंधनों से मुक्ति प्राप्त करती है ? वह किस तरह सहज ही अविनाशी प्रभु में समा जाती है॥ १॥ जिसके हृदय में परमात्मा का नाम निवास करता है और मुँह से भी अमृत–नाम उच्चरित होता है। वह प्रभु का अमृत नाम निष्काम होकर जपता रहता है और इच्छा रहित हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ मनुष्य सहज ही इस दुनिया में आता है और सहज ही दुनिया से चला जाता है अर्थात् वह सहज ही जन्मता–मरता रहता है। मन (की तृष्णाओं) से वह उत्पन्न हुआ है और मन (की तृष्णाओं) में ही वह समा जाता है। गुरमुख मोह–माया के बंधनों से मोक्ष प्राप्त कर लेता है और वह सांसारिक बंधनों में

नहीं पड़ता। वह शब्द का चिन्तन करता है और प्रभु–नाम द्वारा मुक्त हो जाता है॥ २॥ बहुत सारे पक्षी रात्रिकाल को पेड़ पर आकर निवास करते हैं। कई सुखी हैं और कई दुखी हैं। मन के मोह कारण वह सारे नाश हो जाते हैं। जब रात्रि बीतती है और सूर्योदय होता है, वह आकाश की ओर देखते हैं। विधाता की विधि अनुसार कर्मों के कारण वे दर्सो दिशाओं में उड़ जाते हैं॥ ३॥ जो नाम संजोगी हैं, वह संसार को चरागाह में एक अस्थिर स्थान समझते हैं। भोग–विलास एवं अहंकार की विषैली गागर अन्त में फूट जाती है। नाम के सौदे सूत के विना देहि रूपी घर एवं मन की दुकान शून्य है। गुरु के मिलन से वज्र कपाट खुल जाते हैं॥ ४॥ किस्मत से ही संत मिलते हैं। परमात्मा के भक्त सत्य में हर्षित होते हैं। हे नानक! मैं उनके चरणों पर नतमस्तक हूँ, जो अपना मन एवं तन समर्पित करने से सहज ही अपने प्रभु को पा लेते हैं॥ ५॥ ६॥

गउड़ी महला १ ॥ कामु क्रोधु माइआ महि चीतु ॥ झूठ विकारि जागै हित चीतु ॥ पूंजी पाप लोभ की कीतु ॥ तरु तारी मनि नामु सुचीतु ॥ १ ॥ वाहु वाहु साचे मै तेरी टेक ॥ हउ पापी तूं निरमलु एकु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगनि पाणी बोलै भड़वाउ ॥ जिहवा इंद्री एकु सुआउ ॥ दिसटि विकारी नाही भउ भाउ ॥ आपु मारे ता पाए नाउ ॥ २ ॥ सबदि मरै फिरि मरणु न होइ ॥ बिनु मूए किउ पूरा होइ ॥ परपंचि विआपि रहिआ मनु दोइ ॥ थिरु नाराइणु करे सु होइ ॥ ३ ॥ बोहिथि चड़उ जा आवै वारु ॥ ठाके बोहिथ दरगह मार ॥ सचु सालाही धंनु गुरदुआरु ॥ नानक दरि घरि एकंकारु ॥ ४ ॥ ७ ॥

तेरा मन काम, क्रोध एवं माया के मोह में लीन है। उनके मोह के कारण तेरे मन में झूठ एवं पाप उदय हो गए हैं। तुमने पाप एवं लोभ की पूँजी संग्रह की हुई है। अतः तू शुद्ध हृदय से मन द्वारा पावन नाम का जाप करके भवसागर से पार हो जा॥ १॥ हे मेरे सच्चे प्रभु! तू धन्य–धन्य है। मुझे केवल तेरा ही सहारा है। हे प्रभु! मैं पापी हूँ, एक तू ही पावन हैं॥ १॥ रहाउ॥ अग्नि व जल इत्यादि पंच तत्वों से बने शरीर में श्वास ऊँची–ऊँची गूँजते हैं। जिह्वा व इन्द्रिय अपना–अपना स्वाद प्राप्त करते हैं। तेरी दृष्टि विकारों में लीन है और तुझे प्रभु का भय एवं प्रेम नहीं। यदि प्राणी अपना अहंकार नष्ट कर दे तो वह नाम को प्राप्त कर लेता है॥ २॥ जो व्यक्ति शब्द द्वारा अहंकार को समाप्त कर देता है, उसे दोबारा मरना नहीं पड़ता। अहंकार को समाप्त किए बिना वह पूरा कैसे हो सकता है? मन दुनिया के प्रपंचों एवं द्वैतभाव में लीन हो रहा है। एक नारायण ही स्थिर है और दुनिया में वही होता है जो वह करता है॥३॥ जब मेरी बारी आएगी तो मैं भवसागर से पार होने के लिए नाम रूपी जहाज पर सवार हो जाऊँगा। जो जहाज पर सवार होने से वर्जित हो जाते हैं, उनकी प्रभु के दरबार में खूब पिटाई होती है। गुरु का दरबार धन्य है, जहाँ सत्यस्वरूप परमात्मा का यशोगान किया जाता है। हे नानक! अद्वितीय एक ईश्वर प्रत्येक हृदय–घर में व्यापक हो रहा है॥ ४॥ ७॥

गउड़ी महला १ ॥ उलटिओ कमलु ब्रहमु बीचारि ॥ अंम्रित धार गगनि दस दुआरि ॥ त्रिभवणु बेधिआ आपि मुरारि ॥ १ ॥ रे मन मेरे भरमु न कीजै ॥ मनि मानिऐ अंम्रित रसु पीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनमु जीति मरणि मनु मानिआ ॥ आपि मूआ मनु मन ते जानिआ ॥ नजरि भई घरु घर ते जानिआ ॥ २ ॥ जतु सतु तीरथु मजनु नामि ॥ अधिक बिथारु करउ किसु कामि ॥ नर नाराइण अंतरजामि ॥ ३ ॥ आन मनउ तउ पर घर जाउ ॥ किसु जाचउ नाही को थाउ ॥ नानक गुरमति सहजि समाउ ॥ ४ ॥ ८ ॥

ब्रह्म का चिंतन करने से मोह–माया में उल्टा पड़ा हृदय–कमल बदल कर सीधा हो जाता है। दसम द्वार रूपी गगन से अमृत रस की धारा बहने लग जाती है। मुरारि–प्रभु तीनों लोकों में स्वयं ही

व्यापक हो रहा है॥ १॥ हे मेरे मन! किसी दुविधा में मत पड़। यदि मन विश्वस्त हो जाए तो वह नाम रूपी अमृत रस का पान करने लगता है॥ १॥ रहाउ॥ जब मन अपने अहंत्व को नाश करना स्वीकृत कर लेता है तो यह जीवन की बाजी को विजय कर लेता है। जब मन का अहंत्व नाश हो जाता है तो उसे हृदय में ही परमात्मा बारे ज्ञान हो जाता है। जब परमात्मा की कृपा होती है तो हृदय-घर में उसे आत्म-स्वरूप की पहचान हो जाती है॥ २॥ ईश्वर का नाम ही सच्चा ब्रह्मचार्य, सत्य तीर्थ एवं स्नान है। यदि मैं नाम को छोड़ कर अन्य अधिकतर आडम्बर करूँ तो वह सब व्यर्थ हैं। चूंकि नारायण बड़ा अन्तर्यामी है॥३॥ यदि भगवान के सिवाय मैं किसी दूसरे पर श्रद्धा धारण करूँ, तो ही मैं पराए घर जाऊँ। मैं नाम की देन किससे माँगूं? भगवान के सिवाय मेरे लिए कोई स्थान नहीं है। हे नानक! गुरु के उपदेश से मैं सहज ही सत्य में समा जाऊँगा॥ ४॥८॥

गउड़ी महला १ ॥ सतिगुरु मिलै सु मरणु दिखाए ॥ मरण रहण रसु अंतरि भाए ॥ गरबु निवारि गगन पुरु पाए ॥ १ ॥ मरणु लिखाइ आए नही रहणा ॥ हरि जपि जापि रहणु हरि सरणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु मिलै त दुबिधा भागै ॥ कमलु बिगासि मनु हरि प्रभ लागै ॥ जीवतु मरै महा रसु आगै ॥ २ ॥ सतिगुरि मिलिऐ सच संजमि सूचा ॥ गुर की पउड़ी ऊचो ऊचा ॥ करमि मिलै जम का भउ मूचा ॥ ३ ॥ गुरि मिलिऐ मिलि अंकि समाइआ ॥ करि किरपा घरु महलु दिखाइआ ॥ नानक हउमै मारि मिलाइआ ॥ ४ ॥ ९ ॥

यदि सतिगुरु मिल जाए तो वह जीवित ही मृत्यु का मार्ग दिखा देता है। इस तरह की मृत्यु उपरांत जीवित रहने की प्रसन्नता मन को लुभाती है। अहंकार को मिटाकर ही दसम द्वार पाया जाता है॥ १॥ मानव जीव अपनी मृत्यु का समय लिखवा कर ही दुनिया में आते हैं और वे दुनिया में अधिक समय निवास नहीं कर सकते। इसलिए मनुष्य को दुनिया में आकर हरि का जाप करते रहना और हरि की शरणागत वास करना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥ यदि सतिगुरु मिल जाए तो समस्त दुविधा भाग जाती है। हृदय कमल प्रफुल्लित हो जाता है और मन हरि-प्रभु के साथ जुड़ जाता है। जो व्यक्ति अहंकार का नाश करके जीता है, वह परलोक में नाम रूपी महारस का पान करता है॥ २॥ सतिगुरु के मिलन से मनुष्य सत्यवादी, त्यागी एवं पावन हो जाता है। गुरु का मार्ग धर्म की सीढ़ी है और उस सीढ़ी द्वारा मनुष्य सर्वोच्च आत्मिक अवस्था वाला हो जाता है। सतिगुरु भगवान की कृपा से ही मिलता है और मृत्यु का भय नाश हो जाता है॥ ३॥ गुरु को मिलने से मनुष्य प्रभु से मिल जाता है और उसकी गोद में समा जाता है। अपनी कृपा-दृष्टि करके गुरु जी प्राणी को उसके अपने हृदय-घर में प्रभु के आत्म-स्वरूप के दर्शन करवा देते हैं। हे नानक! गुरु प्राणी के अहंकार को नाश करके परमेश्वर के साथ मिला देते हैं॥ ४॥ ६॥

गउड़ी महला १ ॥ किरतु पइआ नह मेटै कोइ ॥ किआ जाणा किआ आगै होइ ॥ जो तिसु भाणा सोई हूआ ॥ अवरु न करणै वाला दूआ ॥ १ ॥ ना जाणा करम केवड तेरी दाति ॥ करमु धरमु तेरे नाम की जाति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू एवडु दाता देवणहारु ॥ तोटि नाही तुधु भगति भंडार ॥ कीआ गरबु न आवै रासि ॥ जीउ पिंडु सभु तेरै पासि ॥ २ ॥ तू मारि जीवालहि बखसि मिलाइ ॥ जिउ भावी तिउ नामु जपाइ ॥ तूं दाना बीना साचा सिरि मेरै ॥ गुरमति देइ भरोसै तेरै ॥ ३ ॥ तन महि मैलु नाही मनु राता ॥ गुर बचनी सचु सबदि पछाता ॥ तेरा ताणु नाम की वडिआई ॥ नानक रहणा भगति सरणाई ॥ ४ ॥ १० ॥

पूर्व जन्म के कर्मों के कारण जो मेरी किस्मत में लिखा हुआ है, उसे कोई भी मिटा नहीं सकता। मैं नहीं जानता कि मेरे साथ आगे क्या बीतेगा ? जो कुछ ईश्वर की इच्छा है, वही कुछ हुआ है। प्रभु के अलावा दूसरा कोई करने वाला नहीं॥ १॥ हे ईश्वर ! मैं नहीं जानता कि तेरी कृपा की देन कितनी बड़ी है। सभी शुभ कर्म, धर्म, श्रेष्ठ जाति तेरे नाम अधीन हैं॥१॥ रहाउ॥ हे ईश्वर ! तू देन देने वाला इतना बड़ा दाता है कि तेरी भक्ति के भण्डार कभी कम नहीं होते। अहंकार करने से कोई भी कार्य सम्पूर्ण नहीं होता। हे प्रभु ! मेरी आत्मा एवं शरीर सभी तेरे पास अर्पण हैं॥ २॥ हे भगवान ! तू जीव को मार कर फिर जीवित कर देता है और तू ही क्षमा करके जीव को अपने साथ मिल लेता है। जैसे तुझे उपयुक्त लगता है वैसे ही तू जीव से अपना नाम सिमरन करवाता है। हे मेरे परमेश्वर ! तुम बड़े बुद्धिमान हो और मेरे मन की दशा जानते हो, तुम मेरे रक्षक हो और सत्य स्वरूप हो। हे प्रभु ! मुझे गुरु की मति दीजिए, चूंकि मैं तेरे भरोसे पर ही बैठा हूँ॥ ३॥ जिसका हृदय प्रभु के प्रेम में मग्न है, उसके तन में पापों की कोई मलिनता नहीं। मैंने तेरे सत्य–नाम को गुरु की वाणी द्वारा पहचान लिया है। मेरे शरीर में तेरा ही दिया हुआ बल है और तूने ही मुझे अपने नाम की ख्याति प्रदान की है। हे नानक! मुझे तो तेरी भक्ति की शरण में ही रहना है॥ ४॥ १०॥

गउड़ी महला १ ॥ जिनि अकथु कहाइआ अपिओ पीआइआ ॥ अन भै विसरे नामि समाइआ ॥ १ ॥ किआ डरीऐ डरु डरहि समाना ॥ पूरे गुर कै सबदि पछाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसु नर रामु रिदै हरि रासि ॥ सहजि सुभाइ मिले साबासि ॥ २ ॥ जाहि सवारै साझ बिआल ॥ इत उत मनमुख बाधे काल ॥ ३ ॥ अहिनिसि रामु रिदै से पूरे ॥ नानक राम मिले भ्रम दूरे ॥ ४ ॥ ११ ॥

जिस प्राणी ने अकथनीय परमात्मा को स्मरण किया है और दूसरों को आराधना हेतु प्रेरित किया है, उस प्राणी ने स्वयं अमृत पान किया है। वह प्राणी दूसरे समस्त भय विस्मृत कर देता है, क्योंकि वह ईश्वर के नाम में समा जाता है॥ १॥ हम क्यों भयभीत हों, जब तमाम भय परमात्मा के भय में नष्ट हो जाते हैं। पूर्ण गुरु के शब्द द्वारा मैंने ईश्वर को पहचान लिया है॥ १॥ रहाउ॥ जिस व्यक्ति के हृदय में राम का निवास हो जाता है, उसे हरि–नाम की पूँजी मिल जाती है और उसे सहज ही प्रभु के दरबार में प्रशंसा भी मिलती है॥ २॥ परमात्मा जिन स्वेच्छाचारी जीवों को संध्याकाल एवं प्रातःकाल मोह–माया रुपी निद्रा में मग्न रखता है, ऐसे मनमुख इहलोक तथा परलोक में काल द्वारा बंधे रहते हैं॥ ३॥ जिन व्यक्तियों के हृदय में दिन–रात राम का निवास होता है, वही पूर्ण संत हैं। हे नानक ! जिसे राम मिल जाता है, उसका भ्रम दूर हो जाता है॥ ४॥ ११॥

गउड़ी महला १ ॥ जनमि मरै त्रै गुण हितकारु ॥ चारे बेद कथहि आकारु ॥ तीनि अवसथा कहहि वखिआनु ॥ तुरीआवसथा सतिगुर ते हरि जानु ॥ १ ॥ राम भगति गुर सेवा तरणा ॥ बाहुड़ि जनमु न होइ है मरणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चारि पदारथ कहै सभु कोई ॥ सिंम्रिति सासत पंडित मुखि सोई ॥ बिनु गुर अरथु बीचारु न पाइआ ॥ मुकति पदारथु भगति हरि पाइआ ॥ २ ॥ जा कै हिरदै वसिआ हरि सोई ॥ गुरमुखि भगति परापति होई ॥ हरि की भगति मुकति आनंदु ॥ गुरमति पाए परमानंदु ॥ ३ ॥ जिनि पाइआ गुरि देखि दिखाइआ ॥ आसा माहि निरासु बुझाइआ ॥ दीना नाथु सरब सुखदाता ॥ नानक हरि चरणी मनु राता ॥ ४ ॥ १२ ॥

जिस व्यक्ति का त्रिगुणात्मक दुनिया से प्रेम है, वह जन्मता–मरता ही रहता है। चारों ही वेद सृष्टि का कथन करते हैं। वह मन की तीन अवस्थाओं का बखान करते हैं। मन की तुरीयावस्था भगवान रूप सतिगुरु से ही जानी जाती है॥ १॥ राम की भक्ति एवं गुरु की सेवा करने से प्राणी भवसागर से पार

हो जाता है। जो भवसागर से पार हो जाता है, उसका पुनः दुनिया में जन्म–मरण नहीं होता॥ १॥ रहाउ॥ प्रत्येक प्राणी धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चार उत्तम पदार्थों का वर्णन करता है। सत्ताइस स्मृतियों, छ : शास्त्रों और पण्डितों के मुख से यही सुना जाता है। गुरु के बिना अर्थ का ज्ञान किसी ने भी नहीं पाया। मुक्ति पदार्थ अर्थात् मोक्ष ईश्वर की भक्ति द्वारा ही प्राप्त होता है॥ २॥ जिस व्यक्ति के हृदय में परमात्मा का निवास हो जाता है, उसे गुरु के माध्यम से परमात्मा की भक्ति प्राप्त हो जाती है। परमात्मा की भक्ति करने से मोक्ष एवं आनंद प्राप्त हो जाता है। गुरु की मति द्वारा उसे परमानन्द प्राप्त होता है॥ ३॥ जिसने गुरु को पा लिया है, गुरु स्वयं ही उसे भगवान के दर्शन करवा देता है। मुझे आशावादी को गुरु ने निर्लिप्त रहना सिखा दिया है। दीनानाथ प्रभु जीवों को सर्व सुख प्रदान करने वाला है। हे नानक! मेरा मन भगवान के सुन्दर चरणों में मग्न हो गया है॥ ४॥ १२॥

गउड़ी चेती महला १ ॥ अंम्रित काइआ रहै सुखाली बाजी इहु संसारो ॥ लबु लोभु मुचु कूड़ु कमावहि बहुतु उठावहि भारो ॥ तूं काइआ मै रुलदी देखी जिउ धर उपरि छारो ॥ १ ॥ सुणि सुणि सिख हमारी ॥ सुक्रितु कीता रहसी मेरे जीअड़े बहुड़ि न आवै वारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउ तुधु आखा मेरी काइआ तूं सुणि सिख हमारी ॥ निंदा चिंदा करहि पराई झूठी लाइतबारी ॥ वेलि पराई जोहहि जीअड़े करहि चोरी बुरिआरी ॥ हंसु चलिआ तूं पिछै रहीएहि छुटड़ि होईअहि नारी ॥ २ ॥ तूं काइआ रहीअहि सुपनंतरि तुधु किआ करम कमाइआ ॥ करि चोरी मै जा किछु लीआ ता मनि भला भाइआ ॥ हलति न सोभा पलति न ढोई अहिला जनमु गवाइआ ॥ ३ ॥ हउ खरी दुहेली होई बाबा नानक मेरी बात न पुछै कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ताजी तुरकी सुइना रुपा कपड़ केरे भारा ॥ किस ही नालि न चले नानक झड़ि झड़ि पए गवारा ॥ कूजा मेवा मै सभ किछु चाखिआ इकु अंम्रितु नामु तुमारा ॥ ४ ॥ दे दे नीव दिवाल उसारी भसमंदर की ढेरी ॥ संचे संचि न देई किस ही अंधु जाणै सभ मेरी ॥ सोइन लंका सोइन माड़ी संपै किसै न केरी ॥ ५ ॥ सुणि मूरख मंन अजाणा ॥ होगु तिसै का भाणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साहु हमारा ठाकुरु भारा हम तिस के वणजारे ॥ जीउ पिंडु सभ रासि तिसै की मारि आपे जीवाले ॥ ६ ॥ १ ॥ १३ ॥

यह सुन्दर काया स्वयं को अमर समझकर जीवन के सुख भोगने में लगी रहती है किन्तु उसे यह ज्ञान नहीं कि यह दुनिया तो (भगवान की) एक खेल है। हे मेरी काया! तू लालच, लोभ एवं बहुत झूठ कमा रही है और तू अपने सिर पर पापों का अत्यधिक भार उठा रही है। हे मेरी काया! मैंने तुझे पृथ्वी पर राख की भाँति बर्बाद होते देखा है॥ १॥ हे मेरी काया! मेरी सीख ध्यानपूर्वक सुन। तेरे किए हुए शुभ कर्म ही अन्तिम समय तेरे साथ रहेंगे। हे मेरे मन! इस तरह का सुनहरी अवसर दोबारा तेरे हाथ नहीं लगेगा॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरी काया! मैं तुझे फिर कहता हूँ, मेरी सीख को ध्यानपूर्वक सुन। तुम दूसरों की निन्दा और प्रशंसा करती हो और झूठी चुगली करती रहती हो। हे मन! तुम पराई नारी को कुदृष्टि से देखते हो, तुम चोरी करते हो और कुकर्म करते हो। हे मेरी काया! जब आत्मा रूपी राजहंस निकल कर परलोक चला जाएगी तो तू पीछे यही रह जाएगा और परित्यक्ता स्त्री की तरह हो जाओगी॥ २॥ हे मेरी काया! तुम स्वप्न की तरह वास करती हो। तुमने कौन–सा शुभ कर्म किया है। जब मैं चोरी करके कोई वस्तु लाया तो यह हृदय को अच्छा लगता रहा। इस मृत्यु लोक में मुझे कोई शोभा नहीं मिली और परलोक में मुझे कोई सहारा नहीं मिलेगा। मैंने अपना अनमोल मानव जीवन व्यर्थ ही गंवा लिया है॥ ३॥ हे बाबा नानक! मैं बहुत दुखी हो गई हूँ, और कोई भी मेरी चिन्ता नहीं

करता॥ १॥ रहाउ॥ हे नानक! यदि किसी के पास तुर्की घोड़े, सोना–चांदी एवं वस्त्रों के अम्बार हो परन्तु अन्तिम समय यह उसके साथ नहीं जाते। हे मूर्ख जीव! ये सभी दुनिया में ही रह जाते हैं। हे प्रभु! मैंने मिश्री एवं मेवा इत्यादि सभी फल खा कर देखे हैं, परन्तु एक तुम्हारा ही नाम अमृत है॥ ४॥ गहरी नींव रख–रख कर मनुष्य मकान की दीवार खड़ी करता है। परन्तु (काल आने पर) यह मन्दिर भी ध्वस्त होकर मिट्टी का ढेर बन जाता है। मूर्ख प्राणी धन–दौलत संचित करता है और किसी को भी नहीं देता। मूर्ख प्राणी ख्याल करता है कि सब कुछ उसका अपना है। परन्तु (यह नहीं जानता कि) सोने की लंका, सोने के महल (रावण के भी नहीं रहे, तू कौन बेचारा है) यह धन किसी का भी नहीं बना रहता॥ ५॥ हे मूर्ख एवं अज्ञानी मन! मेरी बात सुनो, उस ईश्वर की रज़ा ही फलीभूत होगी॥ १॥ रहाउ॥ मेरा ठाकुर–प्रभु बहुत बड़ा साहूकार है और मैं उसका एक व्यापारी हूँ। मेरी आत्मा एवं शरीर यह सब उसकी दी हुई पूँजी है। वह स्वयं ही जीवों को मार कर पुनः जीवित कर देता है॥ ६॥ १॥ १३॥

गउड़ी चेती महला १ ॥ अवरि पंच हम एक जना किउ राखउ घर बारु मना ॥ मारहि लूटहि नीत नीत किसु आगै करी पुकार जना ॥ १ ॥ स्री राम नामा उचरु मना ॥ आगै जम दलु बिखमु घना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उसारि मड़ोली राखै दुआरा भतिरि बैठी सा धना ॥ अंम्रित केल करे नित कामणि अवरि लुटेनि सु पंच जना ॥ २ ॥ ढाहि मड़ोली लूटिआ देहुरा सा धन पकड़ी एक जना ॥ जम डंडा गलि संगलु पड़िआ भागि गए से पंच जना ॥ ३ ॥ कामणि लोड़ै सुइना रुपा मित्र लुड़ेनि सु खाधाता ॥ नानक पाप करे तिन कारणि जासी जमपुरि बाधाता ॥ ४ ॥ २ ॥ १४ ॥

हे मेरे मन! मेरे काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार पाँच शत्रु हैं, मैं अकेला हूँ, मैं इनसे अपना घर किस तरह बचाऊं, ये पाँच मुझे प्रतिदिन मारते और लूटते रहते हैं। फिर मैं किस के समक्ष विनती करूँ॥ १॥ हे मेरे मन! श्री राम के नाम का सिमरन कर। तेरे समक्ष यमराज की बेशुमार सेना दिखाई दे रही है॥ १॥ रहाउ॥ परमात्मा ने देहि का देहुरा बनाया है, इसको दस द्वार लगाए हैं और इसके भीतर ईश्वर के आदेश से आत्मा रूपी स्त्री बैठी है। परन्तु देहि को अमर जानकर कामिनी सदैव खेल–तमाशे करती है और कामादिक पांचों वैरी भीतरी शुभ गुण लूटते रहते हैं॥ २॥ अंतः मृत्यु देहि रूपी इमारत को ध्वस्त कर देती है, मन्दिर को लूट लेती है और अकेली कामिनी पकड़ी जाती है। पांचों विकार भाग जाते हैं। जीव–स्त्री की गर्दन में जंजीरें पड़ती हैं और उसके सिर पर यम का दण्ड पड़ता है॥ ३॥ कामिनी (जीव–स्त्री) सोने–चांदी के आभूषणों की माँग करती है, उसके संबंधी स्वादिष्ट भोजन पदार्थ माँगते रहते हैं। हे नानक! इनकी खातिर प्राणी पाप करता है। अंतत : पापों के कारण बंधा हुआ यम (मृत्यु) की नगरी में जाता है॥ ४॥ २॥ १४॥

गउड़ी चेती महला १ ॥ मुंद्रा ते घट भीतरि मुंद्रा कांइआ कीजै खिंथाता ॥ पंच चेले वसि कीजहि रावल इहु मनु कीजै डंडाता ॥ १ ॥ जोग जुगति इव पावसिता ॥ एकु सबदु दूजा होरु नासति कंद मूलि मनु लावसिता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मूंडि मुंडाइऐ जे गुरु पाईऐ हम गुरु कीनी गंगाता ॥ त्रिभवण तारणहारु सुआमी एकु न चेतसि अंधाता ॥ २ ॥ करि पटंबु गली मनु लावसि संसा मूलि न जावसिता ॥ एकसु चरणी जे चितु लावहि लबि लोभि की धावसिता ॥ ३ ॥ जपसि निरंजनु रचसि मना ॥ काहे बोलहि जोगी कपटु घना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ कमली हंसु इआणा मेरी मेरी करत बिहाणीता ॥ प्रणवति नानकु नागी दाझै फिरि पाछै पछुताणीता ॥ ४ ॥ ३ ॥ १५ ॥

हे योगी ! तू अपने हृदय में संतोष उत्पन्न कर, यही तेरे कानों में पहनने वाले वास्तविक कुण्डल हैं। अपने नश्वर शरीर को ही गुदड़ी बना। हे योगी ! अपने पाँच शिष्यों ज्ञानेन्द्रियों को वश में कर और इस मन को अपना डण्डा बना॥ १॥ इस तरह तुझे योग करने की युक्ति मिल जाएगी। एक प्रभु का नाम ही सदैव स्थिर है, शेष सब कुछ क्षणभंगुर है। अपने मन को नाम-सिमरन में लगा, यह नाम ही तेरे लिए कन्दमूल रूपी भोजन है॥ १॥ रहाउ॥ यदि गंगा पर जाकर सिर मुंडाने से गुरु मिलता है तो मैंने तो पहले ही गुरु को गंगा बना लिया है अर्थात् गुरु ही पवित्र तीर्थ है। एक ईश्वर तीनों लोकों (के प्राणियों) को पार करने में समर्थ है। ज्ञानहीन मनुष्य प्रभु को स्मरण नहीं करता॥ २॥ हे योगी ! तुम आडम्बर रचते हो और मौखिक बातों से अपने मन को लगाते हो। लेकिन तेरा संशय कदापि दूर नहीं होगा। यदि तुम अपना मन एक प्रभु के चरणों से लगा लो तो झूठ, लोभ के कारण बनी तेरी दुविधा दूर हो जाए॥ ३॥ हे योगी ! निरंजन प्रभु की आराधना करने से तेरा मन उस में लीन हो जाएगा। हे योगी ! तुम इतना बड़ा छल-कपट क्यों बोलते हो॥ १॥ रहाउ॥ तेरी काया बावली है और मन मूर्ख है। तेरी समस्त अवस्था माया के मोह में बीतती जा रही है। नानक विनती करता है कि नग्न देहि जब जल जाती है तो समय समाप्त हुआ जानकर आत्मा पश्चाताप करती है॥ ४॥ ३॥ १५॥

गउड़ी चेती महला १ ॥ अउखध मंत्र मूलु मन एकै जे करि द्रिड़ु चितु कीजै रे ॥ जनम जनम के पाप करम के काटनहारा लीजै रे ॥ १ ॥ मन एको साहिबु भाई रे ॥ तेरे तीनि गुणा संसारि समावहि अलखु न लखणा जाई रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सकर खंडु माइआ तनि मीठी हम तउ पंड उचाई रे ॥ राति अनेरी सूझसि नाही लजु टूकसि मूसा भाई रे ॥ २ ॥ मनमुखि करहि तेता दुखु लागै गुरमुखि मिलै वडाई रे ॥ जो तिनि कीआ सोई होआ किरतु न मेटिआ जाई रे ॥ ३ ॥ सुभर भरे न होवहि ऊणे जो राते रंगु लाई रे ॥ तिन की पंक होवै जे नानकु तउ मूड़ा किछु पाई रे ॥ ४ ॥ ४ ॥ १६ ॥

हे मेरे मन ! यदि तू समस्त रोगों की औषधि रूपी मूल मन्त्र (प्रभु-नाम) को अपने हृदय में बसा ले, तो तू जन्म-जन्मांतरों में किए पापों का नाश करने वाले परमेश्वर को प्राप्त कर लेगा॥ १॥ हे मेरे भाई ! मेरे मन को एक ईश्वर ही अच्छा लगता है। हे परमेश्वर ! तेरी तीन विशेषताओं में जगत् समाया हुआ है अर्थात् त्रिगुणी इन्द्रियां संसार के मोह में लगी हुई हैं और उस अलक्ष्य परमेश्वर को समझा नहीं जा सकता॥१॥ रहाउ॥ यह माया शक्कर व चीनी की भाँति शरीर को मधुर लगती है। हम प्राणियों ने माया का बोझ उठाया हुआ है। ज्ञानहीन रूपी अंधेरी रात में कुछ दिखाई नहीं देता और मृत्यु का चूहा (यमराज) जीवन की रस्सी काटता जा रहा है॥ २॥ स्वेच्छाचारी जीव जितना अधिक धर्म कर्म करता है, उतना अधिक वह दुखी होता है। लेकिन गुरमुख को यश प्राप्त होता है। जो कुछ परमात्मा करता है, वही होता है, जीव की किस्मत मिटाई नहीं जा सकती॥ ३॥ जो प्राणी परमात्मा के चरणों में प्रीति लगाते और मग्न रहते हैं, वे प्रेम-रस से परिपूर्ण रहते हैं और प्रेम से शून्य नहीं होते। यदि नानक उनके चरणों की धूलि बन जाए तो उस विमूढ़ (मन) को भी कुछ प्राप्त हो जाए॥ ४॥ ४॥ १६॥

गउड़ी चेती महला १ ॥ कत की माई बापु कत केरा किदू थावहु हम आए ॥ अगनि बिंब जल भीतरि निपजे काहे कंमि उपाए ॥ १ ॥ मेरे साहिबा कउणु जाणै गुण तेरे ॥ कहे न जानी अउगण मेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ केते रुख बिरख हम चीने केते पसू उपाए ॥ केते नाग कुली महि आए केते पंख उडाए ॥ २ ॥ हट पटण बिज मंदर भंनै करि चोरी घरि आवै ॥ अगहु देखै पिछहु देखै तुझ ते कहा छपावै ॥ ३ ॥ तट तीरथ हम नव खंड देखे हट पटण बाजारा ॥ लै कै तकड़ी तोलणि लागा घट ही

महि वणजारा ॥ ४ ॥ जेता समुंदु सागरु नीरि भरिआ तेते अउगण हमारे ॥ दइआ करहु किछु मिहर उपावहु डुबदे पथर तारे ॥ ५ ॥ जीअड़ा अगनि बराबरि तपै भीतरि वगै काती ॥ प्रणवति नानकु हुकमु पछाणै सुखु होवै दिनु राती ॥ ६ ॥ ५ ॥ १७ ॥

(हम जीवों को पापों के कारण अनेक योनियों में भटकना पड़ता है, फिर हम क्या व्यक्त करें कि)

कब की हमारी माता कौन है, कब का हमारा पिता कौन है, किस-किस स्थान से हम आए हैं ? पिता के जल रूपी वीर्य के बुलबुले से माता की गर्भ-अग्नि में पड़कर हम उत्पन्न हुए हैं लेकिन पता नहीं भगवान ने किस मकसद से हमारी रचना की है॥ १॥ हे मेरे भगवान ! तेरे गुणों को कौन जान सकता है ? मुझ में इतने अवगुण हैं कि उनका वर्णन नहीं किया जा सकता॥ १॥ रहाउ॥ हमने अनेक वृक्षों की योनियां देखीं। अनेक बार पशु-योनियों में उत्पन्न हुए। अनेक बार हम सर्पों के वंशों में उत्पन्न हुए और अनेक बार पक्षी बन-बनकर उड़ते रहे॥ २॥ मनुष्य नगरों की दुकानें एवं मजबूत महलों को सेंध लगाता है और वहाँ चोरी करके घर आ जाता है। वह मूर्ख अपने आगे देखता है और अपने पीछे भी देखता है किन्तु मूर्ख मनुष्य ईश्वर से अपने आपको कहाँ छिपा सकता है ?॥ ३॥ मैंने पावन तीर्थ-स्थलों के तट, नवखण्ड, नगर की दुकानें एवं व्यापार के केन्द्र देखे हैं। जीव रूपी व्यापारी अपने हृदय में तराजू लेकर अपने कमाए नाम रूपी धन को तोलता है॥ ४॥ हे प्रभु ! जितना सागर में जल भरा हुआ है, हमारे अवगुण उतने ही हैं। हे ईश्वर ! मुझ पर अपनी दया एवं कुछ कृपादृष्टि करो और मुझ डूबते पत्थर को भवसागर में से पार कर दो॥ ५॥ मेरा हृदय अग्नि की भाँति देदीप्यमान हो रहा है और उसके भीतर तृष्णा रूपी कैंची चल रही है। नानक प्रार्थना करता है कि हे मेरे प्रभु ! यदि मैं तेरे हुक्म को पहचान लूँ तो मुझे दिन-रात सुख मिलता रहेगा॥ ६॥ ५॥ १७॥

गउड़ी बैरागणि महला १ ॥ रैणि गवाई सोइ कै दिवसु गवाइआ खाइ ॥ हीरे जैसा जनमु है कउडी बदले जाइ ॥ १ ॥ नामु न जानिआ राम का ॥ मूड़े फिरि पाछै पछुताहि रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनता धनु धरणी धरे अनत न चाहिआ जाइ ॥ अनत कउ चाहन जो गए से आए अनत गवाइ ॥ २ ॥ आपण लीआ जे मिलै ता सभु को भागठु होइ ॥ करमा उपरि निबड़ै जे लोचै सभु कोइ ॥ ३ ॥ नानक करणा जिनि कीआ सोई सार करेइ॥ हुकमु न जापी खसम का किसै वडाई देइ ॥ ४ ॥ १ ॥ १८ ॥

मनुष्य अपनी रात्रि सोकर और दिन खा-पीकर व्यर्थ ही गंवा देता है। उसका हीरे समान अनमोल जीवन (भक्ति के बिना) कौड़ी के भाव व्यर्थ चला जाता है॥ १॥ हे मूर्ख ! तूने राम के नाम को नहीं जाना। तुम फिर मरणोपरांत पश्चाताप करोगे॥ १॥ रहाउ॥ तूने नाशवान धन संग्रह करके धरती में दबाकर रखा हुआ है। इस धन के कारण ही तेरे मन में अनन्त परमेश्वर के स्मरण की इच्छा उत्पन्न नहीं होती। जो भी नाशवान धन पदार्थ की ओर दौड़ते फिरते हैं, वे अनन्त प्रभु के नाम-धन को गंवा कर आए हैं॥ २॥ यदि केवल चाहने से धन मिलता हो तो सभी मनुष्य धनवान बन जाएँ। चाहे सभी मनुष्य धन की तृष्णा में रहते हैं परन्तु उनकी किस्मत का उनके कर्मों अनुसार ही फैसला होता है॥ ३॥ हे नानक ! जिसने सृष्टि की रचना की है, वही सबका पालन-पोषण करता है। मालिक-प्रभु का हुक्म जाना नहीं जा सकता कि वह किसे महानता प्रदान करता है॥ ४॥ १॥ १८॥

गउड़ी बैरागणि महला १ ॥ हरणी होवा बनि बसा कंद मूल चुणि खाउ ॥ गुर परसादी मेरा सहु मिलै वारि वारि हउ जाउ जीउ ॥ १ ॥ मै बनजारनि राम की ॥ तेरा नामु वखरु वापारु जी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोकिल होवा अंबि बसा सहजि सबद बीचारु ॥ सहजि सुभाइ मेरा सहु मिलै दरसनि रूपि

अपारु ॥ २ ॥ मछुली होवा जलि बसा जीअ जंत सभि सारि ॥ उरवारि पारि मेरा सहु वसै हउ मिलउगी बाह पसारि ॥ ३ ॥ नागनि होवा धर वसा सबदु वसै भउ जाइ ॥ नानक सदा सोहागणी जिन जोती जोति समाइ ॥ ४ ॥ २ ॥ १६ ॥

यदि मुझे मृगिनी बनकर वन में निवास करना पड़े तो मैं वहाँ कन्दमूल चुन-चुनकर खा लिया करुँगी। यदि गुरु की कृपा से मुझे मेरा पति-प्रभु मिल जाए तो मैं बार-बार उस पर कुर्बान जाऊँ॥ १॥ मैं राम की वनजारिन (व्यापारी) हूँ। हे प्रभु! तेरा नाम ही व्यापार करने के लिए मेरा सौदा है॥ १॥ रहाउ॥ यदि मुझे कोयल बन कर आम के पौधे पर रहना पड़े तो भी मैं सहज ही नाम की आराधना करूँगी। यदि मुझे सहज-स्वभाव मेरा पति-प्रभु मिल जाए तो उसके अपार रूप के दर्शन करुँगी॥ २॥ यदि मुझे मछली बनकर जल में निवास करना पड़े तो भी मैं उसकी आराधना करूँगी, जो समस्त जीव-जन्तुओं की देखभाल करता है। प्रियतम प्रभु (इस संसार-सागर के अथाह जल के) दोनों ओर निवास करता है। अपनी भुजाएँ फैलाकर मैं उससे मिलूंगी॥ ३॥ यदि मुझे नागिन बनकर पृथ्वी में निवास करना पड़े तो भी मैं अपने प्रभु के नाम में ही निवास करूँगी और मेरा भय निवृत्त हो जाएगा। हे नानक! वह जीव-स्त्री सदा सुहागिन है, जिसकी ज्योति प्रभु-ज्योति में समाई रहती है॥ ४॥ २॥ १६॥

गउड़ी पूरबी दीपकी महला १ १ओ सितिगुर प्रसादि ॥

जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ बीचारो ॥ तितु घरि गावहु सोहिला सिवरहु सिरजणहारो ॥ १ ॥ तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला ॥ हउ वारी जाउ जितु सोहिले सदा सुखु होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु ॥ तेरे दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु सुमारु ॥ २ ॥ संबति साहा लिखिआ मिलि करि पावहु तेलु ॥ देहु सजण आसीसड़ीआ जिउ होवै साहिब सिउ मेलु ॥ ३ ॥ घरि घरि एहो पाहुचा सदड़े नित पवंनि ॥ सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह अवंनि ॥ ४ ॥ १ ॥ २० ॥

जिस सत्संगति में परमात्मा की कीर्ति का गान होता है और सृष्टिकर्त्ता की महिमा का चिंतन किया जाता है, उस सत्संगति रूपी घर में जाकर यश के गीत गायन करो और उस करतार की ही आराधना करो॥ १॥ हे मन! तू सत्संगियों के साथ मिलकर निडर प्रभु की स्तुति के गीत गायन कर। मैं उस स्तुति के गीत पर कुर्बान जाता हूँ, जिस द्वारा सदैव सुख प्राप्त होता है॥ १॥ रहाउ॥

हे मानव! जो पालनहार ईश्वर नित्यप्रति अनेकानेक जीवों का पोषण कर रहा है, वह तुझ पर भी कृपा-दृष्टि करेगा। उस ईश्वर द्वारा प्रदत्त पदार्थों का कोई मूल्यांकन नहीं है, क्योंकि वे तो अनन्त हैं॥ २॥ इस मृत्युलोक से जाने का समय निश्चित किया हुआ है अर्थात् इहलोक से जाने हेतु साहे-पत्र रूपी संदेश संवत-दिन इत्यादि लिखकर तय किया हुआ है, इसलिए भगवान से मिलाप हेतु सत्संगियों के साथ मिलकर तेल डालने का शगुन कर लो अर्थात् मृत्यु रूपी विवाह होने से पूर्व शुभ कर्म कर लो। हे सज्जनो! मुझे अपना आशीर्वाद दो कि मेरा प्रभु-पति से मिलन हो जाए॥ ३॥ प्रत्येक घर में इस साहे-पत्र को भेजा जा रहा है, नित्य ही यह सन्देश किसी न किसी घर पहुँच रहा है अर्थात् नित्य ही कोई न कोई मृत्यु को प्राप्त हो रहा है। नानक कथन करते हैं कि हे जीव! मृत्यु का निमंत्रण भेजने वाले को स्मरण कर, चूंकि वह दिन निकट आ रहे हैं॥ ४॥ १॥ २०॥

रागु गउड़ी गुआरेरी ॥ महला ३ चउपदे ॥ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

गुरि मिलिऐ हरि मेला होई ॥ आपे मेलि मिलावै सोई ॥ मेरा प्रभु सभ बिधि आपे जाणै ॥ हुकमे मेले सबदि पछाणै ॥ १ ॥ सतिगुर कै भइ भ्रमु भउ जाइ ॥ भै राचै सच रंगि समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरि मिलिऐ हरि मनि वसै सुभाइ ॥ मेरा प्रभु भारा कीमति नही पाइ ॥ सबदि सालाहै अंतु न पारावारु ॥ मेरा प्रभु बखसे बखसणहारु ॥ २ ॥ गुरि मिलिऐ सभ मति बुधि होइ ॥ मनि निरमलि वसै सचु सोइ ॥ साचि वसिऐ साची सभ कार ॥ ऊतम करणी सबद बीचार ॥ ३ ॥ गुर ते साची सेवा होइ ॥ गुरमुखि नामु पछाणै कोइ ॥ जीवै दाता देवणहारु ॥ नानक हरि नामे लगै पिआरु ॥ ४ ॥ १ ॥ २१ ॥

यदि गुरु मिल जाए तो ईश्वर से मिलन हो जाता है। वह ईश्वर स्वयं ही गुरु से मिलाकर अपने साथ मिला लेता है। मेरा प्रभु जीवों को अपने साथ मिलाने की समस्त युक्तियां जानता है। अपने हुक्म द्वारा वह उनको अपने साथ मिला लेता है, जो उसके नाम को पहचानते हैं॥ १॥ सतिगुरु के भय–आदर में रहने से संशय एवं दूसरे खौफ लुप्त हो जाते हैं। जो गुरु के भय में हर्षित रहता है, वह सत्य के प्रेम में लीन रहता है॥ १॥ रहाउ॥ यदि गुरु मिल जाए तो ईश्वर सहज ही मनुष्य के हृदय में निवास कर जाता है। मेरा प्रभु महान है, उसका मूल्यांकन नहीं पाया जा सकता। गुरु के उपदेश से मैं प्रभु की सराहना करता हूँ, जिसका कोई अन्त नहीं, उसके अस्तित्व का ओर–छोर नहीं मिल सकता। मेरा परमेश्वर क्षमाशील है। वह दोषी जीवों को भी क्षमा कर देता है॥ २॥ गुरु के मिलन से समस्त चतुराइयां एवं सद्बुद्धि प्राप्त हो जाती है। इस तरह मन निर्मल हो जाता है और सत्यस्वरूप परमेश्वर उसमें निवास कर लेता है। यदि मनुष्य सत्य में निवास कर ले तो उसके कर्म सच्चे (श्रेष्ठ) हो जाते हैं। ईश्वर का नाम–सिमरन ही शुभ कर्म है॥ ३॥ गुरु के द्वारा सत्यस्वरूप प्रभु की सेवा–भक्ति की जाती है। गुरु की दया से कोई विरला पुरुष ही हरिनाम को पहचानता है। समस्त जीवों को देने वाला दाता सदैव ही जीवित रहता है। हे नानक! मनुष्य का हरि–नाम से ही प्रेम हो जाता है॥ ४॥ १॥ २१॥

गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ गुर ते गिआनु पाए जनु कोइ ॥ गुर ते बूझै सीझै सोइ ॥ गुर ते सहजु साचु बीचारु ॥ गुर ते पाए मुकति दुआरु ॥ १ ॥ पूरै भागि मिलै गुरु आइ ॥ साचै सहजि साचि समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरि मिलिऐ त्रिसना अगनि बुझाए ॥ गुर ते सांति वसै मनि आए ॥ गुर ते पवित पावन सुचि होइ ॥ गुर ते सबदि मिलावा होइ ॥ २ ॥ बाझु गुरू सभ भरमि भुलाई ॥ बिनु नावै बहुता दुखु पाई ॥ गुरमुखि होवै सु नामु धिआई ॥ दरसनि सचै सची पति होई ॥ ३ ॥ किस नो कहीऐ दाता इकु सोई ॥ किरपा करे सबदि मिलावा होई ॥ मिलि प्रीतम साचे गुण गावा ॥ नानक साचे साचि समावा ॥ ४ ॥ २ ॥ २२ ॥

कोई विरला पुरुष ही गुरु से ज्ञान प्राप्त करता है। जो व्यक्ति गुरु से ईश्वर बारे ज्ञान प्राप्त कर लेता है, उसका जीवन–मनोरथ सफल हो जाता है। गुरु से ही सत्यस्वरूप परमात्मा का नाम–स्मरण प्राप्त होता है। गुरु द्वारा ही मोक्ष का द्वार पाया जाता है॥ १॥ गुरु उसे ही आकर मिलता है, जिसके पूर्ण भाग्य होते हैं। वह परमात्मा का सिमरन करके सहज ही सत्य में समा जाता है॥ १॥ रहाउ॥ गुरु को मिलने से तृष्णा की अग्नि बुझ जाती है। गुरु के द्वारा सुख–शांति आकर मन में निवास करती है। गुरु के द्वारा मनुष्य पवित्र पावन एवं निर्मल हो जाता है। गुरु द्वारा ही प्रभु से मिलन होता है॥ २॥

गुरु के बिना सारी दुनिया भ्रम में भटकती रहती है। नाम के बिना प्राणी बहु
जो प्राणी गुरमुख बन जाता है, वहीं व्यक्ति ईश्वर के नाम का ध्यान करता
से मनुष्य को सच्ची शोभा प्राप्त होती है॥ ३॥ केवल एक वही दाता है, दूस
किया जाए? जिस व्यक्ति पर प्रभु कृपा कर देता है, उसका शब्द द्वारा उ
मैं अपने प्रियतम गुरु से मिलकर सत्यस्वरूप परमात्मा की गुणस्तुति करता
सच्चे गुरु की कृपा से सत्यस्वरूप परमात्मा में समाया रहता हूँ॥ ४॥ २॥

**गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ सु थाउ सचु मनु निरमलु होइ ॥ सचि निवा
बाणी जुग चारे जापै ॥ सभु किछु साचा आपे आपै ॥ १ ॥ करमु होवै सत
गावै बैसि सु थाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जलउ इह जिहवा दूजै भाइ ॥ हरि रसु न
बिनु बूझे तनु मनु फीका होइ ॥ बिनु नावै दुखीआ चलिआ रोइ ॥ २ ॥ रसना
सुभाइ ॥ गुर किरपा ते सचि समाइ ॥ साचे राती गुर सबदु वीचार ॥ अंम्रितु प
नामि समावै जो भाडा होइ ॥ ऊंधै भांडै टिकै न कोइ ॥ गुर सबदी मनि नामि
भांडा जिसु सबद पिआस ॥ ४ ॥ ३ ॥ २३ ॥**

यह (सत्संग का) स्थान सत्य का पावन स्थल है, जहाँ मन निर्मल हो
सत्य है, जहाँ सत्यस्वरूप परमात्मा निवास करता है। सच्ची वाणी चारों ही
स्वरूप परमात्मा स्वयं ही सब कुछ है॥ १॥ यदि परमात्मा की कृपा हो जाए
संगति मिल जाती है। फिर वह उस श्रेष्ठ स्थान पर विराजमान होकर भगवान
रहता है॥ १॥ रहाउ॥ यह जिह्वा जल जाए, जो दूसरे स्वादों में लगी रहती है
की चाहवान है। यह हरि–रस का आस्वादन नहीं करती और मन्दे वचन बोल
समझे बिना तन एवं मन फीके हो जाते हैं। स्वामी के नाम के बिना दुःखी होक
हुआ दुनिया से चला जाता है। २॥ जिनकी जिह्वा सहज ही हरि–रस का पान
कृपा से सत्य में ही समा जाती है। वह गुरु के शब्द का चिंतन करती रहती
रहती है। फिर वह अमृत रस की निर्मल धारा का पान करती रहती है॥ ३
व्यक्ति के हृदय रूपी बर्तन में तभी समाता है, यदि वह शुद्ध हो तथा अशुद्ध
भी नहीं ठहरता। गुरु के शब्द द्वारा मन में भगवान के नाम का निवास हो जा
व्यक्ति के हृदय में प्रभु–नाम को पान करने की तीव्र लालसा होती है, उसक
शुद्ध होता है॥ ४॥ ३॥ २३॥

**गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ इकि गावत रहे मनि सादु न पाइ ॥ हउमै वि
गावणि गावहि जिन नाम पिआरु ॥ साची बाणी सबद बीचारु ॥ १ ॥ गावत
मनु तनु राता नामि सुहावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इकि गावहि इकि भगति करेहि
असनेह ॥ सची भगति गुर सबद पिआरि ॥ अपना पिरु राखिआ सदा उरि धा
मूरख आपु जणावहि ॥ नचि नचि टपहि बहुतु दुखु पावहि ॥ नचिऐ टपिऐ**

ईश्वर के नाम से प्रेम करते हैं, वही असल में प्रभु के गीत गाते हैं। वह सच्ची वाणी एवं शब्द का चिंतन करते हैं॥ १॥ यदि सतिगुरु को अच्छा लगे तो मनुष्य प्रभु का यशोगान करता रहता है। उसका मन एवं तन नाम में मग्न हो जाता है और नाम से उसका जीवन सुन्दर बन जाता है॥ १॥ रहाउ॥ कई प्राणी प्रभु के गुणों के गीत गाते हैं और कई भक्ति करते हैं। परन्तु मन में प्रेम न होने के कारण उन्हें नाम प्राप्त नहीं होता। जो व्यक्ति गुरु के शब्द से प्रेम करता है उसकी ही भक्ति सच्ची है। ऐसा व्यक्ति सदैव ही अपने प्रियतम प्रभु को अपने हृदय में बसाकर रखता है॥ २॥ कई मूर्ख व्यक्ति रास प्रदर्शन करके भक्ति करते हैं और स्वयं को भक्त होने का दिखावा ही करते हैं। वे निरन्तर नृत्य करते और कूदते हैं और बहुत दुख सहन करते हैं। नृत्य करने एवं कूदने से प्रभु की भक्ति नहीं होती। प्रभु की भक्ति वही व्यक्ति प्राप्त करता है, जो गुरु के शब्द द्वारा अपने अहंकार को नष्ट कर देता है॥ ३॥ भक्तवत्सल प्रभु स्वयं ही भक्तों से अपनी भक्ति करवाता है। अपने अन्तर्मन में से अहंकार को नाश करना ही सच्ची भक्ति है। मेरा सत्यस्वरूप प्रभु जीवों से भक्ति करवाने की समस्त विधियों को जानता है। हे नानक! भगवान उन्हें ही क्षमा कर देता है, जो उसके नाम को पहचान लेता है॥ ४॥ ४॥ २४॥

गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ मनु मारे धातु मरि जाइ ॥ बिनु मूए कैसे हरि पाइ ॥ मनु मरै दारू जाणै कोइ ॥ मनु सबदि मरै बूझै जनु सोइ ॥ १ ॥ जिस नो बखसे दे वडिआई ॥ गुर परसादि हरि वसै मनि आई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि करणी कार कमावै ॥ ता इसु मन की सोझी पावै ॥ मनु मै मतु मैगल मिकदारा ॥ गुरु अंकसु मारि जीवालणहारा ॥ २ ॥ मनु असाधु साधै जनु कोइ ॥ अचरु चरै ता निरमलु होइ ॥ गुरमुखि इहु मनु लइआ सवारि ॥ हउमै विचहु तजे विकार ॥ ३ ॥ जो धुरि राखिअनु मेलि मिलाइ ॥ कदे न विछुड़हि सबदि समाइ ॥ आपणी कला आपे ही जाणै ॥ नानक गुरमुखि नामु पछाणै ॥ ४ ॥ ५ ॥ २५ ॥

जब मनुष्य अपने मन को नियंत्रण में कर लेता है तो उसकी समस्त दुविधा समाप्त हो जाती है। मन को नियंत्रण में किए बिना भगवान की प्राप्ति कैसे हो सकती है? कोई विरला पुरुष ही मन को नियंत्रण में करने की औषधि को जानता है। मन भगवान के नाम द्वारा ही नियंत्रण में आता है परन्तु इस भेद को वही जानता है जो नाम-सिमरन करता है॥ १॥ ईश्वर जिसे क्षमा कर देता है, उसे ही वह शोभा प्रदान करता है। गुरु की कृपा से ईश्वर आकर उसके हृदय में निवास करता है॥ १॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति गुरमुख बनकर शुभ कर्मों के आचरण की कमाई करता है, उसे ही मन के स्वभाव की सूझ होती है। मनुष्य का मन मदिरा में मस्त हुए हाथी की भाँति है। गुरु ही आत्मिक रूप से मृत इस मन को अपनी वाणी द्वारा अंकुश लगाकर आत्मिक जीवन प्रदान करने में समर्थ है॥ २॥ यह मन सहज रूप में नियंत्रण में आने वाला नहीं। कोई विरला पुरुष ही इसे नियंत्रण में करता है। यदि मनुष्य मन के स्वेच्छाचरण को नष्ट कर दे, केवल तभी यह मन पवित्र होता है। गुरमुख ने यह मन सुन्दर बना लिया है। वह अपने भीतर से अहंकार रूपी विकार को बाहर निकाल देता है॥ ३॥ जिन लोगों को परमात्मा ने आदि से ही साधुओं के मिलाप में मिला रखा है, वह कदाचित अलग नहीं होते और ईश्वर में ही लीन रहते हैं। सर्वकला सम्पूर्ण परमात्मा अपनी कला (शक्ति) स्वयं ही जानता है। हे नानक! गुरमुख ही नाम को पहचानता है॥ ४॥ ५॥ २५॥

गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ हउमै विचि सभु जगु बउराना ॥ दूजै भाइ भरमि भुलाना ॥ बहु चिंता चितवै आपु न पछाना ॥ धंधा करतिआ अनदिनु विहाना ॥ १ ॥ हिरदै रामु रमहु मेरे भाई ॥ गुरमुखि रसना हरि रसन रसाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि हिरदै जिनि रामु पछाता ॥ जगजीवनु सेवि जुग चारे

जाता ॥ हउमै मारि गुर सबदि पछाता ॥ क्रिपा करे प्रभ करम बिधाता ॥ २ ॥ से जन सचे जो गुर सबदि मिलाए ॥ धावत वरजे ठाकि रहाए ॥ नामु नव निधि गुर ते पाए ॥ हरि किरपा ते हरि वसै मनि आए ॥ ३ ॥ राम राम करतिआ सुखु सांति सरीर ॥ अंतरि वसै न लागै जम पीर ॥ आपे साहिबु आपि वजीर ॥ नानक सेवि सदा हरि गुणी गहीर ॥ ४ ॥ ६ ॥ २६ ॥

सारी दुनिया अहंकार में फँसकर पागल हो रही है तथा द्वैत-भाव के कारण भ्रम में पड़कर कुमार्गगामी हो रही है। चिंता में पड़कर लोग बहुत सोचते रहते हैं परन्तु अपने स्वरूप की पहचान नहीं करते। अपने कर्म (धंधा) करते हुए उनके रात-दिन बीत जाते हैं॥ १॥ हे मेरे भाई ! अपने हृदय में राम का सिमरन करते रहो। गुरमुख की जिह्वा हरि-रस का आनंद प्राप्त करती रहती है॥ १॥ रहाउ॥

जो गुरमुख अपने हृदय में राम को पहचान लेते हैं, वह जगजीवन प्रभु की सेवा करके चारों युगों में प्रसिद्ध हो जाते हैं। वह अपना अहंकार नष्ट कर के गुरु के शब्द द्वारा प्रभु को समझ लेते हैं। कर्मविधाता प्रभु उन पर अपनी कृपा करता है॥ २॥ जिन लोगों को गुरु के शब्द द्वारा भगवान अपने साथ मिला लेता है, वहीं व्यक्ति सत्यवादी हैं। वह अपने मन को विकारों की ओर दौड़ने से वर्जित करते हैं और उस पर विराम लगाते हैं। नवनिधियाँ पदान करने वाले नाम को वह गुरु से प्राप्त करते हैं। भगवान अपनी कृपा करके उनके मन में आकर निवास कर लेता है॥ ३॥ 'राम-राम' नाम का सिमरन करने से शरीर को बड़ा सुख एवं शांति प्राप्त होती है। जिस प्राणी के हृदय में प्रभु-नाम आ बसता है, उसको मृत्यु की पीड़ा स्पर्श नहीं करती। ईश्वर स्वयं ही जगत् का स्वामी है और स्वयं ही मंत्री है। हे नानक ! सदैव ही गुणों के भण्डार भगवान की सेवा करते रहो॥ ४॥ ६॥ २६॥

गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ सो किउ विसरै जिस के जीअ पराना ॥ सो किउ विसरै सभ माहि समाना ॥ जितु सेविऐ दरगह पति परवाना ॥ १ ॥ हरि के नाम विटहु बलि जाउ ॥ तूं विसरहि तदि ही मरि जाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिन तूं विसरहि जि तुधु आपि भुलाए ॥ तिन तूं विसरहि जि दूजै भाए ॥ मनमुख अगिआनी जोनी पाए ॥ २ ॥ जिन इक मनि तुठा से सतिगुर सेवा लाए ॥ जिन इक मनि तुठा तिन हरि मंनि वसाए ॥ गुरमती हरि नामि समाए ॥ ३ ॥ जिना पोतै पुंनु से गिआन बीचारी ॥ जिना पोतै पुंनु तिन हउमै मारी ॥ नानक जो नामि रते तिन कउ बलिहारी ॥ ४ ॥ ७ ॥ २७ ॥

उस भगवान को हम क्यों विस्मृत करें ? जिसके हमें ये आत्मा और प्राण दिए हुए हैं। उसे हम क्यों विस्मृत करें ? जो समस्त जीवों में समाया हुआ है। जिसकी सेवा-भक्ति करने से जीव उसके दरबार में स्वीकार हो जाता है तथा वहाँ उसे बड़ा आदर-सत्कार मिलता है॥ १॥ मैं हरि के नाम पर बलिहारी जाता हूँ। हे मेरे प्रभु ! जब मैं तुझे विस्मृत करूँ, मैं उसी क्षण ही प्राण त्याग देता हूँ॥ १॥ रहाउ॥

हे परमात्मा ! तू उन्हें ही विस्मृत हो जाता है, जिन्हें तूने स्वयं ही कुमार्गगामी बनाया है। तू उन्हें ही विस्मृत होता है जो माया के मोह में लीन रहते हैं। तू ज्ञानहीन स्वेच्छाचारी जीवों को योनियों में डालकर रखता है॥ २॥ जिन प्राणियों पर परमात्मा प्रसन्न होता है, उनको वह सतिगुरु की सेवा में लगा देता है। जिन प्राणियों पर भगवान बड़ा प्रसन्न होता है, भगवान स्वयं को उनके मन में बसा देता है। गुरु के उपदेश से वह हरि के नाम में लीन हो जाते हैं॥ ३॥ जिन्होंने पुण्य-कर्म किए हुए हैं, वे ज्ञान का चिंतन करते रहते हैं और अपने अहंकार को नष्ट कर देते हैं। हे नानक ! जो ईश्वर के नाम में मग्न रहते हैं, मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ॥ ४॥ ७॥ २७॥

गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ तूं अकथु किउ कथिआ जाहि ॥ गुर सबदु मारणु मन माहि समाहि ॥ तेरे गुण अनेक कीमति नह पाहि ॥ १ ॥ जिस की बाणी तिसु माहि समाणी ॥ तेरी अकथ कथा गुर सबदि वखाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह सतिगुरु तह सतसंगति बणाई ॥ जह सतिगुरु सहजे हरि गुण गाई ॥ जह सतिगुरु तहा हउमै सबदि जलाई ॥ २ ॥ गुरमुखि सेवा महली थाउ पाए ॥ गुरमुखि अंतरि हरि नामु वसाए ॥ गुरमुखि भगति हरि नामि समाए ॥ ३ ॥ आपे दाति करे दातारु ॥ पूरे सतिगुर सिउ लगै पिआरु ॥ नानक नामि रते तिन कउ जैकारु ॥ ४ ॥ ८ ॥ २८ ॥

हे भगवान! तू अकथनीय है। फिर तुझे किस तरह कथन किया जा सकता है? जो व्यक्ति गुरु के शब्द से अपने मन को वश में कर लेते हैं, भगवान उसके मन में आ बसता है। हे ईश्वर! तेरे गुण अनेक हैं और उनका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता॥ १॥ यह गुरुवाणी जिस (परमेश्वर) की है, उस (प्रभु) में ही लीन रहती है। हे प्रभु! तेरी अकथनीय कथा को गुरु के शब्द द्वारा ही वर्णन किया गया है॥ १॥ रहाउ॥

जहाँ सतिगुरु जी होते हैं, वहाँ सत्संगति हो जाती है। सतिगुरु सत्संगति में सहज ही भगवान की गुणस्तुति करते हैं। जहाँ सतिगुरु जी होते हैं, वहाँ नाम द्वारा प्राणियों का अहंकार जल जाता है॥ २॥ गुरमुख ईश्वर की सेवा–भक्ति करके उसके आत्म–स्वरूप में स्थान प्राप्त कर लेता है। गुरमुख ही अपने हृदय में भगवान के नाम को बसा लेता है। गुरमुख भक्ति द्वारा भगवान के नाम में ही समा जाता है॥ ३॥ दाता प्रभु जिस व्यक्ति को नाम की देन प्रदान करता है, उस व्यक्ति का पूर्ण सतिगुरु से प्रेम हो जाता है। हे नानक! जो व्यक्ति नाम में मग्न रहते हैं, उनकी लोक–परलोक में जय–जयकार होती है॥ ४॥ ८॥ २८॥

गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ एकसु ते सभि रूप हहि रंगा ॥ पउणु पाणी बैसंतरु सभि सहलंगा ॥ भिंन भिंन वेखै हरि प्रभु रंगा ॥ १ ॥ एकु अचरजु एको है सोई ॥ गुरमुखि वीचारे विरला कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहजि भवै प्रभु सभनी थाई ॥ कहा गुपतु प्रगटु प्रभि बणत बणाई ॥ आपे सुतिआ देइ जगाई ॥ २ ॥ तिस की कीमति किनै न होई ॥ कहि कहि कथनु कहै सभु कोई ॥ गुर सबदि समावै बूझै हरि सोई ॥ ३ ॥ सुणि सुणि वेखै सबदि मिलाए ॥ वडी वडिआई गुर सेवा ते पाए ॥ नानक नामि रते हरि नामि समाए ॥ ४ ॥ ९ ॥ २९ ॥

एक ईश्वर से ही समस्त रूप एवं रंग उत्पन्न हुए हैं। पवन, जल एवं अग्नि सब में मिले हुए हैं। हरि–प्रभु इन भिन्न–भिन्न रंगों वाले जीवों एवं पदार्थों को देखकर प्रसन्न होता है॥ १॥ यह एक अद्भुत कौतुक है कि यह सारा जगत–प्रसार एक ईश्वर का ही है और वह स्वयं इसमें विद्यमान है। कोई विरला पुरुष ही गुरु के माध्यम से इस कौतुक पर विचार करता है॥ १॥ रहाउ॥

परमेश्वर सहज ही सर्वव्यापक हो रहा है। परमेश्वर ने ऐसी सृष्टि रचना की है कि किसी स्थान पर वह लुप्त है और कहीं प्रत्यक्ष है। भगवान स्वयं ही अज्ञानता की निद्रा में सोए हुए जीवों को ज्ञान देकर जगा देता है॥ २॥ उसका मूल्यांकन कोई नहीं कर सका चाहे सभी लोग उसके गुणों को कह–कहकर कथन कर रहे हैं। जो प्राणी गुरु के शब्द में लीन होता है, वह भगवान को समझ लेता है॥ ३॥ भगवान जीवों की प्रार्थना सुन–सुनकर उनकी जरुरतों को देखता और उन्हें नाम द्वारा अपने साथ मिला लेता है। गुरु की सेवा करने से मनुष्य को बड़ी शोभा प्राप्त होती है। हे नानक! जो व्यक्ति नाम में मग्न रहते हैं, वह भगवान के नाम में ही समा जाते हैं॥ ४॥ ६॥ २६॥

गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ मनमुखि सूता माइआ मोहि पिआरि ॥ गुरमुखि जागे गुण गिआन बीचारि ॥ से जन जागे जिन नाम पिआरि ॥ १ ॥ सहजे जागै सवै न कोइ ॥ पूरे गुर ते बूझै जनु कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ असंतु अनाड़ी कदे न बूझै ॥ कथनी करे तै माइआ नालि लूझै ॥ अंधु अगिआनी कदे न सीझै ॥ २ ॥ इसु जुग महि राम नामि निसतारा ॥ विरला को पाए गुर सबदि वीचारा ॥ आपि तरै सगले कुल उधारा ॥ ३ ॥ इसु कलिजुग महि करम धरमु न कोई ॥ कली का जनमु चंडाल कै घरि होई ॥ नानक नाम बिना को मुकति न होई ॥ ४ ॥ १० ॥ ३०॥

स्वेच्छाचारी जीव माया के मोह एवं प्रेम में फँस कर अज्ञानता की निद्रा में सोया रहता है परन्तु गुरमुख भगवान के गुणों का चिंतन करके ज्ञान द्वारा जागता रहता है। जो व्यक्ति प्रभु के नाम से प्रेम करते हैं, वहीं जागते रहते हैं॥ १॥ जो व्यक्ति सहज ही जागता रहता है, वह अज्ञानता की निद्रा में नहीं सोता। इस तथ्य को कोई पुरुष पूर्ण गुरु द्वारा समझता है॥ १॥ रहाउ॥

दुष्ट एवं अनाड़ी व्यक्ति समझाने से कभी भी नहीं समझता। वह बातें तो बहुत करता रहता है परन्तु माया से ही उलझा रहता है। मोह–माया में अन्धा हुआ ज्ञानहीन व्यक्ति कभी भी अपने जीवन–मनोरथ में सफल नहीं होता॥ २॥ इस युग में राम के नाम द्वारा ही मोक्ष संभव है। कोई विरला पुरुष ही गुरु के शब्द द्वारा इस तथ्य को समझता है। वह स्वयं तो भवसागर से पार होता है और अपने समूचे वंश को भी बचा लेता है॥ ३॥ इस कलियुग में कोई भी व्यक्ति धर्म–कर्म करने में सफल नहीं होता। कलियुग का जन्म चंडाल के घर में हुआ है। हे नानक! परमात्मा के नाम बिना कोई भी मोक्ष नहीं पा सकता॥ ४॥ १०॥ ३०॥

गउड़ी महला ३ गुआरेरी ॥ सचा अमरु सचा पातिसाहु ॥ मनि साचै राते हरि वेपरवाहु ॥ सचै महलि सचि नामि समाहु ॥ १ ॥ सुणि मन मेरे सबदु वीचारि ॥ राम जपहु भवजलु उतरहु पारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भरमे आवै भरमे जाइ ॥ इहु जगु जनमिआ दूजै भाइ ॥ मनमुखि न चेतै आवै जाइ ॥ २ ॥ आपि भुला कि प्रभि आपि भुलाइआ ॥ इहु जीउ विडाणी चाकरी लाइआ ॥ महा दुखु खटे बिरथा जनमु गवाइआ ॥ ३ ॥ किरपा करि सतिगुरू मिलाए ॥ एको नामु चेते विचहु भरमु चुकाए ॥ नानक नामु जपे नाउ नउ निधि पाए ॥ ४ ॥ ११ ॥ ३१ ॥

भगवान विश्व का सच्चा बादशाह है और उसका हुक्म भी सत्य अर्थात् अटल है। जो व्यक्ति अपने मन से सत्यस्वरूप एवं बेपरवाह भगवान के प्रेम में मग्न रहते हैं। वे उसके सच्चे महल में निवास प्राप्त कर लेते है और उसके सत्य–नाम में ही समा जाते हैं॥ १॥ हे मेरे मन! सुनो, प्रभु का चिन्तन करो। राम का भजन करो और भवसागर से पार हो जाओ॥ १॥ रहाउ॥

जीव मोह–माया के भ्रम में फँसने के कारण जन्मता एवं मरता रहता है। इस जगत् के जीवों ने माया के प्रेम कारण जन्म लिया है। स्वेच्छाचारी मनुष्य प्रभु को स्मरण नहीं करता इसलिए वह जन्मता–मरता रहता है॥ २॥ क्या प्राणी स्वयं कुमार्गगामी होता है अथवा ईश्वर स्वयं उसको कुमार्गगामी करता है? यह आत्मा माया की सेवा में लिप्त हुई है। भगवान ने इस जीव को माया की सेवा में लगाया है, जिसके फलस्वरूप यह भारी दुःख प्राप्त करता है और अपना अनमोल जीवन व्यर्थ ही गंवा देता है॥ ३॥ प्रभु अपनी कृपा करके मनुष्य का सतिगुरु से मिलन करवाता है। वह तब, केवल नाम का ही स्मरण करता है और अपने अन्तर्मन से वह भ्रम को निकाल देता है। हे नानक! वह नाम का जाप करता है और ईश्वर के नाम की नवनिधि प्राप्त कर लेता है॥ ४॥ ११॥ ३१॥

गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ जिना गुरमुखि धिआइआ तिन पूछउ जाइ ॥ गुर सेवा ते मनु पतीआइ ॥ से धनवंत हरि नामु कमाइ ॥ पूरे गुर ते सोझी पाइ ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपहु मेरे भाई ॥ गुरमुखि सेवा हरि घाल थाइ पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपु पछाणै मनु निरमलु होइ ॥ जीवन मुकति हरि पावै सोइ ॥ हरि गुण गावै मति ऊतम होइ ॥ सहजे सहजि समावै सोइ ॥ २ ॥ दूजै भाइ न सेविआ जाइ ॥ हउमै माइआ महा बिखु खाइ ॥ पुति कुटंबि ग्रिहि मोहिआ माइ ॥ मनमुखि अंधा आवै जाइ ॥ ३ ॥ हरि हरि नामु देवै जनु सोइ ॥ अनदिनु भगति गुर सबदी होइ ॥ गुरमति विरला बूझै कोइ ॥ नानक नामि समावै सोइ ॥ ४ ॥ १२ ॥ ३२ ॥

जिन लोगों ने गुरु की प्रेरणा से भगवान के नाम का ध्यान किया है, मैं उन से जाकर पूछता हूँ। गुरु की सेवा करने से मन संतुष्ट हो जाता है। वहीं धनवान हैं जो हरि का नाम धन कमाते हैं। इस बात का ज्ञान पूर्ण–गुरु से ही प्राप्त होता है॥ १॥ हे मेरे भाई ! हरि–परमेश्वर के नाम का जाप करते रहो। गुरु की प्रेरणा से की हुई सेवा–भक्ति के परिश्रम को भगवान स्वीकार कर लेता है॥ १॥ रहाउ॥ अपने स्वरूप की पहचान करने से मन निर्मल हो जाता है। वह अपने जीवन में माया के बंधनों से मुक्त होकर भगवान को पा लेता है। जो व्यक्ति भगवान की गुणस्तुति करता है, उसकी बुद्धि श्रेष्ठ हो जाती है। वह सहज ही ईश्वर में लीन हो जाता है॥ २॥ मोह–माया में फँसने से परमात्मा की सेवा–भक्ति नहीं की जा सकती। मनुष्य अहंकारवश माया रूपी महा विष सेवन करता है। उसके पुत्र, कुटुंब एवं घर इत्यादि के मोह के कारण माया उसे ठगती रहती है और वह ज्ञानहीन स्वेच्छाचारी व्यक्ति जन्मता–मरता रहता है॥ ३॥ जिस मनुष्य को हरि–प्रभु अपना नाम देता है, वह उसका भक्त बन जाता है। भगवान की भक्ति रात–दिन सदैव ही गुरु के शब्द से होती है। परन्तु कोई विरला पुरुष ही गुरु की मति द्वारा इस भेद को समझता है। हे नानक ! ऐसा व्यक्ति हमेशा ही ईश्वर के नाम में लीन रहता है॥ ४॥ १२॥ ३२॥

गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ गुर सेवा जुग चारे होई ॥ पूरा जनु कार कमावै कोई ॥ अखुटु नाम धनु हरि तोटि न होई ॥ ऐथै सदा सुखु दरि सोभा होई ॥ १ ॥ ए मन मेरे भरमु न कीजै ॥ गुरमुखि सेवा अंम्रित रसु पीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु सेवहि से महा पुरख संसारे ॥ आपि उधरे कुल सगल निसतारे ॥ हरि का नामु रखहि उर धारे ॥ नामि रते भउजल उतरहि पारे ॥ २ ॥ सतिगुरु सेवहि सदा मनि दासा ॥ हउमै मारि कमलु परगासा ॥ अनहदु वाजै निज घरि वासा ॥ नामि रते घर माहि उदासा ॥ ३ ॥ सतिगुरु सेवहि तिन की सची बाणी ॥ जुगु जुगु भगती आखि वखाणी ॥ अनदिनु जपहि हरि सारंगपाणी ॥ नानक नामि रते निहकेवल निरबाणी ॥ ४ ॥ १३ ॥ ३३ ॥

गुरु की सेवा चारों युगों (सतियुग, त्रैता, द्वापर एवं कलियुग) में सफल हुई है। कोई पूर्ण मनुष्य ही गुरु अनुसार कार्य करता है। सेवा करने वाला मनुष्य अक्षय हरि–नाम रूपी धन संचित कर लेता है और उस नाम–धन में कभी कोई कमी नहीं आती। उस मनुष्य को इहलोक में सदैव सुख मिलता है और वह प्रभु के दरबार में भी शोभा प्राप्त करता है॥ १॥ हे मेरे मन ! इसके बारे कोई शंका मत कर। अमृत रस गुरु की सेवा करके ही पान किया जाता है॥ १॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति सतिगुरु की तन–मन से सेवा करते हैं, वह इस संसार में महापुरुष हैं। वह स्वयं भवसागर से पार हो जाते हैं और अपने समूचे वंशों को भी पार कर देते हैं। हरि के नाम को वह अपने हृदय में धारण करके रखते हैं। हरि के नाम में मग्न हुए वह भवसागर से पार हो जाते हैं॥ २॥ जो व्यक्ति मन में विनीत भावना रखकर अपने सतिगुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा करते हैं, वे अपने अहंत्व को नष्ट कर देते हैं और उनका हृदय कमल प्रफुल्लित हो जाता

है। उनके मन में अनहद शब्द गूंजने लगता है और वे आत्म–स्वरूप में निवास कर लेते हैं। नाम के साथ अनुरक्त हुए वे अपने घर में निर्लिप्त रहते हैं॥ ३॥ उनकी वाणी सत्य है जो सतिगुरु की सेवा करते हैं। प्रत्येक युग में भगवान के भक्तों ने वाणी की रचना करके उसका बखान किया है। वे दिन–रात सारंगपाणि प्रभु का सिमरन करते रहते हैं। हे नानक! जो व्यक्ति भगवान के नाम में मग्न रहते हैं, वे वासना–रहित एवं पवित्र हो जाते हैं॥ ४॥ १३॥ ३३॥

गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ सतिगुरु मिलै वडभागि संजोग ॥ हिरदै नामु नित हरि रस भोग ॥ १ ॥ गुरमुखि प्राणी नामु हरि धिआइ ॥ जनमु जीति लाहा नामु पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गिआनु धिआनु गुर सबदु है मीठा ॥ गुर किरपा ते किनै विरलै चखि डीठा ॥ २ ॥ करम कांड बहु करहि अचार ॥ विनु नावै धिगु धिगु अहंकार ॥ ३ ॥ बंधनि बाधिओ माइआ फास ॥ जन नानक छूटै गुर परगास ॥ ४ ॥ १४ ॥ ३४ ॥

सौभाग्य एवं संयोग से सतिगुरु जी मनुष्य को मिलते हैं। फिर उस मनुष्य के हृदय में नाम का निवास हो जाता है और वह नित्य ही हरि–रस का भोग करता रहता है॥ १॥ जो प्राणी गुरु के सान्निध्य में रहकर भगवान के नाम का ध्यान करता है, वह अपनी जीवनबाजी जीत लेता है और उसे नाम धन का लाभ प्राप्त हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ जिसे गुरु का शब्द मधुर–मीठा लगता है, वह ज्ञान एवं ध्यान को पा लेता है। गुरु की कृपा से किसी विरले पुरुष ने ही इसका रस चखकर देखा है॥ २॥ जो व्यक्ति अधिकतर कर्मकाण्ड के आचरण करता है, भगवान के नाम बिना उसके यह कर्म अहंकार रूप होते हैं। ऐसा नामविहीन व्यक्ति धिक्कार योग्य है॥ ३॥ हे दास नानक! ऐसा व्यक्ति बंधनों में जकड़ा और मोह–माया में फँसा हुआ है, और वह गुरु के ज्ञान–प्रकाश द्वारा ही बन्धनों से मुक्त होता है॥ ४॥ १४॥ ३४॥

महला ३ गउड़ी बैरागणि ॥ जैसी धरती ऊपरि मेघुला बरसतु है किआ धरती मधे पाणी नाही ॥ जैसे धरती मधे पाणी परगासिआ बिनु पगा वरसत फिराही ॥ १ ॥ बाबा तूं ऐसे भरमु चुकाही ॥ जो किछु करतु है सोई कोई है रे तैसे जाइ समाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसतरी पुरख होइ कै किआ ओइ करम कमाही ॥ नाना रूप सदा हहि तेरे तुझ ही माहि समाही ॥ २ ॥ इतने जनम भूलि परे से जा पाइआ ता भूले नाही ॥ जा का कारजु सोई परु जाणै जे गुर कै सबदि समाही ॥ ३ ॥ तेरा सबदु तूंहै हहि आपे भरमु कहा ही ॥ नानक ततु तत सिउ मिलिआ पुनरपि जनमि न आही ॥ ४ ॥ १ ॥ १५ ॥ ३५ ॥

जिस तरह मेघ धरती पर जल बरसाते हैं, (इसी तरह गुरुवाणी नाम के जल की बरसात करती है)। परन्तु क्या धरती में जल नहीं है? जिस तरह धरती में जल व्याप्त है (इसी तरह प्राचीन धार्मिक ग्रंथों में नाम–जल व्याप्त है) परन्तु मेघ पैरों के बिना अधिक मात्रा में बरसता रहता है॥ १॥ हे बाबा! इस तरह तू अपने भ्रम को दूर कर दे। जो कुछ भी परमात्मा मनुष्य को बनाता है, वही कुछ वह हो जाता है। उस तरह वह जाकर उस में ही मिल जाता है॥ १॥ रहाउ॥ स्त्री एवं पुरुष होकर (तेरी महानता के बिना) वह कौन–सा कर्म सम्पूर्ण कर सकते हैं? हे प्रभु! भिन्न–भिन्न रूप सदैव ही तेरे हैं और तुझ में ही लीन हो जाते हैं॥ २॥ मैं अनेक जन्मों से भूला हुआ था, अब जब परमात्मा का ज्ञान प्राप्त कर लिया है, मैं पुन: उसे विस्मृत नहीं करूँगा। यदि मनुष्य गुरु के शब्द में लीन रहे तो वह अनुभव करेगा कि जिसका यह कर्म है, वही इसको भलीभांति जानता है॥ ३॥ हे प्रभु! जो तेरा नाम है, वह भी तू

स्वयं ही है। तू स्वयं ही सबकुछ है, फिर भ्रम कहाँ है? हे नानक! जब आत्म–तत्व अर्थात् जीवात्मा परम तत्व प्रभु में मिल जाता है तो फिर उसका पुनः पुनः जन्म नहीं होता॥ ४॥ १॥ १५॥ ३५॥

गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥ सभु जगु कालै वसि है बाधा दूजै भाइ ॥ हउमै करम कमावदे मनमुखि मिलै सजाइ ॥ १ ॥ मेरे मन गुर चरणी चितु लाइ ॥ गुरमुखि नामु निधानु लै दरगह लए छडाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लख चउरासीह भरमदे मनहठि आवै जाइ ॥ गुर का सबदु न चीनिओ फिरि फिरि जोनी पाइ ॥ २ ॥ गुरमुखि आपु पछाणिआ हरि नामु वसिआ मनि आइ ॥ अनदिनु भगती रतिआ हरि नामे सुखि समाइ ॥ ३ ॥ मनु सबदि मरै परतीति होइ हउमै तजे विकार ॥ जन नानक करमी पाईअनि हरि नामा भगति भंडार ॥ ४ ॥ २ ॥ १६ ॥ ३६ ॥

यह सारा जगत् मृत्यु के अधीन है और मोह–माया के बंधन में फँसा हुआ है। स्वेच्छाचारी अपना कर्म अहंकारवश करते हैं और परिणामस्वरूप उनको सत्य के दरबार में दण्ड मिलता है॥ १॥ हे मेरे मन! अपना चित्त गुरु के चरणों में लगा। गुरु के सान्निध्य में नाम–निधि को प्राप्त कर। प्रभु के दरबार में यह तेरी मुक्ति करवा देगी और बड़ी शोभा मिलेगी॥ १॥ रहाउ॥ मन के हठ कारण मनुष्य चौरासी लाख योनियों में भटकते हैं और संसार में जन्मते–मरते रहते हैं। वह गुरु के शब्द को अनुभव नहीं करते और पुनःपुनः गर्भ योनियों में डाले जाते हैं॥ २॥ जब मनुष्य गुरु के माध्यम से अपने आत्मिक जीवन को समझ लेता है तो हरि का नाम उसके मन में निवास कर जाता है। वह रात–दिन भगवान की भक्ति में मग्न रहता है और भगवान के नाम द्वारा सुख में समा जाता है॥ ३॥ जब मनुष्य का मन गुरु के शब्द द्वारा अहंत्व से रहित हो जाता है तो उस मनुष्य की श्रद्धा बन जाती है और वह अपना अहंकार एवं विकारों को त्याग देता है। हे नानक! ईश्वर की कृपा से ही मनुष्य उसके नाम एवं भक्ति के भण्डार को प्राप्त करता है॥ ४॥ २॥ १६॥ ३६॥

गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥ पेईअड़ै दिन चारि है हरि हरि लिखि पाइआ ॥ सोभावंती नारि है गुरमुखि गुण गाइआ ॥ पेवकड़ै गुण संमलै साहुरै वासु पाइआ ॥ गुरमुखि सहजि समाणीआ हरि हरि मनि भाइआ ॥ १ ॥ ससुरै पेईऐ पिरु वसै कहु कितु बिधि पाईऐ ॥ आपि निरंजनु अलखु है आपे मेलाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे ही प्रभु देहि मति हरि नामु धिआईऐ ॥ वडभागी सतिगुरु मिलै मुखि अंम्रितु पाईऐ ॥ हउमै दुबिधा बिनसि जाइ सहजे सुखि समाईऐ ॥ सभु आपे आपि वरतदा आपे नाइ लाईऐ ॥ २ ॥ मनमुखि गरबि न पाइओ अगिआन इआणे ॥ सतिगुर सेवा ना करहि फिरि फिरि पछुताणे ॥ गरभ जोनी वासु पाइदे गरभे गलि जाणे ॥ मेरे करते एवै भावदा मनमुख भरमाणे ॥ ३ ॥ मेरै हरि प्रभि लेखु लिखाइआ धुरि मसतकि पूरा ॥ हरि हरि नामु धिआइआ भेटिआ गुरु सूरा ॥ मेरा पिता माता हरि नामु है हरि बंधपु बीरा ॥ हरि हरि बखसि मिलाइ प्रभ जनु नानकु कीरा ॥ ४ ॥ ३ ॥ १७ ॥ ३७ ॥

हरि–प्रभु ने (प्रत्येक जीव के मस्तक पर यही भाग्य) लिखकर रख दिया है कि जीव–स्त्री ने अपने मायके (मृत्युलोक) चार दिनों (कुछ दिन) के लिए रहना है। वही जीव–स्त्री शोभावान है जो गुरु के माध्यम से ईश्वर की महिमा गायन करती है। जो अपने मायके (इहलोक) में सदाचार को सँभालती है, वह अपने ससुराल (परलोक) में बसेरा पा लेती है। गुरमुख के हृदय को हरि–प्रभु ही अच्छा लगता है, और वह सहज ही उसमें लीन हो जाता है॥ १॥ प्रियतम (प्रभु) इस लोक एवं परलोक में निवास करता है। बताइए, उसको किस विधि से प्राप्त किया जा सकता है? निरंजन प्रभु स्वयं ही

अलक्ष्य है और वह जीव को स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है॥ १॥ रहाउ॥ परमेश्वर स्वयं ही सुमति प्रदान करता है और मनुष्य हरि के नाम का ध्यान करता है। बड़े सौभाग्य से सतिगुरु जी मिलते हैं, जो उसके मुख (हरिनाम का) अमृत डालते हैं। जब अहंकार एवं दुविधा नष्ट हो जाते हैं, वह सहज ही सुख में लीन हो जाता है। प्रभु स्वयं ही सर्वव्यापक हो रहा है और स्वयं ही मनुष्य को अपने नाम-सिमरन में लगाता है॥ २॥ स्वेच्छाचारी अहंकारवश ईश्वर को प्राप्त नहीं कर सकते, वे मूर्ख एवं ज्ञानहीन हैं। वे सतिगुरु की सेवा-भक्ति नहीं करते और पुनः पुनः पश्चाताप करते हैं। गर्भयोनि में उनको निवास मिलता है और गर्भ में ही गल-सड़ जाते हैं। मेरे सृजनहार प्रभु को यही भला लगता है कि स्वेच्छाचारी भटकते रहें॥ ३॥ मेरे हरि-प्रभु ने आदि से ही प्राणी के मस्तक पर उसका भाग्य लिख दिया था। जब मनुष्य शूरवीर गुरु से मिलता है, वह हरि-परमेश्वर के नाम की आराधना करता है। हरि का नाम मेरा पिता एवं मेरी माता है। भगवान ही मेरा संबंधी और भ्राता है। हे प्रभु! कृमि सेवक नानक को क्षमादान करके अपने साथ मिला लो॥ ४॥ ३॥ १७॥ ३७॥

गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥ सतिगुर ते गिआनु पाइआ हरि ततु बीचारा ॥ मति मलीण परगटु भई जपि नामु मुरारा ॥ सिवि सकति मिटाईआ चूका अंधिआरा ॥ धुरि मसतकि जिन कउ लिखिआ तिन हरि नामु पिआरा ॥ १ ॥ हरि कितु बिधि पाईऐ संत जनहु जिसु देखि हउ जीवा ॥ हरि बिनु चसा न जीवती गुर मेलिहु हरि रसु पीवा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हउ हरि गुण गावा नित हरि सुणी हरि हरि गति कीनी ॥ हरि रसु गुर ते पाइआ मेरा मनु तनु लीनी ॥ धनु धनु गुरु सत पुरखु है जिनि भगति हरि दीनी ॥ जिसु गुर ते हरि पाइआ सो गुरु हम कीनी ॥ २ ॥ गुणदाता हरि राइ है हम अवगणिआरे ॥ पापी पाथर डूबदे गुरमति हरि तारे ॥ तूं गुणदाता निरमला हम अवगणिआरे ॥ हरि सरणागति राखि लेहु मूड़ मुगध निसतारे ॥ ३ ॥ सहजु अनंदु सदा गुरमती हरि हरि मनि धिआइआ ॥ सजणु हरि प्रभु पाइआ घरि सोहिला गाइआ ॥ हरि दइआ धारि प्रभ बेनती हरि हरि चेताइआ ॥ जन नानकु मंगै धूड़ि तिन जिन सतिगुरु पाइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥ १८ ॥ ३८ ॥

सतिगुरु से ज्ञान प्राप्त करके मैंने परम तत्व ईश्वर के मूल का चिन्तन किया है। मुरारि प्रभु के नाम का जाप करने से मेरी मलिन बुद्धि निर्मल हो गई है। ईश्वर ने माया का नाश कर दिया है और मेरा अज्ञानता का अंधकार दूर हो गया है। जिनके मस्तक पर आदि से ही भाग्य-रेखाएँ विद्यमान हों, उनको हरि का नाम प्रिय लगता है॥ १॥ हे सन्तजनो! कौन-से साधनों द्वारा परमात्मा को पाया जा सकता है? जिसके दर्शन करके मैं जीवित रहती हूँ। परमात्मा के बिना मैं निमेष मात्र भी जीवित नहीं रह सकती। मुझे गुरु के साथ मिला दीजिए चूंकि जो मैं हरि-रस का पान करूँ॥ १॥ रहाउ॥ मैं नित्य ईश्वर की गुणस्तुति करती हूँ और प्रतिदिन परमेश्वर की महिमा ही सुनती हूँ। मुझे हरि-प्रभु ने (संसार से) मुक्त कर दिया है। हरि-रस मैंने गुरु से प्राप्त किया है। मेरा मन एवं तन उसमें लीन हो गए हैं। वह सत्यपुरुष गुरु धन्य-धन्य है, जिन्होंने मुझे भगवान की भक्ति प्रदान की है। मैंने उसे ही अपना गुरु धारण किया है, जिस गुरु के द्वारा मैंने परमात्मा को पाया है॥ २॥ विश्व का मालिक प्रभु गुणों का दाता है परन्तु हम जीवों में अनेक अवगुण विद्यमान हैं। पानी में डूबते पत्थरों की तरह भवसागर में डूबते पापी जीवों को भगवान ने गुरु की मति देकर पार कर दिया है। हे गुणों के दाता! तू बड़ा निर्मल है लेकिन हम जीवों में अनेक अवगुण भरे हुए हैं। हे भगवान! तू महामूर्खों को भी भवसागर से पार कर देता है, अतः मैं तेरी ही शरण में आया हूँ और मुझे भी भवसागर से पार कर दो॥ ३॥ जो व्यक्ति गुरु की मति द्वारा अपने मन में हरि-परमेश्वर का ध्यान करते हैं, उन्हें हमेशा ही सहज सुख एवं आनंद प्राप्त होता है। वे अपने सज्जन प्रभु को पाकर अपने हृदय-घर में उसकी

महिमा–स्तुति के गीत गाते रहते हैं। हे हरि! मुझ पर दया करो। हे प्रभु! मेरी यही विनती है कि मैं सर्वदा ही हरि–परमेश्वर का नाम याद करता रहूँ। जन नानक उन महापुरुषों की चरण–धूलि की ही कामना करता है, जिन्होंने सतिगुरु को पाया है॥ ४॥ ४॥ १८॥ ३८॥

गउड़ी गुआरेरी महला ४ चउथा चउपदे १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

पंडितु सासत सिम्रिति पड़िआ॥ जोगी गोरखु गोरखु करिआ ॥ मै मूरख हरि हरि जपु पड़िआ ॥ १ ॥ ना जाना किआ गति राम हमारी ॥ हरि भजु मन मेरे तरु भउजलु तू तारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संनिआसी बिभूत लाइ देह सवारी ॥ पर त्रिअ तिआगु करी ब्रहमचारी ॥ मै मूरख हरि आस तुमारी ॥ २ ॥ खत्री करम करे सूरतणु पावै ॥ सूदु वैसु पर किरति कमावै ॥ मै मूरख हरि नामु छडावै ॥ ३ ॥ सभ तेरी सिसटि तूं आपि रहिआ समाई ॥ गुरमुखि नानक दे वडिआई ॥ मै अंधुले हरि टेक टिकाई ॥ ४ ॥ १ ॥ ३६ ॥

पण्डित शास्त्रों एवं स्मृतियों का अध्ययन करता है। योगी अपने गुरु का नाम "गोरख गोरख" पुकारता है। लेकिन मैं मूर्ख हरि–परमेश्वर के नाम का ही जाप करता हूँ॥ १॥ हे मेरे राम! मैं नहीं जानता कि मेरी क्या हालत होगी। हे मेरे मन! तू भगवान का भजन करके भवसागर से पार हो जा॥ १॥ रहाउ॥

संन्यासी विभूति लगाकर अपने शरीर का शृंगार करता है। वह पराई नारी को त्याग कर ब्रह्मचारी बनता है। हे हरि! मुझ मूर्ख को तुझ पर ही भरोसा है॥ २॥ क्षत्रिय शूरवीरता के कर्म करता है और वीरता पाता है। शूद्र एवं वैश्य दूसरों की सेवा का कर्म करते हैं। मुझ मूर्ख को भगवान का नाम ही मुक्त करवाएगा॥ ३॥ हे प्रभु! यह सारी सृष्टि तेरी ही रचना है और तू स्वयं ही समस्त जीवों में समाया हुआ है। हे नानक! गुरमुख को प्रभु महानता प्रदान करता है। मुझ ज्ञानहीन ने भगवान का ही सहारा लिया है॥ ४॥ १॥ ३६॥

गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ निरगुण कथा कथा है हरि की ॥ भजु मिलि साधू संगति जन की ॥ तरु भउजलु अकथ कथा सुनि हरि की ॥ १ ॥ गोबिंद सतसंगति मेलाइ ॥ हरि रसु रसना राम गुन गाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जन धिआवहि हरि हरि नामा ॥ तिन दासनि दास करहु हम रामा ॥ जन की सेवा ऊतम कामा ॥ २ ॥ जो हरि की हरि कथा सुणावै ॥ सो जनु हमरै मनि चिति भावै ॥ जन पग रेणु वडभागी पावै ॥ ३ ॥ संत जन सिउ प्रीति बनि आई ॥ जिन कउ लिखतु लिखिआ धुरि पाई ॥ ते जन नानक नामि समाई ॥ ४ ॥ २ ॥ ४० ॥

हरि की कथा माया के तीनों गुणों से परे है। संतजनों की संगति में मिलकर भगवान का भजन करो और हरि की अकथनीय कथा को सुनकर भवसागर से पार हो जाओ॥ १॥ हे गोविन्द! मुझे संतों की संगति में मिला दो चूंकि मेरी रसना राम के गुण गा–गाकर हरि–रस का पान करती रहे॥ १॥ रहाउ॥

हे मेरे राम! मुझे उन पुरुषों के दासों का दास बना दो, जो हरि–परमेश्वर के नाम का ध्यान करते रहते हैं। तेरे सेवक की सेवा एक उत्तम कार्य है॥ २॥ जो व्यक्ति मुझे हरि की हरि कथा सुनाता है, वह मेरे मन एवं चित्त को बहुत अच्छा लगता है। ईश्वर के सेवकों की चरण–धूलि भाग्यवान ही प्राप्त करते हैं॥ ३॥ संतजनों से उनकी प्रीति होती है, जिनके मस्तक पर विधाता ने ऐसा भाग्य लिख दिया है। हे नानक! ऐसे व्यक्ति प्रभु के नाम में समा जाते हैं॥ ४॥ २॥ ४०॥

गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ माता प्रीति करे पुतु खाइ ॥ मीने प्रीति भई जलि नाइ ॥ सतिगुर प्रीति गुरसिख मुखि पाइ ॥ १ ॥ ते हरि जन हरि मेलहु हम पिआरे ॥ जिन मिलिआ दुख जाहि हमारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ मिलि बछरे गऊ प्रीति लगावै ॥ कामनि प्रीति जा पिरु घरि आवै ॥ हरि जन प्रीति जा हरि जसु गावै ॥ २ ॥ सारिंग प्रीति बसै जल धारा ॥ नरपति प्रीति माइआ देखि पसारा ॥ हरि जन प्रीति जपै निरंकारा ॥ ३ ॥ नर प्राणी प्रीति माइआ धनु खाटे ॥ गुरसिख प्रीति गुरु मिलै गलाटे ॥ जन नानक प्रीति साध पग चाटे ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४१ ॥

जब पुत्र कोई स्वादिष्ट पदार्थ खाता है तो माता बड़ी प्रसन्न होकर प्रेम करती है। जब मछली जल में स्नान करती है तो उसका जल से प्रेम हो जाता है। सतिगुरु का प्रेम गुरसिक्ख के मुख में नाम रूपी भोजन डालने से है॥ १॥ हे प्रिय प्रभु ! मुझे ऐसे हरि के भक्तों से मिला, जिनको मिलने से मेरे दुःख दूर हो जाएँ॥ १॥ रहाउ॥ जिस तरह अपने गुम हुए बछड़े से मिलकर गाय प्रेम करती है, जैसे कामिनी (पत्नी) अपने पति से मिलकर प्रेम करती है, जब वह घर लौट कर आता है, वैसे ही जब प्रभु का भक्त प्रभु का यशोगान करता है तो उसका मन प्रभु के प्रेम में लीन हो जाता है॥ २॥ पपीहा मूसलाधार वर्षा के जल से प्रेम करता है। नरपति (सम्राट) को धन–दौलत का आडम्बर (विस्तार) देखने का चाव है। हरि का सेवक निरंकार की आराधना करने से प्रेम करता है॥ ३॥ मनुष्य को धन–दौलत एवं सम्पत्ति कमाने से अति प्रेम है। गुरु के सिक्ख को गुरु से प्रेम होता है, जब गुरु उसे गले लगकर मिलता है। नानक तो संतों के चरण चूमने से ही प्रेम करता है॥ ४॥ ३॥ ४१॥

गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ भीखक प्रीति भीख प्रभ पाइ ॥ भूखे प्रीति होवै अंनु खाइ ॥ गुरसिख प्रीति गुर मिलि आघाइ ॥ १ ॥ हरि दरसनु देहु हरि आस तुमारी ॥ करि किरपा लोच पूरि हमारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चकवी प्रीति सूरजु मुखि लागै ॥ मिलै पिआरे सभ दुख तिआगै ॥ गुरसिख प्रीति गुरू मुखि लागै ॥ २ ॥ बछरे प्रीति खीरु मुखि खाइ ॥ हिरदै बिगसै देखै माइ ॥ गुरसिख प्रीति गुरू मुखि लाइ ॥ ३ ॥ होरु सभ प्रीति माइआ मोहु काचा ॥ बिनसि जाइ कूरा कचु पाचा ॥ जन नानक प्रीति त्रिपति गुरु साचा ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४२ ॥

भिखारी को भिक्षा से प्रेम है, जो वह किसी दानी से प्राप्त करता है। भूखे का प्रेम भोजन खाने से है। गुरु के सिक्ख की प्रीति गुरु से भेंट करके तृप्त होने से है॥ १॥ हे प्रभु ! मुझे अपने हरि दर्शन दीजिए। मुझे एक तेरी ही आशा है। हे प्रभु ! मुझ पर कृपा करके मेरी कामना पूरी करो॥ १॥ रहाउ॥

चकवी को प्रसन्नता तब होती है, जब उसे सूर्य के दर्शन होते हैं। अपने प्रियतम से मिलकर उसके सारे दुःख दूर हो जाते हैं। गुरु का सिक्ख तब प्रसन्न होता है जब उसे गुरु के दर्शन होते हैं॥ २॥ बछड़ा (अपनी माता का) अपने मुख से दूध चूषन करके प्रसन्न होता है। अपनी माता को देखकर उसका हृदय प्रफुल्लित हो जाता है। (इसी तरह) गुरु का सिक्ख गुरु के दर्शन करके बड़ा हर्षित होता है॥ ३॥ (गुरु–परमात्मा के अलावा) दूसरा मोह झूठा है, चूंकि माया की प्रीति क्षणभंगुर है। यह झूठी प्रीति कांच की तरह टूट कर नाश हो जाती है। जन नानक सच्चे गुरु से ही प्रेम करता और उसके दर्शन करके तृप्त हो जाता है॥ ४॥ ४॥ ४२॥

गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ सतिगुर सेवा सफल है बणी ॥ जितु मिलि हरि नामु धिआइआ हरि धणी ॥ जिन हरि जपिआ तिन पीछै छूटी घणी ॥ १ ॥ गुरसिख हरि बोलहु मेरे भाई ॥ हरि बोलत सभ पाप लहि जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब गुरु मिलिआ तब मनु वसि आइआ ॥ धावत पंच रहे हरि

धिआइआ ॥ अनदिनु नगरी हरि गुण गाइआ ॥ २ ॥ सतिगुर पग धूरि जिना मुखि लाई ॥ तिन कूड़ तिआगे हरि लिव लाई ॥ ते हरि दरगह मुख ऊजल भाई ॥ ३ ॥ गुरू सेवा आपि हरि भावै ॥ क्रिसनु बलभद्रु गुर पग लगि धिआवै ॥ नानक गुरमुखि हरि आपि तरावै ॥ ४ ॥ ५ ॥ ४३ ॥

जिस सतिगुरु को मिलकर जगत् के स्वामी परमात्मा के नाम का ध्यान किया जाता है, उस सतिगुरु की सेवा फलदायक है। जिन्होंने ईश्वर का नाम–स्मरण किया है, उनका अनुसरण करके बहुत सारे लोग भवसागर से मुक्त हो गए हैं॥ १॥ हे मेरे भाइयो ! गुरु के शिष्यो, 'हरि–हरि' बोलो। हरि बोलने से मनुष्य के समस्त पाप दूर हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ जब गुरु जी मिलते हैं तो मन वश में आ जाता है। भगवान का ध्यान करने से पांचों ज्ञानेन्द्रियां (विकारों की ओर) दौड़ने से रुक जाती हैं और रात–दिन मनुष्य अपनी शरीर रूपी नगरी में ईश्वर का यशोगान करता रहता है॥ २॥ जो व्यक्ति सतिगुरु की चरण–धूलि अपने चेहरे पर लगाते हैं, वह झूठ को त्याग देते हैं और प्रभु के साथ वृत्ति लगा लेते हैं। हे भाई ! प्रभु के दरबार में उनके चेहरे ही उज्ज्वल होते हैं॥ ३॥ गुरु की सेवा परमेश्वर को भी स्वयं भली लगती है। श्री कृष्ण एवं बलभद्र ने अपने गुरु संदीपन के चरणों में नतमस्तक होकर भगवान का ही ध्यान किया था। हे नानक ! गुरमुखों को परमात्मा भवसागर से स्वयं पार करवाता है॥ ४॥ ५॥ ४३॥

गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ हरि आपे जोगी डंडाधारी ॥ हरि आपे रवि रहिआ बनवारी ॥ हरि आपे तपु तापै लाइ तारी ॥ १ ॥ ऐसा मेरा रामु रहिआ भरपूरि ॥ निकटि वसै नाही हरि दूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि आपे सबदु सुरति धुनि आपे ॥ हरि आपे वेखै विगसै आपे ॥ हरि आपि जपाइ आपे हरि जापे ॥ २ ॥ हरि आपे सारिंग अंम्रितधारा ॥ हरि अंम्रितु आपि पीआवणहारा ॥ हरि आपि करे आपे निसतारा ॥ ३ ॥ हरि आपे बेड़ी तुलहा तारा ॥ हरि आपे गुरमती निसतारा ॥ हरि आपे नानक पावै पारा ॥ ४ ॥ ६ ॥ ४४ ॥

ईश्वर स्वयं ही (हाथों में) डंडा रखने वाला योगी है। (जगत् का) बनवारी परमेश्वर सर्वव्यापक हो रहा है। ईश्वर स्वयं ही समाधि लगाकर तपस्या करता है॥ १॥ मेरा राम ऐसा है जो सर्वत्र स्थानों में भरपूर है। ईश्वर (प्राणी के) निकट ही रहता है, वह कहीं दूर नहीं है॥ १॥ रहाउ॥ ईश्वर स्वयं ही अनहद शब्द है और स्वयं ही अनहद शब्द की ध्वनि को सुनने वाली सुरति है। ईश्वर स्वयं ही अपनी सृष्टि को देख–देख कर स्वयं ही प्रसन्न होता है। प्रभु स्वयं ही अपने नाम का जाप करता है और जीवों से भी अपने ही नाम का जाप करवाता है॥ २॥ ईश्वर स्वयं ही पपीहा है और स्वयं ही नाम–अमृत की धारा है। ईश्वर स्वयं ही जीवों को नाम–अमृत पिलाने वाला है। ईश्वर स्वयं ही जीवों को उत्पन्न करता है और स्वयं ही जीवों को भवसागर से पार करवाता है॥ ३॥ परमात्मा स्वयं ही नाव, तुला और नावक है। गुरु के उपदेश से ईश्वर स्वयं ही प्राणियों का उद्धार करता है। हे नानक ! ईश्वर स्वयं ही प्राणियों को संसार–सागर से पार करवाता है॥ ४॥ ६॥ ४४॥

गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ साहु हमारा तूं धणी जैसी तूं रासि देहि तैसी हम लेहि ॥ हरि नामु वणंजह रंग सिउ जे आपि दइआलु होइ देहि ॥ १ ॥ हम वणजारे राम के ॥ हरि वणजु करावै दे रासि रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लाहा हरि भगति धनु खटिआ हरि सचे साह मनि भाइआ ॥ हरि जपि हरि वखरु लदिआ जमु जागाती नेड़ि न आइआ ॥ २ ॥ होरु वणजु करहि वापारीए अनंत तरंगी दुखु माइआ ॥ ओइ जेहै वणजि हरि लाइआ फलु तेहा तिन पाइआ ॥ ३ ॥ हरि हरि वणजु सो जनु करे जिसु क्रिपालु होइ प्रभु देई ॥ जन नानक साहु हरि सेविआ फिरि लेखा मूलि न लेई ॥ ४ ॥ १ ॥ ७ ॥ ४५ ॥

हे ईश्वर ! तू ही मेरा शाह एवं मालिक हैं। जैसी पूँजी तुम मुझे देते हो, वैसी ही पूँजी मैं लेता हूँ। यदि तुम दयालु होकर स्वयं मुझे हरि–नाम दो तो ही मैं हरि–नाम का व्यापार करूँ॥ १॥ हे भाई ! मैं तो राम का व्यापारी हूँ और भगवान अपनी पूँजी देकर मुझसे अपने नाम का व्यापार करवाता है॥ १॥ रहाउ॥ मैंने हरि–भक्ति के नाम रूपी धन का लाभ कमाया है और सच्चे साहूकार परमेश्वर के हृदय को पसंद आ गया हूँ। मैंने हरि का नाम जपकर हरि–नाम रूपी सौदा सत्य के दरबार में ले जाने के लिए लाद लिया है और कर लेने वाला यमदूत मेरे निकट नहीं आता॥ २॥ जो व्यापारी नाम के सिवाय अन्य पदार्थों का व्यापार करते हैं, वह अनंत तरंगों वाली माया के मोह में फँसकर बड़ा दुखी होते हैं। जिस तरह का व्यापार ईश्वर ने उनके लिए लगाया है, वैसा ही फल वे प्राप्त करते हैं॥ ३॥ भगवान के नाम का व्यापार वहीं व्यक्ति करते हैं, जिन्हें प्रभु कृपालु होकर नाम का व्यापार करने के लिए देता है। हे नानक ! जो व्यक्ति साहूकार भगवान की सेवा करता है, भगवान फिर उससे बिल्कुल ही कर्मों का लेखा नहीं माँगता॥ ४॥ १॥ ७॥ ४५॥

गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ जिउ जननी गरभु पालती सुत की करि आसा ॥ वडा होइ धनु खाटि देइ करि भोग बिलासा ॥ तिउ हरि जन प्रीति हरि राखदा दे आपि हथासा ॥ १ ॥ मेरे राम मै मूरख हरि राखु मेरे गुसईआ ॥ जन की उपमा तुझहि वडईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मंदरि घरि आनंदु हरि हरि जसु मनि भावै ॥ सभ रस मीठे मुखि लगहि जा हरि गुण गावै ॥ हरि जनु परवारु सधारु है इकीह कुली सभु जगतु छडावै ॥ २ ॥ जो किछु कीआ सो हरि कीआ हरि की वडिआई ॥ हरि जीअ तेरे तूं वरतदा हरि पूज कराई ॥ हरि भगति भंडार लहाइदा आपे वरताई ॥ ३ ॥ लाला हाटि विहाझिआ किआ तिसु चतुराई ॥ जे राजि बहाले ता हरि गुलामु घासी कउ हरि नामु कढाई ॥ जनु नानकु हरि का दासु है हरि की वडिआई ॥ ४ ॥ २ ॥ ८ ॥ ४६ ॥

जैसे कोई माता यह आशा रखकर गर्भ में पड़े शिशु की नौ माह रक्षा करती है कि उसे पुत्र पैदा होगा और वह बड़ा होकर धन कमा कर सुख एवं आनंद हेतु उसे देगा, वैसे ही भगवान अपने भक्तों से प्रेम करता है, और उन्हें अपनी सहायता का हाथ देता है॥ १॥ हे मेरे राम ! हे मेरे गुसाई ! मैं मूर्ख हूँ, मेरी रक्षा कीजिए। हे प्रभु ! तेरे सेवक की उपमा तेरी अपनी ही कीर्ति है॥ १॥ रहाउ॥ जिसके हृदय को हरि–प्रभु का यश लुभाता है, वह अपने हृदय रूपी मन्दिर एवं धाम में आनन्द भोगता है। जब वह परमात्मा का यश गायन करता है तो उसका मुख समस्त मीठे रसों (कामनाओं) को चखता है। प्रभु का सेवक अपने परिवार का कल्याण करने वाला है। वह अपने इक्कीस वंशों (सात पिता के, सात माता के, सात ससुर के) के समस्त प्राणियों का उद्धार कराता है॥ २॥ जो कुछ किया है, परमेश्वर ने किया है और परमेश्वर का यश है । मेरे प्रभु–परमेश्वर समस्त जीव–जन्तु तेरे हैं। तुम उनमें व्यापक हो रहे हो और उनसे अपनी पूजा–अर्चना करवाते हो। परमेश्वर स्वयं ही प्राणियों को अपनी सेवा–भक्ति का खजाना दिलवाता है और स्वयं ही इसे बांटता है॥ ३॥ मैं तो दुकान से खरीदा हुआ तेरा गुलाम हूँ, मैं क्या चतुरता कर सकता हूँ ? यदि हे प्रभु ! तू मुझे सिंघासन पर आरूढ़ कर दे तो भी मैं तेरा ही गुलाम रहूँगा तथा एक घसियारे की अवस्था में भी तुम मुझसे अपने नाम का ही जाप करवा। नानक तो परमात्मा का दास है और परमात्मा की ही स्तुति करता रहता है॥ ४॥ २॥ ८॥ ४६॥

गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ किरसाणी किरसाणु करे लोचै जीउ लाइ ॥ हलु जोतै उदमु करे मेरा पुतु धी खाइ ॥ तिउ हरि जनु हरि हरि जपु करे हरि अंति छडाइ ॥ १ ॥ मै मूरख की गति कीजै मेरे राम ॥ गुर सतिगुर सेवा हरि लाइ हम काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लै तुरे सउदागरी सउदागरु धावै ॥ धनु

खटै आसा करै माइआ मोहु वधावै ॥ तिउ हरि जनु हरि हरि बोलता हरि बोलि सुखु पावै ॥ २ ॥ बिखु संचै हटवाणीआ बहि हाटि कमाइ ॥ मोह झूठु पसारा झूठ का झूठे लपटाइ ॥ तिउ हरि जनि हरि धनु संचिआ हरि खरचु लै जाइ ॥ ३ ॥ इहु माइआ मोह कुटंबु है भाइ दूजै फास ॥ गुरमती सो जनु तरै जो दासनि दास ॥ जनि नानकि नामु धिआइआ गुरमुखि परगास ॥ ४ ॥ ३ ॥ ६ ॥ ४७ ॥

कृषक बड़े चाव से एवं दिल लगाकर कृषि करता है। वह हल चलाता है और कड़ी मेहनत करता है और लालसा करता है कि उसके पुत्र एवं पुत्री संतुष्ट होकर खाएँ। इसी तरह प्रभु का सेवक प्रभु के नाम का जाप करता रहता है, जिसके फलस्वरूप परमेश्वर अन्तिम समय उसे मोह–माया के पन्जे से मुक्त कराता है॥ १॥ हे मेरे राम! मुझ मूर्ख की मुक्ति करो। भगवान ने मुझे गुरु–सतिगुरु की सेवा के कार्य में लगा दिया है॥ १॥ रहाउ॥ व्यापारी कुशल घोड़े लेकर उनके व्यापार हेतु चलता है। वह धन कमाता है और अधिकतर धन की आशा करता है। फिर मोह–माया के साथ अपनी लालसा को बढ़ाता है। इसी तरह हरि का सेवक हरि–परमेश्वर का नाम बोलता है और हरि बोलकर सुख पाता है॥ २॥ दुकानदार दुकान में बैठकर दुकानदारी करता है और माया रूपी धन एकत्रित करता है। जो उसके आत्मिक जीवन में विष का काम करती है। माया ने जीवों को फँसाने हेतु झूठे मोह का प्रसार किया हुआ है और वे माया के झूठे मोह से लिपटे हुए हैं। इसी तरह हरि का सेवक हरि–नाम रूपी धन संचित करता है और हरि–नाम रूपी धन को वह जीवन–यात्रा हेतु खर्च के रूप में ले जाता है॥ ३॥ माया धन एवं परिवार के मोह के कारण मनुष्य माया की मोह रूपी फाँसी में फँस जाता है। गुरु के उपदेश से वहीं मनुष्य भवसागर से पार होता है जो प्रभु के सेवकों का सेवक बन जाता है। जन नानक ने गुरु के माध्यम से भगवान के नाम का ही ध्यान किया है और उसके हृदय में प्रभु–ज्योति का प्रकाश हो गया है॥ ४॥ ३॥ ६॥ ४७॥

गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ नित दिनसु राति लालचु करे भरमै भरमाइआ ॥ वेगारि फिरै वेगारीआ सिरि भारु उठाइआ ॥ जो गुर की जनु सेवा करे सो घर कै कंमि हरि लाइआ ॥ १ ॥ मेरे राम तोड़ि बंधन माइआ घर कै कंमि लाइ ॥ नित हरि गुण गावह हरि नामि समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नरु प्राणी चाकरी करे नरपति राजे अरथि सभ माइआ ॥ कै बंधै कै डानि लेइ कै नरपति मरि जाइआ ॥ धंनु धनु सेवा सफल सतिगुरू की जितु हरि हरि नामु जपि हरि सुखु पाइआ ॥ २ ॥ नित सउदा सूदु कीचै बहु भाति करि माइआ कै ताई ॥ जा लाहा देइ ता सुखु मने तोटै मरि जाई ॥ जो गुण साझी गुर सिउ करे नित नित सुखु पाई ॥ ३ ॥ जितनी भूख अन रस साद है तितनी भूख फिरि लागै ॥ जिसु हरि आपि क्रिपा करे सो वेचे सिरु गुर आगै॥ जन नानक हरि रसि त्रिपतिआ फिरि भूख न लागै ॥ ४ ॥ ४ ॥ १० ॥ ४८ ॥

जो व्यक्ति नित्य दिन–रात लालच करता है। मोह–माया की प्रेरणा से भ्रम में ही भटकता रहता है। वह उस वेगारी के तुल्य है जो अपने सिर पापों का बोझ उठाकर वेगार करता है। जो व्यक्ति गुरु की सेवा करता है, उसे ही भगवान ने अपने घर की सेवा अर्थात् नाम–सिमरन में लगाया है॥ १॥ हे मेरे राम! हमें मोह–माया के बंधन से मुक्त कर और हमें अपने घर की सेवा नाम– सिमरन में लगा। मैं प्रतिदिन प्रभु की गुणस्तुति ही करता हूँ और प्रभु के नाम में लीन रहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ नश्वर मनुष्य धन की खातिर राजा–महाराजा की नौकरी करता है। राजा कई बार किसी आरोप के कारण उसे बंदी बना लेता है अथवा कोई (जुर्माना इत्यादि) दण्ड देता है अथवा राजा जब स्वयं ही प्राण त्याग देता है तो उसकी नौकरी ही समाप्त हो जाती है। परन्तु सतिगुरु की सेवा धन्य–धन्य और फलदायक

है जिसकी बदौलत मनुष्य प्रभु–परमेश्वर का नाम–स्मरण करके सुख प्राप्त करता है॥ २॥ धन–दौलत की खातिर मनुष्य विभिन्न प्रकार का व्यापार करता है। यदि व्यापार में लाभ प्राप्त हो तो वह सुख अनुभव करता है। लेकिन क्षति (घाटा) होने पर उसका दिल टूट जाता है। परन्तु जो गुरु के साथ गुणों (भलाई) को सांझा करता है वह सदा के लिए सुख प्राप्त कर लेता है॥ ३॥ मनुष्य को जितनी ज्यादा भूख दूसरे रसों एवं आस्वादनों के लिए है उतनी अधिक भूख (लालसा) उसे बार–बार लगती है। जिस पर परमात्मा कृपा–दृष्टि करता है, वह अपना शीश गुरु के समक्ष बेच देता है। हे नानक ! जो व्यक्ति हरि–रस से तृप्त हो जाता है, उसे दोबारा भूख नहीं लगती॥ ४॥ ४॥ १०॥ ४८॥

गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ हमरै मनि चिति हरि आस नित किउ देखा हरि दरसु तुमारा ॥ जिनि प्रीति लाई सो जाणता हमरै मनि चिति हरि बहुतु पिआरा ॥ हउ कुरबानी गुर आपणे जिनि विछुड़िआ मेलिआ मेरा सिरजनहारा ॥ १ ॥ मेरे राम हम पापी सरणि परे हरि दुआरि ॥ मतु निरगुण हम मेलै कबहूं अपुनी किरपा धारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हमरे अवगुण बहुतु बहुतु है बहु बार बार हरि गणत न आवै ॥ तूं गुणवंता हरि हरि दइआलु हरि आपे बखसि लैहि हरि भावै ॥ हम अपराधी राखे गुर संगती उपदेसु दीओ हरि नामु छडावै ॥ २ ॥ तुमरे गुण किआ कहा मेरे सतिगुरा जब गुरु बोलह तब बिसमु होइ जाइ ॥ हम जैसे अपराधी अवरु कोई राखै जैसे हम सतिगुरि राखि लीए छडाइ ॥ तूं गुरु पिता तूंहै गुरु माता तूं गुरु बंधपु मेरा सखा सखाइ ॥ ३ ॥ जो हमरी बिधि होती मेरे सतिगुरा सा बिधि तुम हरि जाणहु आपे ॥ हम रुलते फिरते कोई बात न पूछता गुर सतिगुर संगि करि हम थापे ॥ धंनु धंनु गुरू नानक जन केरा जितु मिलिऐ चूके सभि सोग संतापे ॥ ४ ॥ ५ ॥ ११ ॥ ४६ ॥

हे भगवान ! मेरे मन एवं चित्त में सदैव ही यह उम्मीद बनी रहती है मैं कैसे हरि–दर्शन करूँ ? जो प्रभु से प्रेम करता है वही इसको समझता है। मेरे मन एवं चित्त को ईश्वर अत्यन्त ही प्यारा लगता है। मैं अपने उस गुरु पर कुर्बान जाता हूँ, जिसने मुझे मेरे सृजनहार प्रभु से मिला दिया है, जिससे मैं जुदा हुआ था॥ १॥ हे मेरे राम ! मैं पापी हूँ। मैंने तेरी शरण ली है और मैं तेरे द्वार पर आ पड़ा हूँ चूंकि तुम अपनी कृपा करके मुझ अल्पबुद्धि, गुणहीन एवं मलिन को कभी अपने साथ मिला लो॥ १॥ रहाउ॥ मुझ में अत्यंत अवगुण हैं और मेरे अवगुण गिने नहीं जा सकते और मैं बार–बार अवगुण करता जाता हूँ। हे प्रभु–परमेश्वर ! तुम गुणवान एवं दयालु हो। हे प्रभु ! जब तुझे भला लगता है, तुम स्वयं ही क्षमा कर देते हो। मुझ अपराधी को गुरु की संगति ने बचा लिया है। गुरु जी ने मुझे उपदेश दिया है कि ईश्वर का नाम जीवन से मुक्ति दिलवा देता है॥ २॥ हे मेरे सतिगुरु ! मैं तेरे गुण कैसे बताऊं? जब गुरु जी मधुर वचन करते हैं तो मैं आश्चर्य से सुप्रसन्न हो जाता हूँ। क्या कोई दूसरा मुझ जैसे अपराधी को बचा सकता है जैसे सतिगुरु ने मुझे बचाकर भवसागर से मुक्त कर दिया है। हे मेरे गुरु ! तुम मेरे पिता हो। तुम ही मेरी माता हो और तुम ही मेरे भाई–बन्धु, साथी एवं सहायक हो॥ ३॥ हे मेरे सतिगुरु जी ! जो अवस्था मेरी थी उस अवस्था को तुम हे हरि रूप गुरु जी स्वयं ही जानते हो। हे प्रभु ! मैं मिट्टी में ठोकरें खा रहा था और कोई भी मेरी बात नहीं पूछता था अर्थात् कोई भी चिन्ता नहीं करता था। सतिगुरु ने अपनी संगति देकर मुझ तुच्छ कीड़े को सम्मान प्रदान किया है। नानक का गुरु धन्य–धन्य है। जिसको मिलने से मेरे सारे दुख एवं संताप मिट गए हैं॥ ४॥ ५॥ ११॥ ४६॥

गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ कंचन नारी महि जीउ लुभतु है मोहु मीठा माइआ ॥ घर मंदर घोड़े खुसी मनु अन रसि लाइआ ॥ हरि प्रभु चिति न आवई किउ छूटा मेरे हरि राइआ ॥ १ ॥ मेरे राम इह

नीच करम हरि मेरे ॥ गुणवंता हरि हरि दइआलु करि किरपा बखसि अवगण सभि मेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किछु रूपु नही किछु जाति नाही किछु ढंगु न मेरा ॥ किआ मुहु लै बोलह गुण बिहून नामु जपिआ न तेरा ॥ हम पापी संगि गुर उबरे पुंनु सतिगुर केरा ॥ २ ॥ सभु जीउ पिंडु मुखु नकु दीआ वरतण कउ पाणी ॥ अंनु खाणा कपड़ु पैनणु दीआ रस अनि भोगाणी ॥ जिनि दीए सु चिति न आवई पसू हउ करि जाणी ॥ ३ ॥ सभु कीता तेरा वरतदा तूं अंतरजामी ॥ हम जंत विचारे किआ करह सभु खेलु तुम सुआमी ॥ जन नानकु हाटि विहाझिआ हरि गुलम गुलामी ॥ ४ ॥ ६ ॥ १२ ॥ ५० ॥

मेरा मन सुन्दर नारी के मोह में फँसा हुआ है एवं माया का मोह मुझे बड़ा मीठा लगता है। मुझे घर, मन्दिर, घोड़े देख–देखकर बड़ी खुशी होती है और दूसरे रसों के आनन्द में मेरा मन चाव से लगा हुआ है। प्रभु–परमेश्वर को मैं स्मरण नहीं करता। हे मेरे प्रभु ! फिर मुझे कैसे मोक्ष मिलेगा॥ १॥ हे मेरे राम ! ऐसे मेरे नीच कर्म हैं। हे मेरे गुणनिधि एवं दयालु प्रभु–परमेश्वर ! मुझ पर कृपा–दृष्टि करके मेरे समस्त अवगुण क्षमा कर दीजिए॥ १॥ रहाउ॥ हे ईश्वर ! न मेरा (सुन्दर) रूप है, न मेरी उच्च जाति है, न ही मेरा जीवन आचरण अच्छा है। मुझ गुणहीन ने तेरा नाम भी नहीं जपा, अतः मैं कौन–सा मुँह लेकर बोलूं? सतिगुरु ने मुझ पर बड़ा उपकार किया है। मैं अपराधी गुरु की संगति से (मोह–माया से) बच गया हूँ॥ २॥ परमात्मा ने समस्त प्राणियों को आत्मा, देह, मुख, नाक और प्रयोग करने के लिए जल दिया है। प्रभु ने उनको खाने के लिए भोजन, पहनने के लिए वस्त्र एवं अनेक रस ऐश्वर्य भोग करने के लिए दिए हैं। जिस प्रभु ने प्राणियों की रचना करके यह कुछ दिया है, मनुष्य को वह (प्रभु) स्मरण नहीं होता। यह मनुष्य पशु के समान है जो यह समझता है कि यह सब कुछ मैंने स्वयं प्राप्त किया है॥ ३॥ हे ईश्वर ! दुनिया में सब कुछ तेरा किया हो रहा है, तुम अंतर्यामी हो। हे परमात्मा ! हम जीव बेचारे क्या कर सकते हैं ? अर्थात् हमारे वश में कुछ भी नहीं। हे मेरे स्वामी ! यह सारी दुनिया तेरी एक लीला है। (जिस तरह कोई गुलाम मण्डी से खरीदा जाता है वैसे ही) मण्डी में से मूल्य लिया हुआ सेवक नानक प्रभु के सेवकों का सेवक है॥ ४॥ ६॥ १२॥ ५०॥

गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ जिउ जननी सुतु जणि पालती राखै नदरि मझारि ॥ अंतरि बाहरि मुखि दे गिरासु खिनु खिनु पोचारि ॥ तिउ सतिगुरु गुरसिख राखता हरि प्रीति पिआरि ॥ १ ॥ मेरे राम हम बारिक हरि प्रभ के है इआणे ॥ धंनु धंनु गुरू गुरु सतिगुरु पाधा जिनि हरि उपदेसु दे कीए सिआणे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसी गगनि फिरंती ऊडती कपरे बागे वाली ॥ ओह राखै चीतु पीछै बिचि बचरे नित हिरदै सारि समाली ॥ तिउ सतिगुर सिख प्रीति हरि हरि की गुरु सिख रखै जीअ नाली ॥ २ ॥ जैसे काती तीस बतीस है विचि राखै रसना मास रतु केरी ॥ कोई जाणहु मास काती कै किछु हाथि है सभ वसगति है हरि केरी ॥ तिउ संत जना की नर निंदा करहि हरि राखै पैज जन केरी ॥ ३ ॥ भाई मत कोई जाणहु किसी कै किछु हाथि है सभ करे कराइआ ॥ जरा मरा तापु सिरति सापु सभु हरि कै वसि है कोई लागि न सकै बिनु हरि का लाइआ ॥ ऐसा हरि नामु मनि चिति निति धिआवहु जन नानक जो अंती अउसरि लए छडाइआ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १३ ॥ ५१ ॥

जैसे माता पुत्र को जन्म देकर उसकी परवरिश करती है और उसको अपनी दृष्टि में रखती है। घर के भीतर एवं बाहर वह उसके मुख में ग्रास देती है और क्षण–क्षण उसको दुलारती है। वैसे ही सतिगुरु अपने सिक्खों को भगवान का प्रेम–प्यार देकर रखते हैं॥ १॥ हे मेरे राम ! हम हरि–प्रभु के नादान बच्चे हैं। गुरु–सतिगुरु उपदेशदाता धन्य–धन्य है, जिसने हमें हरि–नाम का उपदेश देकर

बुद्धिमान बना दिया है॥ १॥ रहाउ॥ जैसे श्वेत पंखों वाली (चिड़िया) गगन में उड़ती फिरती है, परन्तु उसका मन अपने पीछे छोड़े बच्चों में अटका रहता है और अपने मन में सदा उन्हें स्मरण करती है, वैसे ही सतिगुरु गुरु के सिक्ख में हरि–प्रभु का प्रेम दे कर गुरु सिक्ख को अपने हृदय से लगाकर रखते हैं॥ २॥ जैसे परमेश्वर माँस एवं रुधिर की बनी हुई जिह्वा की तीस अथवा बत्तीस दांतों की कैंची में से रक्षा करता है। कोई यह न समझे कि इस तरह करना जिह्वा अथवा कैंची के कुछ वश में है। प्रत्येक वस्तु परमेश्वर के वश में है। इसी तरह ही मनुष्य संतजनों की आलोचना–निन्दा करता है तो परमेश्वर अपने सेवक की प्रतिष्ठा को बचाता है॥ ३॥ मेरे भाइओ! कोई यह न समझे कि किसी के कुछ वश में है। सभी लोग वही कर्म करते है, जो परमेश्वर उनसे करवाता है। बुढ़ापा, मृत्यु, बुखार, सिर–दर्द एवं ताप सभी रोग परमेश्वर के वश में हैं। परमेश्वर के हुक्म के बिना कोई रोग प्राणी को स्पर्श नहीं कर सकता। हे दास नानक! अपने चित्त एवं मन में ऐसे परमात्मा के नाम का नित्य ध्यान करो जो अन्तिम समय (यम इत्यादि से) मुक्ति करवाता है॥ ४॥ ७॥ १३॥ ५१॥

गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ जिसु मिलिऐ मनि होइ अनंदु सो सतिगुरु कहीऐ ॥ मन की दुबिधा बिनसि जाइ हरि परम पदु लहीऐ ॥ १ ॥ मेरा सतिगुरु पिआरा कितु बिधि मिलै ॥ हउ खिनु खिनु करी नमसकारु मेरा गुरु पूरा किउ मिलै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा हरि मेलिआ मेरा सतिगुरु पूरा ॥ इछ पुंनी जन केरीआ ले सतिगुर धूरा ॥ २ ॥ हरि भगति द्रिड़ावै हरि भगति सुणै तिसु सतिगुर मिलीऐ ॥ तोटा मूलि न आवई हरि लाभु निति द्रिड़ीऐ ॥ ३ ॥ जिस कउ रिदै विगासु है भाउ दूजा नाही ॥ नानक तिसु गुर मिलि उधरै हरि गुण गावाही ॥ ४ ॥ ८ ॥ १४ ॥ ५२ ॥

जिसको मिलने से मन को खुशी मिलती है, उसे ही सतिगुरु कहा जाता है। मन की दुविधा दूर हो जाती है और हरि के परमपद की प्राप्ति हो जाती है॥ १॥ मेरा प्रिय सतिगुरु मुझे किस विधि से मिल सकता है? मैं उस गुरु को क्षण–क्षण प्रणाम करता रहता हूँ। मुझे मेरा पूर्ण गुरु कैसे मिल सकता हैं?॥ १॥ रहाउ॥ अपनी कृपा करके ईश्वर ने मुझे मेरे पूर्ण सतिगुरु से मिला दिया है। सतिगुरु की चरण–धूलि प्राप्त करने से उसके सेवक की कामना पूर्ण हो गई है॥ २॥ मनुष्य को उस सतिगुरु से मिलना चाहिए, जिससे वह भगवान की भक्ति के बारे में सुने एवं उसे भगवान की भक्ति हृदय में दृढ़ करवा दे। उससे मिलकर मनुष्य हमेशा ही भगवान का नाम रूपी लाभ प्राप्त करता रहता है और उसे बिल्कुल ही कोई कमी नहीं आती॥ ३॥ हे नानक! जिसके हृदय में प्रसन्नता विद्यमान है और परमात्मा के सिवाय कोई मोह नहीं, उस गुरु से मिलकर मनुष्य भवसागर से पार हो जाता है, जो ईश्वर का यशोगान करवाता है॥ ४॥ ८॥ १४॥ ५२॥

महला ४ गउड़ी पूरबी ॥ हरि दइआलि दइआ प्रभि कीनी मेरै मनि तनि मुखि हरि बोली ॥ गुरमुखि रंगु भइआ अति गूड़ा हरि रंगि भीनी मेरी चोली ॥ १ ॥ अपुने हरि प्रभ की हउ गोली ॥ जब हम हरि सेती मनु मानिआ करि दीनो जगतु सभु गोल अमोली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करहु बिबेकु संत जन भाई खोजि हिरदै देखि ढंढोली ॥ हरि हरि रूपु सभ जोति सबाई हरि निकटि वसै हरि कोली ॥ २ ॥ हरि हरि निकटि वसै सभ जग कै अपरंपर पुरखु अतोली ॥ हरि हरि प्रगटु कीओ गुरि पूरै सिरु वेचिओ गुर पहि मोली ॥ ३ ॥ हरि जी अंतरि बाहरि तुम सरणागति तुम वड पुरख वडोली ॥ जनु नानकु अनदिनु हरि गुण गावै मिलि सतिगुर गुर वेचोली ॥ ४ ॥ १ ॥ १५ ॥ ५३ ॥

दयालु हरि–परमेश्वर ने मुझ पर अपनी दया की है और उसने मेरे मन, तन एवं मुँह में हरि की वाणी डाल दी है। मेरी हृदय रूपी चोली हरि–रंग में भीग गई है। गुरु का आश्रय लेकर वह रंग बहुत

गहरा हो गया है॥ १॥ मैं अपने प्रभु–परमेश्वर की दासी हूँ। जब प्रभु के साथ मेरा मन प्रसन्न हो गया तो उसने सारे जगत् को मेरा बिना मूल्य दास बना दिया॥ १॥ रहाउ॥ हे सन्तजनो, भाइओ ! विचार करो ! अपने हृदय में ही खोज–तलाश करके ईश्वर को देख लो। यह सारी दुनिया भगवान का रूप है और समस्त जीवों में उसकी ही ज्योति विद्यमान है। भगवान प्रत्येक जीव के निकट एवं पास ही निवास करता है॥ २॥ अनन्त, सर्वशक्तिमान एवं अतुलनीय प्रभु–परमेश्वर सारे जगत् के निकट ही रहता है। उस ईश्वर को पूर्ण गुरु ने मेरे हृदय में ही प्रकट किया है, (इसलिए) मैंने अपना सिर गुरु के पास बेच दिया है॥ ३॥ हे पूज्य परमेश्वर ! तू जीवों के अन्दर एवं बाहर सर्वत्र विद्यमान है और अन्दर एवं बाहर मैं तेरी शरण में हूँ, (मेरे लिए) तुम दुनिया के सबसे बड़े महापुरुष हो। जन नानक मध्यस्थ–सतिगुरु से मिलकर रात–दिन प्रभु की महिमा–स्तुति करता रहता है॥ ४॥ १॥ १५॥ ५३॥

गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ जगजीवन अपरंपर सुआमी जगदीसुर पुरख बिधाते ॥ जितु मारगि तुम प्रेरहु सुआमी तितु मारगि हम जाते ॥ १ ॥ राम मेरा मनु हरि सेती राते ॥ सतसंगति मिलि राम रसु पाइआ हरि रामै नामि समाते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि नामु हरि हरि जगि अवखधु हरि हरि नामु हरि साते ॥ तिन के पाप दोख सभि बिनसे जो गुरमति राम रसु खाते ॥ २ ॥ जिन कउ लिखतु लिखे धुरि मसतकि ते गुर संतोख सरि नाते ॥ दुरमति मैलु गई सभ तिन की जो राम नाम रंगि राते ॥ ३ ॥ राम तुम आपे आपि आपि प्रभु ठाकुर तुम जेवड अवरु न दाते ॥ जनु नानकु नामु लए तां जीवै हरि जपीऐ हरि किरपा ते ॥ ४ ॥ २ ॥ १६ ॥ ५४ ॥

हे प्रभु ! तू जगत् का जीवन, अपरम्पार एवं हम सबका स्वामी है। हे जगदीश्वर ! तुम सर्वशक्तिमान एवं भाग्यविधाता हो। हे मेरे स्वामी ! हम प्राणियों को तुम जिस मार्ग की भी प्रेरणा करते हो, उसी मार्ग में हम चलते हैं॥१॥ हे मेरे राम ! मेरा मन प्रभु के प्रेम में मग्न हो गया है। सत्संग में मिलकर मैंने राम रस प्राप्त किया है और अब मेरा मन हरि–राम के नाम में लीन रहता है॥ १॥ रहाउ॥ हरि–परमेश्वर का नाम जगत् में समस्त रोगों की औषधि है। हरि–परमेश्वर का नाम सदैव सत्य है। जो व्यक्ति गुरु के उपदेश से राम रस को चखते हैं, उनके तमाम पाप एवं दोष नाश हो जाते हैं॥ २॥ जिनके मस्तक पर विधाता ने प्रारम्भ से ही ऐसा भाग्य लिख दिया है, वह गुरु रूपी संतोष सरोवर में स्नान करते हैं। जो राम–नाम के प्रेम में मग्न रहते हैं, उनकी मंदबुद्धि में से पापों की तमाम मैल दूर हो जाती है॥ ३॥ हे मेरे राम ! तुम स्वयं ही सबकुछ हो। तुम स्वयं ही समस्त जीवों के ठाकुर हो और तेरे जैसा महान दाता दूसरा कोई नहीं। नानक केवल ईश्वर का नाम लेने से ही जीता है। प्रभु की दया से ही प्रभु का जाप होता है॥ ४॥ २॥ १६॥ ५४॥

गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ करहु क्रिपा जगजीवन दाते मेरा मनु हरि सेती राचे ॥ सतिगुरि बचनु दीओ अति निरमलु जपि हरि हरि हरि मनु माचे ॥ १ ॥ राम मेरा मनु तनु बेधि लीओ हरि साचे ॥ जिह काल कै मुखि जगतु सभु ग्रसिआ गुर सतिगुर कै बचनि हरि हम बाचे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन कउ प्रीति नाही हरि सेती ते साकत मूड़ नर काचे ॥ तिन कउ जनमु मरणु अति भारी विचि विसटा मरि मरि पाचे ॥ २ ॥ तुम दइआल सरणि प्रतिपालक मो कउ दीजै दानु हरि हम जाचे ॥ हरि के दास दास हम कीजै मनु निरति करे करि नाचे ॥ ३ ॥ आपे साह वडे प्रभ सुआमी हम वणजारे हहि ता चे ॥ मेरा मनु तनु जीउ रासि सभ तेरी जन नानक के साह प्रभ साचे ॥ ४ ॥ ३ ॥ १७ ॥ ५५ ॥

हे जगजीवन ! हे दाता ! मुझ पर अपनी ऐसी कृपा करो कि मेरा मन प्रभु की स्मृति में लीन रहे। सतिगुरु ने मुझे अत्यन्त निर्मल वचन किया है और हरि–परमेश्वर के नाम का जाप करने से मेरा मन प्रसन्न हो गया है॥ १॥ हे मेरे राम ! मेरा मन एवं तन सच्चे परमेश्वर ने बींध लिया है। हे हरि–परमेश्वर ! गुरु–सतिगुरु के उपदेश से मैं उस काल (मृत्यु) से बच गया हूँ, जिसके मुख (पंजे) में सारा जगत् फँसा हुआ है॥ १॥ रहाउ॥ जिनकी प्रीति परमेश्वर से नहीं, वह अधर्मी, मूर्ख एवं झूठे पुरुष हैं। वह जन्म एवं मृत्यु का अत्यंत भारी दुख उठाते हैं और बार–बार जन्मते–मरते और विष्टा में सड़ते रहते हैं॥ २॥ हे प्रभु ! तुम दया के घर एवं शरणार्थियों के पालनहार हो। हे ठाकुर ! मैं याचना करता हूँ कि मुझे अपने प्रेम का दान प्रदान करो। मुझे प्रभु के सेवकों का सेवक बना दे, चूंकि मेरा मन प्रेम धारण करके नृत्य करे॥ ३॥ हे मेरे स्वामी प्रभु ! तू स्वयं ही बड़ा साहूकार है और मैं तेरा व्यापारी हूँ। मेरा मन, तन एवं जीवन सब कुछ तेरी ही पूँजी है। हे सच्चे प्रभु ! तुम नानक के साहूकार हो॥ ४॥ ३॥ १७॥ ५५॥

गउड़ो पूरबी महला ४ ॥ तुम दइआल सरब दुख भंजन इक बिनउ सुनहु दे काने ॥ जिस ते तुम हरि जाने सुआमी सो सतिगुरु मेलि मेरा प्राने ॥ १ ॥ राम हम सतिगुर पारब्रहम करि माने ॥ हम मूड़ मुगध असुध मति होते गुर सतिगुर कै बचनि हरि हम जाने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जितने रस अन रस हम देखे सभ तितने फीक फीकाने ॥ हरि का नामु अंम्रित रसु चाखिआ मिलि सतिगुर मीठ रस गाने ॥ २ ॥ जिन कउ गुरु सतिगुरु नही भेटिआ ते साकत मूड़ दिवाने ॥ तिन के करमहीन धुरि पाए देखि दीपकु मोहि पचाने ॥ ३ ॥ जिन कउ तुम दइआ करि मेलहु ते हरि हरि सेव लगाने ॥ जन नानक हरि हरि हरि जपि प्रगटे मति गुरमति नामि समाने ॥ ४ ॥ ४ ॥ १८ ॥ ५६ ॥

हे प्रभु ! तुम बड़े दयालु एवं सर्व दुःखों का नाश करने वाले हो। अतः मेरी एक प्रार्थना ध्यानपूर्वक सुनो। हे मेरे स्वामी हरि ! मुझ उस सतिगुरु से मिला दो जिसकी कृपा से तुझे जाना जाता है और जो मेरे प्राण हैं॥ १॥ हे मेरे राम ! मैं सतिगुरु को पारब्रह्म कह कर मानता हूँ। मैं मूर्ख, मक्कार और खोटी बुद्धि वाला हूँ। हे ईश्वर ! मैंने तुझे सतिगुरु की वाणी से जान लिया है॥ १॥ रहाउ॥ संसार के जितने भी विभिन्न रस हैं, मैंने देख लिए हैं परन्तु ये सभी बिल्कुल फीके हैं। सतिगुरु से मिलकर मैंने हरि–नाम रूपी अमृत रस चख लिया है, जो गन्ने के रस के समान बड़ा मीठा है॥ २॥ जो व्यक्ति गुरु–सतिगुरु से नहीं मिले, वह मूर्ख, दीवाने एवं शाक्त हैं। (लेकिन उनके भी क्या वश ?) उन भाग्यहीनों की किस्मत में प्रारम्भ से ही ऐसे नीचे कर्म लिखे हुए हैं। वे माया के मोह में फँसकर यूं जलते हैं जैसे पतंगा दीपक को देखकर जल जाता है॥३॥ हे हरि–परमेश्वर ! जिनको तुम दया करके गुरु से मिला देते हो, वह तेरी सेवा–भक्ति में जुट जाते हैं। हे नानक ! ऐसे मनुष्य हरि–परमेश्वर के नाम का जाप करने से दुनिया में प्रसिद्ध हो जाते हैं और गुरु के उपदेश से नाम में लीन रहते हैं॥ ४॥ ४॥ १८॥ ५६॥

गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ मेरे मन सो प्रभु सदा नालि है सुआमी कहु किथै हरि पहु नसीऐ ॥ हरि आपे बखसि लए प्रभु साचा हरि आपि छडाए छुटीऐ ॥ १ ॥ मेरे मन जपि हरि हरि हरि मनि जपीऐ ॥ सतिगुर की सरणाई भजि पउ मेरे मना गुर सतिगुर पीछै छुटीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरे मन सेवहु सो प्रभ सब सुखदाता जितु सेविऐ निज घरि वसीऐ ॥ गुरमुखि जाइ लहहु घरु अपना घसि चंदनु हरि जसु घसीऐ ॥ २ ॥ मेरे मन हरि हरि हरि हरि हरि जसु ऊतमु लै लाहा हरि मनि हसीऐ ॥ हरि हरि आपि दइआ करि देवै ता अंम्रितु हरि रसु चखीऐ ॥ ३ ॥ मेरे मन नाम बिना जो दूजै लागे ते साकत नर जमि घुटीऐ ॥ ते साकत चोर जिना नामु विसारिआ मन तिन कै निकटि न भिटीऐ ॥ ४ ॥ मेरे मन सेवहु अलख निरंजन नरहरि जितु सेविऐ लेखा छुटीऐ ॥ जन नानक हरि प्रभि पूरे कीए खिनु मासा तोलु न घटीऐ ॥ ५ ॥ ५ ॥ १९ ॥ ५७ ॥

हे मेरे मन ! वह स्वामी–प्रभु सदैव हमारे साथ रहता है। बताओ ! परमेश्वर से भागकर हम कहाँ जा सकते हैं ? सत्यस्वरूप प्रभु–परमेश्वर स्वयं ही जीवों को क्षमा कर देता है। यदि प्रभु स्वयं मनुष्य को मुक्त करे तो ही वह मुक्त होता है॥ १॥ हे मेरे मन ! हृदय से हरि–परमेश्वर का हरि–नाम ही जपते रहना चाहिए। हे मेरे मन ! भाग कर सतिगुरु की शरण लो। सतिगुरु का आश्रय लेने से तेरी (मोह–माया के बंधनों से) मुक्ति हो जाएगी॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे मन ! उस सर्वसुखदाता परमेश्वर की सेवा–भक्ति करो, जिसकी सेवा–भक्ति करने से आत्मस्वरूप में निवास हो जाता है। गुरु के माध्यम से अपने आत्मस्वरूप रूपी घर में जाकर निवास करो और जैसे चन्दन को शिला पर घिसाया जाता है, वैसे ही हरि–यश को अपने मन पर घिसाओ॥ २॥ हे मेरे मन ! हरि–परमेश्वर का हरि–नाम जप। हरि–परमेश्वर का यश सर्वोत्तम है। हरि–परमेश्वर का नाम रूपी लाभ प्राप्त करके हृदय में सुप्रसन्न होना चाहिए। यदि हरि–परमेश्वर स्वयं दया कर दे तो मनुष्य हरि–रस रूपी अमृत को चखता है॥ ३॥ हे मेरे मन ! जो प्रभु के नाम से विहीन होकर माया–मोह में तल्लीन हैं, उन शाक्त पुरुषों को यमदूत दबोचकर मार देता है। हे मेरे मन ! जिन्होंने परमात्मा के नाम को भुला दिया है, उनके निकट नहीं आना चाहिए, क्योंकि वे तो शाक्त एवं प्रभु के चोर हैं॥ ४॥ हे मेरे मन ! उस अलख निरंजन नृसिंह भगवान की सेवा–भक्ति करो, जिसकी सेवा–भक्ति करने से कर्मों का लेखा जोखा समाप्त हो जाता है। हे नानक ! जिन्हें हरि–प्रभु ने तोल में पूर्ण कर दिया है, उनका फिर तोल एक माशा मात्र भी कम नहीं होता॥ ५॥ ५॥ १६॥ ५७॥

गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ हमरे प्रान वसगति प्रभ तुमरै मेरा जीउ पिंडु सभ तेरी ॥ दइआ करहु हरि दरसु दिखावहु मेरै मनि तनि लोच घणेरी ॥ १ ॥ राम मेरै मनि तनि लोच मिलण हरि केरी ॥ गुर क्रिपालि क्रिपा किंचत गुरि कीनी हरि मिलिआ आइ प्रभु मेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो हमरै मन चिति है सुआमी सा बिधि तुम हरि जानहु मेरी ॥ अनदिनु नामु जपी सुखु पाई नित जीवा आस हरि तेरी ॥ २ ॥ गुरि सतिगुरि दातै पंथु बताइआ हरि मिलिआ आइ प्रभु मेरी ॥ अनदिनु अनदु भइआ वडभागी सभ आस पुजी जन केरी ॥ ३ ॥ जगंनाथ जगदीसुर करते सभ वसगति है हरि केरी ॥ जन नानक सरणागति आए हरि राखहु पैज जन केरी ॥ ४ ॥ ६ ॥ २० ॥ ५८ ॥

हे मेरे ईश्वर ! मेरे प्राण तेरे ही वश में हैं। मेरी आत्मा एवं शरीर सभी तेरे ही हैं। हे प्रभु ! मुझ पर दया करके अपने दर्शन दीजिए, क्योंकि मेरे मन एवं तन में तेरे दर्शनों की तीव्र लालसा है॥ १॥ हे मेरे राम ! मेरे मन एवं तन में प्रभु–मिलन की तीव्र लालसा है। हे प्राणी ! जब कृपा के घर गुरु ने मुझ पर थोड़ी–सी कृपा की, तो मेरा प्रभु–परमेश्वर आकर मुझे मिल गया॥ १॥ रहाउ॥

हे प्रभु–परमेश्वर ! जो कुछ भी मेरे मन एवं चित्त में है, मेरी उस अवस्था को तुम जानते हो। हे प्रभु ! रात–दिन मैं तेरे नाम का जाप करता और सुख पाता हूँ। मैं सदा ही तेरी आशा में जीता हूँ॥ २॥ जब दाता सतिगुरु ने मुझे सन्मार्ग दिखाया तो हरि–प्रभु आकर मुझसे प्रत्यक्ष आ मिला। तकदीर से मेरे हृदय में रात–दिन आनंद बना रहता है। प्रभु ने मुझ सेवक की अभिलाषा पूरी कर दी है॥ ३॥ हे जगन्नाथ ! हे जगदीश्वर ! हे कर्त्ता–प्रभु ! सारी जगत् क्रीड़ा तेरे वश में है। हे प्रभु ! नानक तेरी शरणागत आया है, अपने सेवक की लाज–प्रतिष्ठा रखो॥ ४॥ ६॥ २०॥ ५८॥

गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ इहु मनूआ खिनु न टिकै बहु रंगी दह दह दिसि चलि चलि हाढे ॥ गुरु पूरा पाइआ वडभागी हरि मंतु दीआ मनु ठाढे ॥ १ ॥ राम हम सतिगुर लाले कांढे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हमरै मसतकि दागु दगाना हम करज गुरू बहु साढे ॥ परउपकारु पुंनु बहु कीआ भउ दुतरु तारि

पराढे ॥ २ ॥ जिन कउ प्रीति रिदै हरि नाही तिन कूरे गाढन गाढे ॥ जिउ पाणी कागदु बिनसि जात है तिउ मनमुख गरभि गलाढे ॥ ३ ॥ हम जानिआ कछू न जानह आगै जिउ हरि राखै तिउ ठाढे ॥ हम भूल चूक गुर किरपा धारहु जन नानक कुतरे काढे ॥ ४ ॥ ७ ॥ २१ ॥ ५६ ॥

यह चंचल मन माया के अनेक रंग–तमाशों में फँसकर क्षण–मात्र भी नहीं टिकता। यह दसों–दिशाओं में दौड़–दौड़कर भटकता रहता है। लेकिन बड़े सौभाग्य से मुझे पूर्ण गुरु मिल गए हैं, जिन्होंने मुझे हरि नाम रूपी मंत्र प्रदान किया है, जिससे यह अस्थिर मन शांत हो गया है॥ १॥ हे मेरे राम! मुझे सतिगुरु का गुलाम कहा जाता है॥ १॥ रहाउ॥

मेरे मस्तक पर सतिगुरु के गुलाम होने का चिन्ह लगा हुआ है। गुरु के उपकार का मैंने बहुत अधिक कर्जा अदा करना है अर्थात् मैं गुरु कर्जा उतार नहीं सकता इसलिए गुरु का गुलाम बन गया। गुरु ने मुझ पर बहुत बड़ा परोपकार एवं उदार किया है और मुझे इस कठिन एवं भयानक संसार–सागर से पार कर दिया है॥ २॥ जिन लोगों के हृदय में प्रभु का प्यार नहीं होता, वे झूठी योजनाएँ ही बनाते रहते हैं। जैसे जल में कागज का नाश हो जाता है, वैसे ही स्वेच्छाचारी जीव अहंकार में योनियों के चक्र में फँसकर नष्ट हो जाता है॥ ३॥ मुझे भूतकाल का कुछ पता नहीं, न ही मैं भविष्यकाल बारे कुछ जानता हूँ, जैसे परमेश्वर हमें रखता है, उसी अवस्था में हम रहते हैं। हे गुरु जी! हम बहुत भूल–चूक करते रहते हैं अतः हम पर कृपा करो। हे नानक! मुझे गुरु के घर का कुत्ता कहा जाता है॥ ४॥ ७॥ २१॥ ५६॥

गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ कामि करोधि नगरु बहु भरिआ मिलि साधू खंडल खंडा हे ॥ पूरबि लिखत लिखे गुरु पाइआ मनि हरि लिव मंडल मंडा हे ॥ १ ॥ करि साधू अंजुली पुंनु वडा हे ॥ करि डंडउत पुनु वडा हे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माकत हरि रस सादु न जानिआ तिन अंतरि हउमै कंडा हे ॥ जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि जमकालु सहहि सिरि डंडा हे ॥ २ ॥ हरि जन हरि हरि नामि समाणे दुखु जनम मरण भव खंडा हे ॥ अबिनासी पुरखु पाइआ परमेसरु बहु सोभ खंड ब्रहमंडा हे ॥ ३ ॥ हम गरीब मसकीन प्रभ तेरे हरि राखु राखु वड वडा हे ॥ जन नानक नामु अधारु टेक है हरि नामे ही सुखु मंडा हे ॥ ४ ॥ ८ ॥ २२ ॥ ६० ॥

यह मानव शरीर रूपी–नगर काम–क्रोध जैसे विकारों से पूरी तरह भरा हुआ है। लेकिन सन्तजनों के मिलाप से तुमने इन्हें क्षीण कर दिया है। जिस मनुष्य ने पूर्व लिखित कर्मों के माध्यम से गुरु को प्राप्त किया है, उसका चंचल मन ही भगवान में लीन हुआ है॥ १॥ संतजनों को हाथ जोड़कर नमन करना बड़ा पुण्य कर्म है। उन्हें दण्डवत् प्रणाम करना भी महान् पुण्य कर्म है॥ १॥ रहाउ॥

पतित मनुष्यों (माया में लिप्त अथवा जो भगवान से विस्मृत) ने हरि–रस का आनंद प्राप्त नहीं किया, क्योंकि उनके अन्तर्मन में अहंकार रूपी कांटा होता है। जैसे–जैसे वह अहंकारवश जीवन मार्ग पर चलते हैं, वह अहं का कांटा उन्हें चुभ–चुभकर कष्ट देता रहता है और अन्तिम समय में यमों द्वारा दी जाने वाली यातना को सहन करते हैं॥ २॥ प्रभु के भक्त प्रभु–परमेश्वर के नाम सिमरन में लीन रहते हैं और वे आवागमन के चक्र से मुक्ति प्राप्त करके संसार के दुखों से छूट जाते हैं। फिर वे अविनाशी सर्वव्यापक प्रभु को पा लेते हैं और वे खण्डों–ब्रह्मण्डों में शोभा पाते हैं॥ ३॥ हे प्रभु! हम निर्धन व निराश्रय तुम्हारे ही अधीन हैं तुम सर्वोच्चतम शक्ति हो, इसलिए हमें इन विकारों से बचा लो। हे नानक! जीव को तुम्हारे ही नाम का आधार है, हरि–नाम में लिप्त होने से ही आत्मिक सुखों की उपलब्धि होती है॥ ४॥ ८॥ २२॥ ६०॥

गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ इसु गड़ महि हरि राम राइ है किछु सादु न पावै धीठा ॥ हरि दीन दइआलि अनुग्रहु कीआ हरि गुर सबदी चखि डीठा ॥ १ ॥ राम हरि कीरतनु गुर लिव मीठा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि अगमु अगोचरु पारब्रहमु है मिलि सतिगुर लागि बसीठा ॥ जिन गुर बचन सुखाने हीअरै तिन आगै आणि परीठा ॥ २ ॥ मनमुख हीअरा अति कठोरु है तिन अंतरि कार करीठा ॥ बिसीअर कउ बहु दूधु पीआईऐ बिखु निकसै फोलि फुलीठा ॥ ३ ॥ हरि प्रभ आनि मिलावहु गुरु साधू घसि गरुड़ु सबदु मुखि लीठा ॥ जन नानक गुर के लाले गोले लगि संगति करूआ मीठा ॥ ४ ॥ ६ ॥ २३ ॥ ६१ ॥

मानव-शरीर रूपी दुर्ग में जगत् के बादशाह हरि-परमेश्वर का निवास है परन्तु निर्लज्ज प्राणी उसके स्वाद को प्राप्त नहीं करता। जब दीनदयालु ईश्वर ने मुझ पर करुणा-दृष्टि की तो मैंने गुरु के शब्द द्वारा हरि-रस के स्वाद को चख कर देख लिया॥ १॥ हे मेरे राम! गुरु में सुरति धारण करने से परमेश्वर का यश गायन करना मुझे मीठा लगने लग गया॥ १॥ रहाउ॥ हरि-परमेश्वर अगम्य, अगोचर एवं पारब्रह्म है। सतिगुरु-मध्यस्थ के साथ मिलने से वह मिलता है। जिनके हृदय को गुरु का वचन सुखदायक लगता है, गुरु उनके समक्ष नाम रूपी अमृत रस सेवन करने के लिए परोस देता है॥ २॥ स्वेच्छाचारी का हृदय बड़ा निष्ठुर है, उनके भीतर माया के विकारों की कालिख ही कालिख होती है। यदि हम साँप को कितना भी दूध पिलाएँ, जाँच पड़ताल करने पर उसके भीतर से विष ही निकलेगा॥ ३॥ हे मेरे हरि-प्रभु! मुझे गुरदेव से मिला दीजिए चूंकि जो साँप का विष नाश करने के लिए मैं अपने मुख से गुरुवाणी को नीलकण्ठ के मन्त्र के तौर पर पीकर सेवन करूँ (गायन करूँ)। हे नानक! मैं गुरु का सेवक एवं गुलाम हूँ। उनकी सत्संग से मिलकर कड़वा विष भी मीठा अमृत बन जाता है॥ ४॥ ६॥ २३॥ ६१॥

गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ हरि हरि अरथि सरीरु हम बेचिआ पूरे गुर कै आगे ॥ सतिगुर दातै नामु दिड़ाइआ मुखि मसतकि भाग सभागे ॥ १ ॥ राम गुरमति हरि लिव लागे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घटि घटि रमईआ रमत राम राइ गुर सबदि गुरू लिव लागे ॥ हउ मनु तनु देवउ काटि गुरू कउ मेरा भ्रमु भउ गुर बचनी भागे ॥ २ ॥ अंधिआरै दीपक आनि जलाए गुर गिआनि गुरू लिव लागे ॥ अगिआनु अंधेरा बिनसि बिनासिओ घरि वसतु लही मन जागे ॥ ३ ॥ साकत बधिक माइआधारी तिन जम जोहनि लागे ॥ उन सतिगुर आगै सीसु न बेचिआ ओइ आवहि जाहि अभागे ॥ ४ ॥ हमरा बिनउ सुनहु प्रभ ठाकुर हम सरणि प्रभू हरि मागे ॥ जन नानक की लज पाति गुरू है सिरु बेचिओ सतिगुर आगे ॥ ५ ॥ १० ॥ २४ ॥ ६२ ॥

हरि-परमेश्वर का नाम लेने की खातिर मैंने अपना शरीर पूर्ण गुरु के समक्ष बेच दिया है। दाता सतिगुरु ने मेरे हृदय में ईश्वर का नाम सुदृढ़ कर दिया है। मेरे चेहरे एवं मस्तक पर भाग्य जाग गए हैं, मैं बड़ा सौभाग्यशाली हूँ॥ १॥ हे मेरे राम! गुरु की मति से मेरी सुरति भगवान में लग गई है॥ १॥ रहाउ॥ राम प्रत्येक हृदय में विद्यमान है। गुरु के शब्द एवं गुरु द्वारा प्रभु में वृत्ति लगती है। अपने मन एवं तन के टुकड़े-टुकड़े करके मैं उनको गुरु के समक्ष अर्पण करता हूँ। गुरु के वचन द्वारा मेरा भ्रम एवं भय निवृत्त हो गए॥ २॥ जब अज्ञानता के अन्धेरे में गुरु ने अपना ज्ञान-रूपी दीपक प्रज्वलित कर दिया तो मेरी वृत्ति परमात्मा में लग गई। मेरे हृदय में से अज्ञानता का अँधेरा नाश हो गया और माया के मोह में निद्रामग्न मेरा मन जाग गया। मेरे मन को हृदय-घर में ही नाम रूपी वस्तु मिल गई है॥ ३॥ भगवान से विमुख, हिंसक, पतित एवं मायाधारी जीवों को ही यमदूत मृत्यु के बन्धन में बांधता

है। जिन्होंने सतिगुरु के समक्ष अपना सिर नहीं बेचा, वे भाग्यहीन आवागमन (जीवन–मृत्यु) के चक्र में पड़े रहते हैं॥ ४॥ हे प्रभु–ठाकुर! मेरी एक विनती सुनो। मैं प्रभु की शरणागत हूँ और हरि नाम की याचना करता हूँ। गुरु ही नानक की लाज–प्रतिष्ठा रखने वाला है। उसने अपना सिर सतिगुरु के समक्ष बेच दिया है॥ ५॥ १०॥ २४॥ ६२॥

गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ हम अहंकारी अहंकार अगिआन मति गुरि मिलिऐ आपु गवाइआ ॥ हउमै रोगु गइआ सुखु पाइआ धनु धंनु गुरू हरि राइआ ॥ १ ॥ राम गुर कै बचनि हरि पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरै हीअरै प्रीति राम राइ की गुरि मारगु पंथु बताइआ ॥ मेरा जीउ पिंडु सभु सतिगुर आगै जिनि विछुड़िआ हरि गलि लाइआ ॥ २ ॥ मेरै अंतरि प्रीति लगी देखन कउ गुरि हिरदे नालि दिखाइआ ॥ सहज अनंदु भइआ मनि मोरै गुर आगै आपु वेचाइआ ॥ ३ ॥ हम अपराध पाप बहु कीने करि दुसटी चोर चुराइआ ॥ अब नानक सरणागति आए हरि राखहु लाज हरि भाइआ ॥ ४ ॥ ११ ॥ २५ ॥ ६३ ॥

हम (प्राणी) बड़े अहंकारी हैं, हमारी बुद्धि अहंकार और अज्ञानता वाली बनी रहती है। लेकिन गुरु से मिलकर हमारा अहंकार नष्ट हो गया है। हमारे हृदय में से अहंकार का रोग निवृत्त हो गया है और हमें सुख उपलब्ध हो गया है। हरि–परमेश्वर का रूप गुरु धन्य–धन्य है॥ १॥ हे मेरे राम! गुरु के वचन द्वारा मैंने प्रभु को पा लिया है॥ १॥ रहाउ॥ मेरे हृदय में राम का प्रेम है। गुरु ने मुझे प्रभु–मिलन का मार्ग दिखा दिया है। मेरी आत्मा एवं देहि सब कुछ सतिगुरु के समक्ष समर्पित है, जिन्होंने मुझ बिछुड़े को परमात्मा के आलिंगन लगा दिया है॥ २॥ मेरे अन्तर्मन में प्रभु के दर्शनों की प्रीति उत्पन्न हुई है। गुरु ने मुझे मेरे हृदय में ही मेरे साथ विद्यमान प्रभु को दिखा दिया है। मेरे मन में सहज आनंद उत्पन्न हो गया है। मैंने खुद को गुरु के समक्ष बेच दिया है॥ ३॥ मैंने बहुत अपराध एवं पाप किए हैं। जैसे कोई चोर अपनी की हुई चोरी को छिपाता है, वैसे ही मैंने बुराइयां करके उन्हें छिपाया है। हे नानक! अब मैं हरि की शरण में आया हूँ। हे हरि! जैसे तुझे उपयुक्त लगे, वैसे ही मेरी लाज रखो॥ ४॥ ११॥ २५॥ ६३॥

गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ गुरमति बाजै सबदु अनाहदु गुरमति मनूआ गावै ॥ वडभागी गुर दरसनु पाइआ धनु धंनु गुरू लिव लावै ॥ १ ॥ गुरमुखि हरि लिव लावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हमरा ठाकुरु सतिगुरु पूरा मनु गुर की कार कमावै ॥ हम मलि मलि धोवह पाव गुरू के जो हरि हरि कथा सुनावै ॥ २ ॥ हिरदै गुरमति राम रसाइणु जिहवा हरि गुण गावै ॥ मन रसकि रसकि हरि रसि आघाने फिरि बहुरि न भूख लगावै ॥ ३ ॥ कोई करै उपाव अनेक बहुतेरे बिनु किरपा नामु न पावै ॥ जन नानक कउ हरि किरपा धारी मति गुरमति नामु द्रिड़ावै ॥ ४ ॥ १२ ॥ २६ ॥ ६४ ॥

गुरु के उपदेश से मेरे अन्तर में अनहद शब्द गूंजने लग गया है और गुरु के उपदेश से ही मेरा मन परमात्मा का यश गायन करता है। बड़े सौभाग्य से मुझे गुरु जी के दर्शन नसीब हुए हैं। वह गुरु धन्य–धन्य है, जिसने मेरी वृत्ति ईश्वर से लगा दी है॥ १॥ गुरु के माध्यम से ही ईश्वर में वृत्ति लगती है॥ १॥ रहाउ॥ पूर्ण सतिगुरु ही मेरा ठाकुर है और मेरा मन गुरु की ही सेवा करता है। मैं गुरु के चरण मल–मल कर धोता हूँ, जो मुझे हरि की हरि कथा सुनाता है॥ २॥ गुरु के उपदेश से रसों का घर प्रभु मेरे हृदय में आकर बस गया है। मेरी जिह्वा ईश्वर का यश गायन करती रहती है। मेरा मन प्रेम में भीगकर ईश्वर के अमृत से तृप्त हो गया है और तदुपरांत इसको दोबारा भूख नहीं

लगती॥ ३॥ चाहे कोई अनेक उपाय करे किन्तु प्रभु की कृपा बिना उसको नाम प्राप्त नहीं होता। नानक पर हरि–परमेश्वर ने अपनी कृपा धारण की है, गुरु के उपदेश से उसकी बुद्धि में हरि का नाम बस गया है॥ ४॥ १२॥ २६॥ ६४॥

रागु गउड़ी माझ महला ४ ॥ गुरमुखि जिंदू जपि नामु करंमा ॥ मति माता मति जीउ नामु मुखि रामा ॥ संतोखु पिता करि गुरु पुरखु अजनमा ॥ वडभागी मिलु रामा ॥ १ ॥ गुरु जोगी पुरखु मिलिआ रंगु माणी जीउ ॥ गुरु हरि रंगि रतड़ा सदा निरबाणी जीउ ॥ वडभागी मिलु सुघड़ सुजाणी जीउ ॥ मेरा मनु तनु हरि रंगि भिंना ॥ २ ॥ आवहु संतहु मिलि नामु जपाहा ॥ विचि संगति नामु सदा लै लाहा जीउ ॥ करि सेवा संता अंम्रितु मुखि पाहा जीउ ॥ मिलु पूरबि लिखिअड़े धुरि करमा ॥ ३ ॥ सावणि वरसु अंम्रिति जगु छाइआ जीउ ॥ मनु मोरु कुहुकिअड़ा सबदु मुखि पाइआ ॥ हरि अंम्रितु वुठड़ा मिलिआ हरि राइआ जीउ ॥ जन नानक प्रेमि रतंना ॥ ४ ॥ १ ॥ २७ ॥ ६५ ॥

हे मेरे प्राण ! गुरु के सान्निध्य में रहकर परमात्मा के नाम का जाप करो। हे मेरे प्राण ! उस बुद्धि को अपनी माता बना, बुद्धि को ही अपना जीवन–आधार बना और मुँह में राम का नाम जप। संतोष को अपना पिता और गुरु को अपना अजन्मा सत्पुरुष बना। हे सौभाग्यशाली ! राम से मिल॥ १॥ मैं, योगी गुरु परमेश्वर से मिल गया हूँ और उसके रंग में आनंद प्राप्त करता हूँ। गुरु परमेश्वर के प्रेम में मग्न रहता है और सदैव पावन–पवित्र है। सौभाग्य से मैं चतुर एवं सर्वज्ञ प्रभु से मिल गया हूँ। मेरा मन एवं तन परमेश्वर के रंग में मग्न है॥ २॥ हे संतजनों ! आओ हम मिलकर प्रभु के नाम का जाप करें। हम सत्संगति में मिलकर सदैव नाम रूपी लाभ प्राप्त करें। संतों की सेवा करके हम अपने मुख में नाम रूपी अमृत डालें। प्रारम्भ से किस्मत में पूर्व कर्मों के लिखे लेखों अनुसार प्रभु से जा मिलो॥ ३॥ श्रावण के महीने में नाम अमृत वाला बादल जगत् पर छाया हुआ है। नाम अमृत को चखकर मेरे मन का मोर प्रसन्न होकर चहचहाने लग गया। जब हरि–नाम रूपी अमृत मेरे हृदय में आ बसा तो मुझे प्रभु–परमेश्वर मिल गया। हे नानक ! मैं प्रभु की प्रीति में मग्न हो गया हूँ॥ ४॥ १॥ २७॥ ६५॥

गउड़ी माझ महला ४ ॥ आउ सखी गुण कामण करीहा जीउ ॥ मिलि संत जना रंगु माणिह रलीआ जीउ ॥ गुर दीपकु गिआनु सदा मनि बलीआ जीउ ॥ हरि तुठै ढुलि ढुलि मिलीआ जीउ ॥ १ ॥ मेरै मनि तनि प्रेमु लगा हरि ढोले जीउ ॥ मै मेले मितु सतिगुरु वेचोले जीउ ॥ मनु देवां संता मेरा प्रभु मेले जीउ ॥ हरि विटड़िअहु सदा घोले जीउ ॥ २ ॥ वसु मेरे पिआरिआ वसु मेरे गोविदा हरि करि किरपा मनि वसु जीउ ॥ मनि चिंदिअड़ा फलु पाइआ मेरे गोविंदा गुरु पूरा वेखि विगसु जीउ ॥ हरि नामु मिलिआ सोहागणी मेरे गोविंदा मनि अनदिनु अनदु रहसु जीउ ॥ हरि पाइअड़ा वडभागीई मेरे गोविंदा नित लै लाहा मनि हसु जीउ ॥ ३ ॥ हरि आपि उपाए हरि आपे वेखै हरि आपे करै लाइआ जीउ ॥ इकि खावहि बखस तोटि न आवै इकना फका पाइआ जीउ ॥ इकि राजे तखति बहहि नित सुखीए इकना भिख मंगाइआ जीउ ॥ सभु इको सबदु वरतदा मेरे गोविदा जन नानक नामु धिआइआ जीउ ॥ ४ ॥ २ ॥ २८ ॥ ६६ ॥

हे मेरी सत्संगी सखियों ! आओ, हम प्रभु को वश में करने के लिए शुभ गुणों के जादू–टोने तैयार करें और संतजनों से मिलकर हम प्रभु–प्रेम का सुख एवं आनंद भोगें। मेरे हृदय में गुरु के ज्ञान का दीपक सदैव प्रज्वलित रहता है। परम प्रसन्न एवं दया से कोमल होकर प्रभु मुझे मिल गया है॥ १॥ मेरे मन एवं तन में प्रियतम प्रभु का प्रेम लगा हुआ है। मेरी यही कामना है कि मध्यस्थ सतिगुरु मुझे

मेरे प्रिय मित्र प्रभु से मिला दे। मैं अपना मन उन संतों को अर्पण कर दूँगा जो मुझे मेरे प्रभु से मिला देंगे। प्रभु पर मैं सदैव कुर्बान जाता हूँ॥ २॥ हे मेरे प्रिय गोविन्द! मेरे मन में आकर निवास करो। हे प्रभु! कृपा करके मेरे मन में आकर निवास करो। हे मेरे गोविन्द! मुझे मनोवांछित फल मिल गया है। पूर्ण गुरु के दर्शन करके मैं अत्यंत प्रसन्न हो गई हूँ। हे मेरे गोविन्द! मुझे गुरु से हरि-नाम मिल गया है और मैं सुहागिन बन गई हूँ। अब मेरे मन में दिन-रात प्रसन्नता एवं आनंद बना रहता है। हे मेरे गोविन्द! बड़े भाग्य से मैंने प्रभु को पाया है और मैं नित्य ही नाम रूपी लाभ प्राप्त करके अपने मन में मुस्कराती रहती हूँ॥ ३॥ भगवान ने स्वयं ही जीवों को उत्पन्न किया है और वह स्वयं ही उनकी देखभाल करता है। भगवान ने स्वयं ही जीवों को कामकाज में लगाया है। कई प्रभु की नियामतें सेवन करते हैं, जिनमें कभी कमी नहीं आती और कइयों को केवल मुट्ठी भर दानों की मिलती है। भगवान ने कई जीवों को राजा बनाया है, वे राजसिंघासन पर विराजमान होते हैं और सदा ही सुखी रहते हैं और भगवान कई जीवों को भिखारी बनाकर उनसे दर-दर से भीख मंगवाता है। हे मेरे गोविन्द! सर्वत्र एक तेरा ही नाम विद्यमान है। हे नानक! प्रभु का सेवक प्रभु नाम का ही ध्यान करता है॥ ४॥ २॥ २८॥ ६६॥

गउड़ी माझ महला ४ ॥ मन माही मन माही मेरे गोविंदा हरि रंगि रता मन माही जीउ ॥ हरि रंगु नालि न लखीऐ मेरे गोविंदा गुरु पूरा अलखु लखाही जीउ ॥ हरि हरि नामु परगासिआ मेरे गोविंदा सभ दालद दुख लहि जाही जीउ ॥ हरि पदु ऊतमु पाइआ मेरे गोविंदा वडभागी नामि समाही जीउ ॥ १ ॥ नैणी मेरे पिआरिआ नैणी मेरे गोविंदा किनै हरि प्रभु डिठड़ा नैणी जीउ ॥ मेरा मनु तनु बहुतु बैरागिआ मेरे गोविंदा हरि बाझहु धन कुमलैणी जीउ ॥ संत जना मिलि पाइआ मेरे गोविंदा मेरा हरि प्रभु सजणु सैणी जीउ ॥ हरि आइ मिलिआ जगजीवनु मेरे गोविंदा मै सुखि विहाणी रैणी जीउ ॥ २ ॥ मै मेलहु संत मेरा हरि प्रभु सजणु मै मनि तनि भुख लगाईआ जीउ ॥ हउ रहि न सकउ बिनु देखे मेरे प्रीतम मै अंतरि बिरहु हरि लाईआ जीउ ॥ हरि राइआ मेरा सजणु पिआरा गुरु मेले मेरा मनु जीवाईआ जीउ ॥ मेरै मनि तनि आसा पूरीआ मेरे गोविंदा हरि मिलिआ मनि वाधाईआ जीउ ॥ ३ ॥ वारी मेरे गोविंदा वारी मेरे पिआरिआ हउ तुधु विटड़िअहु सद वारी जीउ ॥ मेरै मनि तनि प्रेमु पिरंम का मेरे गोविंदा हरि पूंजी राखु हमारी जीउ ॥ सतिगुरु विसटु मेलि मेरे गोविंदा हरि मेले करि रैवारी जीउ ॥ हरि नामु दइआ करि पाइआ मेरे गोविंदा जन नानकु सरणि तुमारी जीउ ॥ ४ ॥ ३ ॥ २६ ॥ ६७ ॥

हे मेरे गोविन्द! मैं अपने मन में ही हरि-रंग में मग्न हो गया हूँ। हरि रंग प्रत्येक जीव के भीतर उसके साथ ही रहता है परन्तु उसे देखा नहीं जा सकता। हे मेरे गोविन्द! पूर्ण गुरु ने मुझे अदृश्य प्रभु के दर्शन करा दिए हैं। हे मेरे गोविन्द! जब गुरु ने मेरे हृदय में हरि-परमेश्वर के नाम का प्रकाश कर दिया तो मेरी दरिद्रता के तमाम दुख निवृत्त हो गए। हे मेरे गोविन्द! मैंने हरि-मिलन की उच्च पदवी प्राप्त कर ली है और बड़े भाग्य से मैं हरि के नाम में लीन हो गया हूँ॥ १॥ हे मेरे प्रिय गोविन्द! हरि-प्रभु को किसी विरले पुरुष ने ही अपने नेत्रों से देखा है। हे मेरे गोविन्द! मेरा मन एवं तन तेरे विरह में वैराग्यवान हो गया है। मालिक-प्रभु के बिना मैं जीव-स्त्री बहुत उदास हो गई हूँ। हे मेरे गोविन्द! संतजनों से मिलकर मैंने अपने मित्र एवं सज्जन हरि-प्रभु को पा लिया है। हे मेरे गोविन्द! जगजीवन हरि आकर मुझे मिल गया है और अब मेरी जीवन रूपी रात्रि सुख से बीत रही है॥ २॥ हे संतजनो! मुझे मेरे सज्जन हरि-प्रभु से मिलाओ। मेरे मन एवं तन को उसके मिलन की भूख लगी हुई है। मैं अपने प्रियतम के दर्शनों के बिना जीवित नहीं रह सकती। मेरे मन में प्रभु की जुदाई की

पीड़ा विद्यमान है। सम्राट प्रभु मेरा सर्वप्रिय मित्र है। गुरदेव ने मुझे उनसे मिला दिया है और मेरा मन पुनः जीवित होकर ईश्वर-परायण हो गया है। मेरे मन एवं तन की आशाएँ पूर्ण हो गई हैं। हे मेरे गोविन्द! ईश्वर को मिलने से मेरे मन को शुभकामनाएँ मिल रही हैं॥ ३॥ हे मेरे प्रिय गोविन्द! मैं तुझ पर तन एवं मन से कुर्बान हूँ। हे मेरे गोविन्द! मेरे मन एवं तन में मेरे प्रियतम-पति की प्रीति है। हे प्रभु! मेरी प्रेमी रूपी पूँजी की रक्षा कीजिए। हे मेरे गोविन्द! मुझे मेरे मध्यस्थ सतिगुरु से मिला दो, जो अपने मार्गदर्शन से मुझे परमेश्वर से मिला देगा। हे मेरे गोविन्द! तेरी दया से मैंने हरि का नाम प्राप्त किया है। नानक ने तेरी ही शरण ली है॥ ४॥ ३॥ २६॥ ६७॥

गउड़ी माझ महला ४ ॥ चोजी मेरे गोविंदा चोजी मेरे पिआरिआ हरि प्रभु मेरा चोजी जीउ ॥ हरि आपे कान्हु उपाइदा मेरे गोविदा हरि आपे गोपी खोजी जीउ ॥ हरि आपे सभ घट भोगदा मेरे गोविंदा आपे रसीआ भोगी जीउ ॥ हरि सुजाणु न भुलई मेरे गोविंदा आपे सतिगुरु जोगी जीउ ॥ १ ॥ आपे जगतु उपाइदा मेरे गोविदा हरि आपि खेलै बहु रंगी जीउ ॥ इकना भोग भोगाइदा मेरे गोविंदा इकि नगन फिरहि नंग नंगी जीउ ॥ आपे जगतु उपाइदा मेरे गोविदा हरि दानु देवै सभ मंगी जीउ ॥ भगता नामु आधारु है मेरे गोविंदा हरि कथा मंगहि हरि चंगी जीउ ॥ २ ॥ हरि आपे भगति कराइदा मेरे गोविंदा हरि भगता लोच मनि पूरी जीउ ॥ आपे जलि थलि वरतदा मेरे गोविदा रवि रहिआ नही दूरी जीउ ॥ हरि अंतरि बाहरि आपि है मेरे गोविदा हरि आपि रहिआ भरपूरी जीउ ॥ हरि आतम रामु पसारिआ मेरे गोविंदा हरि वेखै आपि हदूरी जीउ ॥ ३ ॥ हरि अंतरि वाजा पउणु है मेरे गोविंदा हरि आपि वजाए तिउ वाजै जीउ ॥ हरि अंतरि नामु निधानु है मेरे गोविंदा गुर सबदी हरि प्रभु गाजै जीउ ॥ आपे सरणि पवाइदा मेरे गोविंदा हरि भगत जना राखु लाजै जीउ ॥ वडभागी मिलु संगती मेरे गोविंदा जन नानक नाम सिधि काजै जीउ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ३० ॥ ६८ ॥

हे मेरे प्रिय गोविन्द! तू बड़ा विनोदी है, मेरा प्रभु-परमेश्वर विनोदी है। परमेश्वर ने स्वयं ही कृष्ण को उत्पन्न किया है। हरि स्वयं ही कृष्ण को खोजने वाली गोपी है। हे मेरे गोविन्द! हरि स्वयं ही समस्त शरीरों में पदार्थों को भोगता है और स्वयं ही रस भोगने वाला भोगी है। हे मेरे गोविन्द! ईश्वर चतुर एवं अचूक है। वह स्वयं ही भोगों से निर्लिप्त सतिगुरु है॥ १॥ हे मेरे गोविन्द! ईश्वर स्वयं सृष्टि की रचना करता है और स्वयं ही अनेकों विधियों से खेलता है। हे मेरे गोविन्द! कई प्राणियों को वह नियामतें प्रदान करता है, जिससे वे आनंद प्राप्त करते हैं और कई प्राणी नग्न होकर (जिनके तन पर वस्त्र नहीं) नंगे भटकते फिरते हैं। हे मेरे गोविन्द! ईश्वर स्वयं सृष्टि की रचना करता है और माँगने वाले समस्त प्राणियों को दान प्रदान करता है, हे मेरे गोविन्द! भक्तों को प्रभु-नाम का ही आधार है। और वे श्रेष्ठ हरि कथा की माँग करते रहते हैं॥ २॥ हे मेरे गोविन्द! ईश्वर स्वयं ही भक्तों से अपनी भक्ति करवाता है और अपने भक्तों की मनोकामनाएँ पूरी करता है। हे मेरे गोविन्द! हरि जल-थल सर्वत्र विद्यमान है। वह सर्वव्यापक है और कहीं दूर नहीं रहता। हे मेरे गोविन्द! भीतर एवं बाहर प्रभु स्वयं ही विद्यमान है। ईश्वर स्वयं ही समस्त स्थानों को परिपूर्ण कर रहा है। हे मेरे गोविन्द! राम स्वयं ही इस जगत्-प्रसार को प्रसारित कर रहा है। प्रभु स्वयं निकट से सभी को देखता है॥ ३॥ हे मेरे गोविन्द! प्राणियों के भीतर पवन का नाद (बज रहा) है। जैसे ईश्वर स्वयं इसको बजाता है, वैसे ही यह गूंजता है। हे मेरे गोविन्द! हम जीवों के अन्तर्मन में नाम रूपी खजाना है। गुरु के उपदेश से हरि-प्रभु प्रकट हो जाता है। हे मेरे गोविन्द! ईश्वर स्वयं ही मनुष्य को अपनी शरणागत में प्रवेश करवाता है और भक्तजनों की लाज रखता है। हे मेरे गोविन्द! कोई सौभाग्यशाली मनुष्य ही सत्संग में जुड़ता है। हे नानक! प्रभु के नाम से उसके जीवन मनोरथ सफल हो जाते हैं॥४॥ ४॥ ३०॥ ६८॥

गउड़ी माझ महला ४ ॥ मै हरि नामै हरि बिरहु लगाई जीउ ॥ मेरा हरि प्रभु मितु मिलै सुखु पाई जीउ ॥ हरि प्रभु देखि जीवा मेरी माई जीउ ॥ मेरा नामु सखा हरि भाई जीउ ॥ १ ॥ गुण गावहु संत जीउ मेरे हरि प्रभ केरे जीउ ॥ जपि गुरमुखि नामु जीउ भाग वडेरे जीउ ॥ हरि हरि नामु जीउ प्रान हरि मेरे जीउ ॥ फिरि बहुड़ि न भवजल फेरे जीउ ॥ २ ॥ किउ हरि प्रभ वेखा मेरै मनि तनि चाउ जीउ ॥ हरि मेलहु संत जीउ मनि लगा भाउ जीउ ॥ गुर सबदी पाईऐ हरि प्रीतम राउ जीउ ॥ वडभागी जपि नाउ जीउ ॥ ३ ॥ मेरै मनि तनि वडड़ी गोविंद प्रभ आसा जीउ ॥ हरि मेलहु संत जीउ गोविद प्रभ पासा जीउ ॥ सतिगुर मति नामु सदा परगासा जीउ ॥ जन नानक पूरिअड़ी मनि आसा जीउ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ३१ ॥ ६६ ॥

हे भद्रपुरुषो ! हरि ने मुझे हरि–नाम की प्रेम–प्यास लगा दी है। यदि मेरा मित्र हरि–प्रभु मुझे मिल जाए तो मुझे बड़ा सुख उपलब्ध होगा। हे मेरी माँ ! मैं हरि को देख कर ही जीवित रहती हूँ। हरि का नाम मेरा सखा एवं भाई है॥ १॥ हे पूज्य संतो ! मेरे हरि–प्रभु का यश–गायन करो। गुरु के माध्यम से प्रभु के नाम का जाप करने से भाग्य उदय हो जाते हैं। हरि–परमेश्वर का नाम और हरि मेरे प्राण एवं आत्मा हैं। नाम का जाप करने से मुझे दोबारा भवसागर पार नहीं करना पड़ेगा॥ २॥ मेरे मन एवं तन में बड़ा चाव बना हुआ है कि मैं कैसे हरि–प्रभु के दर्शन करूँ? हे संतजनो ! मुझे हरि से मिला दीजिए। मेरे मन में हरि के लिए प्रेम उत्पन्न हो गया है। गुरु के शब्द से प्रियतम प्रभु प्राप्त होता है। हे सौभाग्यशाली प्राणी ! तू प्रभु के नाम का जाप कर॥ ३॥ मेरे मन एवं तन में गोविन्द प्रभु के मिलन की बड़ी लालसा बनी हुई है। हे संतजनो ! मुझे गोविन्द प्रभु से मिला दीजिए, जो मेरे पास ही रहता है। सतिगुरु की शिक्षा द्वारा हमेशा जीव के हृदय में नाम का प्रकाश होता है। हे नानक ! मेरे मन की अभिलाषा पूरी हो गई है॥ ४॥ ५॥ ३१॥ ६६॥

गउड़ी माझ महला ४ ॥ मेरा बिरही नामु मिलै ता जीवा जीउ ॥ मन अंदरि अंम्रितु गुरमति हरि लीवा जीउ ॥ मनु हरि रंगि रतड़ा हरि रसु सदा पीवा जीउ ॥ हरि पाइअड़ा मनि जीवा जीउ ॥ १ ॥ मेरै मनि तनि प्रेमु लगा हरि बाणु जीउ ॥ मेरा प्रीतमु मितु हरि पुरखु सुजाणु जीउ ॥ गुरु मेले संत हरि सुघड़ु सुजाणु जीउ ॥ हउ नाम विटहु कुरबाणु जीउ ॥ २ ॥ हउ हरि हरि सजणु हरि मीतु दसाई जीउ ॥ हरि दसहु संतहु जी हरि खोजु पवाई जीउ ॥ सतिगुरु तुठड़ा दसे हरि पाई जीउ ॥ हरि नामे नामि समाई जीउ ॥ ३ ॥ मै वेदन प्रेमु हरि बिरहु लगाई जीउ ॥ गुर सरधा पूरि अंम्रितु मुखि पाई जीउ ॥ हरि होहु दइआलु हरि नामु धिआई जीउ ॥ जन नानक हरि रसु पाई जीउ ॥ ४ ॥ ६ ॥ २० ॥ १८ ॥ ३२ ॥ ७० ॥

यदि मुझसे जुदा हुआ प्रिय नाम मुझे मिल जाए तो ही मैं जीवित रह सकता हूँ। मेरे मन में नाम रूपी अमृत है। गुरु के उपदेश से मैं हरि से यह नाम लेता हूँ। मेरा मन हरि के प्रेम में अनुरक्त है। मैं सदैव हरि–रस का पान करता रहता हूँ। मैंने प्रभु को हृदय में पा लिया है, इसलिए मैं जीवित हूँ॥ १॥ हरि का प्रेम रूपी तीर मेरे मन एवं तन में लग गया है। मेरा प्रिय मित्र हरि पुरुष बहुत चतुर है। कोई संत गुरु ही जीव को चतुर एवं दक्ष हरि से मिला सकता है। मैं हरि के नाम पर बलिहारी जाता हूँ॥ २॥ मैं अपने सज्जन एवं मित्र हरि–परमेश्वर का पता पूछता हूँ। हे संतजनों ! हरि के बारे में बताओ, मैं हरि की खोज करता रहता हूँ। यदि सतिगुरु प्रसन्न होकर मुझे बता दें तो मैं हरि को पा सकता हूँ और हरि के नाम द्वारा हरि–नाम में ही समा सकता हूँ॥३॥ हरि ने मेरे अन्तर्मन में प्रेम

वेदना लगा दी है। गुरु ने मेरी श्रद्धा पूरी कर दी है और मेरे मुँह में नाम रूपी अमृत डाल दिया है। हे हरि! मुझ पर दयालु हो जाओ चूंकि मैं हरि–नाम का ध्यान करता रहूँ। नानक ने तो हरि रस पा लिया है॥ ४॥ ६॥ २०॥ १८॥ ३२॥ ७०॥

महला ५ रागु गउड़ी गुआरेरी चउपदे १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

किन बिधि कुसलु होत मेरे भाई ॥ किउ पाईऐ हरि राम सहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कुसलु न ग्रिहि मेरी सभ माइआ ॥ ऊचे मंदर सुंदर छाइआ ॥ झूठे लालचि जनमु गवाइआ ॥ १ ॥ हसती घोड़े देखि विगासा ॥ लसकर जोड़े नेब खवासा ॥ गलि जेवड़ी हउमै के फासा ॥ २ ॥ राजु कमावै दह दिस सारी ॥ माणै रंग भोग बहु नारी ॥ जिउ नरपति सुपनै भेखारी ॥ ३ ॥ एकु कुसलु मो कउ सतिगुरू बताइआ ॥ हरि जो किछु करे सु हरि किआ भगता भाइआ ॥ जन नानक हउमै मारि समाइआ ॥ ४ ॥ इन बिधि कुसल होत मेरे भाई ॥ इउ पाईऐ हरि राम सहाई ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥

हे मेरे भाई! किस विधि से आत्मिक सुख उपलब्ध हो सकता है। उस सहायक हरि को कैसे पाया जा सकता है॥ १॥ रहाउ॥ यदि मनुष्य के घर में दुनिया की तमाम दौलत आ जाए और वह यह माने यह सारी दौलत मेरी ही है तो भी उसे सुख उपलब्ध नहीं होता। यदि मनुष्य के पास ऊँचे महल और छाया वाले सुन्दर बाग हो तो वह इनके झूठे लालच में फँसकर अपना जन्म व्यर्थ ही गंवा देता है॥ १॥ मनुष्य अपने हाथी और घोड़े देखकर बड़ा प्रसन्न होता है। वह भारी भरकम फौज इकट्ठी करता है और मंत्री तथा शाही नौकर रखता है लेकिन यह सबकुछ अहंकार की फाँसी रूपी रस्सी है जो उसके गले में पड़ जाती है॥ २॥ दसों दिशाओं में शासन करना, अनेक भोगों में आनन्द प्राप्त करना, अधिकतर नारियों से भोग–विलास करना एक भिखारी के स्वप्न में राजा बनने के समान है॥ ३॥ सतिगुरु ने मुझे सुखी होने की एक विधि बताई है। वह विधि यह है कि जो कुछ भी ईश्वर करता है, वह प्रभु के भक्तों को अच्छा लगता है। हे नानक! गुरमुख अपने अहंकार को मिटा कर प्रभु में समा जाता है॥ ४॥ हे मेरे भाई! इस विधि से सुखी हुआ जाता है और इस तरह सहायक प्रभु पाया जाता है॥ १॥ रहाउ दूजा॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ किउ भ्रमीऐ भ्रमु किस का होई ॥ जा जलि थलि महीअलि रविआ सोई ॥ गुरमुखि उबरे मनमुख पति खोई ॥ १ ॥ जिसु राखै आपि रामु दइआरा ॥ तिसु नही दूजा को पहुचनहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ महि वरतै एकु अनंता ॥ ता तूं सुखि सोउ होइ अचिंता ॥ ओहु सभु किछु जाणै जो वरतंता ॥ २ ॥ मनमुख मुए जिन दूजी पिआसा ॥ बहु जोनी भवहि धुरि किरति लिखिआसा ॥ जैसा बीजहि तैसा खासा ॥ ३ ॥ देखि दरसु मनि भइआ विगासा ॥ सभु नदरी आइआ ब्रहमु परगासा ॥ जन नानक की हरि पूरन आसा ॥ ४ ॥ २ ॥ ७१ ॥

हम क्यों भ्रम करें? किस बात का भ्रम करना है? जब वह प्रभु जल, थल, धरती और आकाश में विद्यमान हो रहा है। गुरमुख भवसागर से बच जाते हैं परन्तु स्वेच्छाचारी अपनी प्रतिष्ठा गंवा लेते हैं॥ १॥ उसकी समानता कोई दूसरा नहीं कर सकता, जिसकी दया का घर राम स्वयं रक्षा करता है॥ १॥ रहाउ॥ समस्त जीवों में एक अनन्त परमेश्वर व्यापक हो रहा है। इसलिए तू निश्चिंत होकर सुख से सो जा। संसार में जो कुछ हो रहा है प्रभु सब कुछ जानता है॥ २॥ जिन स्वेच्छाचारी जीवों को माया की तृष्णा लग जाती है, वे माया के मोह में फँसकर मरते हैं। वह अनेक योनियों में भटकते रहते हैं। उनकी किस्मत में प्रारम्भ से ही ऐसा कर्म–लेख लिखा होता है। जैसा वह बोते हैं (कर्म करते हैं), वैसा ही वह खाते हैं॥ ३॥ प्रभु के दर्शन प्राप्त करके मेरा हृदय प्रसन्न हो गया है। अब मैं सर्वत्र परमेश्वर का प्रकाश देखता हूँ। नानक की प्रभु ने अभिलाषा पूर्ण कर दी है॥ ४॥ २॥ ७१॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ कई जनम भए कीट पतंगा ॥ कई जनम गज मीन कुरंगा ॥ कई जनम पंखी सरप होइओ ॥ कई जनम हैवर बिख जोइओ ॥ १ ॥ मिलु जगदीस मिलन की बरीआ ॥ चिरंकाल इह देह संजरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कई जनम सैल गिरि करिआ ॥ कई जनम गरभ हिरि खरिआ ॥ कई जनम साख करि उपाइआ ॥ लख चउरासीह जोनि भ्रमाइआ ॥ २ ॥ साधसंगि भइओ जनमु परापति ॥ करि सेवा भजु हरि हरि गुरमति ॥ तिआगि मानु झूठु अभिमानु ॥ जीवत मरहि दरगह परवानु ॥ ३ ॥ जो किछु होआ सु तुझ ते होगु ॥ अवरु न दूजा करणै जोगु ॥ ता मिलीऐ जा लैहि मिलाइ ॥ कहु नानक हरि हरि गुण गाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ७२ ॥

हे प्राणी ! तू अनेकों जन्मों में कीड़ा और पतंगा बना हुआ था। अनेकों जन्मों में तू हाथी, मछली एवं मृग था। अनेक योनियों में तू पक्षी एवं सर्प बना था। अनेक योनियों में तू घोड़ा और बैल बनकर जोता गया था॥ १॥ अब तुझे मानव-जन्म में जगत् के ईश्वर को मिलने का समय मिला है, अतः तू उसे मिल। चिरकाल पश्चात् यह मानव-जन्म तुझे प्राप्त हुआ है॥ १॥ रहाउ॥ अनेक योनियों में तू चट्टान एवं पहाड़ों में उत्पन्न किया गया था। अनेक जन्मों में तेरी माँ का गर्भ ही गिर गया था। अनेक योनियों में तू वनस्पति बन कर उत्पन्न किया गया था। इस तरह तू चौरासी लाख योनियों में भटकाया गया था॥ २॥ अब तुझे अमूल्य मानव जीवन मिला है। अतः तू संतों की संगति किया कर। तू संतों की निष्काम सेवा किया कर और गुरु की मति द्वारा हरि-परमेश्वर का भजन कर। तू अपना अहंकार, झूठ एवं अभिमान त्याग दे। यदि तू अपने अहंकार को नष्ट कर देगा तो ही प्रभु के दरबार में स्वीकृत होगा॥ ३॥ हे परमात्मा ! जो कुछ भी हुआ है अथवा होगा, वह तुझ पर निर्भर है। दूसरा कोई उसको करने में समर्थ नहीं। हे प्रभु ! यदि तू मिलाए तो केवल तभी मनुष्य तुझे मिलता है। हे नानक ! हे प्राणी ! तू हरि-परमेश्वर का यश-गायन कर॥ ४॥ ३॥ ७२॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ करम भूमि महि बोअहु नामु ॥ पूरन होइ तुमारा कामु ॥ फल पावहि मिटै जम त्रास ॥ नित गावहि हरि हरि गुण जास ॥ १ ॥ हरि हरि नामु अंतरि उरि धारि ॥ सीघर कारजु लेहु सवारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अपने प्रभ सिउ होहु सावधानु ॥ ता तूं दरगह पावहि मानु ॥ उकति सिआणप सगली तिआगु ॥ संत जना की चरणी लागु ॥ २ ॥ सरब जीअ हहि जा कै हाथि ॥ कदे न विछुड़ै सभ कै साथि ॥ उपाव छोडि गहु तिस की ओट ॥ निमख माहि होवै तेरी छोटि ॥ ३ ॥ सदा निकटि करि तिस नो जाणु ॥ प्रभ की आगिआ सति करि मानु ॥ गुर कै बचनि मिटावहु आपु ॥ हरि हरि नामु नानक जपि जापु ॥ ४ ॥ ४ ॥ ७३ ॥

हे प्राणी ! शरीर रूपी कर्म-भूमि में तू नाम का बीज बो। तेरा कर्म सफल हो जाएगा। तुम फल (मोक्ष) प्राप्त कर लोगे और तेरा मृत्यु का भय दूर हो जाएगा। इसलिए हमेशा प्रभु-परमेश्वर के गुण एवं उपमा गायन कर। हरि-परमेश्वर के नाम को तू अपने हृदय एवं मन से लगाकर रख और शीघ्र ही अपने कार्य संवार लो॥ १॥ रहाउ॥ अपने प्रभु की सेवा के लिए सदा सावधान रह। तब तुझे उसके दरबार में प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। अपनी युक्तियां एवं समस्त चतुरता त्याग दे और संतजनों के चरणों से लग जा॥ २॥ जिस भगवान के वश में समस्त जीव हैं, जो सदा जीवों के साथ रहता है, वह कभी उनसे अलग नहीं होता। हे प्राणी ! अपनी युक्तियां त्याग और उसकी शरण में आ। एक क्षण में तेरी मुक्ति हो जाएगी॥ ३॥ प्रभु को हमेशा अपने निकट समझ। प्रभु की आज्ञा को सत्य करके स्वीकार कर। गुरु के उपदेश से अपने अहंत्व को मिटा दे। हे नानक ! हरि-परमेश्वर का नाम जप, हमेशा प्रभु के गुणों का जाप करता रह॥ ४॥ ४॥ ७३॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ गुर का बचनु सदा अबिनासी ॥ गुर कै बचनि कटी जम फासी ॥ गुर का बचनु जीअ कै संगि ॥ गुर कै बचनि रचै राम कै रंगि ॥ १ ॥ जो गुरि दीआ सु मन कै कामि ॥ संत का कीआ सति करि मानि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर का बचनु अटल अछेद ॥ गुर कै बचनि कटे भ्रम भेद ॥ गुर का बचनु कतहु न जाइ ॥ गुर कै बचनि हरि के गुण गाइ ॥ २ ॥ गुर का बचनु जीअ कै साथ ॥ गुर का बचनु अनाथ को नाथ ॥ गुर कै बचनि नरकि न पवै ॥ गुर कै बचनि रसना अंम्रितु रवै ॥ ३ ॥ गुर का बचनु परगटु संसारि ॥ गुर कै बचनि न आवै हारि ॥ जिसु जन होए आपि क्रिपाल ॥ नानक सतिगुर सदा दइआल ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७४ ॥

गुरु का वचन सदा अविनाशी है। गुरु के वचन द्वारा मृत्यु की फाँसी कट जाती है। गुरु का वचन सदैव जीव के साथ रहता है। गुरु के वचन द्वारा मनुष्य राम के प्रेम में लीन रहता है॥ १॥ गुरु जो कुछ भी देते हैं, वह आत्मा के लाभ हेतु है। जो कुछ भी संत करते हैं, उसको सत्य जानकर स्वीकार करो॥ १॥ रहाउ॥ गुरु का वचन अटल एवं शाश्वत है। गुरु के वचन से तमाम भ्रम एवं भेदभाव मिट जाते हैं। गुरु का वचन मनुष्य को छोड़कर कहीं नहीं जाता। गुरु के वचन से ही प्राणी हरि का यश गायन करता है॥ २॥ गुरु का वचन जीव के साथ रहता है। गुरु का वचन अनाथों का नाथ है। गुरु के वचन द्वारा प्राणी नरक में नहीं जाता। गुरु के वचन द्वारा प्राणी की रसना नाम रूपी अमृत का आनंद प्राप्त करती है॥ ३॥ गुरु का वचन विश्व में प्रकट है। गुरु के वचन से प्राणी कभी पराजित नहीं होता। हे नानक! जिस प्राणी पर प्रभु स्वयं कृपालु हो जाता है, उस पर सतिगुरु जी हमेशा ही दयालु रहते हैं॥ ४॥ ५॥ ७४॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ जिनि कीता माटी ते रतनु ॥ गरभ महि राखिआ जिनि करि जतनु ॥ जिनि दीनी सोभा वडिआई ॥ तिसु प्रभ कउ आठ पहर धिआई ॥ १ ॥ रमईआ रेनु साधु जन पावउ ॥ गुर मिलि अपुना खसमु धिआवउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि कीता मूड़ ते बकता ॥ जिनि कीता बेसुरत ते सुरता ॥ जिसु परसादि नवै निधि पाई ॥ सो प्रभु मन ते बिसरत नाही ॥ २ ॥ जिनि दीआ निथावे कउ थानु ॥ जिनि दीआ निमाने कउ मानु ॥ जिनि कीनी सभ पूरन आसा ॥ सिमरउ दिनु रैनि सास गिरासा ॥ ३ ॥ जिसु प्रसादि माइआ सिलक काटी ॥ गुर प्रसादि अंम्रितु बिखु खाटी ॥ कहु नानक इस ते किछु नाही ॥ राखनहारे कउ सालाही ॥ ४ ॥ ६ ॥ ७५ ॥

जिस भगवान ने मिट्टी से मेरे शरीर की रचना करके इसे रत्न जैसा अमूल्य बना दिया है, जिसने प्रयास करके मातृ-गर्भ में मेरी रक्षा की है, जिसने मुझे शोभा एवं बड़ाई प्रदान की है, मैं उस भगवान का आठ प्रहर सिमरन करता रहता हूँ॥ १॥ हे मेरे राम! मुझे संतजनों की चरण धूलि प्राप्त हो। गुरु से मिलकर मैं अपने परमेश्वर का ध्यान करता रहूँ॥ १॥ रहाउ॥ जिसने मुझे मूर्ख से प्रचारक बना दिया, अचेत पुरुष से जिसने मुझे चतुर बना दिया है, जिसकी दया से मुझे नवनिधि प्राप्त हुई है, उस प्रभु को मेरा हृदय विस्मृत नहीं करता॥ २॥ जिस (प्रभु) ने मुझ निराश्रित को आश्रय दिया और जिस (प्रभु) ने मुझ तुच्छ प्राणी को आदर-सत्कार प्रदान किया है, जिसने मेरी समस्त अभिलाषाएँ पूर्ण की हैं। हे प्राणी! दिन-रात, प्रत्येक श्वास एवं ग्रास से उसका ध्यान करो॥ ३॥ जिसके प्रसाद (दया) से मोह-माया के बंधन कट गए हैं। गुरु की कृपा से (मोह-माया का) खट्टा विष अमृत बन गया है। हे नानक! इस जीव से कुछ नहीं हो सकता। मैं रक्षक-प्रभु की सराहना करता हूँ॥ ४॥ ६॥ ७५॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ तिस की सरणि नाही भउ सोगु ॥ उस ते बाहरि कछू न होगु ॥ तजी सिआणप बल बुधि बिकार ॥ दास अपने की राखनहार ॥ १ ॥ जपि मन मेरे राम राम रंगि ॥ घरि बाहरि तेरै सद संगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिस की टेक मनै महि राखु ॥ गुर का सबदु अंम्रित रसु चाखु ॥ अवरि जतन कहहु कउन काज ॥ करि किरपा राखै आपि लाज ॥ २ ॥ किआ मानुख कहहु किआ जोरु ॥ झूठा माइआ का सभु सोरु ॥ करण करावनहार सुआमी ॥ सगल घटा के अंतरजामी ॥ ३ ॥ सरब सुखा सुखु साचा एहु ॥ गुर उपदेसु मनै महि लेहु ॥ जा कउ राम नाम लिव लागी ॥ कहु नानक सो धंनु वडभागी ॥ ४ ॥ ७ ॥ ७६ ॥

उस भगवान की शरण में आने से कोई भय एवं चिंता नहीं रहती। उसके हुक्म बिना कुछ भी किया नहीं जा सकता। मैंने चतुराई, बल एवं मन्दबुद्धि त्याग दी है। वह अपने दास की प्रतिष्ठा बचाने वाला है॥ १॥ हे मेरे मन ! तू प्रेमपूर्वक राम-नाम का सिमरन कर। वह हृदय-घर में एवं बाहर सदैव तेरे साथ रहता है॥ १॥ रहाउ॥

अपने मन में उसके सहारे की आशा रख। हे प्राणी ! गुरु का शब्द अमृत रस है और इस अमृत रस का पान कर। हे भाई ! बताओ, तेरे अन्य प्रयास किस काम के हैं ? प्रभु स्वयं ही कृपा करके मनुष्य की लाज बचाता है॥ २॥ बेचारा मनुष्य क्या कर सकता है ? बताइए, उसमें कौन-सा बल है ? धन-दौलत का शोर-शराबा सब झूठा है। जगत् का स्वामी प्रभु स्वयं ही सब कुछ करने एवं कराने वाला है। अन्तर्यामी (प्रभु) सर्वज्ञाता है॥ ३॥ सर्व सुखों में सच्चा सुख यही है कि गुरु की शिक्षा को अपने हृदय में स्मरण रखो। हे नानक ! जिसकी वृत्ति राम नाम में लगी हुई है, वह बड़े धन्य एवं भाग्यवान है॥ ४॥ ७॥ ७६॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ सुणि हरि कथा उतारी मैलु ॥ महा पुनीत भए सुख सैलु ॥ वडै भागि पाइआ साधसंगु ॥ पारब्रहम सिउ लागो रंगु ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपत जनु तारिओ ॥ अगनि सागरु गुरि पारि उतारिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि कीरतनु मन सीतल भए ॥ जनम जनम के किलविख गए ॥ सरब निधान पेखे मन माहि ॥ अब ढूढन काहे कउ जाहि ॥ २ ॥ प्रभ अपुने जब भए दइआल ॥ पूरन होई सेवक घाल ॥ बंधन काटि कीए अपने दास ॥ सिमरि सिमरि सिमरि गुणतास ॥ ३ ॥ एको मनि एको सभ ठाइ ॥ पूरन पूरि रहिओ सभ जाइ ॥ गुरि पूरै सभु भरमु चुकाइआ ॥ हरि सिमरत नानक सुखु पाइआ ॥ ४ ॥ ८ ॥ ७७ ॥

जिन्होंने हरि की कथा सुनकर अपने मन की अहंत्व रूपी मैल उतार दी है, वे बहुत ही पवित्र एवं सुखी हो गए हैं। उन्हें बड़े भाग्य से संतों की संगति मिल गई है और उनका पारब्रह्म से प्रेम पड़ गया है॥ १॥ हरि-परमेश्वर के नाम की आराधना करने वाले सेवक भवसागर से पार हो गए हैं। गुरु जी ने उन्हें तृष्णा रूपी अग्नि-सागर से पार कर दिया है॥ १॥ रहाउ॥

प्रभु का कीर्तन करने से उनका हृदय शीतल हो गया है और जन्म-जन्मांतरों के पाप धुल गए हैं। समस्त खजाने उन्होंने अपने हृदय में देख लिए हैं। अब वह सुखों को ढूँढने के लिए बाहर क्यों जाएँ?॥ २॥ जब मेरा प्रभु दयालु हो गया तो उसके सेवक की सेवा सम्पूर्ण हो गई है। उसने (मोह-माया के) बंधन काट कर अपना दास बना लिया है। अब वे गुणों के भण्डार प्रभु का सिमरन करते रहते हैं॥ ३॥ केवल वही अंतःकरण में है और केवल वही सर्वत्र विद्यमान है। सम्पूर्ण प्रभु समस्त स्थानों को पूर्णतया भर रहा है। पूर्ण गुरु ने समस्त भ्रम निवृत्त कर दिए हैं। हे नानक ! हरि का सिमरन करके उसने सुख प्राप्त किया है॥ ४॥ ८॥ ७७॥

हों, परन्तु उन में से हृदय को संतोष प्राप्त नहीं होता॥ २॥ राजसिंहासन, राजकीय दरबार, आभूषण, गलीचे, समूह फल, सुन्दर उद्यान, आखेट का शौक और राजाओं की क्रीड़ाएँ–मनोरंजन, ऐसे झूठे प्रयासों से हृदय प्रसन्न नहीं होता॥ ३॥ संतों ने कृपा करके यह सत्य ही कहा है कि यह आनंद एवं सर्व सुख वही मनुष्य प्राप्त करता है, जो संतों की संगति करके भगवान का कीर्तन गायन करता है। हे नानक! संतों की संगति सौभाग्यवश ही मिलती है॥ ४॥ जिसके पास हरि नाम रूपी धन है, वही सुप्रसन्न है। प्रभु की दया से संतों की संगति प्राप्त होती है॥ १॥ रहाउ दूजा॥ १२॥ ८१॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ प्राणी जाणै इहु तनु मेरा ॥ बहुरि बहुरि उआहू लपटेरा ॥ पुत्र कलत्र गिरसत का फासा ॥ होनु न पाईऐ राम के दासा ॥ १ ॥ कवन सु बिधि जितु राम गुण गाइ ॥ कवन सु मति जितु तरै इह माइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो भलाई सो बुरा जानै ॥ साचु कहै सो बिखै समानै ॥ जाणै नाही जीत अरु हार ॥ इहु वलेवा साकत संसार ॥ २ ॥ जो हलाहल सो पीवै बउरा ॥ अंम्रितु नामु जानै करि कउरा ॥ साधसंग कै नाही नेरि ॥ लख चउरासीह भ्रमता फेरि ॥ ३ ॥ एकै जालि फहाए पंखी ॥ रसि रसि भोग करहि बहु रंगी ॥ कहु नानक जिसु भए क्रिपाल ॥ गुरि पूरै ता के काटे जाल ॥ ४ ॥ १३ ॥ ८२ ॥

प्राणी विचार करता है कि यह शरीर उसका अपना है। वह बार–बार उस शरीर से ही लिपटता है। जितनी देर तक पुत्र, स्त्री एवं गृहस्थ के मोह का फँदा उसके गले में पड़ा रहता है, तब तक वह राम का दास नहीं बनता॥ १॥ वह कौन–सी विधि है, जिससे राम का यश गायन किया जाए? हे माता! वह कौन–सी बुद्धि है, जिससे यह प्राणी माया से पार हो जाए॥ १॥ रहाउ॥ जो कार्य मानव की भलाई का है, उसको वह बुरा समझता है। यदि कोई उसको सत्य कहे, तो वह उसको विष के समान कड़वा लगता है। वह नहीं जानता कि जीत क्या है और हार क्या है? इस दुनिया में शाक्त व्यक्ति का यही जीवन–आचरण है॥ २॥ जो विष है, पागल पुरुष उसको पान करता है। प्रभु के अमृत नाम को वह कड़वा समझता है। वह साधु–संतों की संगति के निकट नहीं आता, जिससे वह चौरासी लाख योनियों में भटकता फिरता है॥ ३॥ समस्त जीव रूपी पक्षी माया ने अपने मोह रूपी जाल में फँसाए हुए हैं। मनुष्य स्वाद लेकर अनेक प्रकार के भोग भोगता है। हे नानक! कहो– जिस व्यक्ति पर प्रभु कृपालु हो गया है, पूर्ण गुरु ने उसके मोह–माया के बंधन काट दिए हैं॥ ४॥ १३॥ ८२॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ तउ किरपा ते मारगु पाईऐ ॥ प्रभ किरपा ते नामु धिआईऐ ॥ प्रभ किरपा ते बंधन छुटै ॥ तउ किरपा ते हउमै तुटै ॥ १ ॥ तुम लावहु तउ लागह सेव ॥ हम ते कछू न होवै देव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुधु भावै ता गावा बाणी ॥ तुधु भावै ता सचु वखाणी ॥ तुधु भावै ता सतिगुर मइआ ॥ सरब सुखा प्रभ तेरी दइआ ॥ २ ॥ जो तुधु भावै सो निरमल करमा ॥ जो तुधु भावै सो सचु धरमा ॥ सरब निधान गुण तुम ही पासि ॥ तूं साहिबु सेवक अरदासि ॥ ३ ॥ मनु तनु निरमलु होइ हरि रंगि ॥ सरब सुखा पावउ सतसंगि ॥ नामि तेरै रहै मनु राता ॥ इहु कलिआणु नानक करि जाता ॥ ४ ॥ १४ ॥ ८३ ॥

हे प्रभु! तेरी कृपा से जीवन–मार्ग मिलता है। प्रभु की कृपा से नाम का ध्यान किया जाता है। प्रभु की कृपा से प्राणी बन्धनों से मुक्ति प्राप्त कर लेता है। हे प्रभु! तेरी कृपा से अहंकार दूर हो जाता है॥ १॥ हे ईश्वर! यदि तू मुझे अपनी सेवा में लगाए, तो ही मैं तेरी सेवा–भक्ति में लगता हूँ। हे देव! अपने आप मैं कुछ भी नहीं कर सकता॥ १॥ रहाउ॥ हे ईश्वर! यदि तुझे अच्छा लगे तो मैं

तेरी वाणी गा सकता हूँ। हे प्रभु ! यदि तुझे अच्छा लगे तो मैं सत्य बोलता हूँ। यदि तुझे अच्छा लगे तो ही सतिगुरु की दया जीव पर होती है। हे मेरे ठाकुर ! तेरी दया से ही जीव को सर्व सुख प्राप्त होते हैं॥ २॥ हे प्रभु ! जो तुझे उपयुक्त लगता है, वही पवित्र कर्म है। हे नाथ ! जो तुझे लुभाता है, वही सत्य धर्म है। सर्वगुणों का खजाना तेरे पास है। हे प्रभु ! तू मेरा स्वामी है और तेरा सेवक तेरे समक्ष यही प्रार्थना करता है॥ ३॥ ईश्वर के प्रेम से मन एवं तन पवित्र हो जाते हैं। सत्संग में जाने से सर्व सुख प्राप्त हो जाते हैं। हे प्रभु ! मेरा मन तेरे नाम में ही मग्न रहे। हे नानक ! मैं उसे ही कल्याण समझता हूँ॥ ४॥ १४॥ ८३॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ आन रसा जेते तै चाखे ॥ निमख न त्रिसना तेरी लाथे ॥ हरि रस का तूं चाखहि सादु ॥ चाखत होइ रहहि बिसमादु ॥ १ ॥ अंम्रितु रसना पीउ पिआरी ॥ इह रस राती होइ त्रिपतारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हे जिहवे तूं राम गुण गाउ ॥ निमख निमख हरि हरि हरि धिआउ ॥ आन न सुनीऐ कतहूं जाईऐ ॥ साधसंगति वडभागी पाईऐ ॥ २ ॥ आठ पहर जिहवे आराधि ॥ पारब्रहम ठाकुर आगाधि ॥ ईहा ऊहा सदा सुहेली ॥ हरि गुण गावत रसन अमोली ॥ ३ ॥ बनसपति मउली फल फुल पेडे ॥ इह रस राती बहुरि न छोडे ॥ आन न रस कस लवै न लाई ॥ कहु नानक गुर भए है सहाई ॥ ४ ॥ १५ ॥ ८४ ॥

हे मेरी जिह्वा ! हरि-रस के सिवाय अन्य जितने भी रस तू चखती है, उनसे तेरी तृष्णा एक क्षण-मात्र के लिए भी दूर नहीं होती। यदि तू हरि-रस की मिठास चख ले तो तू इसको चखकर चकित हो जाएगी॥ १॥ हे मेरी प्रिय जिह्वा ! तू हरि-रस रूपी अमृत का पान कर। इस हरि-रस के स्वाद में अनुरक्त हुई तू तृप्त हो जाएगी॥ १॥ रहाउ॥ हे जिह्वा ! तू राम का यशोगान कर। क्षण-क्षण तू हरि-परमेश्वर के नाम का ध्यान कर। हरि-परमेश्वर के नाम के अलावा कुछ भी सुनना नहीं चाहिए और सत्संगति के अलावा कहीं ओर नहीं जाना चाहिए। सत्संग बड़े सौभाग्य से मिलती है॥ २॥ हे जिह्वा ! आठ प्रहर ही तू अगाध एवं जगत् के ठाकुर पारब्रह्म की आराधना कर। यहाँ (इहलोक) और वहाँ (परलोक) तू सदैव सुप्रसन्न रहेगी। हे जिह्वा ! प्रभु का यशोगान करने से तू अमूल्य गुणों वाली हो जाएगी॥ ३॥ चाहे वनस्पति खिली रहती है और पेड़ों को फल एवं फूल लगे होते हैं परन्तु हरि-रस में मग्न हुई जिह्वा इस हरि-रस को नहीं छोड़ती चूंकि कोई दूसरे मीठे व नमकीन स्वाद इसके तुल्य नहीं। हे नानक ! गुरु मेरे सहायक हो गए हैं॥ ४॥ १५॥ ८४॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ मनु मंदरु तनु साजी बारि ॥ इस ही मधे बसतु अपार ॥ इस ही भीतरि सुनीअत साहु ॥ कवनु बापारी जा का ऊहा विसाहु ॥ १ ॥ नाम रतन को को बिउहारी ॥ अंम्रित भोजनु करे आहारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु तनु अरपी सेव करीजै ॥ कवन सु जुगति जितु करि भीजै ॥ पाइ लगउ तजि मेरा तेरै ॥ कवनु सु जनु जो सउदा जोरै ॥ २ ॥ महलु साह का किन बिधि पावै ॥ कवन सु बिधि जितु भीतरि बुलावै ॥ तूं वड साहु जा के कोटि वणजारे ॥ कवनु सु दाता ले संचारे ॥ ३ ॥ खोजत खोजत निज घरु पाइआ ॥ अमोल रतनु साचु दिखलाइआ ॥ करि किरपा जब मेले साहि ॥ कहु नानक गुर कै वेसाहि ॥ ४ ॥ १६ ॥ ८५ ॥

मन एक मन्दिर है और तन को इसके पास मेड़ बनाया गया है। इस मन्दिर में अनन्त प्रभु की नाम-रूपी वस्तु विद्यमान है। संतों से सुनते हैं कि इस मन्दिर में ही नाम देने वाला साहूकार प्रभु निवास करता है। वह कौन-सा व्यापारी है, जिसका वहाँ विश्वास किया जाता है॥ १॥ कोई विरला

ही व्यापारी है, जो नाम रत्न का व्यापार करता है। वह व्यापारी नाम रूपी अमृत को अपना आहार बनाता है॥ १॥ रहाउ॥ मैं अपना मन एवं तन उसे अर्पण करके उसकी सेवा करूँगा जो मुझे यह बताए कि वह कौन-सी युक्ति है जिससे परमात्मा हर्षित होता है। अपना अहंत्व मेरी-तेरी गंवा कर मैं उसके चरण स्पर्श करता हूँ। वह कौन-सा मनुष्य है, जो मुझे भी नाम के व्यापार में लगा दे॥ २॥ किस विधि से मैं उस व्यापारी के मन्दिर पहुँच सकता हूँ। वह कौन-सी विधि है जिस द्वारा वह मुझे अन्दर बुलवा ले? हे प्रभु! तू बड़ा व्यापारी है, जिसके करोड़ों ही दुकानदार हैं। वह कौन-सा दाता है जो मुझे हाथ से पकड़ कर उसके मन्दिर में पहुँचा दे॥ ३॥ खोजते-खोजते मैंने अपना धाम (गृह) पा लिया है। सत्यस्वरूप प्रभु ने मुझे अमूल्य रत्न दिखा दिया है। जब व्यापारी (प्रभु) कृपा करता है, वह प्राणी को अपने साथ मिला लेता है। हे नानक! यह तब होता है, जब प्राणी गुरु जी पर विश्वास धारण कर लेता है॥ ४॥ १६॥ ८५॥

गउड़ी महला ५ गुआरेरी ॥ रैणि दिनसु रहै इक रंगा ॥ प्रभ कउ जाणै सद ही संगा ॥ ठाकुर नामु कीओ उनि वरतनि ॥ त्रिपति अघावनु हरि कै दरसनि ॥ १ ॥ हरि संगि राते मन तन हरे ॥ गुर पूरे की सरनी परे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण कमल आतम आधार ॥ एकु निहारहि आगिआकार ॥ एको बनजु एको बिउहारी ॥ अवरु न जानहि बिनु निरंकारी ॥ २ ॥ हरख सोग दुहहूं ते मुकते ॥ सदा अलिपतु जोग अरु जुगते ॥ दीसहि सभ महि सभ ते रहते ॥ पारब्रहम का ओइ धिआनु धरते ॥ ३ ॥ संतन की महिमा कवन वखानउ ॥ अगाधि बोधि किछु मिति नही जानउ ॥ पारब्रहम मोहि किरपा कीजै ॥ धूरि संतन की नानक दीजै ॥ ४ ॥ १७ ॥ ८६ ॥

जो व्यक्ति दिन-रात भगवान के प्रेम में मग्न रहते हैं और प्रभु को हमेशा अपने आसपास समझते हैं, उन्होंने ठाकुर के नाम को अपना जीवन-आचरण बना लिया है। वह ईश्वर के दर्शनों द्वारा संतुष्ट एवं तृप्त हो जाते हैं॥ १॥ ईश्वर के साथ अनुरक्त होने से उनका मन एवं तन प्रफुल्लित हो जाते हैं। वे पूर्ण गुरु की शरण लेते हैं॥ १॥ रहाउ॥ ईश्वर के चरण कमल उनकी आत्मा का आधार बन जाता है। वह एक ईश्वर को ही देखते हैं और उसके आज्ञाकारी बन जाते हैं। वे एक नाम का ही व्यापार करते हैं और नाम-सिमरन ही उनका व्यवसाय बन जाता है। निरंकार परमेश्वर के बिना वह किसी को भी नहीं जानते॥ २॥ वे हर्ष एवं शोक दोनों से मुक्त हैं। हमेशा ही संसार से निर्लिप्त और प्रभु से जुड़े रहने की विधि उनको आती है। वे सबसे प्रेम करते दिखाई देते हैं और सबसे अलग भी दिखाई देते हैं। वे पारब्रह्म-प्रभु के स्मरण में वृत्ति लगाकर रखते हैं॥ ३॥ संतों की महिमा का मैं क्या-क्या वर्णन कर सकता हूँ। उनका बोध अनन्त है लेकिन मैं उनका मूल्य नहीं जानता। हे पारब्रह्म-परमेश्वर! मुझ पर कृपा कीजिए। नानक को संतों की चरण-धूलि प्रदान करो॥ ४॥ १७॥ ८६॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ तूं मेरा सखा तूंही मेरा मीतु ॥ तूं मेरा प्रीतमु तुम संगि हीतु ॥ तूं मेरी पति तूहै मेरा गहणा ॥ तुझ बिनु निमखु न जाई रहणा ॥ १ ॥ तूं मेरे लालन तूं मेरे प्रान ॥ तूं मेरे साहिब तूं मेरे खान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ तुम राखहु तिव ही रहना ॥ जो तुम कहहु सोई मोहि करना ॥ जह पेखउ तहा तुम बसना ॥ निरभउ नामु जपउ तेरा रसना ॥ २ ॥ तूं मेरी नव निधि तूं भंडारु ॥ रंग रसा तूं मनहि अधारु ॥ तूं मेरी सोभा तुम संगि रचीआ ॥ तूं मेरी ओट तूं है मेरा तकीआ ॥ ३ ॥ मन तन अंतरि तुही धिआइआ ॥ मरमु तुमारा गुर ते पाइआ ॥ सतिगुर ते द्रिड़िआ इकु एकै ॥ नानक दास हरि हरि टेकै ॥ ४ ॥ १८ ॥ ८७ ॥

हे ईश्वर ! तू ही मेरा साथी है और तू ही मेरा मित्र। तू ही मेरा प्रियतम है और तेरे साथ ही मेरा प्रेम है। तू ही मेरी प्रतिष्ठा है और तू ही मेरा आभूषण है। तेरे बिना मैं एक क्षण भर भी नहीं रह सकता॥ १॥ हे प्रभु ! तू ही मेरा सुन्दर लाल है और तू ही मेरे प्राण है। तू मेरा स्वामी है और तू ही मेरा सामन्त है॥ १॥ रहाउ॥ हे ठाकुर ! जैसे तुम मुझे रखते हो, वैसे ही मैं रहता हूँ। जो कुछ तुम कहते हो, वही मैं करता हूँ। जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ, उधर ही मैं तेरा निवास पाता हूँ। हे निर्भय प्रभु ! अपनी जिह्वा से मैं तेरे नाम का जाप करता रहता हूँ॥ २॥ हे प्रभु ! तू मेरी नवनिधि है और तू ही मेरा भण्डार है। हे स्वामी ! तेरे प्रेम से मैं सींचा हुआ हूँ और तू मेरे मन का आधार है। तू ही मेरी शोभा है और तेरे साथ ही मैं सुरति लगाकर रखता हूँ। तू मेरी शरण है और तू ही मेरा आश्रय है॥ ३॥ हे प्रभु ! मैं अपने मन एवं तन में तेरा ही ध्यान करता रहता हूँ। तेरा भेद मैंने गुरु जी से प्राप्त किया है। सतिगुरु से मैंने एक ईश्वर का नाम-सिमरन ही दृढ़ किया है। हे नानक ! हरि-परमेश्वर का नाम ही मेरा एक आधार है॥ ४॥ १८॥ ८७॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ बिआपत हरख सोग बिसथार ॥ बिआपत सुरग नरक अवतार ॥ बिआपत धन निरधन पेखि सोभा ॥ मूलु बिआधी बिआपसि लोभा ॥ १ ॥ माइआ बिआपत बहु परकारी ॥ संत जीवहि प्रभ ओट तुमारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिआपत अहंबुधि का माता ॥ बिआपत पुत्र कलत्र संगि राता ॥ बिआपत हसति घोड़े अरु बसता ॥ बिआपत रूप जोबन मद मसता ॥ २ ॥ बिआपत भूमि रंक अरु रंगा ॥ बिआपत गीत नाद सुणि संगा ॥ बिआपत सेज महल सीगार ॥ पंच दूत बिआपत अंधिआर ॥ ३ ॥ बिआपत करम करै हउ फासा ॥ बिआपति गिरसत बिआपत उदासा ॥ आचार बिउहार बिआपत इह जाति ॥ सभ किछु बिआपत बिनु हरि रंग रात ॥ ४ ॥ संतन के बंधन काटे हरि राइ ॥ ता कउ कहा बिआपै माइ ॥ कहु नानक जिनि धूरि संत पाई ॥ ता कै निकटि न आवै माई ॥ ५ ॥ १६ ॥ ८८ ॥

माया का सुख-दुख में प्रसार है। वह स्वर्ग में जन्म लेने वाले जीवों को सुख रूप में तथा नरक के जीवों को दुख रूप में प्रभावित करती है। यह धनवानों, कंगालों एवं शोभावानों पर प्रभाव करती देखी जाती है। यह लोभ रूप में जीवों में फैली हुई है और तमाम रोगों की जड है॥ १॥ माया अनेक विधियों से प्रभाव करती है। हे प्रभु ! तेरी शरण में साधु-संत इसके प्रभाव के बिना ही अपना जीवन व्यतीत करते हैं॥ १॥ रहाउ॥ माया उससे लिपटी हुई है जो अहंबुद्धि से मदहोश हुआ है। जो अपने पुत्रों एवं भार्या के प्रेम में अनुरक्त हुआ है, माया उससे भी लिपटी हुई है। मोहिनी उससे लिपटी हुई है जो हाथियों, घोड़ों एवं सुन्दर वस्त्रों में लीन है। यह (मोहिनी) उस पुरुष से लिपटी हुई है जो सुन्दरता एवं यौवन के नशे में मस्त हुआ है॥ २॥ माया धरती के स्वामियों, निर्धनों एवं भोग-विलासियों से लिपटी हुई है। यह सभाओं में गीत एवं राग श्रवण करने वालों से लिपटी हुई है। यह सेज, हार-शृंगार, महलों में व्याप्त हुई है। यह मोह के अन्धेरे में कामादिक पांचों दूत बनकर प्रभाव डाल रही है॥ ३॥ यह मोहिनी उसके भीतर व्याप्त हुई है जो अहंकार में फँसकर अपना कर्म करता है। गृहस्थ में भी यह हम पर प्रभाव डालती है और त्याग में भी प्रभावित करती है। हमारे चरित्र, कामकाज और जाति द्वारा मोहिनी हम पर आक्रमण करती है। सिवाय उनके जो परमेश्वर के प्रेम में अनुरक्त है, यह प्रत्येक पदार्थ को चिपकती है॥ ४॥ संतों के बन्धन प्रभु ने काट दिए हैं। मोहिनी उनको किस तरह चिपक सकती है ? हे नानक ! मोहिनी उनके निकट नहीं आती जिसको संतों की चरण-धूलि प्राप्त हुई है॥ ५॥ १६॥ ८८॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ नैनहु नीद पर द्रिसटि विकार ॥ स्रवण सोए सुणि निंद वीचार ॥ रसना सोई लोभि मीठै सादि ॥ मनु सोइआ माइआ बिसमादि ॥ १ ॥ इसु ग्रिह महि कोई जागतु रहै ॥ साबतु वसतु ओहु अपनी लहै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल सहेली अपनै रस माती ॥ ग्रिह अपुने की खबरि न जाती ॥ मुसनहार पंच बटवारे ॥ सूने नगरि परे ठगहारे ॥ २ ॥ उन ते राखै बापु न माई ॥ उन ते राखै मीतु न भाई ॥ दरबि सिआणप ना ओइ रहते ॥ साधसंगि ओइ दुसट वसि होते ॥ ३ ॥ करि किरपा मोहि सारिंगपाणि ॥ संतन धूरि सरब निधान ॥ साबतु पूंजी सतिगुर संगि ॥ नानकु जागै पारब्रहम कै रंगि ॥ ४ ॥ सो जागै जिसु प्रभु किरपालु ॥ इह पूंजी साबतु धनु मालु ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ २० ॥ ८६ ॥

पराई नारी के सौन्दर्य को कामवासना रूपी विकृत दृष्टि से देखने से नेत्र निद्रा में सोए हुए हैं। परनिन्दा के विचारों को सुनकर कान सोए हुए हैं। मीठे पदार्थों के स्वाद की तृष्णा–लालसा में जिह्वा सोई हुई है। मन माया की आश्चर्यजनक लीला को देखकर सोया हुआ है॥ १॥ शरीर रूपी घर में कोई विरला पुरुष ही जागता रहता है और वह अपनी पूँजी सुरक्षित पा लेता है॥ १॥ रहाउ॥ मन की सखियां पाँच ज्ञानेन्द्रियां अपने स्वाद में मस्त हैं। वह अपने घर की रक्षा करनी नहीं जानती। पांचों दुष्ट विकार अपहरणकर्त्ता एवं लुटेरे हैं। लुटेरे सुनसान नगर में आ जाते हैं॥ २॥ उनसे माता–पिता बचा नहीं सकते। मित्र एवं भाई भी उनसे रक्षा नहीं कर सकते। दौलत एवं चतुरता से वे नहीं रुकते। लेकिन सत्संग में वे दुष्ट वश में आ जाते हैं॥ ३॥ हे सारिंगपाणि प्रभु! मुझ पर कृपा कीजिए। मुझे संतों की चरण–धूलि प्रदान कीजिए चूंकि मेरे लिए यह चरण–धूलि ही सर्वनिधि है। सतिगुरु की संगति में नाम रूपी पूँजी सुरक्षित रहती है। नानक पारब्रह्म प्रभु के प्रेम में जागता है॥ ४॥ केवल वही जागता है जिस पर प्रभु दयालु है। ये पूँजी, पदार्थ और सम्पत्ति फिर बचे रहते हैं॥ १॥ रहाउ दूजा ॥ २०॥ ८६॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ जा कै वसि खान सुलतान ॥ जा कै वसि है सगल जहान ॥ जा का कीआ सभु किछु होइ ॥ तिस ते बाहरि नाही कोइ ॥ १ ॥ कहु बेनंती अपुने सतिगुर पाहि ॥ काज तुमारे देइ निबाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ ते ऊच जा का दरबारु ॥ सगल भगत जा का नामु अधारु ॥ सरब बिआपित पूरन धनी ॥ जा की सोभा घटि घटि बनी ॥ २ ॥ जिसु सिमरत दुख डेरा ढहै ॥ जिसु सिमरत जमु किछू न कहै ॥ जिसु सिमरत होत सूके हरे ॥ जिस सिमरत डूबत पाहन तरे ॥ ३ ॥ संत सभा कउ सदा जैकारु ॥ हरि हरि नामु जन प्रान अधारु ॥ कहु नानक मेरी सुणी अरदासि ॥ संत प्रसादि मो कउ नाम निवासि ॥ ४ ॥ २१ ॥ ६० ॥

हे प्राणी! जिस प्रभु के वश में सरदार और सुल्तान हैं। जिसके अधीन सारा संसार है। जिसके करने से सब कुछ हो रहा है, उससे बाहर कुछ भी नहीं॥ १॥ हे प्राणी! अपने सतिगुरु के पास विनती कर। वह तेरे समस्त कार्य सम्पूर्ण कर देगा॥ १॥ रहाउ॥ उस प्रभु का दरबार सबसे ऊँचा है। उसका नाम उसके समस्त भक्तों का आधार है। जगत् का स्वामी प्रभु सबमें विद्यमान है। उसकी शोभा समस्त जीवों के हृदय में प्रकट है॥ २॥ जिस प्रभु का सिमरन करने से दुखों का पहाड़ नष्ट हो जाता है। जिसका सिमरन करने से यमदूत तुझे दुख नहीं देता। जिसकी आराधना करने से नीरस मन प्रफुल्लित हो जाता है। जिसकी आराधना करने से डूबते हुए पत्थर अर्थात् पापी जीव भी भवसागर से पार हो जाते हैं॥ ३॥ संतों की सभा को मैं सदैव नमन करता हूँ। हरि–परमेश्वर का नाम संतजनों के प्राणों का आधार है। हे नानक! प्रभु ने मेरी प्रार्थना सुन ली है। संतों की कृपा से मुझे ईश्वर के नाम में निवास मिल गया है॥ ४॥ २१॥ ६०॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ सतिगुर दरसनि अगनि निवारी ॥ सतिगुर भेटत हउमै मारी ॥ सतिगुर संगि नाही मनु डोलै ॥ अंम्रित बाणी गुरमुखि बोलै ॥ १ ॥ सभु जगु साचा जा सच महि राते ॥ सीतल साति गुर ते प्रभ जाते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत प्रसादि जपै हरि नाउ ॥ संत प्रसादि हरि कीरतनु गाउ ॥ संत प्रसादि सगल दुख मिटे ॥ संत प्रसादि बंधन ते छुटे ॥ २ ॥ संत क्रिपा ते मिटे मोह भरम ॥ साध रेण मजन सभि धरम ॥ साध क्रिपाल दइआल गोविंदु ॥ साधा महि इह हमरी जिंदु ॥ ३ ॥ किरपा निधि किरपाल धिआवउ ॥ साधसंगि ता बैठणु पावउ ॥ मोहि निरगुण कउ प्रभि कीनी दइआ ॥ साधसंगि नानक नामु लइआ ॥ ४ ॥ २२ ॥ ६१ ॥

सतिगुरु के दर्शनों से तृष्णा की अग्नि बुझ गई है। सतिगुरु को मिलने से अहंकार मिट गया है। सतिगुरु की संगति में मन डाँवाडोल नहीं होता। गुरु के माध्यम से प्राणी अमृत वाणी का उच्चारण करता है॥ १॥ जब से मेरा मन सत्य के प्रेम में मग्न हुआ है, तब से मुझे वह सत्य-प्रभु सारी दुनिया में निवास करता दिखाई देता है। गुरु के माध्यम से प्रभु को जानकर मेरा मन शीतल एवं शांत-स्थिर हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ संतों की कृपा से मनुष्य हरि का नाम स्मरण करता है। संतों के प्रसाद से मनुष्य हरि का यश कीर्त्तन करता है। संतों की दया से मनुष्य की समस्त पीड़ा दूर हो जाती है। संतों की कृपा से प्राणी (मोह-माया के) बंधनों से मुक्ति प्राप्त कर लेता है॥ २॥ संतों की कृपा से मोह एवं भ्रम मिट गए हैं। संतों की चरण-धूलि में स्नान करने से सभी धर्म कर्मों का फल मिल जाता है। जब संत कृपालु हैं तो गोविन्द दयालु हो जाता है। मेरे यह प्राण संतों में निवास करते हैं॥ ३॥ यदि मैं कृपा के भण्डार दयालु परमात्मा का चिन्तन करूँ, तो ही मैं संतों की संगति में बैठ सकता हूँ। हे नानक! जब प्रभु ने मुझ गुणहीन पर दया की तो मैंने संतों की सभा में नाम-सिमरन किया है॥ ४॥ २२॥ ६१॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ साधसंगि जपिओ भगवंतु ॥ केवल नामु दीओ गुरि मंतु ॥ तजि अभिमान भए निरवैर ॥ आठ पहर पूजहु गुर पैर ॥ १ ॥ अब मति बिनसी दुसट बिगानी ॥ जब ते सुणिआ हरि जसु कानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहज सूख आनंद निधान ॥ राखनहार रखि लेइ निदान ॥ दूख दरद बिनसे भै भरम ॥ आवण जाण रखे करि करम ॥ २ ॥ पेखै बोलै सुणै सभु आपि ॥ सदा संगि ता कउ मन जापि ॥ संत प्रसादि भइओ परगासु ॥ पूरि रहे एकै गुणतासु ॥ ३ ॥ कहत पवित सुणत पुनीत ॥ गुण गोविंद गावहि नित नीत ॥ कहु नानक जा कउ होहु क्रिपाल ॥ तिसु जन की सभ पूरन घाल ॥ ४ ॥ २३ ॥ ६२ ॥

मैं संतों की सभा में मिलकर भगवान का सिमरन करता हूँ। गुरु ने मुझे केवल नाम का ही मंत्र प्रदान किया है। अपना अहंकार त्याग कर मैं निर्वैर हो गया हूँ। दिन के आठ प्रहर गुरु के चरणों की पूजा करो॥ १॥ जब से मैंने हरि का यश अपने कानों से सुना है, मेरी पराई दुष्ट बुद्धि नष्ट हो गई है॥ १॥ रहाउ॥ रक्षक प्रभु जो सहज सुख एवं आनन्द का भण्डार है, अन्तत मेरी रक्षा करेगा। मेरे दुख-दर्द एवं भय-भ्रम नाश हो गए हैं। प्रभु ने कृपा करके जन्म-मृत्यु के आवागमन से मेरी रक्षा की है॥ २॥ प्रभु स्वयं ही सब कुछ देखता, बोलता एवं सुनता है। हे मेरे मन! उस प्रभु का सदैव ही सिमरन कर, जो सदैव तेरे साथ रहता है। संतों की कृपा से मेरे मन में प्रभु-ज्योति का प्रकाश हो गया है। गुणों का भण्डार एक ईश्वर सर्वत्र व्यापक हो रहा है॥ ३॥ जो व्यक्ति सदैव ही गोविन्द की महिमा-स्तुति करते रहते हैं, मुख से उसकी महिमा करते एवं सुनते रहते हैं, वे सभी पवित्र-पावन हो जाते हैं। हे नानक! जिस पर ईश्वर कृपालु हो जाता है, उस प्राणी की नाम-साधना सम्पूर्ण हो जाती है॥ ४॥ २३॥ ६२॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ बंधन तोड़ि बोलावै रामु ॥ मन महि लागै साचु धिआनु ॥ मिटहि कलेस सुखी होइ रहीऐ ॥ ऐसा दाता सतिगुरु कहीऐ ॥ १ ॥ सो सुखदाता जि नामु जपावै ॥ करि किरपा तिसु संगि मिलावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसु होइ दइआलु तिसु आपि मिलावै ॥ सरब निधान गुरू ते पावै ॥ आपु तिआगि मिटै आवण जाणा ॥ साध कै संगि पारब्रहमु पछाणा ॥ २ ॥ जन ऊपरि प्रभ भए दइआल ॥ जन की टेक एक गोपाल ॥ एका लिव एको मनि भाउ ॥ सरब निधान जन कै हरि नाउ ॥ ३ ॥ पारब्रहम सिउ लागी प्रीति ॥ निरमल करणी साची रीति ॥ गुरि पूरै मेटिआ अंधिआरा ॥ नानक का प्रभु अपर अपारा ॥ ४ ॥ २४ ॥ ६३ ॥

सतिगुरु मोह–माया के बन्धन तोड़कर मनुष्य से राम का सिमरन करवाता है। उस व्यक्ति के मन में सत्य–परमेश्वर का ध्यान लग जाता है। उसके क्लेश मिट जाते हैं और वह मनुष्य सुखपूर्वक रहता है। ऐसे दाता को ही सतिगुरु कहा जाता है॥ १॥ केवल वही सुखदाता है, जो प्राणी से प्रभु के नाम का जाप करवाता है और कृपा करके उसके साथ मिला देता है॥ १॥ रहाउ॥ जिस व्यक्ति पर परमात्मा दयालु हो जाता है, उसको वह गुरु से मिला देता है। समस्त भण्डार सर्वनिधि वह गुरु द्वारा प्राप्त कर लेता है। जो व्यक्ति अपना अहंकार त्याग देता है, उसका जन्म–मरण का चक्र मिट जाता है। वह संतों की संगति करके पारब्रह्म को पहचान लेता है॥ २॥ अपने सेवक पर प्रभु दयालु हो गया है। उस सेवक का सहारा एक गोपाल ही है। वह सेवक एक परमेश्वर में ही अपनी सुरति लगाता है और उसके मन में एक प्रभु का ही प्रेम होता है। सेवक के लिए हरि का नाम ही तमाम भण्डार है॥ ३॥ जो पारब्रह्म से प्रेम करता है, उसके कर्म पवित्र और जीवन–आचरण सत्य है। पूर्ण गुरु ने अज्ञानता का अंधकार मिटा दिया है। नानक का प्रभु असीम एवं अनन्त है॥ ४॥ २४॥ ६३॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ जिसु मनि वसै तरै जनु सोइ ॥ जा कै करमि परापति होइ ॥ दूखु रोगु कछु भउ न बिआपै ॥ अंम्रित नामु रिदै हरि जापै ॥ १ ॥ पारब्रहमु परमेसुरु धिआईऐ ॥ गुर पूरे ते इह मति पाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करण करावनहार दइआल ॥ जीअ जंत सगले प्रतिपाल ॥ अगम अगोचर सदा बेअंता ॥ सिमरि मना पूरे गुर मंता ॥ २ ॥ जा की सेवा सरब निधानु ॥ प्रभ की पूजा पाईऐ मानु ॥ जा की टहल न बिरथी जाइ ॥ सदा सदा हरि के गुण गाइ ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभ अंतरजामी ॥ सुख निधान हरि अलख सुआमी ॥ जीअ जंत तेरी सरणाई ॥ नानक नामु मिलै वडिआई ॥ ४ ॥ २५ ॥ ६४ ॥

जिस व्यक्ति के हृदय में ईश्वर निवास करता है, वह संसार सागर से पार हो जाता है। जिसकी किस्मत में लिखा होता है, वह ईश्वर को प्राप्त कर लेता है। दुख, रोग एवं भय उसको तनिक मात्र भी प्रभावित नहीं करते, जो अपने हृदय में ईश्वर के अमृत नाम का सिमरन करते रहते हैं॥ १॥ हमें पारब्रह्म–परमेश्वर का ही ध्यान करना चाहिए। पूर्ण गुरु से यह सूझ प्राप्त होती है॥ १॥ रहाउ॥ दयावान प्रभु स्वयं ही सब कुछ करने वाला एवं जीवों से कराने वाला है। वह सृष्टि के समस्त जीव–जन्तुओं की पालना करता है। प्रभु सदैव ही अगम्य, अगोचर एवं अनन्त है। हे मेरे मन! पूर्ण गुरु के उपदेश से प्रभु का सिमरन कर॥ २॥ प्रभु की सेवा करने से तमाम भण्डार प्राप्त हो जाते हैं। प्रभु की पूजा करने से मान–सम्मान प्राप्त होता है। प्रभु की सेवा व्यर्थ नहीं जाती, अतः नित्य ही उसका गुणानुवाद करते रहो॥ ३॥ अन्तर्यामी प्रभु मुझ पर कृपा कीजिए। जगत् का स्वामी, अलक्ष्य परमेश्वर सुखों का खजाना है। समस्त जीव–जन्तु तेरी शरण में हैं। हे नानक! मुझे प्रभु का नाम मिल जाए चूंकि उसका नाम ही मेरे लिए बड़ाई है॥ ४॥ २५॥ ६४॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ जीअ जुगति जा कै है हाथ ॥ सो सिमरहु अनाथ को नाथु ॥ प्रभ चिति आए सभु दुखु जाइ ॥ भै सभ बिनसहि हरि कै नाइ ॥ १ ॥ बिनु हरि भउ काहे का मानहि ॥ हरि बिसरत काहे सुखु जानहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि धारे बहु धरणि अगास ॥ जा की जोति जीअ परगास ॥ जा की बखस न मेटै कोइ ॥ सिमरि सिमरि प्रभु निरभउ होइ ॥ २ ॥ आठ पहर सिमरहु प्रभ नामु ॥ अनिक तीरथ मजनु इसनानु ॥ पारब्रहम की सरणी पाहि ॥ कोटि कलंक खिन महि मिटि जाहि ॥ ३ ॥ बेमुहताजु पूरा पातिसाहु ॥ प्रभ सेवक साचा वेसाहु ॥ गुरि पूरै राखे दे हाथ ॥ नानक पारब्रहम समराथ ॥ ४ ॥ २६ ॥ ६५ ॥

जिस भगवान के वश में जीवों की जीवन-युक्ति है, उसका ही सिमरन करो। वह अनाथों का नाथ है। यदि मनुष्य भगवान को स्मरण करता रहे तो उसके समस्त दुख नष्ट हो जाते हैं। हरि के नाम सिमरन से समस्त भय नाश हो जाते हैं॥ १॥ हे प्राणी! तू ईश्वर के अलावा किसी दूसरे का भय क्यों अनुभव करता है? यदि तू प्रभु को विस्मृत कर देता है तो फिर तू अपने आप को सुख में क्यों समझते हो॥ १॥ रहाउ॥ जिसने अनेकों धरती-आकाश कायम किए हैं, जिसकी ज्योति का समस्त जीवों में प्रकाश है, जिसकी दया को कोई भी मिटा नहीं सकता। उस प्रभु का सिमरन करने से मनुष्य निर्भीक हो जाता है॥ २॥ दिन के आठ प्रहर प्रभु के नाम का सिमरन करते रहो। चूंकि प्रभु का नाम-सिमरन ही अनेकों तीर्थों का स्नान है। पारब्रह्म की शरण में आने से मनुष्य के करोड़ों ही कलंक एक क्षण में मिट जाते हैं॥ ३॥ वह बेपरवाह पूर्ण बादशाह है। ईश्वर के सेवक की उसमें सच्ची आस्था है। अपना हाथ देकर पूर्ण गुरु जी उसकी रक्षा करते हैं। हे नानक! पारब्रह्म प्रभु सब कुछ करने में समर्थ है॥ ४॥ २६॥ ६५॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ गुर परसादि नामि मनु लागा ॥ जनम जनम का सोइआ जागा ॥ अंम्रित गुण उचरै प्रभ बाणी ॥ पूरे गुर की सुमति पराणी ॥ १ ॥ प्रभ सिमरत कुसल सभि पाए ॥ घरि बाहरि सुख सहज सबाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोई पछाता जिनहि उपाइआ ॥ करि किरपा प्रभि आपि मिलाइआ ॥ बाह पकरि लीनो करि अपना ॥ हरि हरि कथा सदा जपु जपना ॥ २ ॥ मंतु तंतु अउखधु पुनहचारु ॥ हरि हरि नामु जीअ प्रान अधारु ॥ साचा धनु पाइओ हरि रंगि ॥ दुतरु तरे साध कै संगि ॥ ३ ॥ सुखि बैसहु संत सजन परवारु ॥ हरि धनु खटिओ जा का नाहि सुमारु ॥ जिसहि परापति तिसु गुरु देइ ॥ नानक बिरथा कोइ न हेइ ॥ ४ ॥ २७ ॥ ६६ ॥

गुरु की कृपा से मेरा मन प्रभु के नाम में लग गया है। यह मन जन्म-जन्मांतरों से अज्ञानता की निद्रा में सोया हुआ था परन्तु अब यह जाग गया है अर्थात् इसे ज्ञान हो गया है। वही प्राणी प्रभु की वाणी द्वारा उसके अमृतमयी गुणों का उच्चारण करता है, जिसे पूर्ण गुरु की सुमति प्राप्त हो जाती है॥ १॥ प्रभु का सिमरन करने से मुझे सर्वसुख प्राप्त हो गए हैं। घर के भीतर एवं बाहर मुझे सहज ही सर्वसुख प्राप्त हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ मैंने उस प्रभु को पहचान लिया है, जिसने मुझे उत्पन्न किया है। प्रभु ने कृपा करके मुझे अपने साथ मिला लिया है। भुजा से पकड़कर प्रभु ने मुझे अपना बना लिया है। हरि की सुन्दर हरि-कथा एवं नाम का मैं हमेशा जाप जपता हूँ॥ २॥ मन्त्र-तन्त्र, औषधि, प्रायश्चित कर्म समूह प्रभु-परमेश्वर के नाम में विद्यमान है, जो मेरे मन एवं प्राणों का आधार है। मैंने प्रभु के प्रेम की सच्ची दौलत प्राप्त की है। साधु-संतों की संगत से ही विषम संसार सागर पार किया जा सकता है॥ ३॥ हे संतजनो! सज्जनों के परिवार सहित सुख में विराजो। मैंने हरिनाम का धन कमाया है जो गणना से बाहर है। यह नाम-धन उसे ही मिलता है, जिसे गुरु जी देते हैं। हे नानक! गुरु के द्वार से कोई भी व्यक्ति खाली हाथ नहीं जाता॥ ४॥ २७॥ ६६॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ हसत पुनीत होहि ततकाल ॥ बिनसि जाहि माइआ जंजाल ॥ रसना रमह राम गुण नीत ॥ सुखु पावहु मेरे भाई मीत ॥ १ ॥ लिखु लेखणि कागदि मसवाणी ॥ राम नाम हरि अंम्रित बाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इह कारजि तेरे जाहि बिकार ॥ सिमरत राम नाही जम मार ॥ धरम राइ के दूत न जोहै ॥ माइआ मगन न कछूऐ मोहै ॥ २ ॥ उधरहि आपि तरै संसारु ॥ राम नाम जपि एकंकारु ॥ आपि कमाउ अवरा उपदेस ॥ राम नाम हिरदै परवेस ॥ ३ ॥ जा कै माथै एहु निधानु ॥ सोई पुरखु जपै भगवानु ॥ आठ पहर हरि हरि गुण गाउ ॥ कहु नानक हउ तिसु बलि जाउ ॥ ४ ॥ २८ ॥ ६७ ॥

हे भाई ! यदि जिह्वा के साथ सदैव ही राम का यशोगान किया जाए तो हाथ तत्काल ही पवित्र हो जाते हैं एवं माया के जंजाल नाश हो जाते हैं। हे मेरे भाई एवं मित्र ! इस तरह तू सुख–शांति प्राप्त कर॥ १॥ अपनी कलम एवं दवात से तू कागज पर राम का नाम एवं हरि की अमृतमयी वाणी लिख॥ १॥ रहाउ॥ इस कर्म से तेरे पाप धुल जाएँगे। राम का भजन करने से यमदूत तुझे दण्ड नहीं देगा। यमराज के दूत तेरी ओर नहीं देख सकेंगे। मोहिनी का उन्माद तुझे तनिक मात्र भी मुग्ध नहीं करेगा॥ २॥ यदि तू राम का नाम सिमरन और एक ओंकार का स्मरण करता रहेगा तो तेरा स्वयं उद्धार हो जाएगा और तेरे द्वारा संसार का भी कल्याण हो जाएगा। नाम–स्मरण की स्वयं साधना कर और दूसरों को उपदेश दे। राम के नाम को अपने हृदय में विराजमान कर॥ ३॥ जिसके मस्तक पर उसकी किस्मत में नाम–भण्डार की उपलब्धि का लेख लिखा हुआ है, वही पुरुष भगवान की आराधना करता है। हे नानक ! मैं उस व्यक्ति पर बलिहारी जाता हूँ, जो आठ प्रहर हरि– परमेश्वर की महिमा–स्तुति करता रहता है॥ ४॥ २८॥ ६७॥

रागु गउड़ी गुआरेरी महला ५ चउपदे दुपदे १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जो पराइओ सोई अपना ॥ जो तजि छोडन तिसु सिउ मनु रचना ॥ १ ॥ कहहु गुसाई मिलीऐ केह ॥ जो बिबरजत तिस सिउ नेह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ झूठु बात सा सचु करि जाती ॥ सति होवनु मनि लगै न राती ॥ २ ॥ बावै मारगु टेढा चलना ॥ सीधा छोडि अपूठा बुनना ॥ ३ ॥ दुहा सिरिआ का खसमु प्रभु सोई ॥ जिसु मेले नानक सो मुकता होई ॥ ४ ॥ २६ ॥ ६८ ॥

जो धन पराया हो जाता है, उसे मनुष्य अपना समझता है। जो कुछ त्याग जाता है, उससे उसका मन लीन रहता है॥ १॥ बताओ, गुसाईं–प्रभु कैसे मिल सकता है? जो कुछ वर्जित किया हुआ है, उससे उसका स्नेह है॥ १॥ रहाउ॥ झूठी बात को वह सत्य करके जानता है। जो सदा सत्य है, क्षण भर भी हृदय उससे जुड़ा हुआ नहीं है॥ २॥ वह वाम मार्ग टेढा होकर चलता है। जीवन के सन्मार्ग को त्याग कर जीवन के ताने–बाने को उल्टा बुन रहा है॥ ३॥ लोक–परलोक दोनों कोनों का स्वामी प्रभु स्वयं ही है। हे नानक ! जिसको परमात्मा अपने साथ मिला लेता है, वह मुक्ति प्राप्त कर लेता है॥ ४॥ २६॥ ६८॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ कलिजुग महि मिलि आए संजोग ॥ जिचरु आगिआ तिचरु भोगहि भोग ॥ १ ॥ जलै न पाईऐ राम सनेही ॥ किरति संजोगि सती उठि होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देखा देखी मनहठि जलि जाईऐ ॥ प्रिअ संगु न पावै बहु जोनि भवाईऐ ॥ २ ॥ सील संजमि प्रिअ आगिआ मानै ॥ तिसु नारी कउ दुखु न जमानै ॥ ३ ॥ कहु नानक जिनि प्रिउ परमेसरु करि जानिआ ॥ धंनु सती दरगह परवानिआ ॥ ४ ॥ ३० ॥ ६६ ॥

कलियुग में संयोगवश पति–पत्नी पूर्व संबंधों के कारण इहलोक में आकर मिलते है। जब तक परमात्मा का हुक्म होता है, तब तक वह भोग भोगते हैं॥ १॥ जो स्त्री अपने मृत पति के साथ जल कर मर जाती है, उसे प्रियतम राम नहीं मिलता। वह अपने किए हुए कर्मों के संयोग कारण उठकर अपने पति के साथ जल कर सती हो जाती है॥ १॥ रहाउ॥ देखादेखी और मन के हठ द्वारा जल जाती है। वह मरणोपरांत अपने मृत पति को भी नहीं मिलती और अनेक योनियों में भटकती रहती है॥ २॥ जिसके पास शील एवं संयम है और पति–परमेश्वर की आज्ञा मानती है, वह जीव–स्त्री यमदूतों से कष्ट नहीं प्राप्त करती॥ ३॥ हे नानक! जो जीव–स्त्री परमेश्वर को अपने पति के रूप में जानती है, वह जीव–स्त्री धन्य है और वह ईश्वर के दरबार में स्वीकार हो जाती है॥ ४॥ ३०॥ ६६॥

गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ हम धनवंत भागठ सच नाइ ॥ हरि गुण गावह सहजि सुभाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पीऊ दादे का खोलि डिठा खजाना ॥ ता मेरै मनि भइआ निधाना ॥ १ ॥ रतन लाल जा का कछू न मोलु ॥ भरे भंडार अखूट अतोल ॥ २ ॥ खावहि खरचहि रलि मिलि भाई ॥ तोटि न आवै वधदो जाई ॥ ३ ॥ कहु नानक जिसु मसतकि लेखु लिखाइ ॥ सु एतु खजानै लइआ रलाइ ॥ ४ ॥ ३१ ॥ १०० ॥

प्रभु के सत्य–नाम से मैं धनवान एवं भाग्यशाली बन गया हूँ, मैं सहज–स्वभाव ही हरि–परमेश्वर की गुण–स्तुति करता रहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ जब मैंने अपने पिता और दादा का भण्डार अर्थात् गुरुओं की वाणी का भण्डार खोल कर देखा तो मेरे मन में आनंद का भण्डार भर गया॥ १॥ अक्षय एवं अतुल भण्डार प्रभु की गुणस्तुति के अमूल्य रत्न एवं जवाहरों से भरे हुए हैं॥ २॥ हे भाई! हम सभी मिलकर इन भण्डारों को सेवन और इस्तेमाल करते हैं। इस भण्डार में कोई कमी नहीं और प्रतिदिन वह अधिकाधिक बढ़ता जाता है॥ ३॥ हे नानक! जिस व्यक्ति के मस्तक पर विधाता ने ऐसी भाग्यरेखाएँ विद्यमान की हैं, वह इस (गुणस्तुति के) भण्डार में भागीदार बन जाता है॥ ४॥ ३१॥ १००॥

गउड़ी महला ५ ॥ डरि डरि मरते जब जानीऐ दूरि ॥ डरु चूका देखिआ भरपूरि ॥ १ ॥ सतिगुर अपुने कउ बलिहारै ॥ छोडि न जाई सरपर तारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूखु रोगु सोगु बिसरै जब नामु ॥ सदा अनंदु जा हरि गुण गामु ॥ २ ॥ बुरा भला कोई न कहीजै ॥ छोडि मानु हरि चरन गहीजै ॥ ३ ॥ कहु नानक गुर मंतु चितारि ॥ सुखु पावहि साचै दरबारि ॥ ४ ॥ ३२ ॥ १०१ ॥

जब मैं प्रभु को दूर समझता था तो मैं डर–डर कर मरता रहता था। उस प्रभु को सर्वव्यापक देखकर मेरा भय दूर हो गया है॥ १॥ मैं अपने सतिगुरु पर बलिहारी जाता हूँ। मुझे छोड़कर वह कहीं नहीं जाता और निश्चित ही मुझे भवसागर से पार कर देगा॥ १॥ रहाउ॥ जब प्राणी ईश्वर के नाम को भुला देता है तो उसे दुख, रोग एवं संताप लग जाते हैं। लेकिन जब वह प्रभु का यश गायन करता है, उसको सदैव सुख प्राप्त हो जाता है॥ ३॥ हमें किसी को बुरा–भला नहीं कहना चाहिए और अपना अहंकार त्याग कर भगवान के चरण पकड़ लेने चाहिए॥ ३॥ नानक का कथन है कि (हे प्राणी!) गुरु के मन्त्र (उपदेश) को स्मरण करो। सत्य के दरबार में बड़ा सुख प्राप्त होगा॥ ४॥ ३२॥ १०१॥

गउड़ी महला ५ ॥ जा का मीतु साजनु है समीआ ॥ तिसु जन कउ कहु का की कमीआ ॥ १ ॥ जा की प्रीति गोबिंद सिउ लागी ॥ दूखु दरदु भ्रमु ता का भागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कउ रसु हरि रसु है आइओ ॥ सो अन रस नाही लपटाइओ ॥ २ ॥ जा का कहिआ दरगह चलै ॥ सो किस कउ नदरि लै आवै तलै ॥ ३ ॥ जा का सभु किछु ता का होइ ॥ नानक ता कउ सदा सुखु होइ ॥ ४॥ ३३॥ १०२॥

हे भाई! जिसका मित्र एवं सज्जन सर्वव्यापक प्रभु है। बताओ–उस पुरुष को किस पदार्थ की कमी हो सकती है॥ १॥ जिसका प्रेम गोविन्द से हो जाता है, उसके दुख–दर्द एवं भ्रम भाग जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ जिस व्यक्ति को हरि–रस का आनंद प्राप्त हो जाता है, वह हरि–रस के सिवाय अन्य रसों से नहीं लिपटता॥ २॥ जिसका बोला हुआ शब्द प्रभु के दरबार में माना जाता है, वह किसकी चिन्ता करता है (अर्थात् उसे कोई आवश्यकता नहीं रहती)॥ ३॥ हे नानक! जिस ईश्वर ने सृष्टि की रचना की है, जीव–जन्तु अथवा समूचा जगत् उसका है, उस ईश्वर का भक्त जो मनुष्य बनता है, उसे सदैव सुख प्राप्त हो जाता है॥ ४॥ ३३॥ १०२॥

गउड़ी महला ५ ॥ जा कै दुखु सुखु सम करि जापै ॥ ता कउ काड़ा कहा बिआपै ॥ १ ॥ सहज अनंद हरि साधू माहि ॥ आगिआकारी हरि हरि राइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै अचिंतु वसै मनि आइ ॥ ता कउ चिंता कतहूं नाहि ॥ २ ॥ जा कै बिनसिओ मन ते भरमा ॥ ता कै कछू नाही डरु जमा ॥ ३ ॥ जा कै हिरदै दीओ गुरि नामा ॥ कहु नानक ता कै सगल निधाना ॥ ४ ॥ ३४ ॥ १०३ ॥

जिस व्यक्ति को दुःख एवं सुख एक समान प्रतीत होते हैं, उसे कोई चिन्ता कैसे हो सकती है?॥१॥ जिस भगवान के साधू के मन में सहज आनंद उत्पन्न हो जाता है, वह सदैव प्रभु–परमेश्वर का आज्ञाकारी बना रहता है॥ १॥ रहाउ॥ जिसके हृदय में अचिंत परमेश्वर आकर निवास कर जाता है, उसको चिन्ता कदापि नहीं लगती॥ २॥ जिसके हृदय से भ्रम निवृत्त हो गया है, उसको मृत्यु का लेशमात्र भी भय नहीं रहता॥ ३॥ जिसके हृदय में गुरदेव ने प्रभु–नाम प्रदान किया है। हे नानक! वह समस्त निधियों का स्वामी बन जाता है॥ ४॥ ३४॥ १०३॥

गउड़ी महला ५ ॥ अगम रूप का मन महि थाना ॥ गुर प्रसादि किनै विरले जाना ॥ १ ॥ सहज कथा के अंम्रित कुंटा ॥ जिसहि परापति तिसु लै भुंचा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनहत बाणी थानु निराला ॥ ता की धुनि मोहे गोपाला ॥ २ ॥ तह सहज अखारे अनेक अनंता ॥ पारब्रहम के संगी संता ॥ ३ ॥ हरख अनंत सोग नही बीआ ॥ सो घरु गुरि नानक कउ दीआ ॥ ४ ॥ ३५ ॥ १०४ ॥

अगम्य स्वरूप परमेश्वर का मनुष्य के मन में निवास है। गुरु की कृपा से कोई विरला पुरुष ही इस तथ्य को समझता है॥ १॥ प्रभु की सहज कथा के अमृत–कुण्ड हैं। जिसकी इनको प्राप्ति हो जाती है, वह अमृत पान करता रहता है॥ १॥ रहाउ॥ बैकुण्ठ में एक अद्भुत स्थान है, जहाँ हर पल अनहद वाणी की मधुर ध्वनि गूंजती रहती है। इस मधुर ध्वनि को सुनकर गोपाल भी मुग्ध हो जाता है॥ २॥ वहाँ विभिन्न प्रकार के आनंददायक एवं अनन्त सुख के निवास स्थान हैं। वहाँ पारब्रह्म प्रभु के साथी, साधु निवास करते हैं॥ ३॥ वहाँ अनन्त हर्ष है और दुख अथवा द्वैत भाव नहीं। वह घर गुरु (ने) नानक को प्रदान किया है॥ ४॥ ३५॥ १०४॥

गउड़ी मः ५ ॥ कवन रूपु तेरा आराधउ ॥ कवन जोग काइआ ले साधउ ॥ १ ॥ कवन गुनु जो तुझु लै गावउ ॥ कवन बोल पारब्रहम रीझावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कवन सु पूजा तेरी करउ ॥ कवन सु बिधि जितु भवजल तरउ ॥ २ ॥ कवन तपु जितु तपीआ होइ ॥ कवनु सु नामु हउमै मलु खोइ ॥ ३ ॥ गुण पूजा गिआन धिआन नानक सगल घाल ॥ जिस करि किरपा सतिगुरु मिलै दइआल ॥ ४ ॥ तिस ही गुनु तिन ही प्रभु जाता ॥ जिस की मानि लेइ सुखदाता ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ३६ ॥ १०५ ॥

हे प्रभु ! तेरे तो अनन्त रूप हैं। इसलिए तेरा वह कौन–सा रूप है, जिसकी मैं आराधना करूँ। हे ईश्वर ! योग का वह कौन–सा साधन है जिससे मैं अपने तन को वश में करूँ॥ १॥ हे पारब्रह्म–प्रभु ! वह कौन–सी गुणस्तुति है, जिससे मैं तुझे प्रसन्न कर दूँ॥ १॥ रहाउ॥ हे नाथ ! वह कौन–सी पूजा–अर्चना है, जो मैं तेरी करूँ। हे दीनदयालु ! वह कौन–सी विधि है, जिससे मैं भयानक सागर से पार हो जाऊँ ?॥ २॥ हे प्रभु ! वह कौन–सी तपस्या है, जिससे मैं तपस्वी हो जाऊँ ? हे परमात्मा ! वह कौन–सा नाम है, जिस द्वारा अहंकार की मैल दूर हो जाती है॥ ३॥ हे नानक ! दयालु सतिगुरु अपनी कृपा करके जिस व्यक्ति को मिल जाते हैं, उसकी तमाम साधना, गुणानुवाद, पूजा, ज्ञान एवं ध्यान सफल हो जाते है॥ ४॥ केवल वही गुण (फल) प्राप्त करता है और केवल वही प्रभु को समझता है, जिसकी भक्ति सुखदाता स्वीकार कर लेता है॥ १॥ रहाउ दूजा॥ ३६॥ १०५॥

गउड़ी महला ५ ॥ आपन तनु नही जा को गरबा ॥ राज मिलख नही आपन दरबा ॥ १ ॥ आपन नही का कउ लपटाइओ ॥ आपन नामु सतिगुर ते पाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुत बनिता आपन नही भाई ॥ इसट मीत आप बापु न माई ॥ २ ॥ सुइना रूपा फुनि नही दाम ॥ हैवर गैवर आपन नही काम ॥ ३ ॥ कहु नानक जो गुरि बखसि मिलाइआ ॥ तिस का सभु किछु जिस का हरि राइआ ॥ ४ ॥ ३७ ॥ १०६ ॥

हे प्राणी ! यह तन जिसका तुझे अभिमान है, यह तेरा अपना नहीं है। शासन, सम्पति, धन (सदा के लिए) तेरे नहीं है॥ १॥ हे प्राणी ! जब यह तेरे नहीं, तो फिर उनसे क्यों मोह करते हो ? केवल नाम ही तेरा है और वह तुझे सतिगुरु से प्राप्त होगा॥ १॥ रहाउ॥ हे प्राणी ! पुत्र, पत्नी एवं भाई तेरे नहीं। इष्ट मित्र, पिता एवं माता तेरे अपने नहीं हैं॥ २॥ सोना, चांदी एवं धन–दौलत भी तेरे नहीं हैं। कुशल घोड़े एवं सुन्दर हाथी तेरे किसी काम नहीं॥ ३॥ हे नानक ! जिसको गुरु जी क्षमा कर देते हैं, उसको वह प्रभु से मिला देते हैं। जिसका प्रभु–परमेश्वर है उसके पास सब कुछ है॥ ४॥ ॥ ३७॥ १०६॥

गउड़ी महला ५ ॥ गुर के चरण ऊपरि मेरे माथे ॥ ता ते दुख मेरे सगले लाथे ॥ १ ॥ सतिगुर अपुने कउ कुरबानी ॥ आतम चीनि परम रंग मानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण रेणु गुर की मुखि लागी ॥ अहंबुधि तिनि सगल तिआगी ॥ २ ॥ गुर का सबदु लगो मनि मीठा ॥ पारब्रहमु ता ते मोहि डीठा ॥ ३ ॥ गुरु सुखदाता गुरु करतारु ॥ जीअ प्राण नानक गुरु आधारु ॥ ४ ॥ ३८ ॥ १०७ ॥

गुरु के चरण मेरे मस्तक पर विद्यमान हैं। इससे मेरे समस्त दुःख दूर हो गए हैं॥ १॥ मैं अपने सतिगुरु पर कुर्बान जाता हूँ। जिनके द्वारा मैंने अपने आत्मिक जीवन को समझ लिया है और सर्वोपरि आनन्द भोगता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ गुरु की चरण–धूलि मेरे चेहरे पर लग गई है और उसने मेरी अहंबुद्धि सारी निवृत्त कर दी है॥ २॥ गुरु का शब्द मेरे मन को मीठा लग रहा है। पारब्रह्म प्रभु का इस कारण मैं दर्शन कर रहा हूँ॥ ३॥ गुरु ही सुखदाता और गुरु ही कर्त्तार हैं। हे नानक ! गुरु मेरी आत्मा एवं प्राणों का आधार है॥ ४॥ ३८॥ १०७॥

गउड़ी महला ५ ॥ रे मन मेरे तूं ता कउ आहि ॥ जा कै ऊणा कछहू नाहि ॥ १ ॥ हरि सा प्रीतमु करि मन मीत ॥ प्रान अधारु राखहु सद चीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रे मन मेरे तूं ता कउ सेवि ॥ आदि पुरख अपरंपर देव ॥ २ ॥ तिसु ऊपरि मन करि तूं आसा ॥ आदि जुगादि जा का भरवासा ॥ ३ ॥ जा की प्रीति सदा सुखु होइ ॥ नानकु गावै गुर मिलि सोइ ॥ ४ ॥ ३९ ॥ १०८ ॥

हे मेरे मन! तू उस प्रभु के मिलन की लालसा कर, जिसके घर में किसी पदार्थ की कोई कमी नहीं है॥ १॥ हे मेरे मन! तू उस प्रियतम हरि को अपना मित्र बना। तू सदैव ही प्रभु को अपने हृदय में बसा कर रख, जो तेरे प्राणों का आधार है॥ १॥ रहाउ॥ हे मेरे मन! तू उसकी सेवा कर, जो आदिपुरुष एवं अपरंपार देव है॥ २॥ हे मेरे मन! तू उस पर अपनी आशा रख, जो आदि एवं युगों के आरम्भ से प्राणियों का सहारा है॥ ३॥ जिसके प्रेम से हमेशा सुख-शांति प्राप्त होती है, हे नानक! गुरु से मिलकर वह उसकी महिमा ही गायन करता है॥ ४॥ ३६॥ १०८॥

गउड़ी महला ५ ॥ मीतु करै सोई हम माना ॥ मीत के करतब कुसल समाना ॥ १ ॥ एका टेक मेरै मनि चीत ॥ जिसु किछु करणा सु हमरा मीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मीतु हमारा बेपरवाहा ॥ गुर किरपा ते मोहि असनाहा ॥ २ ॥ मीतु हमारा अंतरजामी ॥ समरथ पुरखु पारब्रहमु सुआमी ॥ ३ ॥ हम दासे तुम ठाकुर मेरे ॥ मानु महतु नानक प्रभु तेरे ॥ ४ ॥ ४० ॥ १०६ ॥

जो कुछ मेरा मित्र (प्रभु) करता है, उसको मैं सहर्ष स्वीकार करता हूँ। मेरे मित्र प्रभु के कार्य मुझे सुख के तुल्य प्रतीत होते हैं॥ १॥ मेरे मन एवं चित्त में एक ही प्रभु का सहारा है, जिसकी यह सब रचना है, वही मेरा मित्र-प्रभु है॥१॥ रहाउ॥ मेरा मित्र प्रभु बेपरवाह है। गुरु की दया से मेरा उससे प्रेम हो गया है॥ २॥ मेरा मित्र प्रभु अन्तर्यामी है। पारब्रह्म पुरुष रूप एवं सारे जगत् का स्वामी है और सब कुछ करने में समर्थ है॥ ३॥ हे प्रभु! मैं तेरा दास हूँ और तू मेरा ठाकुर है। नानक का कथन है कि हे दयालु परमात्मा! मुझे प्रतिष्ठा एवं मान-सम्मान तेरा ही दिया हुआ है॥४॥ ४०॥ १०६॥

गउड़ी महला ५ ॥ जा कउ तुम भए समरथ अंगा ॥ ता कउ कछु नाही कालंगा ॥ १ ॥ माधउ जा कउ है आस तुमारी ॥ ता कउ कछु नाही संसारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै हिरदै ठाकुरु होइ ॥ ता कउ सहसा नाही कोइ ॥ २ ॥ जा कउ तुम दीनी प्रभ धीर ॥ ता कै निकटि न आवै पीर ॥ ३ ॥ कहु नानक मै सो गुरु पाइआ ॥ पारब्रहम पूरन देखाइआ ॥ ४ ॥ ४१ ॥ ११० ॥

हे सर्वशक्तिमान स्वामी! तू जिस व्यक्ति की सहायता करता है, उसे कोई भी कलंक नहीं लग सकता॥ १॥ हे माधो! जिसकी आशा तुझ में है, उसे संसार की तृष्णा लेशमात्र भी नहीं रहती॥ १॥ रहाउ॥ जिसके हृदय में जगत् का ठाकुर निवास करता है, उसको कोई भी दुःख-दर्द स्पर्श नहीं कर सकता॥ २॥ हे सर्वेश्वर प्रभु! जिसे तू अपना धैर्य प्रदान करता है, उसके निकट कोई भी पीड़ा नहीं आती॥ ३॥ हे नानक! मुझे वह गुरु प्राप्त हुआ है, जिसने मुझे पूर्ण पारब्रह्म प्रभु के दर्शन करवा दिए हैं॥ ४॥ ४१॥ ११०॥

गउड़ी महला ५ ॥ दुलभ देह पाई वडभागी ॥ नामु न जपहि ते आतम घाती ॥ १ ॥ मरि न जाही जिना बिसरत राम ॥ नाम बिहून जीवन कउन काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खात पीत खेलत हसत बिसथार ॥ कवन अरथ मिरतक सीगार ॥ २ ॥ जो न सुनहि जसु परमानंदा ॥ पसु पंखी त्रिगद जोनि ते मंदा ॥ ३ ॥ कहु नानक गुरि मंतु दिड़ाइआ ॥ केवल नामु रिद माहि समाइआ ॥ ४ ॥ ४२ ॥ १११ ॥

यह दुर्लभ मानव-देहि सौभाग्य से प्राप्त हुई है। जो ईश्वर का नाम-स्मरण नहीं करते, वे आत्मघाती हैं॥ १॥ जो व्यक्ति राम को विस्मृत करते हैं, वह मृत्यु को क्यों नहीं प्राप्त होते? नाम के बिना यह जीवन किस काम का है॥ १॥ रहाउ॥ खाना-पीना, खेलना-हँसना इत्यादि साधन आडम्बर हैं, क्योंकि यह मृतक को आभूषणों से सज्जित करने के समान हैं॥ २॥ जो व्यक्ति परमानंद प्रभु का यश नहीं सुनता, वह पशु-पक्षियों, रेंगने वाले जीवों की योनियों से भी बुरा है॥ ३॥ हे नानक! गुरु ने मेरे भीतर नाम मंत्र सुदृढ़ कर दिया है। केवल नाम ही मेरे हृदय में लीन रहता है॥ ४॥ ४२॥ १११॥

गउड़ी महला ५ ॥ का की माई का को बाप ॥ नाम धारीक झूठे सभि साक ॥ १ ॥ काहे कउ मूरख भखलाइआ ॥ मिलि संजोगि हुकमि तूं आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एका माटी एका जोति ॥ एको पवनु कहा कउनु रोति ॥ २ ॥ मेरा मेरा करि बिललाही ॥ मरणहारु इहु जीअरा नाही ॥ ३ ॥ कहु नानक गुरि खोले कपाट ॥ मुकतु भए बिनसे भ्रम थाट ॥ ४ ॥ ४३ ॥ ११२ ॥

न कोई किसी की माता है और न कोई किसी का पिता है। ये सारे रिश्ते नाममात्र एवं झूठे हैं॥ १॥ हे मूर्ख! तू किसके लिए दुहाई दे रहा है? भगवान के हुक्म एवं संयोगवश तू इस दुनिया में आया है॥ १॥ रहाउ॥ समस्त प्राणियों में एक ही मिट्टी है और एक ही ब्रह्म-ज्योति है। सब में एक ही प्राण है, जिसके द्वारा जीव श्वास लेते एवं जीवित रहते हैं। अतः किसी के दुनिया से चले जाने से हम क्यों विलाप करें?॥ २॥ लोग 'मेरा मेरा' कहकर विलाप करते हैं। परन्तु यह आत्मा नाशवंत नहीं॥ ३॥ हे नानक! गुरु ने जिनके कपाट खोल दिए हैं, वे मुक्त हो गए हैं और उनका भ्रम का प्रसार नाश हो गया है॥ ४॥ ४३॥ ११२॥

गउड़ी महला ५ ॥ वडे वडे जो दीसहि लोग ॥ तिन कउ बिआपै चिंता रोग ॥ १ ॥ कउन वडा माइआ वडिआई ॥ सो वडा जिनि राम लिव लाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भूमीआ भूमि ऊपरि नित लुझै ॥ छोडि चलै त्रिसना नही बुझै ॥ २ ॥ कहु नानक इहु ततु बीचारा ॥ बिनु हरि भजन नाही छुटकारा ॥ ३ ॥ ४४ ॥ ११३ ॥

जितने भी बड़े-बड़े (धनवान) लोग दिखाई देते हैं, उनको चिन्ता का रोग लगा रहता है॥ १॥ माया की प्रशंसा के कारण कोई भी मनुष्य बड़ा नहीं बनता? वही महान है जिसने राम से वृत्ति लगाई है॥ १॥ रहाउ॥ भूमि का स्वामी मनुष्य भूमि के लिए दूसरों से लड़ाई-झगड़ा करता है। लेकिन जिसकी खातिर वह लड़ता है, वह सारी भूमि यहीं छोड़कर चला जाता है परन्तु उसकी तृष्णा नहीं मिटती॥ २॥ हे नानक! वास्तविक बात जिस पर मैंने विचार किया है, वह यह है कि भगवान के भजन के बिना किसी को भी मुक्ति नहीं मिलती॥ ३॥ ४४॥ ११३॥

गउड़ी महला ५ ॥ पूरा मारगु पूरा इसनानु ॥ सभु किछु पूरा हिरदै नामु ॥ १ ॥ पूरी रही जा पूरै राखी ॥ पारब्रहम की सरणि जन ताकी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरा सुखु पूरा संतोखु ॥ पूरा तपु पूरन राजु जोगु ॥ २ ॥ हरि कै मारगि पतित पुनीत ॥ पूरी सोभा पूरा लोकीक ॥ ३ ॥ करणहारु सद वसै हदूरा ॥ कहु नानक मेरा सतिगुरु पूरा ॥ ४ ॥ ४५ ॥ ११४ ॥

जिस व्यक्ति के हृदय में नाम का निवास हो जाता है, उसका सब कुछ पूर्ण हो जाता है। प्रभु लब्धि हेतु नाम-मार्ग पूर्ण सही है और नाम-सिमरन ही पूर्ण तीर्थ-स्नान है॥ १॥ जब सेवक ने अपने स्वामी पारब्रह्म की शरण ली तो उस पूर्ण ब्रह्म ने उसकी पूर्ण प्रतिष्ठा रख ली॥ १॥ रहाउ॥ सेवक को पूर्ण सुख एवं पूर्ण संतोष प्राप्त हो गया है। नाम-सिमरन ही पूर्ण तपस्या और पूर्ण राज योग है॥२॥ भगवान के मार्ग पर चलने वाला पापी भी पवित्र हो जाता है और वह लोक-परलोक में पूर्ण शोभा प्राप्त करता है तथा लोगों से उसका व्यवहार भी अच्छा हो जाता है॥३॥ सृजनहार प्रभु सदैव उसके निकट वास करता है। हे नानक! मेरा सतिगुरु पूर्ण है॥ ४॥ ४५॥ ११४॥

गउड़ी महला ५ ॥ संत की धूरि मिटे अघ कोट ॥ संत प्रसादि जनम मरण ते छोट ॥ १ ॥ संत का दरसु पूरन इसनानु ॥ संत क्रिपा ते जपीऐ नामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत कै संगि मिटिआ अहंकारु ॥ द्रिसटि आवै सभु एकंकारु ॥ २ ॥ संत सुप्रसंन आए वसि पंचा ॥ अंम्रितु नामु रिदै लै संचा ॥ ३ ॥ कहु नानक जा का पूरा करम ॥ तिसु भेटे साधू के चरन ॥ ४ ॥ ४६ ॥ ११५ ॥

संतों की चरण–धूलि से करोड़ों ही पाप मिट जाते हैं। संतों की कृपा से जन्म–मरण से मुक्ति हो जाती है॥ १॥ संतों के दर्शन ही पूर्ण तीर्थ स्नान है। संतों की कृपा से हरिनाम का जाप किया जाता है॥ १॥ रहाउ॥ संतों की संगति से मनुष्य का अहंत्व मिट जाता है और फिर सर्वत्र एक ईश्वर ही दृष्टिगोचर होता है॥ २॥ संतों की सुप्रसन्नता से पाँच विकार–(काम, क्रोध, लोभ, मोह–अहंकार) वश में आ जाते हैं। मनुष्य अपने हृदय को अमृत नाम से संचित कर लेता है॥ ३॥ हे नानक! जिसकी किस्मत पूर्ण है, वही संतों के चरण स्पर्श करता है॥ ४॥ ४६॥ ११५॥

गउड़ी महला ५ ॥ हरि गुण जपत कमलु परगासै ॥ हरि सिमरत त्रास सभ नासै ॥ १ ॥ सा मति पूरी जितु हरि गुण गावै ॥ वडै भागि साधू संगु पावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगि पाईऐ निधि नामा ॥ साधसंगि पूरन सभि कामा ॥ २ ॥ हरि की भगति जनमु परवाणु ॥ गुर किरपा ते नामु वखाणु ॥ ३ ॥ कहु नानक सो जनु परवानु ॥ जा कै रिदै वसै भगवानु ॥ ४ ॥ ४७ ॥ ११६ ॥

भगवान की महिमा–स्तुति करने से हृदय–कमल प्रफुल्लित हो जाता है। भगवान का सिमरन करने से समस्त भय नाश हो जाते हैं॥ १॥ वही मति पूर्ण है, जिससे भगवान का यश गायन किया जाता है। संतों की संगति किस्मत से ही मिलती है॥ १॥ रहाउ॥ संतों की संगति करने से नाम–निधि प्राप्त हो जाती है। संतों की संगति करने से समस्त कार्य सफल हो जाते हैं॥ २॥ भगवान की भक्ति करने से मनुष्य का जन्म सफल हो जाता है। गुरु की कृपा से प्रभु का नाम सिमरन होता है॥ ३॥ हे नानक! जिस मनुष्य के हृदय में भगवान का निवास हो जाता है, वह सत्य के दरबार में स्वीकार हो जाता है॥ ४॥ ४७॥ ११६॥

गउड़ी महला ५ ॥ एकसु सिउ जा का मनु राता ॥ विसरी तिसै पराई ताता ॥ १ ॥ बिनु गोबिंद न दीसै कोई ॥ करन करावन करता सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनहि कमावै मुखि हरि हरि बोलै ॥ सो जनु इत उत कतहि न डोलै ॥ २ ॥ जा कै हरि धनु सो सचु साहु ॥ गुरि पूरै करि दीनो विसाहु ॥ ३ ॥ जीवन पुरखु मिलिआ हरि राइआ ॥ कहु नानक परम पदु पाइआ ॥ ४ ॥ ४८ ॥ ११७ ॥

जिस व्यक्ति का मन एक ईश्वर के प्रेम में मग्न हो जाता है, वह दूसरों से ईर्ष्या–द्वेष करना भूल जाता है॥ १॥ उसे गोविन्द के अलावा दूसरा कोई नहीं दिखाई देता। उसे ज्ञान हो जाता है कि जगत् का कर्त्ता स्वयं ही सबकुछ करने वाला एवं जीवों से कराने वाला है॥ १॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति एकाग्रचित होकर नाम–सिमरन की साधना करता है और अपने मुख से हरि–परमेश्वर का नाम बोलता रहता है, वह लोक–परलोक में कहीं भी डगमगाता नहीं॥ २॥ जिस मनुष्य के पास हरि नाम रूपी धन है, वही सच्चा साहूकार है। पूर्ण गुरु ने उसकी प्रतिष्ठा बना दी है॥ ३॥ उसे जीवन पुरुष हरि–परमेश्वर मिल जाता है। हे नानक! इस तरह वह परम पद प्राप्त कर लेता है॥ ४॥ ४८॥ ११७॥

गउड़ी महला ५ ॥ नामु भगत कै प्रान अधारु ॥ नामो धनु नामो बिउहारु ॥ १ ॥ नाम वडाई जनु सोभा पाए ॥ करि किरपा जिसु आपि दिवाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु भगत कै सुख असथानु ॥ नाम रतु सो भगतु परवानु ॥ २ ॥ हरि का नामु जन कउ धारै ॥ सासि सासि जनु नामु समारै ॥ ३ ॥ कहु नानक जिसु पूरा भागु ॥ नाम संगि ता का मनु लागु ॥ ४ ॥ ४९ ॥ ११८ ॥

प्रभु का नाम ही उसके भक्त के प्राणों का आधार है। नाम ही उसका धन है, नाम ही उसका व्यापार है॥ १॥ नाम द्वारा भक्त प्रशंसा एवं शोभा प्राप्त करता है। लेकिन यह नाम उसे ही प्राप्त होता है, जिसको प्रभु स्वयं कृपा करके दिलवाता है॥ १॥ रहाउ॥ नाम भक्त की सुख–शांति का निवास है।

जो भक्त नाम में मग्न रहता है, वह स्वीकार हो जाता है॥ २॥ हरि का नाम उसके सेवक को आधार प्रदान करता है। श्वास-श्वास से ईश्वर का सेवक नाम-सिमरन करता रहता है॥ ३॥ हे नानक! जिस व्यक्ति की किस्मत अच्छी होती है, उसका ही मन नाम से लगा रहता है॥४॥४६॥११८॥

गउड़ी महला ५ ॥ संत प्रसादि हरि नामु धिआइआ ॥ तब ते धावतु मनु त्रिपताइआ ॥ १ ॥ सुख बिस्रामु पाइआ गुण गाइ ॥ सभु मिटिआ मेरी हती बलाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन कमल अराधि भगवंता ॥ हरि सिमरन ते मिटी मेरी चिंता ॥ २ ॥ सभ तजि अनाथु एक सरणि आइओ ॥ ऊच असथानु तब सहजे पाइओ ॥ ३ ॥ दूखु दरदु भरमु भउ नसिआ ॥ करणहारु नानक मनि बसिआ ॥ ४ ॥ ५० ॥ ११६ ॥

संत की कृपा से जब से मैंने भगवान के नाम का ध्यान किया है, तब से मेरा विकारों की ओर भटकता हुआ मन तृप्त हो गया है॥ १॥ प्रभु की गुणस्तुति करने से मुझे सुख का विश्राम प्राप्त हो गया है। मेरी पीड़ा दूर हो गई है और मेरे कुकर्मों का दैत्य नष्ट हो गया है॥ १॥ रहाउ॥ हे भाई! भगवान के चरण-कमलों का चिन्तन कर। हरि का सिमरन करने से मेरी चिन्ता मिट गई है॥ २॥ मैं अनाथ सब सहारों को त्याग चुका हूँ और एक ईश्वर की शरणागत हूँ। तब से मैंने सर्वोच्च स्थान को सहज ही प्राप्त कर लिया है॥ ३॥ मेरे दुःख-दर्द, भ्रम-भय नाश हो गए हैं। हे नानक! सृजनहार प्रभु ने हृदय में निवास कर लिया है॥ ४॥ ५०॥ ११६॥

गउड़ी महला ५ ॥ कर करि टहल रसना गुण गावउ ॥ चरन ठाकुर कै मारगि धावउ ॥ १ ॥ भलो समो सिमरन की बरीआ ॥ सिमरत नामु भै पारि उतरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नेत्र संतन का दरसनु पेखु ॥ प्रभ अविनासी मन महि लेखु ॥ २ ॥ सुणि कीरतनु साध पहि जाइ ॥ जनम मरण की त्रास मिटाइ ॥ ३ ॥ चरण कमल ठाकुर उरि धारि ॥ दुलभ देह नानक निसतारि ॥ ४ ॥ ५१ ॥ १२० ॥

मैं अपने हाथों से प्रभु की सेवा करता हूँ और मुख से उसकी गुणस्तुति करता हूँ। चरणों से मैं ठाकुर के मार्ग का अनुसरण करता हूँ॥ १॥ जीवन का वह समय बड़ा शुभ है, जिसमें भगवान का सिमरन करने का अवसर मिलता है। भगवान का नाम-सिमरन करने से भयानक सागर से पार हुआ जा सकता है॥ १॥ रहाउ॥ हे भाई! अपने नेत्रों से संतों के दर्शन कर। अविनाशी प्रभु को अपने हृदय में धारण कर ले॥ २॥ संतों के पास जाकर ईश्वर का भजन सुन और इस प्रकार तेरा जन्म-मरण का भय दूर हो जाएगा॥ ३॥ हे भाई! ठाकुर जी के सुन्दर चरणों को अपने हृदय में बसाकर रख। हे नानक! इस तरह अपने अमूल्य मानव शरीर का कल्याण कर ले॥ ४॥ ५१॥ १२०॥

गउड़ी महला ५ ॥ जा कउ अपनी किरपा धारै ॥ सो जनु रसना नामु उचारै ॥ १ ॥ हरि बिसरत सहसा दुखु बिआपै ॥ सिमरत नामु भरमु भउ भागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि कीरतनु सुणै हरि कीरतनु गावै ॥ तिसु जन दूखु निकटि नही आवै ॥ २ ॥ हरि की टहल करत जनु सोहै ॥ ता कउ माइआ अगनि न पोहै ॥ ३ ॥ मनि तनि मुखि हरि नामु दइआल ॥ नानक तजीअले अवरि जंजाल ॥ ४ ॥ ५२ ॥ १२१ ॥

जिस व्यक्ति पर ईश्वर अपनी कृपा धारण करता है, वह अपनी रसना से भगवान के नाम का जाप करता है॥ १॥ हरि को विस्मृत करके सन्देह एवं दुख प्राणी को लग जाते हैं। लेकिन नाम-सिमरन करने से भ्रम एवं भय भाग जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति ईश्वर का भजन सुनता है और ईश्वर का भजन गाता है, उस व्यक्ति के निकट कोई भी मुसीबत नहीं आती॥ २॥ ईश्वर का

सेवक उसकी सेवा करता हुआ सुन्दर लगता है। उसे माया की अग्नि स्पर्श नहीं करती॥ ३॥ हे नानक! दया के घर ईश्वर का नाम जिस व्यक्ति के हृदय एवं मुख में वास कर जाता है, उस व्यक्ति ने दूसरे समस्त जंजाल त्याग दिए हैं॥ ४॥ ५२॥ १२१॥

गउड़ी महला ५ ॥ छाडि सिआनप बहु चतुराई ॥ गुर पूरे की टेक टिकाई ॥ १ ॥ दुख बिनसे सुख हरि गुण गाइ ॥ गुरु पूरा भेटिआ लिव लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि का नामु दीओ गुरि मंतु ॥ मिटे विसूरे उतरी चिंत ॥ २ ॥ अनद भए गुर मिलत क्रिपाल ॥ करि किरपा काटे जम जाल ॥ ३ ॥ कहु नानक गुरु पूरा पाइआ ॥ ता ते बहुरि न बिआपै माइआ ॥ ४ ॥ ५३ ॥ १२२ ॥

हे भाई! अपनी बुद्धिमता एवं अधिक चतुरता को त्याग कर पूर्ण गुरु की शरण ले॥ १॥ जिस व्यक्ति की पूर्ण गुरु से भेंट हो जाती है, वह गुरु की कृपा से भगवान में ही सुरति लगाता है। ऐसा व्यक्ति भगवान का गुणानुवाद करता हुआ सुखी हो जाता है और उसके तमाम दुख नाश हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ गुरु ने मुझे ईश्वर के नाम का मंत्र प्रदान किया है, जिससे मेरी चिन्ताएँ मिट गई हैं और व्याकुलता दूर हो गई है॥ २॥ कृपा के घर गुरु को मिलने से आनन्द प्राप्त हो गया है। अपनी कृपा धारण करके गुरु ने यमदूतों का फँदा काट दिया है॥ ३॥ हे नानक! मैंने पूर्ण गुरु को पा लिया है, इसलिए माया मुझे पुनः पीड़ित नहीं करेगी॥ ४॥ ५३॥ १२२॥

गउड़ी महला ५ ॥ राखि लीआ गुरि पूरै आपि ॥ मनमुख कउ लागो संतापु ॥ १ ॥ गुरू गुरू जपि मीत हमारे ॥ मुख ऊजल होवहि दरबारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर के चरण हिरदै वसाइ ॥ दुख दुसमन तेरी हतै बलाइ ॥ २ ॥ गुर का सबदु तेरै संगि सहाई ॥ दइआल भए सगले जीअ भाई ॥ ३ ॥ गुरि पूरै जब किरपा करी ॥ भनति नानक मेरी पूरी परी ॥ ४ ॥ ५४ ॥ १२३ ॥

पूर्ण गुरु ने स्वयं मेरी रक्षा की है। लेकिन स्वेच्छाचारी पर मुसीबतों का पहाड़ उमड़ पड़ा है॥ १॥ हे मेरे मित्र! गुरु को हमेशा स्मरण कर। प्रभु के दरबार में तेरा मुख उज्ज्वल होगा॥ १॥ रहाउ॥ हे मित्र! तू गुरु के चरण अपने हृदय में बसा, तेरा दुःख, शत्रु एवं आपदा नष्ट हो जाएँगे॥ २॥ गुरु का शब्द ही तेरा साथी एवं सहायक है। हे भाई! सभी लोग तुझ पर दयालु होंगे॥ ३॥ हे नानक! जब पूर्ण गुरु ने अपनी कृपा-दृष्टि की, तो मेरा जीवन परिपूर्ण हो गया॥ ४॥ ५४॥ १२३॥

गउड़ी महला ५ ॥ अनिक रसा खाए जैसे ढोर ॥ मोह की जेवरी बाधिओ चोर ॥ १ ॥ मिरतक देह साधसंग बिहूना ॥ आवत जात जोनी दुख खीना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक बसत्र सुंदर पहिराइआ ॥ जिउ डरना खेत माहि डराइआ ॥ २ ॥ सगल सरीर आवत सभ काम ॥ निहफल मानुखु जपै नही नाम ॥ ३ ॥ कहु नानक जा कउ भए दइआला ॥ साधसंगि मिलि भजहि गोपाला ॥ ४ ॥ ५५ ॥ १२४ ॥

मनुष्य अधिकतर स्वादिष्ट पदार्थ पशु की भाँति सेवन करता है और सांसारिक मोह की रस्सी से वह चोर की भाँति जकड़ा रहता है॥ १॥ हे भाई! जो व्यक्ति संतों की संगति से विहीन रहता है, उसका शरीर मृतक है। ऐसा व्यक्ति योनियों में फँसकर आवागमन करता रहता है और दुख से नष्ट हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ मनुष्य मोहवश विभिन्न प्रकार की सुन्दर पोशाकें धारण करता है, परन्तु निर्धनों के लिए वह ऐसा होता है जैसे फसल में पशुओं को डराने के लिए बनावटी रक्षक खड़ा किया होता है॥ २॥ दूसरे पशुओं इत्यादि के शरीर काम आ जाते हैं। लेकिन जो व्यक्ति भगवान के नाम का जाप नहीं करता, उसका दुनिया में आगमन निष्फल हो जाता है॥ ३॥ हे नानक! भगवान जिस व्यक्ति पर दयालु हो जाता है, वह संतों की संगति में शामिल होकर गोपाल का भजन करता रहता है॥ ४॥ ५५॥ १२४॥

गउड़ी महला ५ ॥ कलि कलेस गुर सबदि निवारे ॥ आवण जाण रहे सुख सारे ॥ १ ॥ भै बिनसे निरभउ हरि धिआइआ ॥ साधसंगि हरि के गुण गाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन कवल रिद अंतरि धारे ॥ अगनि सागर गुरि पारि उतारे ॥ २ ॥ बूडत जात पूरै गुरि काढे ॥ जनम जनम के टूटे गाढे ॥ ३ ॥ कहु नानक तिसु गुर बलिहारी ॥ जिसु भेटत गति भई हमारी ॥ ४ ॥ ५६ ॥ १२५ ॥

गुरु की वाणी मानसिक क्लेश एवं कष्टों को दूर कर देती है। गुरु की वाणी के फलस्वरूप जन्म–मरण का चक्र मिट जाता है और सर्व सुख प्राप्त हो जाते हैं॥ १॥ निडर ईश्वर का ध्यान करने से मेरा भय दूर हो गया है। संतों की संगति में मैं ईश्वर की गुणस्तुति करता रहता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ ईश्वर के चरण कमल मैंने अपने हृदय में टिका लिए हैं। गुरु ने मुझे तृष्णा के अग्नि सागर से पार कर दिया है॥ २॥ मैं भवसागर में डूब रहा था परन्तु पूर्ण गुरु ने मेरी रक्षा की है। गुरु ने मुझे प्रभु से मिला दिया है, जिससे मैं जन्म–जन्मांतरों से बिछुड़ा हुआ था॥ ३॥ हे नानक! मैं उस गुरु पर बलिहारी जाता हूँ, जिनको मिलने से मेरी मुक्ति हो गई है॥ ४॥ ५६॥ १२५॥

गउड़ी महला ५ ॥ साधसंगि ता को सरनी परहु ॥ मनु तनु अपना आगै धरहु ॥ १ ॥ अंम्रित नामु पीवहु मेरे भाई ॥ सिमरि सिमरि सभ तपति बुझाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तजि अभिमानु जनम मरणु निवारहु ॥ हरि के दास के चरण नमसकारहु ॥ २ ॥ सासि सासि प्रभु मनहि समाले ॥ सो धनु संचहु जो चाले नाले ॥ ३ ॥ तिसहि परापति जिसु मसतकि भागु ॥ कहु नानक ता की चरणी लागु ॥ ४ ॥ ५७ ॥ १२६ ॥

हे भाई! संतों की सभा में उसकी शरण में पड़ो। अपना मन एवं तन ईश्वर के समक्ष समर्पित कर दो॥ १॥ हे मेरे भाई! अमृत रूपी नाम पान करो। प्रभु की स्तुति एवं आराधना करने से मोह–माया की अग्नि पूर्णतया बुझ जाती है॥ १॥ रहाउ॥ अपना अभिमान त्याग कर अपने जन्म–मरण को समाप्त कर लो। ईश्वर के सेवक के चरणों पर प्रणाम करो॥ २॥ श्वास–श्वास से अपने मन में प्रभु स्मरण कर लो। हे भाई! वह नाम धन संचित करो जो तेरे साथ परलोक में जाएगा॥ ३॥ केवल वही व्यक्ति नाम धन को पाता है, जिसके मस्तक पर विधाता द्वारा भाग्यरेखाएँ विद्यमान होती हैं। हे नानक! तू उसके चरणों पर झुक॥ ४॥ ५७॥ १२६॥

गउड़ी महला ५ ॥ सूके हरे कीए खिन माहे ॥ अंम्रित द्रिसटि संचि जीवाए ॥ १ ॥ काटे कसट पूरे गुरदेव ॥ सेवक कउ दीनी अपुनी सेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिटि गई चिंत पुनी मन आसा ॥ करी दइआ सतिगुरि गुणतासा ॥ २ ॥ दुख नाठे सुख आइ समाए ॥ ढील न परी जा गुरि फुरमाए ॥ ३ ॥ इछ पुनी पूरे गुर मिले ॥ नानक ते जन सुफल फले ॥ ४ ॥ ५८ ॥ १२७ ॥

नीरस (सूखों) को गुरदेव क्षण में ही हरा–भरा कर देता है। उसकी अमृत रूपी दृष्टि उनको सींच कर पुनर्जीवित कर देती है॥ १॥ पूर्ण गुरदेव ने मेरे कष्ट दूर कर दिए हैं। अपने सेवक को वह अपनी सेवा प्रदान करता है॥ १॥ रहाउ॥ जब से गुणों के भण्डार, सतिगुरु ने अपनी दया धारण की है, मेरी चिन्ता मिट गई है और मनोकामनाएँ पूर्ण हो गई हैं॥ २॥ जब गुरु जी आज्ञा करते हैं, दुख दौड़ जाते हैं और सुख आकर उसका स्थान ले लेता है। इसमें कोई देरी नहीं लगती॥ ३॥ हे नानक! जिन पुरुषों को पूर्ण गुरु जी मिल जाते हैं, उनकी तमाम इच्छाएँ पूरी हो जाती हैं और वे श्रेष्ठ फलों से प्रफुल्लित हो जाते हैं॥ ४॥ ५८॥ १२७॥

गउड़ी महला ५ ॥ ताप गए पाई प्रभि सांति ॥ सीतल भए कीनी प्रभ दाति ॥ १ ॥ प्रभ किरपा ते भए सुहेले ॥ जनम जनम के बिछुरे मेले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरत सिमरत प्रभ का नाउ ॥ सगल रोग का बिनसिआ थाउ ॥ २ ॥ सहजि सुभाइ बोलै हरि बाणी ॥ आठ पहर प्रभ सिमरहु प्राणी ॥ ३ ॥ दूखु दरदु जमु नेड़ि न आवै ॥ कहु नानक जो हरि गुन गावै ॥ ४ ॥ ५६ ॥ १२८ ॥

जिन्हें प्रभु ने नाम की देन प्रदान की है, वे सभी शीतल हो गए हैं। प्रभु ने उन्हें ऐसी सुख–शांति प्रदान की है कि उनका ताप दूर हो गया है॥ १॥ प्रभु की कृपा से हम सुखी हो गए हैं। जन्म–जन्मांतरों के बिछुड़े हुओं को ईश्वर ने मिला दिया है॥ १॥ रहाउ॥ ईश्वर के नाम की स्तुति–आराधना करने से समस्त रोगों का स्थान नष्ट हो गया है॥ २॥ वह सहज स्वभाव हरि की वाणी बोलता रहता है। हे प्राणी! दिन के आठ प्रहर ही प्रभु का सिमरन करो। हे नानक! जो व्यक्ति ईश्वर का यशोगान करता है, दुख–दर्द एवं यमदूत उसके निकट नहीं आते॥ ४॥ ५६॥ १२८॥

गउड़ी महला ५ ॥ भले दिनस भले संजोग ॥ जितु भेटे पारब्रहम निरजोग ॥ १ ॥ ओह बेला कउ हउ बलि जाउ ॥ जितु मेरा मनु जपै हरि नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सफल मूरतु सफल ओह घरी ॥ जितु रसना उचरै हरि हरी ॥ २ ॥ सफलु ओहु माथा संत नमसकारसि ॥ चरण पुनीत चलहि हरि मारगि ॥ ३ ॥ कहु नानक भला मेरा करम ॥ जितु भेटे साधू के चरन ॥ ४ ॥ ६० ॥ १२६ ॥

वह दिन बड़ा शुभ है और वह संयोग भी भला है, जब मुझे निर्लिप्त पारब्रह्म मिला॥ १॥ उस समय पर मैं बलिहारी जाता हूँ, जब मेरा मन ईश्वर के नाम की आराधना करता है॥ १॥ रहाउ॥ वह मुहूर्त सफल है और वह घड़ी भी सफल है, जब मेरी रसना हरि–प्रभु का नाम उच्चरित करती है॥ २॥ वह मस्तक भाग्यवान है जो संतों के समक्ष नतमस्तक होता है। वह चरण पवित्र हैं जो प्रभु–मार्ग का अनुसरण करते हैं॥ ३॥ हे नानक! मेरा भाग्य भला है, जिसके फलस्वरूप मैं संतों के चरणाश्रय लगा॥ ४॥ ६०॥ १२६॥

गउड़ी महला ५ ॥ गुर का सबदु राखु मन माहि ॥ नामु सिमरि चिंता सभ जाहि ॥ १ ॥ बिनु भगवंत नाही अन कोइ ॥ मारै राखै एको सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर के चरण रिदै उरि धारि ॥ अगनि सागरु जपि उतरहि पारि ॥ २ ॥ गुर मूरति सिउ लाइ धिआनु ॥ ईहा ऊहा पावहि मानु ॥ ३ ॥ सगल तिआगि गुर सरणी आइआ ॥ मिटे अंदेसे नानक सुखु पाइआ ॥ ४ ॥ ६१ ॥ १३० ॥

गुरु का शब्द अपने मन में धारण करो। प्रभु का नाम–सिमरन करने से समस्त चिन्ताएँ मिट जाती हैं॥ १॥ भगवान के अलावा प्राणी का दूसरा कोई नहीं। एक भगवान ही जीवों की रक्षा करता और नाश करता है॥ १॥ रहाउ॥ गुरु के चरणों को अपने हृदय में बसाओ। अग्नि का सागर तू परमेश्वर का स्मरण करने से पार कर लेगा॥ २॥ गुरु के स्वरूप पर ध्यान लगाने से तुझे लोक–परलोक में बड़ा सम्मान प्राप्त होगा॥ ३॥ हे नानक! सब कुछ त्यागकर उसने गुरु की शरण ली है और उसकी चिंताएँ मिट गई हैं एवं आत्मिक सुख प्राप्त हो गया है॥ ४॥ ६१॥ १३०॥

गउड़ी महला ५ ॥ जिसु सिमरत दूखु सभु जाइ ॥ नामु रतनु वसै मनि आइ ॥ १ ॥ जपि मन मेरे गोविंद की बाणी ॥ साधू जन रामु रसन वखाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इकसु बिनु नाही दूजा कोइ ॥ जा की द्रिसटि सदा सुखु होइ ॥ २ ॥ साजनु मीतु सखा करि एकु ॥ हरि हरि अखर मन महि लेखु ॥ ३ ॥ रवि रहिआ सरबत सुआमी ॥ गुण गावै नानकु अंतरजामी ॥ ४ ॥ ६२ ॥ १३१ ॥

जिसका सिमरन करने से समस्त दुःख मिट जाते हैं और नाम–रत्न मन में आकर बस जाता है॥ १॥ हे मेरे मन! उस गोविन्द की वाणी का जाप कर। संतजन तो अपनी रसना से राम का ही

गुणानुवाद करते रहते हैं॥ १॥ रहाउ॥ दुनिया में एक ईश्वर के सिवाय दूसरा कोई नहीं। उसकी कृपादृष्टि से सदैव सुख प्राप्त हो जाता है॥ २॥ हे मेरे मन! एक ईश्वर को अपना मित्र, सखा एवं साथी बना। अपने हृदय में हरि–परमेश्वर की गुणस्तुति का अक्षर लिख ले॥ ३॥ इस जगत् का स्वामी हर जगह मौजूद है। हे नानक! वह तो अन्तर्यामी प्रभु का ही यशोगान करता रहता है?॥ ४॥ ॥ ६२॥ १३१॥

गउड़ी महला ५ ॥ भै महि रचिओ सभु संसारा ॥ तिसु भउ नाही जिसु नामु अधारा ॥ १ ॥ भउ न विआपै तेरी सरणा ॥ जो तुधु भावै सोई करणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोग हरख महि आवण जाणा ॥ तिनि सुखु पाइआ जो प्रभ भाणा ॥ २ ॥ अगनि सागरु महा विआपै माइआ ॥ से सीतल जिन सतिगुरु पाइआ ॥ ३ ॥ राखि लेइ प्रभु राखनहारा ॥ कहु नानक किआ जंत विचारा ॥ ४ ॥ ६३ ॥ १३२ ॥

सारा जगत् (किसी न किसी) भय में दबा हुआ रहता है। जिस व्यक्ति को भगवान के नाम का आधार मिल जाता है, उसे कोई भय नहीं॥ १॥ हे प्रभु! जो तेरी शरण में आता है, उसे कोई भय नहीं लगता। हे प्रभु! तू वही करता है, जो तुझे लुभाता है॥ १॥ रहाउ॥ मनुष्य सुख एवं दुख में जन्मता–मरता रहता है। लेकिन जो ईश्वर को अच्छे लगते हैं, वह आत्मिक सुख पाते हैं॥ २॥ यह दुनिया तृष्णा की अग्नि का सागर है, जहाँ लोगों को माया प्रभावित करती रहती है। जिस व्यक्ति को सतिगुरु प्राप्त हो जाता है, वह माया में रहता हुआ भी शांत रहता है॥ ३॥ हे रक्षक प्रभु! हमारी रक्षा कीजिए। हे नानक! भय से बचने हेतु जीव बेचारा क्या कर सकता है?॥ ४॥ ६३॥ १३२॥

गउड़ी महला ५ ॥ तुमरी क्रिपा ते जपीऐ नाउ ॥ तुमरी क्रिपा ते दरगह थाउ ॥ १ ॥ तुझ बिनु पारब्रहम नही कोइ ॥ तुमरी क्रिपा ते सदा सुखु होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम मनि वसे तउ दूखु न लागै ॥ तुमरी क्रिपा ते भ्रमु भउ भागै ॥ २ ॥ पारब्रहम अपरंपर सुआमी ॥ सगल घटा के अंतरजामी ॥ ३ ॥ करउ अरदासि अपने सतिगुर पासि ॥ नानक नामु मिलै सचु रासि ॥ ४ ॥ ६४ ॥ १३३ ॥

हे प्रभु! तुम्हारी कृपा से ही नाम–स्मरण किया जा सकता है। तुम्हारी कृपा से ही तेरे दरबार में जीव को सम्मान मिलता है॥ १॥ हे पारब्रह्म प्रभु! तेरे सिवाय (जगत् में) दूसरा कोई नहीं। तुम्हारी कृपा से सदैव सुख प्राप्त हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ हे ठाकुर! यदि तू हृदय में बस जाए तो प्राणी को दुख नहीं लगता। तुम्हारी कृपा से भ्रम एवं भय दौड़ जाते हैं॥ २॥ हे अपरंपार पारब्रह्म प्रभु! हे जगत् के स्वामी! तू सबके दिलों का ज्ञाता है॥ ३॥ मैं नानक अपने गुरु के समक्ष विनती करता हूँ कि मुझे सत्य नाम की पूँजी की देन प्राप्त हो जाए॥ ४॥ ६४॥ १३३॥

गउड़ी महला ५ ॥ कण बिना जैसे थोथर तुखा ॥ नाम बिहून सूने से मुखा ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपहु नित प्राणी ॥ नाम बिहून धिगु देह बिगानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाम बिना नाही मुखि भागु ॥ भरत बिहून कहा सोहागु ॥ २ ॥ नामु बिसारि लगै अन सुआइ ॥ ता की आस न पूजै काइ ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभ अपनी दाति ॥ नानक नामु जपै दिन राति ॥ ४ ॥ ६५ ॥ १३४ ॥

जैसे अनाज के बिना भूसा शून्य है, वैसे ही वह मुख शून्य है जो नामविहीन है॥ १॥ हे नश्वर प्राणी! नित्य ही हरि–परमेश्वर का नाम–सिमरन करते रहो। प्रभु के नाम बिना यह शरीर धिक्कार योग्य है, जो पराया हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ नाम सिमरन के बिना चेहरा भाग्य से उदय नहीं होता। अपने पति के बिना सुहाग कहाँ है? ॥ २॥ जो व्यक्ति नाम को विस्मृत करके दूसरे रसों में लगा हुआ है, उसकी कोई भी आकांक्षा पूरी नहीं होती। नानक का कथन है कि हे प्रभु! जिस व्यक्ति को तू कृपा करके नाम की देन प्रदान करता है, वह दिन–रात तेरा नाम–सिमरन ही करता रहता है॥ ४॥ ६५॥ १३४॥

गउड़ी महला ५ ॥ तूं समरथु तूंहै मेरा सुआमी ॥ सभु किछु तुम ते तूं अंतरजामी ॥ १ ॥ पारब्रहम पूरन जन ओट ॥ तेरी सरणि उधरहि जन कोटि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जेते जीअ तेते सभि तेरे ॥ तुमरी क्रिपा ते सूख घनेरे ॥ २ ॥ जो किछु वरतै सभ तेरा भाणा ॥ हुकमु बूझै सो सचि समाणा ॥ ३ ॥ करि किरपा दीजै प्रभ दानु ॥ नानक सिमरै नामु निधानु ॥ ४ ॥ ६६ ॥ १३५ ॥

हे प्रभु ! तू सर्वशक्तिमान है और तू ही मेरा स्वामी है। हे ठाकुर ! तू अंतर्यामी है और इस दुनिया में सब कुछ तेरी प्रेरणा से ही हो रहा है॥ १॥ हे पूर्ण पारब्रह्म प्रभु ! तू ही सेवक का सहारा है। तेरी शरण लेकर करोड़ों ही प्राणी (भवसागर से) पार हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ हे गोविन्द ! संसार में जितने भी जीव-जन्तु हैं, वह सभी तेरे उत्पन्न किए हुए हैं, तेरी कृपा से हम जीवों को अनंत सुख उपलब्ध हो रहे हैं॥ २॥ हे प्रभु ! जगत् में जो कुछ भी घटित होता है, वह सब तेरी इच्छानुसार है। जो व्यक्ति भगवान के हुक्म को समझ लेता है, वह सत्य में ही समा जाता है॥ ३॥ नानक का कथन है कि हे मेरे प्रभु ! कृपा करके नाम की देन प्रदान कीजिए चूंकि वह तेरे नाम के भण्डार का ही सिमरन करता रहे॥ ४॥ ६६॥ १३५॥

गउड़ी महला ५ ॥ ता का दरसु पाईऐ वडभागी ॥ जा की राम नामि लिव लागी ॥ १ ॥ जा कै हरि वसिआ मन माही ॥ ता कउ दुखु सुपनै भी नाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरब निधान राखे जन माहि ॥ ता कै संगि किलविख दुख जाहि ॥ २ ॥ जन की महिमा कथी न जाइ ॥ पारब्रहमु जनु रहिआ समाइ ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभ बिनउ सुनीजै ॥ दास की धूरि नानक कउ दीजै ॥ ४ ॥ ६७ ॥ १३६ ॥

उस प्रभु के दर्शन वह भाग्यशाली ही प्राप्त करता है, जिसकी सुरति राम नाम में लग जाती है॥ १॥ जिसके हृदय में ईश्वर का निवास हो जाता है, उसे स्वप्न में भी कोई दुःख स्पर्श नहीं करता॥ १॥ रहाउ॥ गुणों के समूचे भण्डार ईश्वर ने अपने सेवक के हृदय में बसाए हैं। उसकी संगति में पाप व संताप निवृत्त हो जाते हैं॥ २॥ ईश्वर के सेवक की महिमा वर्णन नहीं की जा सकती। ऐसा सेवक पारब्रह्म-प्रभु में ही लीन रहता है॥ ३॥ हे प्रभु ! कृपा करके मेरी एक विनती सुन लो कि अपने दास की चरण-धूलि की देन नानक को दे दीजिए॥ ४॥ ६७॥ १३६॥

गउड़ी महला ५ ॥ हरि सिमरत तेरी जाइ बलाइ ॥ सरब कलिआण वसै मनि आइ ॥ १ ॥ भजु मन मेरे एको नाम ॥ जीअ तेरे कै आवै काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रैणि दिनसु गुण गाउ अनंता ॥ गुर पूरे का निरमल मंता ॥ २ ॥ छोडि उपाव एक टेक राखु ॥ महा पदारथु अंम्रित रसु चाखु ॥ ३ ॥ बिखम सागरु तेई जन तरे ॥ नानक जा कउ नदरि करे ॥ ४ ॥ ६८ ॥ १३७ ॥

हे जीव ! भगवान का नाम-सिमरन करने से तेरी विपदा दूर हो जाएगी और तेरे मन में सर्व कल्याण आकर वास कर जाएँगे॥ १॥ हे मेरे मन ! एक परमेश्वर के नाम का भजन कर ले, चूंकि यह नाम ही तेरी आत्मा के लिए परलोक में काम आएगा॥ १॥ रहाउ॥ पूर्ण गुरु के निर्मल मंत्र से रात-दिन अनन्त प्रभु का यशोगान करता रह॥ २॥ दूसरे उपाय त्याग दे और अपनी आस्था एक प्रभु पर रख। इस तरह तू महा पदार्थ अमृतमयी रस को चख लेगा॥ ३॥ हे नानक ! वही पुरुष भवसागर से (आत्मिक पूँजी सहित) पार होते हैं, जिन पर प्रभु कृपा-दृष्टि करता है॥ ४॥ ६८॥ १३७॥

गउड़ी महला ५ ॥ हिरदै चरन कमल प्रभ धारे ॥ पूरे सतिगुर मिलि निसतारे ॥ १ ॥ गोविंद गुण गावहु मेरे भाई ॥ मिलि साधू हरि नामु धिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुलभ देह होई परवानु ॥ सतिगुर ते पाइआ नाम नीसानु ॥ २ ॥ हरि सिमरत पूरन पदु पाइआ ॥ साधसंगि भै भरम मिटाइआ ॥ ३ ॥ जत कत देखउ तत रहिआ समाइ ॥ नानक दास हरि की सरणाइ ॥ ४ ॥ ६९ ॥ १३८ ॥

जिस व्यक्ति ने प्रभु के सुन्दर चरण–कमल अपने हृदय में धारण किए हैं, ऐसा व्यक्ति पूर्ण सतिगुरु से मिलकर भवसागर से मुक्ति प्राप्त कर लेता है॥ १॥ हे मेरे भाई! गोविन्द का यशोगान करते रहो। संतों से मिलकर भगवान के नाम का ध्यान करो॥ १॥ रहाउ॥ जब प्राणी को सतिगुरु से नाम का प्रमाण मिल जाता है तो उसकी दुर्लभ देहि सत्य के दरबार में स्वीकार हो जाती है॥ २॥ प्रभु का नाम–सिमरन करने से पूर्ण पद मिल जाता है। संतों की सभा में भय–भ्रम मिट जाते हैं॥ ३॥ जहाँ कहीं भी मैं देखता हूँ, वहाँ प्रभु व्यापक हो रहा है। इसलिए दास नानक ने ईश्वर की शरण ही ली है॥ ४॥ ६६॥ १३८॥

गउड़ी महला ५ ॥ गुर जी के दरसन कउ बलि जाउ ॥ जपि जपि जीवा सतिगुर नाउ ॥ १ ॥ पारब्रहम पूरन गुरदेव ॥ करि किरपा लागउ तेरी सेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन कमल हिरदै उर धारी ॥ मन तन धन गुर प्रान अधारी ॥ २ ॥ सफल जनमु होवै परवाणु ॥ गुरु पारब्रहमु निकटि करि जाणु ॥ ३ ॥ संत धूरि पाईऐ वडभागी ॥ नानक गुर भेटत हरि सिउ लिव लागी ॥ ४ ॥ ७० ॥ १३६ ॥

मैं अपने गुरु जी के दर्शन पर तन–मन से कुर्बान जाता हूँ। मैं तो अपने सतिगुरु के नाम का निरंतर जाप करने से ही जीवित रहता हूँ॥ १॥ हे मेरे पूर्ण पारब्रह्म, गुरदेव! कृपा करो चूंकि जो मैं तेरी सेवा–भक्ति में जुट जाऊँ॥ १॥ रहाउ॥ गुरु के चरण–कमल मैं अपने हृदय में बसाता हूँ, चूंकि गुरदेव के सुन्दर चरण ही मेरे मन, तन, धन एवं प्राणों का एकमात्र आधार है॥ २॥ पारब्रह्म गुरदेव को अपने निकट समझने से तेरा जीवन सफल एवं सत्य के दरबार में स्वीकार हो जाएगा॥ ३॥ संतों की चरण–धूलि सौभाग्य से ही प्राप्त होती है। हे नानक! गुरु जी को मिलने से ईश्वर से प्रेम की लगन लग जाती है॥ ४॥ ७०॥ १३६॥

गउड़ी महला ५ ॥ करै दुहकरम दिखावै होरु ॥ राम की दरगह बाधा चोरु ॥ १ ॥ रामु रमै सोई रामाणा ॥ जलि थलि महीअलि एकु समाणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि बिखु मुखि अंम्रितु सुणावै ॥ जम पुरि बाधा चोटा खावै ॥ २ ॥ अनिक पड़दे महि कमावै विकार ॥ खिन महि प्रगट होहि संसार ॥ ३ ॥ अंतरि साचि नामि रसि राता ॥ नानक तिसु किरपालु बिधाता ॥ ४ ॥ ७१ ॥ १४० ॥

मनुष्य दुष्कर्म करता है परन्तु बाहर लोगों को दूसरा रूप दिखाता है। ऐसा व्यक्ति राम के दरबार में चोर की भाँति जकड़ा जाएगा॥ १॥ जो व्यक्ति राम को स्मरण करता है, वह राम का ही उपासक है। एक ईश्वर जल, थल एवं आकाश में सर्वत्र मौजूद है॥ १॥ रहाउ॥ स्वेच्छाचारी व्यक्ति अपने मुख से अमृत सुनाता है परन्तु उसके भीतर विष विद्यमान है। ऐसा व्यक्ति यमलोक में बंधा हुआ चोटें खाता है॥ २॥ अनेक पर्दों में (पीछे) प्राणी पाप कर्म करता है। परन्तु एक क्षण में वह संसार के समक्ष प्रकट हो जाता है॥ ३॥ हे नानक! जो व्यक्ति सदा सत्य में मग्न रहता है और नाम अमृत से रंगा हुआ है, उस पर विधाता दयालु हो जाता है॥ ४॥ ७१॥ १४०॥

गउड़ी महला ५ ॥ राम रंगु कदे उतरि न जाइ ॥ गुरु पूरा जिसु देइ बुझाइ ॥ १ ॥ हरि रंगि राता सो मनु साचा ॥ लाल रंग पूरन पुरखु बिधाता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संतह संगि बैसि गुन गाइ ॥ ता का रंगु न उतरै जाइ ॥ २ ॥ बिनु हरि सिमरन सुखु नही पाइआ ॥ आन रंग फीके सभ माइआ ॥ ३ ॥ गुरि रंगे से भए निहाल ॥ कहु नानक गुर भए है दइआल ॥ ४ ॥ ७२ ॥ १४१ ॥

राम का प्रेम रंग कभी दूर नहीं होता, जिसको पूर्ण गुरु प्रदान करता है, वही इस प्रेम को पाता है॥ १॥ जिसका मन भगवान के रंग में मग्न रहता है, वही मन सच्चा है। उस पर माया का कोई

दूसरा रंग प्रभाव नहीं डाल सकता, वह मानो गहरे लाल रंग वाला हो जाता है, ऐसा व्यक्ति पूर्ण पुरुष विधाता का रूप हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति संतों के साथ विराजमान होकर प्रभु का यशोगान करता है, उसका प्रेम रंग कभी नहीं उतरता॥ २॥ भगवान के सिमरन के बिना सुख उपलब्ध नहीं होता और माया के अन्य सभी रंग फीके हैं॥ ३॥ जिस व्यक्ति को गुरु जी प्रभु के प्रेम से रंग देते हैं, वह कृतार्थ हो जाता है। हे नानक! उन पर गुरु जी दयालु हो गए हैं॥ ४॥ ७२॥ १४१॥

गउड़ी महला ५ ॥ सिमरत सुआमी किलविख नासे ॥ सूख सहज आनंद निवासे ॥ १ ॥ राम जना कउ राम भरोसा ॥ नामु जपत सभु मिटिओ अंदेसा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगि कछु भउ न भराती ॥ गुण गोपाल गाईअहि दिनु राती ॥ २ ॥ करि किरपा प्रभ बंधन छोट ॥ चरण कमल की दीनी ओट ॥ ३ ॥ कहु नानक मनि भई परतीति ॥ निरमल जसु पीवहि जन नीति ॥ ४ ॥ ७३ ॥ १४२ ॥

जगत् के स्वामी प्रभु का नाम सिमरन करने से पाप नष्ट हो जाते हैं और मनुष्य सहज सुख एवं प्रसन्नता में वास करता है॥ १॥ राम के भक्तों को राम पर ही भरोसा है। भगवान का नाम-स्मरण करने से तमाम फिक्र मिट जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ सत्संग में रहने से कोई भय एवं दुविधा स्पर्श नहीं करती और दिन-रात गोपाल का यशोगान होता रहता है॥ २॥ प्रभु ने अपनी कृपा करके अपने भक्तों को (मोह-माया के) बंधनों से मुक्त कर दिया है और अपने चरण कमलों का सहारा दे दिया है॥ ३॥ हे नानक! प्रभु-भक्त के हृदय में आस्था बनी रहती है और वह सदैव ही प्रभु के निर्मल यश का पान करता रहता है॥ ४॥ ७३॥ १४२॥

गउड़ी महला ५ ॥ हरि चरणी जा का मनु लागा ॥ दूखु दरदु भ्रमु ता का भागा ॥ १ ॥ हरि धन को वापारी पूरा ॥ जिसहि निवाजे सो जनु सूरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कउ भए क्रिपाल गुसाई ॥ से जन लागे गुर की पाई ॥ २ ॥ सूख सहज सांति आनंदा ॥ जपि जपि जीवे परमानंदा ॥ ३ ॥ नाम रासि साधसंगि खाटी ॥ कहु नानक प्रभि अपदा काटी ॥ ४ ॥ ७४ ॥ १४३ ॥

जिस व्यक्ति का मन हरि के चरणों में लग जाता है, उसके दुःख, दर्द एवं भ्रम भाग जाते हैं॥ १॥ वह व्यापारी पूर्ण है, जो हरि के नाम रूपी धन का व्यापार करता है। जिसे परमात्मा नाम की देन देता है, वही शूरवीर होता है॥ १॥ रहाउ॥ जिस व्यक्ति पर भगवान कृपा के घर में आता है, ऐसा व्यक्ति ही गुरु के चरणों में आकर लगता है॥ २॥ उस व्यक्ति को सहज सुख, शांति एवं आनंद प्राप्त हो जाता है और वह परमानन्द प्रभु की स्तुति-आराधना करके ही जीता है॥ ३॥ हे नानक! जिस व्यक्ति ने सत्संग में रहकर ईश्वर के नाम-धन की पूँजी कमाई है, ईश्वर ने उसकी प्रत्येक विपदा निवृत्त कर दी है॥ ४॥ ७४॥ १४३॥

गउड़ी महला ५ ॥ हरि सिमरत सभि मिटहि कलेस ॥ चरण कमल मन महि परवेस ॥ १ ॥ उचरहु राम नामु लख बारी ॥ अंम्रित रसु पीवहु प्रभ पिआरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सूख सहज रस महा अनंदा ॥ जपि जपि जीवे परमानंदा ॥ २ ॥ काम क्रोध लोभ मद खोए ॥ साध कै संगि किलबिख सभ धोए ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभ दीन दइआला ॥ नानक दीजै साध रवाला ॥ ४ ॥ ७५ ॥ १४४ ॥

भगवान का सिमरन करने से तमाम दुख-कलेश मिट जाते हैं और प्रभु के सुन्दर चरण कमल मन में बस जाते हैं॥ १॥ हे प्यारी जिह्वा! राम नाम का लाखों बार उच्चारण कर। हे मेरी प्रिय जिह्वा! तू नाम रूपी अमृत रस का पान कर॥ १॥ रहाउ॥ परमानंद प्रभु का बार-बार भजन करने से अपना

जीवन व्यतीत करे तो तुझे सहज सुख एवं महा आनंद प्राप्त होगा॥ २॥ संतों की सभा में रहने से काम, क्रोध, लोभ, अहंकार इत्यादि विकार नष्ट हो जाते हैं और मनुष्य के तमाम पाप दूर हो जाते हैं॥ ३॥ हे दीनदयालु प्रभु! अपनी कृपा–दृष्टि करके नानक को संतों की चरण–धूलि प्रदान कीजिए ॥ ४॥ ७५॥ १४४॥

गउड़ी महला ५ ॥ जिस का दीआ पैनै खाइ ॥ तिसु सिउ आलसु किउ बनै माइ ॥ १ ॥ खसमु बिसारि आन कंमि लागहि ॥ कउडी बदले रतनु तिआगहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभू तिआगि लागत अन लोभा ॥ दासि सलामु करत कत सोभा ॥ २ ॥ अंम्रित रसु खावहि खान पान ॥ जिनि दीए तिसहि न जानहि सुआन ॥ ३ ॥ कहु नानक हम लूण हरामी ॥ बखसि लेहु प्रभ अंतरजामी ॥ ४ ॥ ७६ ॥ १४५ ॥

हे जननी! जिस भगवान का दिया हुआ वस्त्र इन्सान पहनता है और दिया हुआ भोजन खाता रहता है, उस भगवान का सिमरन करने में आलस्य नहीं करना चाहिए॥ १॥ जो जीव–स्त्री अपने प्रभु–पति को भुलाकर दूसरे कामों में व्यस्त होती है, वह कौड़ी के भाव अपने हीरे जैसे अमूल्य जीवन को व्यर्थ गंवा देती है॥ १॥ रहाउ॥ वह प्रभु को त्यागकर दूसरे पदार्थों की तृष्णा में लगी हुई है। लेकिन प्रभु की बजाय उसकी दासी माया को वन्दना करने से किसने शोभा पाई है?॥ २॥ मनुष्य अमृत समान स्वादिष्ट खानपान को चखता है परन्तु कुत्ता उसको नहीं जानता, जो (यह पदार्थ) प्रदान करता है॥ ३॥ नानक का कथन है कि हे ईश्वर! हम (प्राणी) कृतघ्न नमकहरामी हैं। हे अन्तर्यामी प्रभु! हमें क्षमा कर दीजिए॥ ४॥ ७६॥ १४५॥

गउड़ी महला ५ ॥ प्रभ के चरन मन माहि धिआनु ॥ सगल तीरथ मजन इसनानु ॥ १ ॥ हरि दिनु हरि सिमरनु मेरे भाई ॥ कोटि जनम की मलु लहि जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि की कथा रिद माहि बसाई ॥ मन बांछत सगले फल पाई ॥ २ ॥ जीवन मरणु जनमु परवानु ॥ जा कै रिदै वसै भगवानु ॥ ३ ॥ कहु नानक सेई जन पूरे ॥ जिना परापति साधू धूरे ॥ ४ ॥ ७७ ॥ १४६ ॥

हे मेरे भाई! प्रभु के चरणों का अपने मन में ध्यान करो। चूंकि प्रभु के चरणों का ध्यान ही तमाम तीर्थ–स्थानों का स्नान है॥ १॥ प्रतिदिन हरि–परमेश्वर का सिमरन करो। चूंकि हरि का सिमरन करने से करोड़ों जन्मों की मैल दूर हो जाती है॥ १॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति हरि की कथा अपने हृदय में बसा कर रखता है, उसे मनोवांछित फल प्राप्त हो जाते हैं॥ २॥ जिसके हृदय में भगवान निवास करता है, उसका जीवन, मृत्यु एवं जन्म स्वीकार हो जाता है॥ ३॥ हे नानक! वही व्यक्ति पूर्ण है, जिन्हें संतों की चरण–धूलि प्राप्त हो जाती है॥ ४॥ ७७॥ १४६॥

गउड़ी महला ५ ॥ खाटा पैनदा मूकरि पाइ ॥ तिस नो जोहहि दूत धरम राइ ॥ १ ॥ तिसु सिउ बेमुखु जिनि जीउ पिंडु दीना ॥ कोटि जनम भरमहि बहु जूना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साकत की ऐसी है रीति ॥ जो किछु करै सगल बिपरीति ॥ २ ॥ जीउ प्राण जिनि मनु तनु धारिआ ॥ सोई ठाकुरु मनहु बिसारिआ ॥ ३ ॥ बधे बिकार लिखे बहु कागर ॥ नानक उधरु क्रिपा सुख सागर ॥ ४ ॥ पारब्रहम तेरी सरणाइ ॥ बंधन काटि तरै हरि नाइ ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ ७८ ॥ १४७ ॥

जो प्राणी प्रभु की नियामतें खाता और पहनता रहता है लेकिन इस बात को अस्वीकार करता है कि ये प्रभु ने दिए हैं, उस प्राणी को यमराज के दूत अपनी दृष्टि में रखते हैं॥ १॥ जिस भगवान ने मनुष्य को आत्मा एवं शरीर दिए हैं, वह उससे ही विमुख बना रहता है। प्रभु से विमुख रहने वाला

व्यक्ति करोड़ों ही जन्म अधिकतर योनियों में भटकता रहता है॥ १॥ रहाउ॥ भगवान से टूटे हुए शाक्त व्यक्ति का यही जीवन-आचरण है कि जो कुछ भी वह करता है, सब विपरीत ही करता है॥ २॥ जीव अपने मन से उस प्रभु को विस्मृत कर देता है, जिसने उसकी आत्मा, प्राण, मन और शरीर का निर्माण किया है॥ ३॥ नास्तिक प्राणी के पाप इतने बढ़ जाते हैं कि ढेर सारे कागजों पर लिखे जाते हैं। नानक की प्रार्थना है कि हे सुख के सागर! हम प्राणियों की रक्षा करो॥ ४॥ हे पारब्रह्म प्रभु! जो व्यक्ति तेरी शरण में आ जाता है, वह हरि-नाम के फलस्वरूप बन्धनों को तोड़कर भवसागर से पार हो जाता है॥ १॥ रहाउ दूजा॥ ७८॥ १४७॥

गउड़ी महला ५ ॥ अपने लोभ कउ कोनो मीतु ॥ सगल मनोरथ मुकति पदु दीतु ॥ १ ॥ ऐसा मीतु करहु सभु कोइ ॥ जा ते बिरथा कोइ न होइ ॥ १ ॥ रहाउ॥ अपुनै सुआइ रिदै लै धारिआ ॥ दूख दरद रोग सगल बिदारिआ ॥ २ ॥ रसना गीधी बोलत राम ॥ पूरन होए सगले काम ॥ ३ ॥ अनिक बार नानक बलिहारा ॥ सफल दरसनु गोबिंदु हमारा ॥ ४ ॥ ७९ ॥ १४८ ॥

मनुष्य अपने लोभ हेतु ईश्वर को अपना मित्र बनाता है। ईश्वर उसके सभी मनोरथ पूर्ण करता है और उसे मोक्ष की पदवी प्रदान कर देता है॥ १॥ हरेक मनुष्य ऐसे ईश्वर को अपना मित्र बनाए, जिसके द्वार से कोई खाली नहीं लौटता॥ १॥ रहाउ॥ जिस मनुष्य ने अपने स्वार्थ हेतु भी उस प्रभु को मन में बसाया है, प्रभु उसके दुःख-दर्द एवं तमाम रोग निवृत्त कर देता है॥ २॥ जिसकी जिह्वा राम का नाम उच्चारण करना चाहती है, उसके सभी मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं॥ ३॥ हे नानक! हम अपने गोविन्द पर अनेक बार कुर्बान जाते हैं, हमारा गोविन्द ऐसा है कि उसके दर्शन तमाम फल प्रदान करते हैं॥ ४॥ ७९॥ १४८॥

गउड़ी महला ५ ॥ कोटि बिघन हिरे खिन माहि ॥ हरि हरि कथा साधसंगि सुनाहि ॥ १ ॥ पीवत राम रसु अंम्रित गुण जासु ॥ जपि हरि चरण मिटी खुधि तासु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरब कलिआण सुख सहज निधान ॥ जा कै रिदै वसहि भगवान ॥ २ ॥ अउखध मंत्र तंत सभि छारु ॥ करणैहारु रिदे महि धारु ॥ ३ ॥ तजि सभि भरम भजिओ पारब्रहमु ॥ कहु नानक अटल इहु धरमु ॥ ४ ॥ ८० ॥ १४९ ॥

जो व्यक्ति संतों की निर्मल सभा में हरि की हरिकथा सुनता है, उसके करोड़ों विघ्न एक क्षण में ही मिट जाते हैं॥ १॥ वह राम रस का पान करता है और अमृत गुणों का यश करता है। हरि के चरणों का ध्यान धारण करने से उसकी भूख निवृत्त हो जाती है॥ १॥ रहाउ॥ जिसके हृदय में भगवान का निवास हो जाता है, उसको सर्वकल्याण और सहज सुख के भण्डार प्राप्त हो जाते हैं॥ २॥ सृजनहार प्रभु को अपने हृदय में धारण करो चूंकि प्रभु के अलावा समस्त औषधियां एवं मंत्र-तंत्र व्यर्थ हैं॥ ३॥ हे नानक! सभी भ्रम त्यागकर पारब्रह्म प्रभु का ही भजन करो चूंकि यही अटल धर्म है॥ ४॥ ८०॥ १४९॥

गउड़ी महला ५ ॥ करि किरपा भेटे गुर सोई ॥ तितु बलि रोगु न बिआपै कोई ॥ १ ॥ राम रमण तरण भै सागर ॥ सरणि सूर फारे जम कागर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरि मंतु दीओ हरि नाम ॥ इह आसर पूरन भए काम ॥ २ ॥ जप तप संजम पूरी वडिआई ॥ गुर किरपाल हरि भए सहाई ॥ ३ ॥ मान मोह खोए गुरि भरम ॥ पेखु नानक पसरे पारब्रहम ॥ ४ ॥ ८१ ॥ १५० ॥

भगवान जिस व्यक्ति पर अपनी कृपा कर देता है, उसे गुरु मिल जाता है। ऐसे व्यक्ति को गुरु के बल के फलस्वरूप कोई रोग नहीं लगता॥ १॥ सर्वव्यापक राम की आराधना करने से भयानक संसार सागर पार किया जाता है। शूरवीर गुरु का आश्रय लेने से यमों के लेखे खत्म हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥

सतिगुरु ने मुझे हरि के नाम का मन्त्र प्रदान किया है। इस आश्रय द्वारा मेरे सभी कार्य सफल हो गए हैं॥ २॥ जब गुरु जी कृपा के घर में आए तो भगवान भी सहायक बन गए और मुझे ध्यान, तपस्या, संयम एवं पूर्ण प्रशंसा प्राप्त हो गए॥ ३॥ हे नानक! देख, गुरु ने जिस व्यक्ति के घमण्ड, मोह एवं भ्रम नाश कर दिए हैं, उस व्यक्ति को पारब्रह्म प्रभु के सर्वत्र दर्शन हो गए हैं॥ ४॥ ८१॥ १५०॥

गउड़ी महला ५ ॥ बिखै राज ते अंधुला भारी ॥ दुखि लागै राम नामु चितारी ॥ १ ॥ तेरे दास कउ तुही वडिआई ॥ माइआ मगनु नरकि लै जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रोग गिरसत चितारे नाउ ॥ बिखु माते का ठउर न ठाउ ॥ २ ॥ चरन कमल सिउ लागी प्रीति ॥ आन सुखा नही आवहि चीति ॥ ३ ॥ सदा सदा सिमरउ प्रभ सुआमी ॥ मिलु नानक हरि अंतरजामी ॥ ४ ॥ ८२ ॥ १५१ ॥

अन्धा मनुष्य अत्याचारी सम्राट से भला है। क्योंकि दुख लगने पर अंधा मनुष्य राम के नाम का भजन करता है॥ १॥ हे प्रभु! अपने सेवक की तू ही मान-प्रतिष्ठा है। माया का नशा प्राणी को नरक में ले जाता है॥ १॥ रहाउ॥ रोग से ग्रस्त हुआ अन्धा मनुष्य नाम का सिमरन करता है। परन्तु विकारों में मस्त हुए दुराचारी मनुष्य को कोई सुख का स्थान नहीं मिलता॥ २॥ जो व्यक्ति प्रभु के चरण-कमलों से प्रेम करता है, वह अन्य लौकिक सुखों का ध्यान ही नहीं करता॥ ३॥ सदैव ही जगत के स्वामी प्रभु का भजन करो। नानक की प्रार्थना है कि हे अन्तर्यामी प्रभु! मुझे आकर मिलो॥ ४॥ ८२॥ १५१॥

गउड़ी महला ५ ॥ आठ पहर संगी बटवारे ॥ करि किरपा प्रभि लए निवारे ॥ १ ॥ ऐसा हरि रसु रमहु सभु कोइ ॥ सरब कला पूरन प्रभु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा तपति सागर संसार ॥ प्रभ खिन महि पारि उतारणहार ॥ २ ॥ अनिक बंधन तोरे नही जाहि ॥ सिमरत नाम मुकति फलु पाहि ॥ ३ ॥ उकति सिआनप इस ते कछु नाहि ॥ करि किरपा नानक गुण गाहि ॥ ४ ॥ ८३ ॥ १५२ ॥

आठों प्रहार (कामादिक पांचों विकार) लुटेरे मेरे साथी बने हुए थे। अपनी कृपा करके प्रभु ने उनको तितर-बितर (नष्ट) कर दिया है॥ १॥ वह ईश्वर सर्वकला सम्पूर्ण है। प्रत्येक प्राणी ऐसे समर्थाशाली प्रभु के नाम-रस का आस्वादन करे॥ १॥ रहाउ॥ कामादिक विकारों की संसार सागर में बड़ी तेज गर्मी पड़ रही है। लेकिन प्रभु एक क्षण में ही प्राणी को इस जलन से पार कर देने वाला है॥ २॥ ऐसे अनेक बंधन हैं, जो काटे नहीं जा सकते। लेकिन भगवान के नाम का सिमरन करने से मनुष्य मोक्ष फल प्राप्त कर लेता है॥ ३॥ हे नानक! मनुष्य किसी युक्ति अथवा चतुरता से कुछ नहीं कर सकता। हे प्रभु! कृपा कर चूंकि वह तेरा ही यश गायन करता रहे॥ ४॥ ८३॥ १५२॥

गउड़ी महला ५ ॥ थाती पाई हरि को नाम ॥ बिचरु संसार पूरन सभि काम ॥ १ ॥ वडभागी हरि कीरतनु गाईऐ ॥ पारब्रहम तूं देहि त पाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के चरण हिरदै उरि धारि ॥ भव सागरु चढ़ि उतरहि पारि ॥ २ ॥ साधू संगु करहु सभु कोइ ॥ सदा कलिआण फिरि दूखु न होइ ॥ ३ ॥ प्रेम भगति भजु गुणी निधानु ॥ नानक दरगह पाईऐ मानु ॥ ४ ॥ ८४ ॥ १५३ ॥

जिसे हरि के नाम का धन प्राप्त हो जाता है, वह निसंकोच होकर संसार में गतिमान होता है और उसके सारे कार्य सफल हो जाते हैं॥ १॥ सौभाग्यवश ही ईश्वर का भजन गायन किया जा सकता है। हे मेरे पारब्रह्म प्रभु! यदि तू हम प्राणियों को गुणस्तुति की देन प्रदान करे तो ही मिल सकती है॥ १॥ रहाउ॥ प्रभु के सुन्दर चरण अपने हृदय में बसाओ। प्रभु-चरणों के जहाज पर सवार होने से ही भवसागर से पार हुआ जा सकता है॥ २॥ प्रत्येक प्राणी को संतों की संगति करनी चाहिए, जिससे सदैव कल्याण मिलता है और पुनः कोई दुःख प्राप्त नहीं होता॥ ३॥ हे नानक! प्रेमा-भक्ति द्वारा गुणों के भण्डार भगवान का भजन करो, इस तरह प्रभु के दरबार में मान-सम्मान प्राप्त होता है॥ ४॥ ८४॥ १५३॥

गउड़ी महला ५ ॥ जलि थलि महीअलि पूरन हरि मीत ॥ भ्रम बिनसे गाए गुण नीत ॥ १ ॥ ऊठत सोवत हरि संगि पहरूआ ॥ जा कै सिमरणि जम नही डरूआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरण कमल प्रभ रिदै निवासु ॥ सगल दूख का होइआ नासु ॥ २ ॥ आसा माणु ताणु धनु एक ॥ साचे साह की मन महि टेक ॥ ३ ॥ महा गरीब जन साध अनाथ ॥ नानक प्रभि राखे दे हाथ ॥ ४ ॥ ८५ ॥ १५४ ॥

जल, धरती एवं गगन में मित्र–प्रभु सर्वव्यापक है। उस प्रभु का नित्य यशोगान करने से भ्रम निवृत्त हो जाते हैं॥ १॥ जागते-सोते हर समय प्रभु मनुष्य के साथ रक्षक–रूप में है। उस प्रभु का सिमरन करने से मनुष्य मृत्यु के दूत के भय से रहित हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ यदि प्रभु के सुन्दर चरण हृदय में निवास कर जाए तो तमाम दुःख–क्लेश नष्ट हो जाते हैं॥ २॥ एक ईश्वर ही मेरी आशा, प्रतिष्ठा, बल एवं धन है। मेरे हृदय में सच्चे साहूकार का ही सहारा है॥ ३॥ हे नानक! परमात्मा के संतों का मैं एक महा निर्धन एवं अनाथ सेवक हूँ। परन्तु ईश्वर ने अपना हाथ देकर मेरी रक्षा की है॥ ४॥ ८५॥ १५४॥

गउड़ी महला ५ ॥ हरि हरि नामि मजनु करि सूचे ॥ कोटि ग्रहण पुंन फल मूचे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के चरण रिदे महि बसे ॥ जनम जनम के किलविख नसे ॥ १ ॥ साधसंगि कीरतन फलु पाइआ ॥ जम का मारगु दिसटि न आइआ ॥ २ ॥ मन बच क्रम गोविंद अधारु ॥ ता ते छुटिओ बिखु संसारु ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभि कीनो अपना ॥ नानक जापु जपे हरि जपना ॥ ४ ॥ ८६ ॥ १५५ ॥

हरि–परमेश्वर के नाम (तीर्थ) में स्नान करने से मैं पवित्र हो गया हूँ। नाम–तीर्थ में स्नान करने से करोड़ों ग्रहणों के समय किए दान–पुण्य से भी अधिक फल प्राप्त होता है॥ १॥ रहाउ॥ यदि भगवान के सुन्दर चरण हृदय में निवास कर जाएँ तो जन्म–जन्मांतरों के पाप नाश हो जाते हैं॥ १॥ सत्संग में ईश्वर का भजन गायन करने का फल मुझे मिल गया है और इसलिए मृत्यु का मार्ग दृष्टिगोचर नहीं होता॥ २॥ जो व्यक्ति अपने मन, वचन एवं कर्म का आधार गोविन्द के नाम को बना लेता है, वह विषैले भवसागर से पार हो जाता है॥ ३॥ हे नानक! भगवान ने जिस व्यक्ति को अपनी कृपा करके अपना बना लिया है, वह सदा प्रभु का जाप जपता है और प्रभु का भजन करता रहता है॥ ४॥ ८६॥ १५५॥

गउड़ी महला ५ ॥ पउ सरणाई जिनि हरि जाते ॥ मनु तनु सीतलु चरण हरि राते ॥ १ ॥ भै भंजन प्रभ मनि न बसाही ॥ डरपत डरपत जनम बहुतु जाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै रिदै बसिओ हरि नाम ॥ सगल मनोरथ ता के पूरन काम ॥ २ ॥ जनमु जरा मिरतु जिसु वासि ॥ सो समरथु सिमरि सासि गिरासि ॥ ३ ॥ मीतु साजनु सखा प्रभु एक ॥ नामु सुआमी का नानक टेक ॥ ४ ॥ ८७ ॥ १५६ ॥

हे जीव! जिन्होंने भगवान को समझ लिया है, उनकी शरण में पड़े रहो। भगवान के चरणों में मग्न होने से मन एवं तन शीतल हो जाते हैं॥ १॥ जो व्यक्ति भयनाशक प्रभु को अपने मन में नहीं बसाता, उसके अनेक जन्म इसी आतंक–भय में कांपते हुए बीत जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ जिसके हृदय में प्रभु का नाम निवास करता है, उसकी तमाम मनोकामनाएँ एवं कार्य सम्पूर्ण हो जाते हैं॥ २॥ जिसके वश में जन्म, बुढ़ापा एवं मृत्यु है उस सर्वशक्तिमान प्रभु को अपने हर श्वास एवं ग्रास से स्मरण करता रह॥ ३॥ हे नानक! एक ईश्वर ही हमारा मित्र, साजन और साथी है। जगत् के स्वामी प्रभु का नाम ही उसका एकमात्र सहारा है॥ ४॥ ८७॥ १५६॥

गउड़ी महला ५ ॥ बाहरि राखिओ रिदै समालि ॥ घरि आए गोविंदु लै नालि ॥ १ ॥ हरि हरि नामु संतन कै संगि ॥ मनु तनु राता राम कै रंगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर परसादी सागरु तरिआ ॥ जनम जनम के किलविख सभि हिरिआ ॥ २ ॥ सोभा सुरति नामि भगवंतु ॥ पूरे गुर का निरमल मंतु ॥ ३ ॥ चरण कमल हिरदे महि जापु ॥ नानकु पेखि जीवै परतापु ॥ ४ ॥ ८८ ॥ १५७ ॥

संतजन संसार के साथ लोक–व्यवहार करते हुए गोविन्द को अपने मन में बसाकर रखते हैं। घर को लौटते हुए वह उसको साथ लेकर आते हैं॥ १॥ हरि–परमेश्वर का नाम संतजनों का साथी है। उनका मन एवं तन राम के प्रेम रंग में ही मग्न रहता है॥ १॥ रहाउ॥ गुरु की कृपा से संसार सागर से पार हुआ जा सकता है और जन्म–जन्मांतरों के तमाम पाप नाश हो जाते हैं॥ २॥ भगवान के नाम से ही मनुष्य को शोभा एवं सुरति प्राप्त होती है। पूर्ण गुरु का नाम–मंत्र सदैव निर्मल है॥ ३॥ भगवान के चरण–कमलों का हृदय में भजन कर। नानक तो उस ईश्वर का प्रताप देखकर जीवन प्राप्त करता है॥ ४॥ ८८॥ १५७॥

गउड़ी महला ५ ॥ धंनु इहु थानु गोविंद गुण गाए ॥ कुसल खेम प्रभि आपि बसाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिपति तहा जहा हरि सिमरनु नाही ॥ कोटि अनंद जह हरि गुन गाही ॥ १ ॥ हरि बिसरिऐ दुख रोग घनेरे ॥ प्रभ सेवा जमु लगै न नेरे ॥ २ ॥ सो वडभागी निहचल थानु ॥ जह जपीऐ प्रभ केवल नामु ॥ ३ ॥ जह जाईऐ तह नालि मेरा सुआमी ॥ नानक कउ मिलिआ अंतरजामी ॥ ४ ॥ ८६ ॥ १५८ ॥

वह स्थान बड़ा धन्य है, जहाँ गोविन्द की गुणस्तुति की जाती है। प्रभु स्वयं उनको सुख व आनंद में (कुशलक्षेम) बसाता है॥ १॥ रहाउ॥ जहाँ प्रभु का भजन नहीं होता है, वहाँ विपदा विद्यमान है। वहाँ करोड़ों ही आनंद हैं, जहाँ भगवान की महिमा का गायन किया जाता है॥ १॥ प्रभु को विस्मृत करने से मनुष्य को अधिकतर दुख एवं रोग लग जाते हैं। प्रभु की सेवा–भक्ति के फलस्वरूप यमदूत प्राणी के निकट नहीं आता॥ २॥ वह स्थान सौभाग्यशाली एवं अटल है, जहाँ केवल प्रभु के नाम का ही जाप होता रहता है॥ ३॥ जहाँ कहीं भी मैं जाता हूँ, वहाँ मेरा स्वामी मेरे साथ होता है। नानक को अन्तर्यामी प्रभु मिल गया है॥ ४॥ ८६॥ १५८॥

गउड़ी महला ५॥ जो प्राणी गोविंदु धिआवै ॥ पड़िआ अणपड़िआ परम गति पावै ॥ १ ॥ साधू संगि सिमरि गोपाल ॥ बिनु नावै झूठा धनु मालु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रूपवंतु सो चतुरु सिआणा ॥ जिनि जनि मानिआ प्रभ का भाणा ॥ २ ॥ जग महि आइआ सो परवाणु ॥ घटि घटि अपणा सुआमी जाणु ॥ ३ ॥ कहु नानक जा के पूरन भाग ॥ हरि चरणी ता का मनु लाग ॥ ४ ॥ ६० ॥ १५६ ॥

जो प्राणी गोविन्द का ध्यान करता है, वह चाहे विद्वान हो अथवा अनपढ़–वह परमगति प्राप्त कर लेता है॥ १॥ हे भाई! संतों की सभा में रहकर गोपाल का सिमरन करो, क्योंकि नाम के बिना धन–दौलत एवं सम्पत्ति सब झूठे हैं॥ १॥ रहाउ॥ केवल वही मनुष्य सुन्दर, चतुर एवं बुद्धिमान है, जो व्यक्ति प्रभु की इच्छा को स्वीकार करता है॥ २॥ इस दुनिया में उसका जन्म ही सफल होता है, जो सर्वव्यापक प्रभु को जान लेता है॥ ३॥ हे नानक! जिसके भाग्य पूर्ण हैं, वही व्यक्ति ईश्वर के चरणों में अपने मन को लगाता है॥ ४॥ ६०॥ १५६॥

गउड़ी महला ५ ॥ हरि के दास सिउ साकत नही संगु ॥ ओहु बिखई ओसु राम को रंगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन असवार जैसे तुरी सीगारी ॥ जिउ कापुरखु पुचारै नारी ॥ १ ॥ बैल कउ नेत्रा पाइ दुहावै ॥ गऊ चरि सिंघ पाछै पावै ॥ २ ॥ गाडर ले कामधेनु करि पूजी ॥ सउदे कउ धावै बिनु पूंजी ॥ ३ ॥ नानक राम नामु जपि चीत ॥ सिमरि सुआमी हरि सा मीत ॥ ४ ॥ ६१ ॥ १६० ॥

प्रभु-भक्त के साथ (भगवान से टूटे हुए) शाक्त इन्सान का साथ नहीं होता। क्योंकि वह नास्तिक विषयों का प्रेमी होता है और उस भक्त को प्रभु का रंग चढ़ा होता है॥ १॥ रहाउ॥ उनका मिलन ऐसे है, जैसे अनाड़ी घुड़सवार के लिए एक सुसज्जित घोड़ी हो। जैसे कोई नपुंसक किसी नारी को प्रेम करता है॥ १॥ नास्तिक और आस्तिक का मिलन ऐसा है जैसे कोई व्यक्ति बछड़े द्वारा बैल दुहता हो। जैसे गाय पर सवार होकर व्यक्ति शेर का पीछा करता है॥ २॥ जैसे कोई व्यक्ति भेड़ लेकर उसे कामधेनु समझकर पूजा-अर्चना करने लगे अथवा जैसे धन-दौलत के बिना व्यक्ति सौदा खरीदने के लिए जाता है॥ ३॥ हे नानक! अपने मन में राम नाम का जाप कर। तू मित्र जैसे स्वामी प्रभु की आराधना कर॥ ४॥ ६१॥ १६०॥

गउड़ी महला ५ ॥ सा मति निरमल कहीअत धीर ॥ राम रसाइणु पीवत बीर ॥ १ ॥ हरि के चरण हिरदै करि ओट ॥ जनम मरण ते होवत छोट ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो तनु निरमलु जितु उपजै न पापु ॥ राम रंगि निरमल परतापु ॥ २ ॥ साधसंगि मिटि जात बिकार ॥ सभ ते ऊच एहो उपकार ॥ ३ ॥ प्रेम भगति राते गोपाल ॥ नानक जाचै साध रवाल ॥ ४ ॥ ६२ ॥ १६१ ॥

हे भाई! वही बुद्धि निर्मल एवं धैर्यवान कही जाती है, जो राम के अमृत (नाम) का पान करती है॥ १॥ अपने हृदय में ईश्वर के चरणों का सहारा ले। इस तरह जन्म-मरण से तुझे मुक्ति प्राप्त हो जाएगी॥ १॥ रहाउ॥ वही शरीर निर्मल है, जिसके भीतर पाप उत्पन्न नहीं होता। राम के प्रेम (रंग) से व्यक्ति का निर्मल प्रताप बढ़ता जाता है॥ २॥ संतों की संगति में रहने से (मनुष्य के) पाप नष्ट हो जाते हैं। संतों की संगति का यही सर्वोच्च उपकार है॥ ३॥ नानक ऐसे संतों की चरण-धूलि की याचना करता है, जो गोपाल के प्रेमा-भक्ति के रंग में मग्न रहते हैं॥ ४॥ ६२॥ १६१॥

गउड़ी महला ५ ॥ ऐसी प्रीति गोविंद सिउ लागी ॥ मेलि लए पूरन वडभागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भरता पेखि बिगसै जिउ नारी ॥ तिउ हरि जनु जीवै नामु चितारी ॥ १ ॥ पूत पेखि जिउ जीवत माता ॥ ओति पोति जनु हरि सिउ राता ॥ २ ॥ लोभी अनदु करै पेखि धना ॥ जन चरन कमल सिउ लागो मना ॥ ३ ॥ बिसरु नही इकु तिलु दातार ॥ नानक के प्रभ प्रान अधार ॥ ४ ॥ ६३ ॥ १६२ ॥

मुझे गोविन्द से ऐसा प्रेम हो गया है कि उसने मुझे अपने साथ मिला लिया है और मैं पूर्ण भाग्यशाली हो गया हूँ॥ १॥ रहाउ॥ जैसे पत्नी अपने पति को देख कर हर्षित होती है, वैसे ही प्रभु का सेवक उसके नाम को उच्चारण करने से आत्मिक प्रसन्नतापूर्वक जीता है॥ १॥ जैसे अपने पुत्र को देखकर माता जीवन ग्रहण करती है, वैसे ही प्रभु का भक्त परमात्मा के साथ ताने-बाने के धागे के तुल्य मग्न रहता है॥ २॥ जैसे कोई लोभी व्यक्ति धन को देख कर प्रसन्नता व्यक्त करता है, वैसे ही प्रभु के भक्त का मन प्रभु के चरण कमलों से लगा रहता है॥ ३॥ हे मेरे दाता! तुम मुझे क्षण भर के लिए विस्मृत न हो। नानक का प्रभु उसके प्राणों का सहारा है॥ ४॥ ६३॥ १६२॥

गउड़ी महला ५ ॥ राम रसाइणि जो जन गीधे ॥ चरन कमल प्रेम भगती बीधे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आन रसा दीसहि सभि छारु ॥ नाम बिना निहफल संसार ॥ १ ॥ अंध कूप ते काढे आपि ॥ गुण गोविंद अचरज परताप ॥ २ ॥ वणि त्रिणि त्रिभवणि पूरन गोपाल ॥ ब्रहम पसारु जीअ संगि द्रइआल ॥ ३ ॥ कहु नानक सा कथनी सारु ॥ मानि लेतु जिसु सिरजनहारु ॥ ४ ॥ ६४ ॥ १६३॥

जो भक्त राम के अमृत (नाम) में लीन हुए हैं, वह उसके चरण-कमलों की प्रेमा-भक्ति में बंधे हुए हैं॥ १॥ रहाउ॥ ऐसे भक्तों को दूसरे भोग-विलास राख के तुल्य दिखाई देते हैं। भगवान के नाम